



मंत्रय

साविद्वल्लभ प्रसा

२४६४
१२२



आत्माराम एण्ड सन्स

काश्मीरी गेट, दिल्ली



COPYRIGHT © BY ATMA RAM & SONS, DELHI-8

प्रकाशक

रामलाल पुरी सञ्चालक

आरमाराम एण्ड सन्स

काठमोरी गेट दिस्सी ६

मूल्य	₹ ६ रूपय २० प० वे०
प्रथम संस्करण	१ ६ २ ६
पाठ्यगुण	मा० मा० इतीति
मुद्रक	मुन्शीज प्रैस दिस्सी ६

प्रकाशकीय

हिन्दी ने पिछले दिनों उपन्यास साहित्य में जितनी प्रगति की है उतनी किसी और शत्रु में नहीं। नवीन प्रतिमाना और मान्यताया का समावेश करके हिन्दी ने प्रबुद्ध लेखकों ने उपन्यास-रसा को काफी मात्रा-सुधार दिया है। सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी और मूक सावक श्री मोदिन्दबत्सम पठ का यह नवीनतम बृहत् उपन्यास हिन्दी के भाषा में मौपते हुए हम गर्व अनुभव करते हैं। पठ जी ने उपन्यास या नाटक जो कुछ ध्यान तक लिखा है उसे समरता के ऐसे समुत्-विम्बुधो से रस सिद्ध कर दिया है कि जो प्रत्येक पाठक के हृदय पर एक मर्मस्पर्शी और अमिट प्रभाव छोड़कर अपनी गणना सबसे पृथक चरण कोटि के साहित्य में करा लेता है। 'नैत्रय' की जनकी एक ऐसी ही कृति है जिसे मुसाना हिन्दी के बच का नहीं यह हमारा दावा है। यद्यपि तिष्ठतीय पुष्ठभूमि पर आधारित यह एक काल्पनिक उपन्यास है लेकिन भावभूमि तथा रीति द्वारा पंथ जी ने ऐसा चमत्कार उत्पन्न कर दिया है कि इसे पढ़ते समय ऐतिहासिक उपन्यास जैसा ध्यान प्राप्त होता है।

कई दशक उपन्यास और नाटको के प्रणुता की पंथ जी हिन्दी के लिए अपरिचित नहीं है।

प्रकाश और प्रचार के लिए प्रयत्नशील न होने पर भी हिन्दी साहित्य ने जनकी कृतियों को जैसा मान-सम्मान दिया है वह सचमुच हर्ष का विषय है। प्रस्तुत उपन्यास पर क्रिय पत्रे उनके परिषद का भी उचित मूल्यांकन होगा ऐसा हमें विश्वास है।

परिचय

बहु महिमावान् भविष्य में जन्म लेना मन्त्र के नाम से । मेरे अनुचरों से उसके मन्त्रों की संख्या कई गुना अधिक होगी ।

—बुद्ध धाक्य मुनि (बीष्मनिजाय)

इतिहास अपने ही बुहराता है—यह वैज्ञानिक सत्य हो चाहे नहीं हमारा यह उपन्यास इस विषय का पोषक नहीं है । इस सत्कार के पाप तप को स्वच्छ-शीतल करने के लिए भविष्य में भगवान् के प्रवर्तण का विश्वास सत्कार के सभी धर्मों में है । बहु मुहम्मद के रूप में हा ईसा के कृष्ण के या मीनेय के ।

विश्वत की पृष्ठभूमि को लेकर इस उपन्यास की रचना की गई है । उपन्यास श्रांती और स्थास के बीच एक बर्फ के तूफान से घारंम होता है । मुख्य कथा के सूत्र इस प्रकार हैं—

धमजी कस्तजन और सिद्धा रिबूची ये दोनों बचपन में एक ही गुह के निकट पढ़ते थे । कस्तजन ने हिंमत सीखी थी और रिबूची ने ज्योतिष । उन दोनों की पत्नियाँ जस बर्सी और उन दोनों के मन में वैराग्य ने बढ़ पकड़ सी । दोनों धात्मा की शोष के लिए तैयार हो गये ।

ये दोनों बचनों से मुक्त थे । उनके कोई उत्तरदायित्व नहीं थे न किसी को कुछ लेना-देना । उन दोनों ने बहुत दूर जाह् बह् प्रदेश के हिम-मह में प्रवृत्त खंपोतामा के मठ में उनसे शीघ्र लेकर धात्मा का मंत्र ज्ञान लेने का निश्चय किया और वे एक दिन बिना किसी तैयारी और भय के वहाँ के लिये जस दिए ।

उक्त खंपोतामा के मठ के लिये विमाठा के प्रहृदय विभाग में उत्तरी भारत से एक पात्र को भी भवना मार्ग बनाना था । उसका नाम था भैरव—हमारे उपन्यास का नामक । बहु अपने जनी माता-पिता के

एकमात्र पुत्र था। वह बलि का तीक्ष्ण बाँ पर मरुत पर खर नहीं उसकी उसकी समझ। सप्त-सूत्र मिथ्या धाहार-विहार, बीषण की तड़क-मड़क कर के भीतर ही से शुरू हो गई थी बाहर उदधि ठीक नहीं मिली। पढ़ना सिखना स्रुट मया। कसब खोलकर वह उससे नाटक करने तथा धीर उस बहाने रात रात भर भर से गायब रहता।

माता पिता का स्नेह-संबंध बल-संपत्ति का लालच तथा प्रकृत्य धर्मीयता सब कुछ छोड़कर एक दिन वह एक महारै की कुमारी कन्या बासो को बहकाकर बंबई को चल दिया। बैचसमोय से बंबई की एक बमशासा में बासो को ढोखा देकर कोई दूसरा ही उठा ले गया। भैरव के मन में भयानक सामाजिक विद्रोह जाग उठा। वह पूंजीपति पिता का ब्राही तो था ही भारत के धर्म-नासक के लिये भी उसके मन में प्रचंड धाम सुलग उठी। बमशासा के सस्थापक की मूर्ति की नाक तोड़कर वह भाया धीर रेल से बंबई छोड़कर बजात बिया को चल दिया।

रेल में उसकी २ न नामक एक बिष्ट मनुष्य से भिन्नता हो गई धीर उसके साथ वह हिमासय की उपरयका में स्थित भयकरवाहियों के संघ में मरती होने को तैयार हो गया। उस संघ में केवल प्रविवाहित ही भरती हो सकते थे। भैरव ऐसा था ही। अपने साहस की परीक्षा देने के लिये वह चलती हुई रेल से मूमि पर कूब पड़ा। उसके हास की हबड़ी बिसक गई। उसकी मरहम-मट्टी कर २ न उसे मयंकरवाहियों के संघ में ले गया। संघ की सथासिना एक माता थी थी। कहने को उससे यह कहा गया था कि वहाँ माता थी के सिवा धीर कोई नारी नहीं है। पर उसे वहाँ एक बिभूसवापी दिखाई दिया—मंने गिर, कमर एक बटफटी हुई उसकी केखरयति थी माथे पर मस्म की रैखाएँ। उसके सारे धरीर में एक मधुभूत सौन्दर्य का धीर भैरव उसकी यष्टि को देखकर बड़े बिस्मय में लो गया जब उसने अपने को पुष्य की संज्ञा थी। भैरव उस घोब में गही पड़ा—वह उसे नारी ही समझने लगा।

उपर न मनेक कठिनाइयों को पार कर ले दोनों बीच धीर ज्योतिषी

संपोलामा के मठ में पहुँच गए धीरे बिन्दु के दस्त्राण के लिए सवार
में मैत्रेय के जन्म की कामना करने लगे ।

इधर भैरव को उस भयंकरबादियों के मठ में अंतरम सन्म्यता के सिध
छाँट लिया गया । उसे वह मठ प्राध्यात्मिकता का रंग लिए जान पड़ा ।
वे सोच एक 'युग चतुर्थ्य' का निर्माण करना चाहते थे । युग चतुर्थ्य—
एक प्रतिमानव या अपनी गुण भावना से नारे मग धीरे बिन्दु को प्रभा
बिध कर सममें छाति की स्थापना कर देगा । भैरव को उस युग चतुर्थ्य के
लिए छाँट लिया गया । उसका प्रासन माठा भी से भी ऊपर मगा दिया
गया । उसकी प्राज्ञा वही सर्वोपरि हो गई । सतिम भैरव को वह भार
घसाह्य हो उठा । वह उस एक पाय समझने लगा । उसके मन में वह
नरबेभ-पारिणी भैरवी बस गई थी । उसी रात अपनी सर्वोपरि प्राज्ञा
की शक्ति से उसने भैरवी का साम भ वही से बस देना निश्चित कर
लिया पर बीच में बाधा आ पड़ने पर भरबी बही रह गई ।

भैरव मही में बूबकर जगमों-यहाको को सापना हुआ कुछ लिखती
सीशगर्षों के साथ मूना बनकर लहामा पहुँच गया फिर वही से भागकर
एक बुढ़िया के पास में उसका बेटा बनकर रहने लगा । बुढ़िया की मृत्यु
पर एक दिन कुछ डाक उसे आकर पकड़ ले गए धीरे वह उनके घर का
एक सदस्य बन गया ।

डाकुधों का सरदार उसे संपोलामा के मठ में ले गया । मठ के
बाहर उसे एक हवाई बहान दिखाई दिया धीरे भूमि पर पड़ी हुई
एक बायरी मिली जिसमें एक नारी के हवाई उड़ान का धारम लिखा
था बाकी पन्ने फट गए थे ।

कमजान धीरे रिबूची उस मठ में मैत्रेय के प्रवर्तण की साधना में
सम गये । उन पर यह रहस्य खुस गया था कि वही एक स्वेदांगना भी
मैत्रेय की जननी के रूप में रहती है । ध्यान ब्रमान के लिए उन्हें उस
महामाया का एक चित्र दिया गया । बाह को भैरव ने वही आकर उस चित्र
में धँसने का सेक पड़ा— 'इस मठ में बंदिनी हूँ मैं कौन मुझे बुझावना ?—

कुमारी इवा मासिन ।

भैरव बड़े खनकर में पड़ गया । वह जब खपोलामा से मिसा ली उसने प्रबेची के छान के कारण उसे उस खेतागता का पुत्र मंत्रेय बन जाने की प्रेरणा दी । भैरव कुमारी इवा और खपोलामा के बीच में दुमापिदा बना ।

बात ऐसी थी—कुमारी इवा हवाई जहाज द्वारा सवार की पहली परिष्का की रकाड-स्थापना को उड़ी थी । मठ के पास उसका जहाज पेट्रोल की कमी से गिर पडा । खपोलामा न उसे मंत्रेय के जन्म के लिए मधवातु का दान समझकर अपने मठ में रक लिया ।

धन से भैरव मंत्रेय के सिद्धांत पर बिश्वास रखने पर भी उसके प्रवर्तन का भार उठाने में अपने को समर्थ पाता है और उस खेतागता को खेतागों की एमिया-विजय की कामना समझकर उसे वहाँ से उसी हवाई जहाज में उड़ा ले जाता है ।

—सैतक

द्विन्ममस्ता

संसार का वह सर्वोच्च पठार ! उसके ऊपर उन भयानक बर्फ के
तूफान में मानो मूर्तिमान भीमस्त जमा जा रहा था। उसकी पति
में कोई संका नहीं थी न उसके मन में किसी का डर। उसके कंधे पर
बिज नारी का बोझ था उसके निराचार सटकते हुए हाथ-पैर घीर
गरदन से स्पष्ट ही प्रकट था वह निष्प्राण थी।

मेलों में बगी कामिना भी प्रचंड बेव था। बिजसो में कड़क न थी
बंभीर शोष था। कमी एकदम उजाळा हो जा रहा था कमी तुरंत
ही शोर प्रसकार। पवन की पति तीस मील प्रति घंटा से कम न
होती। हिम की फुहार, फूलों की वेंचुरियों-सी टूट-टूटकर बरती पर बरस
रही थी।

भूमि पर घाघे फुट के करीब बर्फ कम चुकी थी सामने के पहाड़ों
को देखकर यही भासता था जैसे हिमालय पर्वत कुछ नीचे की उतर
घाए हैं। पहाड़ों पर के पैर बर्फ को धोड़कर भूत-प्रतों के से आकार में
दिखाई दे रहे थे। जस-धूम्य मार्ग ! दूर-दूर तक कही किसी पाँव या
मकान का पता नहीं था। वन में कोई पासतू या जंगली पशु न था न
पवन में कोई पत्ती। इस कठोर सरदी में सबके सब न जाने कहीं छिपे
बैठे थे ?

केबस एक बही कर्मों धपन प्राणों के लिए इजना निर्भय हो उठा ?
जान नकटा है जब वह नर स जला था तब इस तूफान की कोई धासंका
नहीं थी। घीर जो मिट्टी उसे इस समय डोनी पड रही है वह

सहचारिणी थी। वर से चलते समय भावब ही उसने यह सोचा होगा कि वह ऐसे सञ्च में फँस जायगा।

उसके पैरों में जुटने तक का उन घोर चमड़े का घोसा था जो हर क्रम पर बर्फ के ऊपर बड़ा गहुरा पदांक बनाता था रहा था। डीली बाँहों का पैरों तक लटकता हुआ उसका छाया था कमर बाँध रखी थी उसने एक शैवंती रंग का भारीदार ऊनी काबोस। उसके सिर के लंबे बाल लंबी चोटी में बँधे हुए पीठ पर लटक रहे थे। चोटी का धिरोमास सब के बलु ल से पिरा हुआ था। उसके कानों में सोने की मंडिप थी जिसमें कौमती पत्थर बड़े हुए थे। उसके गले घोर हावों में भी मूंगे घोर फीरोज की गामाएँ थीं। एक चौकोर चाँदी की बर्तन उसके गले में लटकती थी जिसमें किमी तिम्बती देवता की उमरी हुई मूर्ति थी। उसने अपने सिर में एक छैस्ट का स्वामी पहन रखा था।

बैस-भूया से वह एकदम धमकीबी-सा गही प्रतीत हो रहा था पर जिन शारीरिक परिग्रम घोर शत्रु के कटि को सहन करता हुआ वह अपने मार्ग में घाबे बढ़ता था रहा था उसमें जान पड़ता था—वह व्यक्ति कठिनाइयों का भी धम्यासो था।

वह फिर मार्ग में विग्राम के लिए रुक गया उसने अपने कंधे के उस शक को भूमि पर बड़ी बृत्ता से पटक दिया। उसके दोनों हाथ छत के छुवा की लंबी बाँहों के भीतर ही छिपे थे। उसने अपने टोप घोर कपड़ों पर लमी हुई बर्फें झड़कर गिरा दी। बड़ी उपेक्षा-मरी दृष्टि से उसने शक की घोर देखा।

बाईस-तेईस वर्ष की सुन्दरी होयी वह। ऐसी किसी जीर्ण बीमारी के बिह्व घनित नहीं था उसके मल में। यदक ने उसके घम प्रत्यंग के तमाम घानूपण निकालकर एक कपड़े में बांध फिर अपने लुपे के भीतर रक्त लिए। उसके बाद उसने अपनी कमर से पाँड़ा निकाला घोर सुरंत ही उसे बही लौंठ लिया।

फिर कुछ सोचा उसने घोर उस शक के तमाम बत्त खोलकर फँक

दिए । उसका मार कुछ हलका हो गया था । लेकिन तूफ़ान की तेजी बढ़ी भी कम न हुई थी । फिर हिम के साथ सूर्य करता हुआ वह भाग को बढ़ता गया । बड़ी आकस्मिता से मार्ग के चारों घोर बेकता हुआ बना आ रहा था । कहीं पर किसी आभय या शीत का कोई निवास उसे नहीं दिखाई दिया ।

फिर बढ़कर वह एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया । उसने फिर अपना वह दुर्बल मार बरती पर पटक दिया । उसने बड़ी बरणा से उसके मुँह को बेका । उसके प्राणबिहीन होने पर भी उस मरक के भीतर कोई प्रतिहिंसा बल रही थी । यह स्पष्ट ही था । घबानठ उसकी माथना में न जान क्या उद्गम थाया उसने अपनी कमर में से फिर वह खाँडा निकाला और उस सब की दोनों टाँगें काट डाली । उसने शीत को मार्ग से दूर अंयस की तरह फेंक दिया । मांस की संक से सुरन्त ही नहीं पर गिड़ और सियार प्रकट हों बने और उन बटी हुई टाँगों का मांस तोचने लगे ।

इस बार निश्चय ही उसके बोझ में अत्याधिक कमी हो गई थी । लेकिन तूफ़ान में कोई सौम्यता नहीं पाई थी । ठंड के कारण उस सब की नाड़ियों का काला खून बम गया था । उस बीमस्त भार को उठाकर उस बुधक ने फिर अपने कंध पर रखा और फिर अपने मार्ग में बढ़ने लगा ।

वह झाँसा की घोर आ रहा था । उस बोझ को नहीं से जाने का उसका क्या धर्म होगा ? और इस प्रकार उसे कम करने का ही मतलब क्या ? वह कुछ दूर और बढ़ गया । सतना इसका कर देने पर भी वह साफ उसे मापी लगने लगी । उसने उसे नीचे रख दिया और फिर कमर से खाँडा निकाला । उसने उसके दोनों हाथ काटकर फेंक दिए ।

अब वह उसकी चोटी पकड़कर ले बना । उसने कुछ ही मार्ग तय किया होता कि फिर उसे बड़ी सम्भल-सी प्रतीत हुई । फिर उसने उसे भूमि पर रख दिया । इस बार उसने उसका मस्तक काट लिया और

सेप बड़ के भी कई टुकड़े कर लमो दिवाघो में फेंक दिए ।

तिम्बल में सब के प्रतिम सस्कार की ऐसी प्रथा भी है । इसका मूल कारण वहाँ जमाने की लकड़ी का प्रभाव है । सब को काट-पीसकर घण्ट जौबों को खिला तो दिया जाता है । पर इस प्रकार उसके घंग प्रत्यक्ष विच्छिन्न कर जगह जगह बिलार देना कामर उम पुरख के किन्ती मानसिक बिलप की स्याही थी ।

उस छिन्नमस्ता के मस्तक को उठाया उसने । वह स्वस्तमार होकर बड़ी मरलता से सब हिम से लड़ता हुआ घामे को घबने बना । जाते जाते वह सोचने लगा—“सब सब कछ इस घमायिनी नारी का काट काटकर फेंक चुका हूँ तो फिर इस मूँड का ही क्यों मोह हो गया ?”

उसने उस मुख को बोली से पकड़कर घपनी घौर किया । इस बार प्रेत क बेहूरे को देखकर कछ इबित हुआ वह । फिर बिचारने लगा—

किन्ती सगल घौर छत्रहीन थी यह किसान जग्या ? जब से उस बरबात की मघति में घाई लभी से लब चीरत हुआ । हम गिर को कहीं से जा रखा हूँ मैं ? किन्ती ममासे के संयोग मे इने कछ दिन के लिए स्पाई बना भी सका तो क्या ? हमारे घारमिक दिनों की याद यह न जवा सकेगा । लगी चांडास की छाया दिखलाई देनी मुझे इत मुख में ।”

मुझ्जम सब मिट गया था । इबा स्थिर हो गई थी घौर बर्क का गिरना भी बंद हो गया था । उस पुबक ने उस मस्तक को बोटी पकड़ कर बो-लीन बार घपने पारबर्न में भुमाया घौर फिर दूर फेंक दिया । कृछ देर तक वह देखता रहा उसकी घोर घचालक जब उसने उम पर कृछ कीर्षों के भुँड को मँडरलते देखा तो फिर उमका मोह जाग उठा घौर वह बीड़ा हुआ उस छिन्न मस्तक के पास जा पहुँचा । तब तक कीर्षों ने घपनी बोंबों से लोह-लोहकर उसकी नाक उड़ा दी थी उसके दोनों काम सफ़रकर उम बुबा कर दिया था । वहाँ उसकी दो घालें थी वहाँ दो डपबने कामे पड़हे दिखलाई देने लगे थे घौर दोनों होठों की मांसघता घदुस्य होकर दो लमे हुए जबड़ा की लन पंक्ति दुग्दिमल हो गई थी । उस

के पासो को भी उम्होंने अपनी बाँधो से धत बिखत कर दिया था ।

उसने उस नारी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया-बिदिशाओं में बिखार दिया था । उसके मस्तक को काटकर वह उतनी दूर तक से गया पर इस बीच कहीं उसके मन में ऐसा वैराग्य नहीं उपजा । उस धत-बिखत मूख की कृप्यता से मानवी मौखर्ब की अणु-अणुरता उसके मन में पड़ गई ! उसने दोनों हाथों से अपना मुख ढक लिया और बड़ी चार से चीख पडा— 'हे ममबानु !

उस नारी के लिए उसकी माँ भी भुगना की बहू सब समाप्तप्राप्त हो गई और उस ऐनिक के लिये भी जिसने उसे बहका दिया था—जो कुछ प्रतिहिंसा उसने अपने मन में बडा रखी थी वह सब टूट-टूटकर बिरने सी।

कैसा ममानक घंत है इस हाड चाम के निर्माण का ? उसने धीरे-धीरे फिर उस नारी के सब को देखा । लोथों की बाँधों ने उसकी हड्डियाँ बाहर दिखाकर उसकी घसमिगत सोल दी थी । उसकी इच्छा होने लगी उसी समय किसी दूर एकौठ को चल दे । तिब्बत में मठों की कमी नहीं किसी में जाकर दीखिन ही जाना घसमब न था । बिपार का वह बीच उसके मामस में पड़ गया ।

'एक दिन मेरा भी इसी से मिलना-जुलना घंत हो जायगा और उस सिपाही का भी तो !' फिर वह बुलबुलाया मृत्यु के द्वार पर हमारी पाबिब स्थितियाँ ही समानता को प्राप्त नहीं हो जाती—नामसिक भावनाएँ भी अपनी बियमता लेकर सम पर भा जाती हैं । वह समता है वैराग्य की । समघात-वैराग्य ।

उस भूर्भुलित मूख की वह दुर्बला उसके लिये घसह हो उठी । उस से फिर उसकी बोटी पकड़कर उसे उठवाया फिर बो-ठीम चक्कर बुमा कर दूर फेंक दिया । निकट ही बहती हुई एक नदी के किनारे पर फिर कर वह उसकी घाँसों की घोट में हो गया ।

उसने फिर श्वाधा की घोर जाने वाली अपनी राह चली थी ।

जब उसे शीत का प्रकोप अधिक सताने लगा । जब तक उसके पास एक भारी बोझ या जिसको से जाड़े के अम से उसके शरीर में परमी उत्पन्न हो रही थी और उसका मन बँटा हुआ था । जब शरीर और मन की प्रतिरिक्तता पर शीत बड़ी आसानी से चोट अमाने लगा । उसने अपनी जात देख कर बी । कुछ ही देर में वह एक छोटे-से गाँव के निकट आ गया ।

चीनी भाई

धर तूफान का इतना घबिच खोर नहीं था। जो कुछ घोड़ी-बहुत बड़ गिरी थी वह पलकर साक हो गई थी। गाँव के बीच से होकर ही मार्ग गया था। चारा घोग के बंठा में जो की हरियाली फैली हुई थी। पेड़ों पर घमी बालें नहीं उमली थी। बर्षा में स्नान कर उन पड़ों का रप निरुत्त उठ था।

नारी के उम भयानक धंग का प्रभाव घमी तक उमकी बेतना में गया का-र्यों बरा हुआ था। ठंड से ठिठुरा हुआ वह गाँव के निरुत्तम मकान में जाकर धाधम पाने के मपने वल रहा था।

उयोंही वह गाँव के भीतर को बड़ा हो कृते उम पर मीकने लगे। वह कुपचाप एक घोर को वड़ा हो गया। कृते मपने बर की तरफ मुसठे हुए उस पर भौकये ही रहे। बर के भीतर में एक बूड़ा जिमान धानेबासे को बेकन के सिप बाहर निकल घाया।

बूड़े ने घवती कमजोर घाँवों पर हाथ रखकर प्रवास की चकाचौंध को रोकते हुए मार्ग की घोर बला घोर पूछा—“कौन है?”

“मैं हूँ घमजी कसबन” —घामतुक ने उत्तर दिया।

बर के स्वामी ने कुत्तों को भिड़क दिया। कृते कुम बवाकर सिपक गए। उसने धाबाब के महारे धानबासे को कुछ-कुछ पहचान तो लिया था नाम सुनकर भी वह स्मति के धंगधर में टटोसने लगा।

कसबन इतने में उसके पास पहुँच गया था। उसने उसक कचे पर हाथ रखकर पूछा—“क्यों बूड़े गृह-स्वामी घण्टे तो हो?”

जब उसे शीत का प्रकोप अधिक सुनाने लगा । जब तक उसके पास एक भारी बोझ या जिसको सि बाले के सम से उसके शरीर में घरपी उदरगत हा रही थी शीर उसका मन बौटा हुआ था । जब शरीर शीर मन की प्रतिरिक्ता पर शीत बड़ी घासानी से जोड़ बसाने लगा । उसने घपनी जाल ठेज कर दी । कुछ ही देर में वह एक छोटे-से पाँव के निकट था गया ।

चीनी भाई

दुध भर तूफान का इतना प्रबिक खोर नहीं था। जो कुछ बोझी-बहुत बरु गिरी थी वह मलकर साफ़ हो गई थी। पाँव के बीच से होकर ही मार्य गया था। चारों ओर के बेटों में जो की हरियाली फैली हुई थी। पेड़ों पर घनी बालें नहीं उरुसी थी। बर्षा में स्नाम कर उन पेड़ों का रंग निखर उठा था।

गारी के उस भयानक घल का प्रभाव अभी तक उसकी पतना में ब्यो का-स्यों पर्य हुआ था। ठंड से ठिठुरा हुआ वह गाँव के निकटतम मकान में जाकर आश्रम पाने के सपने देख रहा था।

क्योंही वह गाँव के भीतर का बड़ा वो कृते उस पर मौकने सवे। वह चुपचाप एक ओर की बड़ा हो गया। कृते घपने बर की तरफ बसते हुए उस पर मौकने हा रहे। बर के भीतर से एक बूझा किसान मानेबाधे की देखने के लिए बाहर निकल आया।

बूझे ने अपनी कमजोर धाँसों पर हाथ रखकर प्रकाश की बकाचीय को रोकते हुए मार्ग की ओर बेसा पीर पूछा— 'कौन है ?'

“मैं हूँ घमची कमजान” —यागतुक ने उत्तर दिया।

बर के स्वामी ने कृतों को भिड़क दिया। कृते दुम दबाकर लिसक गए। उसने मानेबाधे के सहारे मानेबाधे को कुछ-कुछ पहचान ले लिया था। नाम सुनकर भी वह स्मृति के धंधकार में टटोकरने लगा।

कमजान इतने में उसके पास पहुँच गया था। उसने उसके कंधे पर हाथ रखकर पूछा— 'क्यों बूझे गृह-स्वामी घण्डे लो हो ?'

घब उसके कोई समय नहीं बाकी रहा—पर्यन्त प्रसन्न होकर उसके कमरन का हाथ पकड़ लिया और उसे घर के भीतर ले जाते हुए बोला—“बड़े ठंडे तुम्हारे हाथ हैं। इतनी धीठ में जहाँ से प्रा रहे हो हकीम जी ?”

मया वा एक खरूरी काम से।

बल्लो पहले घाम के पास बल्लो। मैंने चाय बना रखी है और प्रकेश उसे पीने की मेरा मन नहीं कर रहा था। बड़ी बेर से वह मचानी में पड़ी-पड़ी ठंडी हा पई है।—बूढ़े ने अपने निकट ही एक कम में बह प्रेम से कमरन को बिछाते हुए कहा।

कमरन बैठ गया नहीं बोला—“मैं बर्फ का एक भयानक सुफान से होता हुआ आता प्रा रहा हूँ।

“मोबा और कपड़े सब लौटा दो। और जब तक तुम्हारी एक-एक चीज पच्छी तरह सूख न जाय मैं तुम्हें हगिब जाने न दूँगा। कई बार तुम यह रास्ता काट-काटकर गए हो। प्राय भगवान् ने मेरी बात सुनी है।—बूढ़े ने कमरन को घोटने के लिए एक कामा गरम बुस्मा दिया और जल्दी से फिर चाय गरम करने लगा।

कमरन ने जूते लोन बिण कमर का काबो और खड़ी भी घसप रन दिए। बूढ़े के भीतर उसके चाय पीन का फुक सूबनी का बक्यर और एक बीसे में कुछ और चीजें थी वे सब निकाल डालीं। छुगा जोलकर मूखने की टॉप दिया। कमरन घोड़कर वह उस बूढ़े के साथ भाग के समीप बैठ गया। उसने पूछा—“प्रकेश ही कंस हो प्राय ? वे लोन कहाँ गए ?”

लोन ही और कौन ? बेटा और वह वे दोनों स्हासा गए हैं। वह के गाई की घाटी है। उसका वह छोटा माई जो पोसास्हा में बलाई सामा का घंगरसाक है।

“तुम मही गए ?”

“इस बूढ़े को कहाँ से अपने नाम के आते ? और मेरा भी मना”

में हम बूट जाता है। तुम क्या किसी का इस्तेमाल करने गए थे? लेकिन कसे से मातमम् सौग—एक घोड़ी भी नहीं बी क्या उसके यहाँ? फिर एसी की बधा करने ही क्यों गए तुम?

“कछ ऐसे ही बिबिच संयोग में फंस गया मैं बूड़े बाबा।”

“कसी कितने पीछे रह गया तुम्हारा?”

“कुत्ती? नहीं कोई कुत्ती नहीं है मेरे साथ —कलजन मम-ही मन मोच रहा था वह यथावता को किस तरह प्रकट करे।

‘हम बर्क की बीछार में घबसे ही पैदल जिसने तुम्हें धाम दिया है वह कदापि घण्टा घाग्गी नहीं है हकीम जी। —बाय मबसे-मपसे बूड़े ने कहा।

बड़ी धीए हँसी के साथ कलजन बोला— ‘मुझ किसी ने नहीं धाने दिया मैं लुब ही धाया हूँ।

‘तुम घिबर्ची से घा रहे हो?’

‘हाँ।’

‘किसी के इस्तेमाल के लिये नहीं गए। उसी तरह तो तुम्हारी समुदास है न? वहाँ से घा रहे हो?’

‘हाँ।’

‘लेकिन समुदासवालों ने तुम्हें क्यों नहीं रोक लिया एक-दो दिन के लिये?’

कलजन को अपनी घाँसों के घाये बड़ा भयानक काला पहाड़ दिखाई दिया। वह उसके बीच कहीं से मार्ग निकाले इस बुविधा में पड़ा था कि बूड़े ने उसक घाग बाय का प्यासा रक्त दिया। उसे सोच सकने के लिये बड़ा सहाय मिला। उसने बाय की एक घूँट पीकर फिर प्यासा मूमि पर रक्त दिया।

कलजन की घुप्पी देखकर बूड़े ने फिर कहा— ‘बिबिच करछा हूँ समुदासवालों से कोई सझाई नहीं हुई तुम्हारी।’

‘नहीं तो।’

“धीरज कहाँ है तुम्हारा ?”

कर्मव्य जिस बोझ को सिर से उतारने की बुझिया में पड़ा हुआ था उस भार को मृमि पर पटक देने के लिये उस बड़े गृहस्वामी ने अपना हाथ बड़ा दिया।

कुछ पारवाचित होकर कर्मव्य उत्तर के लिये सही शब्द सोचने लगा। उसकी बेर को बूढ़े ने फिर धपने नामको से भरना शुरू किया—
 “बड़े अच्छे माँ-बाप की कन्या है वह। एक दिन मैंने देखा था उसे। मेरी बहू का कोई रिश्ता है उसके साथ। मैंके या ससुराल कहीं जाते हुए उसने एक रात हमारे बहाँ बेरा बनाया था। वह बड़ी अच्छी धीरज है और तुम भी सज्जन धारमी। मैं जाने क्यों भगवान् उसे कोई सताव देने में इतना सोच-विचार कर रहे हैं। इस बार नए वर्ष के उत्सव में तुम टमीन्हुयो के घापीबाँर का तुम्हारे बरकर पुत्र हो जायेगा। कभी मैंने उनका घापीबाँर टूटा हुआ नहीं पाया। लेकिन तुम्हारा विश्वास पूरा होना चाहिए। क्यों ?

कर्मव्य ने बड़े पैर से सत्य के अर का परवा हटाते हुए कहा—
 “लेकिन ”

बूढ़े ने फिर बीच ही में धपनी बात बड़ दी— “मैं तो उनको बहुत बड़ा धनदार मानता हूँ।” बूढ़ा पाव पीने लगा।

कर्मव्य को धन कहना ही पड़ा— “लेकिन बूढ़े धारा मेरी स्त्री तो मर गई।”

क्यों ? —बूढ़े गृह-स्वामी ने नाम का प्यासा बुर रस बिना धीर धालों में नमी धीर मुख के भावों में धनरज भरकर कुछ बेर तक उसे देखता ही रह गया।

कर्मव्य ने जवाब दिया— “धन संसार ऐसा ही अस्थिर है, हम इसे निरंतर लक्ष्मी समझते रहते हैं। धीर उसको लक्ष्मी समझने से ही हम रोव पाव करते हैं।”

“लेकिन कर्म पुत्रर गई वह ?”

‘उसकी मिट्टी पंचभूर्तों को सौंपकर ही आ रहा हूँ मैं ।

बूढ़े ने अपने सूपे की लटकटी हुई बांह से अपनी दोनों धाँसों को पीछते हुए पूछा— ‘ससुराल में ही मरी वह ? कब से बीमार थी ? और तुम हकीम हो सबको धण्डा करते हो अपनी धीरस को नहीं बचा सके ?

‘नहीं बूढ़े बाबा वह कछ बीमार नहीं हुई । उसने मौत को पुकार कर अपने पास बुला लिया ।’

‘उसने तुम्हारी बी हुई बचा नहीं खाई और बबपरहेजी कर दी ’ बूढ़े को सहासा कछ याद आई उसने पूछा— ‘और तुम्हारा थीनी भाई कहाँ है ?’

इन सब बातों की बड़ पर लो बड़ी थीनी भाई है ।

‘हो सकता है । बूढ़े बाबा ने फिर कलजल को कछ चाय बेटे हुए कहा— ‘कछ बसिया बना देता हूँ मैं तुम्हारे लिये भेड़ का सूता माँस रखा है । प्रार्थना की बेसा निकट आ रही है । प्रार्थना के बाद तुम आ लेना । मैं रात का खाना छोड़ चुका हूँ दिन का ही खाना मुझे हजम नहीं होता ।

‘नहीं बाबा खाना भाज मैं भी कुछ नहीं खाऊँगा उस मृतक को यादर देने के लिए मुझे एक भक्त का खाना छोड़ना ही होया ।’

‘लेकिन तुमने उस थीनी की बात को रोक क्यों लिया ?’

‘मुझे उस थीनी की बात से कोई चिन्कायत नहीं है । बैल-पड़ बोली-ओली, पीठि-रिबाब चात-डाल रूप-रंग की कोई समानता न होने पर भी हम अपनी नामिक प्रमति के लिय बूढ़ की सरस में जाते हैं । सहासा में एक बीमार के रूप में ही मेरा उसका पहला परिचय हुआ था । बड़ी संदी बीमापी थी उसे । मैंने उसकी बीमापी ही प्रण्वी नहीं की उसको अपनी भाईबारा देकर अपनी स्त्री में भी हिस्सा दिया ।’
—कहते हुए कलजल ने एक विराम लिया ।

बूढ़े बाबा ने पूछा— ‘सहासा में वह बीमापी क्या करवा पा ?’

“बीती राजकुत के साम जो मेना भी उसी में बह सिपाही बा । बीमारी के कारण उधे सिपाहीमिरी की नौकरी छोड़ बेगी पडी । स्वभाव का घण्टा बा बह । उसकी बधा देखकर मेरे दया उमड़ पडी थी । बूढ़े दादा कोई भी नासब न बा मेरे । जब नौकरी सूट जाने पर बह बेबर हो गया तो मैंने उधे ठीर दी जाने की बाध भी बिया धीर दबा भी तो ।” —कसजन बाब समाप्त कर घपना फुक बाटने लमा ।

बूढ़े बाबा बहने लने — तुम जितने घपनी दबा-बाक के लिये नारे तिम्बत में प्रसिद्ध हो बतने ही घपने जदार स्वभाव के लिये भी । हमारे बीसे तरीकों के तो तुम माठा-पिता ही नहीं साक्षात परमेश्वर हो ।

कसजन ने बूढ़े-स्वामी के उस धर्मिनदन की कोई पग्या नहीं की । बह घपनी बाबा में बहता बा रहा बा — “बड़े बाबा छ महीने लग घस घण्टा होने में पूरे छ महीने । उस धर्मिन म बह बिसकल एक ममा ही मशुप्य हो गया । उसके तमाम पाब ही नहीं पाबो के दिधान तक बड़ बए ।”

“सेकिन बसने तुम्हारे एहसान मुजा दिए ।

कसजन ने बूढ़े के इस पाछेप का बिना कोई सहारा लेते हुए कहा — “उत छ महीनों में हमने एक-दूसरे के स्वभाव को बूब घण्टी तरह पहचाना । किसी के सिख धर्मगुण पर ही ब्यात रखना मैं मशुप्य के स्वभाव की बारी कमबोरी मानता हूँ ।”

“क्या बहसा बिबा उतने तुम्हें ?”

“पैसा-कीड़ी कुछ भी नहीं बा उसके पाठ क्या बहसा देता ?”

“बीन में भी कुछ नहीं ?”

“नहीं बिलकुल घपने की घभाव कहता बा । सिकिन उसकी बिनभठा से धीर उसकी धकम-सूरत से मुझे उसके प्रति बड़ी प्रीति हो गई । सब से बड़ा गुण उसके भीतर लच्छाई थी । बह कहता बा किसी बहिया या भूनाम में उसके माठा-पिता धीर बसकी मु-घपति सब समाप्त हो बए थे । संसार के प्रति माठा-पिता का जो स्नेह-संबध होला है, बसका एक

बस भी उम नहीं दिमा बा । एक परोपकारिणी संस्था में उसने अपनी प्रायु के बर्ष बढ़ा लिए थे किसी तरह ।

“मैंने कमी नहीं देखा उसे ।”

“बहू मेरी पर-गिरस्ती के भीतर—अपनी सीम्यता से—उसका एक घंघ हो गया । बहू फिर सेना में नौकरी कर सेने के लिये कहने लगा । मैंने ही उसे नहीं जाने दिया । माता-पिता का प्रेम जिसने पहचाना नहीं था उसे मैंने भाई का प्रेम दे देना निश्चय किया । मैंने उसे अपना सगा भाई समझ लिया । मेरी पत्नी भी उसे मेरे ही समान प्यार करने लगी और अपना पति मानने लगी ।

‘तुम जो-कुछ उसे दे सकते थे तुमने बहू सब-कुछ उसे दे दिया फिर क्यों उसने अपना दिन अन्त्य काट लिया तुमसे ?’

‘मैंने एक कपड़े की दुकान खोलना ही उसके लिये । तीन बर्ष हमारे बीच में बड़े प्रेम से बीते । मैंने कभी एक क्षण के लिये भी उसमें कहीं पर कोई मिम्यता न पाई । धारम में कुछ दिन तक उसकी बीनी में कुछ बिबेसीपन पाया था पर छः ही महीने में उसका भीतर से मेरा सगा भाई बनने लगा । किन्तनी आसानी से उसने अपनी जन्मजात बीनी हमारी भाषा में भुसा दी । बार-बार मुझे यही ध्यान आता एक माता पिता से जन्म लेना से ही हम भाई नहीं होते ।”

बड़े दादा बोले—“अजीब हामल है इस संसार की ! कहीं पर इस में टिकाऊपन नहीं है । पेड़ की तरह से कोई बीज बढ़ती जायगी तो एक दिन आकाश को छूकर क्या देवताओं के भेद को न जान लेगी ? इसी लिये एक हृद के बाह देवताओं के आप से पेड़ सूख जाता है । लकड़ी कोबसे में और कोबसा फिर जिस मिट्टी से पेड़ बनता था उसी में समा जाता है ।”

‘मैंने पीछे की कमी कोई बड़ी कीमत नहीं लगाई थी न देवताओं को ही चरती पर सबसे बड़ा आदमी समझा । लेकिन मेरा बहू बीनी भाई, तीन साल तक बहू मेरे दिवालों के नीचे बसा रहा फिर

हुमा ? वह खूब धन कमाने लता । उसने धन कमाना ही पीछे जाना बुड़े बाबा उसने धन की कमाई को कोई चीज ही नहीं समझा ।”

‘उसकी तुम्हारी उमर में भी ठो फर्क होमा ।

‘हाँ बस बरस का फर्क है । धीरे हमारी स्त्री की उमर उसके गड़बड़क है इसीलिए उन दोनों की प्राणिक विष बन गई धीरे उन दोनों ने मुझसे छिपाकर एका कर लिया । मेरी कमी धन कमा करने पर नीयत नहीं रही ।

‘मैं समझ गया । उन दोनों ने तुमसे छिपाकर धन कमा करना शुरू किया होगा । भ्रमड़े की शारी बड़ ही बड़ है ।

‘उसके छोटे पति ने धपनी प्रियतमा की माता के लिये कुछ धूँबे धीरे कुछ मोठी कमा कर रखे थे । मुझे दिखाए नहीं थे कमी लेकिन मेरे देखने में धा पए थे । मैं इस बात को मन में रखकर चुप हो गया था ।

‘तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें पहनकर नहीं दिखाई वह माता ? उसकी धुन्धला की देखने का क्या अधिकार नहीं था तुम्हारा ?

‘नहीं वे दोनों यही समझते थे कि कलकल की सुन्दरता को समझने की दोनों पाँवें चूट चुकी है । बुड़े बाबा निरी हर तक वह बात भूठ भी नहीं थी । एक दिन मेरे पास एक बुढ़िया धपन एकलौते बेटे को लेकर आई । वह धाबुरोग से पीड़ित था । बुढ़िया के पास कुछ भी बाकी बचा नहीं था । जो-कुछ खेत धीरे खबर से वह सब बीने की दवा-बाक में खर्च कर चुकी थी । असल बात यह थी ठीक तरह से उसका इलाज नहीं हुआ था ठगों ने उसकी सपति लूट ली थी धीरे बेटे की बीमारी दिन-दिन खराब होती गई । कहीं से वह मेरा नाम सुनकर धा पहुँची । मैं क्या करता मुझसे उसके प्राँसु बरस नहीं पए । मैंने यथाशक्ति उसकी सहायता करने की ठान ली । बीमारी भयानक थी उस पर सवाइलों ने उसे धीरे भी खराब कर दिया था । मोठी धीरे धूँबे के भस्म को मिलाकर एक दवा मुझे मामूम थी । वह बिचायी कहीं से लाठी ? मेरे पास भी ठीकार न थी । बुड़े धपनी स्त्री की वह माता याब आई ।”

बूढ़े दादा बोल उठे— 'मैं भी कहूँगा हकीम जी का प को देखने को प्राँचें तुमने जरूर पँचा थीं ।

लेकिन उस बुढ़िया क बेटे को मैं जीवित ही देखना चाहता था । बूढ़े दादा तुम्हें ताज्जुब होवा मुझे बरा भी इस बात का समझ नहीं कि उसका बेटा मेरी बरा से भण्डा हुआ । भण्डा तो वह भयवान की ही बरा और धापीबाँद से हुआ सिर्फ एक निमित्त मैं बना और उस बुढ़िया को मरते समय सूखी देख सका—इसकी मुझे बड़ी खुशी है ।

'तुमने उस किस बरा से भण्डा किया था ?'

'उसी मूँसे और मोठी के मस्म के योग से ।

'क्या तुम्हारी स्त्री ने अपनी माता बधियान कर दी थी ?

'नहीं मैंने उसे बुरा लिया ।'

'ऐसा क्यों किया ?'

'मराने से वह कबापि न बेठी ।'

'जब उसे खोरी मानूम हुई तो क्या हुआ ?

'झूठ बोलने की मेरी प्रावत नहीं । जब वह खोली मेरी माता को गई तो मैंने कह दिया उसे फूँककर बरा में बचल दिया गया । वे होने मेरे साथ गाली-गलीब करने को तैयार हो गए । उसी दिन मुझे बीनी माई की सारी मुझीसता का मर्म मिला । मैंने उसे बताया एक निराचार बूढ़ा को मरते समय सूखी करना पत्नी के द्वार पहनने से कहीं बड़िया पीच है ।

बूढ़े दादा यक्ष्म होकर बाले— 'लेकिन इस मर्म को प्रबिक लोग कहीं समझते हैं ?

'जब उसी दिन से हमारे घर के भीतर दरार पड़ गई बूढ़े दादा बरार के उस पार के दोनों के और बरार के इस पार प्रकेता मैं । कुछ दिन तक मेरी और उनकी प्रापस में बातचीत भी बन्द रही । मैं इधर उधर बाँधों में चला जाता कभी भूमने और कभी बीमारों का बहाना बनाकर । मेरी अनुपस्थिति में उन्होंने न बाले मेरे विरुद्ध क्या-क्या

बहुमन्य रच आये । पहली बार मैं बो महीने बाद लौटा । प्रवास में रह जाने के कारण मेरा मन बदल गया । कुछ मैं उन दोनों की मायागी को मूल बना कुछ मैंने क्षमा कर देना उचित समझा । मैंने कोशिश की पहले ही के प्रेम को लेकर उनके साथ बिना । दो बार दिन ठीक बीते लेकिन फिर बीछ ही हमारे बीच में वही मेर मान पनप गया ।”

हमारा दिस काँच का बर्तन है उसके टूट जाने पर दुनिया के किसी भी मसाने से वह जुड़ नहीं सकता ।

“उसकी पहली छापी मेरे साथ हुई थीं वदे मेरा ही पक्ष लेना था । लेकिन वह मुझे धोखा दे गई ।

‘वह जमर में अपने दूसरे पति के निकट थी तुमने यह बात बता दी है मुझे ।

नहीं जमर का उठना पक्ष नहीं इसका एक बुराप धीर उबरवस्त कारण था । बीनी माई अपनी माता का धीर उसने स्त्री को भी उसका छापी बना दिया था ।”

बड़े बाबा हँसकर कहने लगे—“हकीम जी तुम्हारी यही पत्नी ही गई, धपर तुम भी अपनी जाना शुरू कर देते तो तुम्हारे बिचार खर उनके साथ मिल जाते । क्या वे सराब नहीं पीठे थे ?”

‘वह तो पीली ही थी बीनी माई को पकड़ी नहीं सकती थी । वह सबेरे अपनी ही माता का धीर उसका साथ देने के लिये उसने भी अपनी जाना शुरू कर ली । —कहकर कमजबन कुछ देर के लिये चुप हो गया ।

बड़े बाबा के मन में कौतूहल बढ गया । उसने पूछा— ‘फिर क्या हुआ ?”

‘हम दोनों समझ गए कि अब हमारे मन किसी तरह शूठ नहीं हो सकते ।”

बड़े बाबा ने कुछ बोधा धीर कुछ शान धान पर बाल दिए—“एक राता नाम धीर बना देता है ।”

तहीं घसी मत्री " कसजग ते घपती जीबनी के मूत्र फिर पकड़—
 "बीरे-बीरे बीनी भाई ने स्त्री के साथ न जाने क्या पड़पड़ किया मुझ
 उसकी बूकान में मास कम होता दिखाई दिया। एक दिन उमने कछ
 रेशम छरीबन के लिए बीन को प्रस्थान किया। उमने बोड़े ही दिन बाद
 भाई की बीमारी की बात बनाकर श्रीमती जी भी घपने मँके का घसी
 गई।"

सासे की बीमारी पर तो तुम्हें भी जाना चाहिए था।

'हाँ अब कई दिन हो गए तो मैं मया वहाँ घौर उमका सारा प्रहमंभ
 फूट गया। बीनी भाई जिस बोड़ को मोल लेकर बीन को क्या था
 वह बोड़ा मैंने घपती समुराम के एक छत में भरत देसा। मैंने इसका
 किसी से कोई बिक्र नहीं किया। दूसरे दिन मेरे सबसे छोटे सासे ने
 मुझसे कहा— तुमने बीबी को क्यों माराज कर दिया वह छोट जीजा
 के साथ बीन जा रही है। फिर तो सारी बातें मुझ पर कुम गई। मैं
 बिनड़ उठा। पटना पति होने के कारण अब तक मैं उसका परित्याग न
 करता दूसरे पति को कोई अधिकार नहीं था कि वह बिना मेरे राबी
 के उसे चाहे जहाँ से जाय।

बड़े दादा ने इस बात का घमुमोहन किया।

'मैंने उसी दिन पंचायत बुसाई। सबने मेरे ही पक्ष में फैसला दिया
 घौर मैं दूसरे ही दिन उसे लेकर सहासा को जमा।

"बीनी भाई कहाँ था ?

"समुराम में ही न जाने कहाँ छिपा बीठ था। —कसजग की ओरों
 भारी हो घसी थीं।

बड़े दादा ने उसके लिये घपने साथ ही बिस्तर लगा दिया घौर
 नाम बनाने लगा।

कसजग ने कहा— मझे क्या माजूम ! घसीम उसके पास बी ही
 घर से बसठे बरन उसने एक घीठी में बोड़ा-सा ठेप रक सिया था।
 हमारे मार्ग के दो पड़ाव तक कुछ नहीं हुपा तीसरे पड़ाव के घारम्म

होने पर मैं नहीं जागता रहने जिस समय अफीम तेज मिलाकर पी बिया और जब मुठ पर मेरा खुला तब बड़ी बेर हो गई थी। एक जग मूभ्य मिर्बंग में जब बर्ल का लूफाम रठ चुका का रहने मेरी बीप में प्राण त्याग दिए।”

विद्युत्ले पृष्ठ

कलत्रन की जाने सुनते-सुनते बड़े बादा को मीर या घई लेकिन कलत्रन की घाँसों में मीर कहीं ? बीजन के कुछ विद्युत्ले पृष्ठ को उठको मात्र उमटने पड़े थे वे धन ठिर घीर भी स्पष्ट हाथर उमकी घाँसो के घाये गाबने सवे ।

बहु स्वप्न नहीं था क्योंकि उममें बीजन का प्रतिबिम्ब था । बहु धर्म भी नहीं था क्योंकि उममें परिमाण न थे । स्मृति के परदे पर बहु धनीत की प्रतिध्वनि । कलत्रन उम बीबवार में घाँसों ब द किसे हुए देखा रहा था ।

बाहर सर्वत्र बर्फ बनी हुई थी जो घाग की पत्नी पाकर कहीं-कहीं बरों की छतों पर से टपटपा रही थी । धाकास में बाबल का कोई भी टुकड़ा नहीं था । ठारक बमक रहे थे ऊपर धीर बरती पर हिम की बादर के कारण बौदनी का भ्रम भास रहा था ।

कलत्रन के पिता एक साधारण स्मृति के व्यापारी थे । सिक्कम नेपाल धीर तिब्बत में एक जगह का मात्र दूसरी जगह से जाकर धपनी प्रहर करते थे । बमरियाँ धीर बकरियाँ उनके मात्र डोले की माध्यम थी । कुछ बसा-शाक धीर मूड़-फूँक का काम भी करते थे । नेपाल में ही उन्होंने विवाह किया था । कलत्रन उमी नेपाली स्त्री से पैदा हुआ था । बचपन ही में उसकी माता मर गई थी । पिता वेप-बिबेध ही में रहते थे । इस धन्नाथ में उनके भीतर एक धात्मनिर्मरता जाग उठी ।

धात्म-निर्मरता के सहारे उसकी कठिनाइयों से बेग्री भी हो गई । एक उदासीनता उसक मातस में फूट उठी बचपन ही से जब उसके पिता

व्यापार के लिये विदेशों में भूमते होते तो कसबजान ह्यूसा में अपने एक रिश्तदार के घर रूठा था। दिन में पाठशाला में जाता और सुबह शाम उनका यहाँ काम करता। जब उसके पिता ह्यूसा सौट घात तो उसे दिन में पाठशाला को त्याग कर उनके बानबर्से की जयल में बराना पड़ता था।

बड़े होना पर कसबजान को पिता के बालिग्य में कोई आकर्षण नहीं मिला। लेकिन उनकी बधा-बाक ने बकर उसका ध्यान लीच लिया। कसबजान में वह सड़कों पर से कायम के टकड़े बठोर किमी में नोयला किमी में ठीकरा और किसी में बालू पीसकर पुड़िएँ बीच भेठा और अपने साथी बच्चों को बीमार बनाकर उतका इलाज करता था। बाद को बीबन के लिये उसकी मही नृति बन गई। उसके पिता को जो कुछ मुचबो-सटके टोने-टोन्के मालूम थे उन्होंने वे सब बेटे को चीप दिए और कहते हैं वह एक बार नही हिमात्म पार करते हुए किसी घबसाघ के नीचे दबकर मर गए, किसी किसी का यह भी बमान है तिम्बत के डाकघो ने उन्हें मारकर दून लिखा।

बहुत दिन तक कसबजान पिता के सौटने की प्रतीसा करता रहा। वह नहीं सौटा। लेकिन उसके भीतर एक बरोसा जागता रहा कि उसका पिता जोबित ही है। फिर सौमों ने कहा कि सब उसकी घासा छोड़कर उसे जीविका के लिए कोई धंधा पकड़ना चाहिए। बधा-बाक से ही उसकी नधि भी और बीरे-बीरे उसी में उसको सफलता मिलने लगी।

कसबजान दुवा हुआ। विवाह के लिये उसके मन में कोई बधि नहीं जागी ऐसा कोई सम्बन्धी-जातेदार भी उसका नहीं था जो उसका विवाह कर देता। वह अपनी साबू नृति और बधाघों के लिये गानों में प्रसिद्ध हो गया। लोग उसे बिना घुब का सामा कहने लगे।

सिनेमा के परदे पर मामो कसबजान अपने जीवन के पिछले वर्षों को बड़ी स्वरित नृति से देन रहा था। नट ही बर्नक हो गया था। बर्ष विमट कर अगा में घोर विस्तार नलिष्ठ होकर बिहु में समा गया था।

कलजल को वह सुम्बरी बाला पाव भाई को भाव को उसकी स्वी
बनी । जब वह पहले-पहल उसके पिता के इलाज के लिए उनके गांव
में गया । कलजल की दवा और सुधुवा मध्यम हा गई ।

बीमार पिता घबड़ा होये पर बोला—“हकीम की तुमम मुझ घबड़ा
कर मेरे बाल-बच्चों की रक्षा कर ही इसका कोई बदला नहीं दे सकता
मैं । तुम्हारी इस मसममसाहूठ और इस मुझे जीवन को दबाकर मेरे मन
म बड़ी दया बाम उठी है । नहीं मैं तुम्हें सब स्वासा को घबरेले ही नहीं
बाने दूंगा ।

और इसी के फलस्वरूप कलजल को घाले बीमार की कन्या के साथ
बिबाह करना पड़ा । कन्या सीधी सारी उसके स्वभाव के ही अनुकरण
पी । बहुत दिन ससार की सीमा कलजल का उस बहू की छाया में ही
समाई जान पड़ी । वह पति की सारी गुहस्वी का भार उठाने लगी ।
घाम की बन्या एक शरु के सिय भी अपना समय व्यर्थ नहीं बितायी
की । उसने बलि की दिनचर्या में से उसका घाना काम अपने शिर-हाथों
पर उठा लिया और घाबा समय उसके लिये सबका सब का बनाकर रख
दिया ।

कलजल को न दिन में खोने की घादत थी न कही बीपड़ या ताप
खेलने की । वह लोगों के बीच में बैठकर न अपनी खेती बघारता था न
दुखों की निरा करना उसका काम था । पत्नी की निपुणता से जो समय
उसके लिये बच गया था उसका वह क्या करे ? मरुतस से उस बहूब
में एक प्रार्थना बहू—मानी मिनी की उसके जीवन हम में बदलाव
हूमा । जो गई, मरु, खेहूँ जो कूठ भी वह बहुत अपनी दवा-बाक के
प्रतिबान में पाता वह सब उसे ही बकती बनाकर घाटे या सलू के रूप
में पीसवा पड़ता था ।

शादी हो जाने पर उस बकती की मूठ पर उसकी स्त्री के हाथ पड़
बल और वह घुमावे लगा मानी—घोश्म मणि पघ हूँ !—घोश्म
मणि पघे हूँ ! एक मूठ भरती कर के पाठ को घुमाती की कुचपी में

सृष्टि का एक भ्रमने मया । जीवन के लिये दोनों ही प्रावश्यक हैं । एतन् पर ही सूक्ष्म का प्राधार है । घाटे घीर सत्तु पर से उठकर कसजन की कल्पना प्राकाश में मँडराने लगी । इस प्रकार तीन वर्ष बीत गए । ये तीन वर्ष उसके जीवन में बड़े सुख के थे । इसीसिये उन्हें बीतने में कोई बेर नहीं लगी ।

उस रात को उसके दिमाग में उनकी पत्नी घीर शोनी भाई यही भ्रम रहे थे । उन तीन वर्षों के बीत जाने पर कसजन के जीवन में एक नई दिशा प्रकट हुई । उसकी कल्पना में शोनी भाई का वह प्रथम प्रवेश उस रात को वह विशाल प्राकार में फिर आय पडा । उसने सोचा वह उसी की दया थी । दया प्राजीव रूप रखकर उसन उन इस लिया ।

उसने शोनी भाई को अपने घर में लपहु बी । उसकी दया शीर भोजन होने का प्रथम उसको दयालुता ने अपने कंधों पर ले लिये । शोनी भाई धीरे-धीरे, कसजन के मानस में तो भ्रम-मिस बना ही था उसके घर में भी समा जाने लगा ।

सिर्फ दो कमरों का था मकान । एक में उसके सोने शीर खाने-पीने का प्रथम था भ्रमने में उनकी बैठक । एक सन्मूक में कुछ दवायों की पीसिया की कुछ किताबें । ऊपर बगिचों में बेबी बड़ा-बुटियों की बलियाँ लटायी थीं । एक तख्त पर कुछ बैर गायों हिरन शीर बक रियों की बालें बिछी रहती थी । उसमें कसजन कभी दया भोट्या शीर कभी मानी बुमाता था ।

शोनी भाई का बही कमरा दिया गया । वह बटना न-जाने कर हुई कसजन को वह उसी रात की भी जान पड़ी । उसी तख्त में लिटा दिया गया शोनी भाई । कसजन शीर उसकी स्त्री दोनों उसकी सेवा सुसुया में लगे । हकीम ने अपनी स्त्री से ताकीद कर कहा— 'देखो इस बीमार को एक शब्द के लिये भी बिदेयी । बिजातीय शीर कोई प्यतनु मनभोगी तो फिर वह पश्य न हो लनेया । जो दरजा मेरा है इस पर मैं बही इत घटियि का भी होया ।' स्त्री ने पश्यरघ. पति की उस प्राजा

का पालन किया।

बीनी माई इत गति से घण्टा हो जाता। वह जलन-फिरने लगा। वह हँसने-बोसने लगा। उन बानो कनरों के बीच में जो द्वार था वह आरे की जालु धाने पर बन्द कर दिया गया। बीनी माई के मन में कोई येद बाध न कम जाय उसे साफ कर देने के लिये कलबन ने उससे कहा—“बीनी माई अगर यह बीच का दरवाजा हम धात्र से बन्द कर लें तो हम दोनों की ठंड से रक्षा हो जाय।

ऐसा हो किया गया। उस दिन से बीनी माई के मन में बकर कुछ प्रसमंजस बस गई। उधर कलबन ने एक दिन अपनी बर्मपत्नी से कहा—“बीनी माई बहुत घण्टा धात्रमी है बीसे लेकिन फिर भी तुम्हें उसके साथ मतलब क बाहर की ग्याशा बाते करन की बकरत ही क्या है?” स्त्री के मन में सा एक कौतूहल उपज गया उसी दिन स। बीच के द्वार के बन्द जाने से वह उस बीनी माई का देखने के लिय व्यग्र हो उठी और उसके साथ क मुक्त संभाषण के लिय मुक्त के बन्द हो जाने से और भी वह उसके लिये सामायित होने लगी।

फिर कुछ दिन बाद—उधर कलबन ने उसके लिए कपड़ की दुकान नहीं खोली थी—एक दिन जब वह कुछ देर में बाजार से सौट रहा था उसने उन बानों की द्वार के बाहर एक बीवार की सौट में बहुत निजट स कस बुसपुसाहट करत सुना। उस पर नजर पड़ते ही दोनों चित्ता उठे—“कामा बाब !”

“कामा बाब ? कहाँ ?”—कलबन ने पूछा।

बीनी माई ने जबाब दिया—“मेरे कमरे में बुस धाया। धरर यह बीमती भाकर छोर न मचाती तो वह बकर मेरी टाँव बसीट से गया होता।”

कलबन बड़ी छोर से हँसा—उसने उसकी पीठ पपकपाकर कहा—“बीनी माई, यह बाब हमारे मन ही के भीतर है। जलो में उस बाब को भगा देने के उपाय कर्हना घनी।”

कलजल की पत्नी कुछ धरमा-झी गई। उसने उद्यते कहा—“धरमाने की क्या बात है ? छिपने धीर छिपाने की कृति ही तो पाप है। पाप से बढ़कर भयानक काम धीर कौन हो सकता है। बाप हमें घर के बाहर बायस करता है, यह हमें घर धीर बाहर योग्य जगह।

सब भीतर को चल। बीनी भाई अपने कमरे को धीर के दोनों पति-पत्नी अपने कमरे को। कलजल ने कहा— बीनी भाई धाक से जब तुम इधर से भी अपने कमरे को जा सकते। पत्नी इधर ही है।” उसने बीनी भाई का हाथ नीचे लिया धीर उधर ही से उसे अपने कमरे को ले गया।

भीतर जाकर उसने बीनी भाई को अपने पास बैठाकर कहा— बीनी भाई बिनासबात से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है। जो मैं इस बीच के द्वार को लोभ देता हूँ कि जब कभी अचानक बाप आ गया तो तुम दोनों को एक दूसरे की सहायता के लिए जाने से सावधानी हो।

इसी समय बाहर से आवाज आकर कोई आवाज और पुकारने लगा— ‘हकीम की हकीम की।’

कलजल भीतर से बोला— ‘अभी जाता हूँ।’ इसके बाद उसने बीनी भाई से कहा— ‘मच्छ सिनहीं से मुलात यह घाबरी आया है। अपने-अपने बिनास की बात है। स्थास में धीर भी इतने योग्य पुरुष हैं, उतने जब मुझ ही बुलाया है तो मुझ तुरन्त ही उस बीमार की औषधि के लिये जाना चाहिए।’

उसकी पत्नी कुछ कहने लगी। बीनी भाई भी मुँह लोमने लगा। लेकिन कलजल ने दोनों का चुप रह जाने का इरादा किया। तुरन्त ही अपनी औषधियों की बीनी उठाकर बाहर गया धीर छोड़े पर सवार होकर उस घाबरी के साथ बस बिना।

पत्नी ने बाहर आकर घाबराई की— ‘कब आओगे?’

‘बस-बाहूँ बिन तो जाने-जान के ही हूँ, चूना बितने दिन भी

पड़े ।

बीनी भाई बोला— 'बस्वी घाना ।

कलबन जाते-जाते बोला— 'डर की कोई बात नहीं बीनी भाई मैं बह दरवाजा खोल दिया है, जो तुम दोनों के बीच में सामान के भेज उठाए हुए था ।

वास्तविकता में न-जाने क्या था पर कलबन कई वर्ष पहले की उस दिगर्भी की यात्रा को थोड़े पर बढ़कर तय करते हुए देखने लगा— कुछ देर तक बीनी भाई और उसकी स्त्री ने हुकीम जी को सिवर्धी की ओर जाते हुए देखा । एक मनुष्य उसके थोड़े व पीछे-पीछे उसका सामान लिए हुए चल रहा था और एक जलती हुई लामटन लेकर धावे-धावे । उन दोनों ने घापस में बातचीत कर निश्चय किया— 'बढ़कर धाव हुकीम जी को किसी बड़ी जगह से ही बुलावा भेजा है । इस समय तो वह एक ही थोड़े पर जा रहे हैं । घाटे भक्त कह थोड़ों के साथ धावेन और हर एक में ऊई तरह का सामान लदा होना ।'

कलबन धावे को बड़ता गया पर उसकी कल्पना पीछे अपने घर पर देख रही थी । बीनी भाई ने कहा— 'हे सुन्दरी धब कब तक तुम हुकीम जी को देखती रहोगी ? वह धब उस जूने और गेरु से पुटी हुई कुरंगी बीवार की घोट में चले गए हैं । उनके चाकर के हाथ की लामटन का प्रकाश भी धब छिप गया और कुछ ही देर में पटी हुई गर्मी पर से उनके थोड़े की टापों की ध्वनि भी भिंट जायगी । जलो हिमालय से घानेवासी ठंडी हवा का बंध बिज्जू के डंक से क्या कम है । हम भीतर जैसे और बाहर का द्वार बन्द कर दें । हुकीम जी की उदारता के बसु धावे क्योंकि वह बीच के दरवाजे को हमारे लिए धाव खोल गए हैं ।'

सिम्वत की बाना ने कहा— 'हे बीन के सिपाही तुमने मेरे पति के प्रेम में कौसे हिम्सा पा लिया ? मैं तुम्हारे उस अनुराई को ईदती फिर रही हूँ । मैं यात्र की एक भोली भाली लड़की जैसे उस मेव को पा सकूनी । प्रवर तुम स्त्री होते तो मैं तुम्हें अपनी घात बनाकर अपनी

घाँसों में रख सेती सिगर्बों की इस लम्बी यात्रा में मेरे पति रात के पैंधेरे में जा रहे हैं बैठा उनकी रक्षा करें। मैं दरबाजा बन्द कर देती हूँ क्योंकि उनकी मूर्ति मेरे हृदय में ही है। जसो हम दोनों मिलकर उनकी कठिन यात्रा के संयम की प्रार्थना करें।

द्वार बन्द कर दोनों घर के भीतर चल पड़े। तिम्बल की बाला अपनी छाया में पत्नी गई और बीनी माई बैठक में अपने तख्त पर।

कुछ देर तक तिम्बल की बाला ने बूस्ते के मरम घूमल को कुरेदकर अपने हाथ सेके ठिठ उस पर चाप रख बी घोर कहने लगी— हे बीन के सिपाही तुम बड़े मतलबी बान पड़ते हो। कम्बल में छिपट कर उतनी दूर कहीं बैठ गए ? उनके इस बीच के द्वार को बाल देते का मतलब क्या तुम्हारी समझ में आयेगा ? घायो हम उनकी यात्रा के लिये यहाँ एक छाप बैठकर भवबान से प्रार्थना करें। जितने अधिक मन प्रायना में जुबते हैं उतनी ही अधिक उसकी दक्षिण बढ़ती है।

बीनी सिपाही यहाँ घायो और इन दोनों ने हकीम जी की यात्रा की सफलता के लिए प्रार्थना की। बीनी प्रार्थना के अनन्तर फिर अपने कमरे की घोर जाने लया। तिम्बली बाला बोल उठी—“उतनी दूर पर का वह तख्त ही क्यों तुम्हें इतना प्रिय हो गया। प्रब तुम बीमार मी नहीं हो कि तुम्हारा बाला तुम्हारे तख्त पर ही बिना जाय। घोर तुम्हें बाहर से घूमकर भी गही घाना पड़ना क्योंकि जिस घाँस पर तुम्हारी घाँसला बंध गई बी उतने सुलकर दोनों द्वारों की बाँहों को घायो कर दिया है।”

बीनी सिपाही मुठकपकर बही पर बैठे रह गया।

बाला कहने लगी—“उनके लिये भी मोजन तैयार था लेकिन वह सिगर्बों के नामा के घटिबि होने के कारण घोर भी मूस्वबान घोर स्वादिष्ट भोजन के घटिकारी हो गए हैं। हम उनके हिस्ते को बाला बचाकर किसी भूखे प्राणी को दे देंगे। वह तुम्हें पाकर बी घायोबाँह देना उचछे उनकी यात्रा के तयाय संकट दूर हो जायेंगे।”

बीनी ने घुपा के भीतर से अपना फूक बाहर निकाला और उसे अपने सामने रखा ।

बाबा बोली— 'हे बीनी मुबक जिस तरह बीम की आय और तिब्बत का मकान मर्यादा में मचकर एक मन और प्राण हो जाता है ऐसी ही आय की रात हम दो प्यालों में उसे पीकर कोई भिन्नता न सपनावेग ? क्योंकि इस गृह का स्वामी बड़ा उदार है । वह बीच के द्वार को उन्मुक्त कर घुपा शिगर्जी के मठ में बाहर का घाघन पाने को बला गया है ।'

दोनों एक ही प्याले में से आय पीने लगे । बीनी कहने लगा— 'मेरी समझ में बूढ़ इतना उतरनाक नहीं है जितना मूठा ।

भीतर जब ब दोनों बारी-बारी से इस प्रकार आय पी रहे थे उस समय बाहर फिर लौट आया वा कलजग ।

घर से कुछ दूर जाने पर न-जाने कसबन को क्या याद आई उसने अपने घाघ के सबक से कहा— 'भाई एक बीसी बवापों की घर ही मूल आया है, उसे के घाना बरूरी है ।

बोड़ा लौटा दिया गया और नासटेनवाले सेबक ने भी अपनी दिला बरस बी । कसबन अपने घर से कुछ दूर ही बोड़ा छोड़कर पीयल वहाँ जा पहुँचा । उसने घुपाघाप लकड़ी के तख्तों की बरजों पर से भीतर झँका । उसने देखा, वे दोनों एक ही फूक से आय पी रहे थे ।

बाबा कह रही थी— 'उस गृह-स्वामी का मार्ग कंटकहीन और माना बिजयिनी हो जिसने इस बीच के द्वार को खोलकर इन दोनों कमरों का मेव मिटा दिया ।

और बीनी घिपाही समर्पण कर रहा था— 'और उस गृह-स्वामिनी की बम ही जिसने दो फूकमों को एक कर उसमें दोनों घूँटों की संधि कर दी ।'

कसबन न बाहर से देखा और घुना । उसके दोनों हावों की मुहूर्त्ता होने लगी ।

इसी समय भीतर चीनी बोला—“मैं बीमार था उसने मुझे पहुँचाने की मेरी छिद्र के ऊपर कोई छत नहीं थी उसने मुझे अपने घर में आश्रय दिया मेरा बुनिया में कोई न था उसने मुझे बड़ भाई का रिश्ता दिया। उसकी जब ही उसने बड़ बीच का द्वार खोलकर मुझे अपने कमरे में बसवा दिया।”

बाहर लुत्तेवाले कलबन की मुट्ठियाँ अपने-घाव खुल गईं। वह नीट गया और अपने साथियों से कहने लगा—“सैतो मैं पहले ही से था। ऐसे ही घर में एक भ्रम उपज गया। जलो।”

सब फिर पहले की तरह अपनी भाषा में बहने लगे।

भीतर बोलनेवाली बाला ने सावधानी से अपने होठों पर हाँक डालकर कहा—“कोई है बाहर।”

“तुम्हें वह कैसा नम आया गया? बाहर कोई भी हो। इसे मुह स्वामी की अनुमति प्राप्त है। हम अपने घर के भीतर हैं और हमको आस-पास कर डालने वाला बीच का द्वार विमुक्त है सुन्दरी अब हमें बाह्य का कोई भी भय नहीं है।”

सुन्दरी इसने लपकी। भोजन समाप्त कर चीनी मिपाही अपने ठक पर सोने लगा गया। एक कोने में बोबिसत्व की प्रतिमा के पास एक ची का दीपक जल ही रहा था।

सुन्दरी ने पूछा—“चीनी बुद्धक।”

“नहीं सुन्दरी अब का कोई भी आचार नहीं है।”

“आड़े का तो है। तुम्हें क्या नहीं लगता?”

“लगता तो है बड़ बीच का द्वार खोल देने से बकर बड़ गया है।”

“उपाय कुछ सोचते क्यों नहीं?”

“बीच का द्वार बंद नहीं किया जायगा। इससे हम बूढ़-स्वामी की आज्ञा को तोड़ देंगे। उनकी पीठ पीछे यह बात बोल नहीं जाय सकती।”

“तो फिर हम अपना खोबना-बिछीना एक कर लें।”—सुन्दरी ने कहा।

मिपाही चौक पड़ा—“तुम्हरी ?

हाँ बीनी युवक ! मनुष्य के बनाये हुए ज्ञापके हर जगह प्रलय घसग है । क्योंकि सभी जगह एक-मे है । यह मकाम भयवान् का बनाया हुआ नहीं है । हम इसका दरवाजों को खोलने-बंद करने में बुरा मुस्तफार हैं । घोर में तुमसे निश्चय रूप से कहती हैं धमक हम अपने कंबल एक कर लें तो इस बाहर के डार की भी हमें कोई चिंता नहीं है । इसे भी खोल दिया जायगा तो सर्दी नहीं सता सकेगी हम ।”

‘सर्दी भी कुछ न कर सकेगी घोर ताया का भी कोई डर नहीं लेकिन बाब का क्या होगा ?’

ज्योंही वे दोनों उन बृहत्तों को मिला रहे थे । धाबी-धाबी नींद में जग हुए कलजन के मंह से उम कल्पना को देखते हुए एक बीक सी निकली ।

लोगा हुआ बुरा बुरा-स्वामी जाग पड़ा उसने कलजन को मस्तुमोर कर कहा—“हकीम बी ! हकीम बी ! क्या हो गया तुम्हें ?”

“कुछ नहीं एक बराबता अपना देखा मीने ।

“तुम्हारे मन में मय कुछ पया है पत्नी की मस्तु का । संसार ऐसा ही माघवान है तुम्हें इस डर को निजाल देना चाहिए ।”

‘हाँ बाबा !’ बनी उराधीनता से कलजन बोला ।

“कितना समय हो पया होगा ?”

धाबी राउ ।”

बड़े बाबा ने करपट बरतकर कहा— ‘हाँ तुम्हारा अनुमान ठीक है । वो बजे से फिर मेरी नींद टूट जाती है ।’

“मुझे तो बिलकुल नींद ही नहीं पार ।

“फिर के मारे । बीनी माह का क्या करोग ?”

‘बहु अच्छा धारमी है मैं उसकी कोट को समकी अच्छाई की घोर में छिया देने को तैयार तो हूँ लेकिन वह न-जाने क्यों मेरे

से बर रहा है।”

“बहु चीज नहीं क्या ?

“नहीं क्या । उसका पीड़ा मैंने समुदाय में देखा ।”

“बहु दूसरे बोड़े में नहीं जा सकता क्या ?”

“नहीं ।”

“उसकी दुकान का क्या होगा ?”

“उसकी दुकान बंद है ।”

“बहु उसके लिए तो धायेगा तुम्हारे पास ।”

“मैंने कह सकता ।

“तुम इसे माफ कर दो तो धायेगा ।”

मैंने इसके लिए कोई क्षम मम में क्या नहीं किया है ।”

“यही ठीक है । इकीम बी सो रहो धमी रात बहुत है ।” — बड़े बारा ने फिर मोने की बेपटा की घोर बोड़ी हेर में उनकी नाद बनने भी मयी ।

येकिन कलजल फिर वसी धमरवा में रहा । बहु न बागुति ही बी न स्वप्न ही । उसमे देखा बीनी भाई फिर बीमार होकर उसके पास धाया घोर बाबा— “बड़े भाई मुझे माफ कर दो ।”

कलजल ने उसे छाती से समाकर कहा— “तुमने मेरा क्या बिगाडा है ?”

“मैंने कुछ नहीं बिगाडा ; मैं फिर बीमार हो गया । मुझे धरणा कर दो ।”

“धरणा कर लूँगा लेकिन मैंने घोर मोठी की माया कहाँ से धायेयी ?”

“बीमती के मसे से निकाल लाऊँगा मैं । बहु कहाँ है ?”

“बीमती कहाँ है ? मैं नहीं जानता बहु तुम्हारे ही छाब तो मारी की बीम को ?”

“नही बहु मेरे छाब नहीं मारी । उसने मरसे ताफ लपरी में कह

बानों के बीच में घमकून्ड बीती में वह जाने को लैय

‘घर छोड़ी बात है तो फिर मूँसे घोर मोटी क
 लिये एक धीरज बानी पड़ेगी। बीती माई इस बार
 से साबी कर क्योंकि बिना धीरज के माता नहीं घोर माता क
 मूँसे-मोती नहीं घोर बिना उनके किते फूँककर बसा बनाईमा ?

बीती माई बोला—“नहीं बडे भाई यह बात घसमक है। मैं
 तुम्हारे देस में परदेसी हूँ कोई भी नहीं पतिमाता मुझे।”

‘जमर का बेलकर जमर पतिबाती है। मैं घर बुकाने की घोर बीड
 रहा हूँ। मेरे पास कोई संपत्ति भी नहीं कि किसी के सासब बडा सकूँ।
 कितने ही बीन के लौबागर यहाँ भीजूर है उनके मुहस्ते में जाकर
 तुम्हारा यहाँ परदेसी हो जाने का डर बसा जाबना। क्या तुम्हें वह
 मामूम नहीं है बीती कुमारियों की बलटन की बलटन अपने-अपने पतिमा
 की लयाप में यहाँ निकलतो है।”

‘भूठी बात ! बिलकुल भूठी बात !’—बीती माई बीज उठ।

कलजम की लंघा मंग हुई। उसी करबट बवभी। सुबह की छीठल
 पवन बहने सपी बी घर सवे जरा गहरी नीर प्राप्त हुई, सपनों में
 भी कुछ अधिक स्पूनता प्रकट हुई। वह देस घीर कास का प्रतिष्मण
 कर लहासा का पहुँचा। अपने पर का बरबाडा उसने लटबटाया। उस
 की स्त्री ने उठकर द्वार खोला घीर बोनी—“बापो लघ वस्त में सी
 लो अपने बैठक में।”

कलजम परेन भुकाकर वस्त पर जा बैठा घीर उसकी स्त्री कहने
 लगी—‘जाता जाने के लिये लहर से घूमकर घाना। मैं इस बीच के
 द्वार को बंद कर देती हूँ। उसने बड़ी घोर से दरवाजे मिड़ाकर साकल
 गया बी।

उस घाबाब से कलजम की नीर टूट गई। उसने देसा सुब की
 प्रात-अभीन सुनही किरसों से बूँडे बाबा का कटीर उग्रासित हो उठा
 पा। सेवीठी बर बाय खोज गही बी घीर वह सपिन में कलजम के बरनों

को भूप में फँसा रहे थे ।

बाप पीकर कलबन बोला— 'बूढ़े बाबा अब मुझ जाने की इजाजत दो । मेरा मन जम्बी ही म्हासा पहुँच जान क तिये बेचैन है ।

'कपड़े तो सुल जाने दो । बड़ी धन्डी भूप है आज ।'

'रास्ते मर रहेनी भूप । करीब-करीब कपड़े सुल ही गए हैं जो कसर बाकी है वह पहले-पहले ही निकल बाएगी । मेरे मन की हामन तुम्हें मानूम ही है ।'

'इसीलिये तो कह रहा है दो-चार दिन धीर यहाँ रहकर अपना दुख मुला जाओ । —बूढ़े बाबा ने बड़े धामहपूर्वक कहा ।

लेकिन कलबन नहीं माना । बूढ़े ने फिर हठ की— 'अब तुम्हें किस बर-बार की चिंता है ? मेरी समझ में तो अब तुम्हें जमह-जमह भूमते-फिरते रहकर बिना किसी लोम-सात्व के लीगो का कस्याण करना चाहिए ।

"बादा ऐसा ही करता पड़ेगा । बर-बिरस्टी का जो कल अबरोप बचा है उसका फँसला कर घाटा है । जीनी भाई के साथ एक बार भेंट करनी जरूरी है ।"

'तुम तो कहते हो वह यहाँ नहीं है ।'

'लेकिन यहाँ पायेगा वह, उसकी डूकान है यहाँ । उसकी स्त्री के बच्चे हुए खेबर है मेरे पास । इनको लेकर मुझे क्या करना है । ये जमे लीटा भूमा ।'

कलबन किसी प्रकार नहीं माना । बूढ़े बाबा ने पाँच में से पाड़ा ला देने को कहा लेकिन वह पौरस ही जला गया । बहुत दूर तक बाबा जमे सात्वना देता हुआ पहुँचा घाया । शीघ्र ही फिर उनका प्रतिनि बनने का बचन लेकर बूढ़ा बाबा लौट आया ।

उत्तरी भारत में

उत्तरी भारत में शेरब के पिता की पत्नी जमींदारी थी। उसके पर्याप्त नुक़ घोर परबर्ष था। लेकिन उसे सुखी होना नहीं बसा था। वह अपने माता-पिता की एकमात्र सताम था। घर के भीतर बड़े माइ-प्यार से उसका सामन-बामन हुआ था बाहर भी बनी प्रभु का बेटा होने के कारण सनी लोप घनक सामनो से उसका भावर करते थे शीर उमे अब देते थे।

बुद्धि का तीसरा था शेरब लेकिन ठीक समय पर ठहर नहीं सकी उसकी समझ। जेन-कूच मिथ्या बाहार बिहार जीवन की ठडक-मडक नर के नीतर ही से शुरू हो पड़ थी बाहर संगति ठीक नहीं मिथी।

पढ़ने-लिखने में प्रीति न रही। उसे बेपार समझ उसने डिपनेन चाय शीर तासों में जीवन का मार्ग चुनना शुरू हुआ। बीरे-बीरे स्कूल सूट गया शीर ध्यस्तन बड़ गए। माता-पिता के उपदेश प्रभावहीन हो गए। उन्होंने कुछ कठोरता शरतनी धारंम की तो घर से ही धायब रहने लगा। कई-कई दिन हो जाते उसे घर की चकन देखे।

शेरब की माता उसके पिता को बोय देती कि उन्होंने ही उसे तिर पर बड़ाया शीर उनके पिता उसकी माता का ही कसुर बताते। एक दिन उन दोनों पति-पत्नी ने धापब में समझौता किया।

पति बोये—“देखो शेरब की माँ! धपरधध न मेरा है न तुम्हारा पगर हम बेटे के बिगड़ने के कारण को ही झूठे रह गए तो धनी जो कुछ समझ है उसके सवार का बहु भी हाब से चला जाववा, फिर लकीर पीटने से कुछ हाब न बाएगा।”

पत्नी की समझ में बात धा गई। वह बोली— 'हाँ जब तुम रोह पर धाए हा। तुम तो छूट उसके बिगड़न की सारी जिम्मेदारी मेरे ही ऊपर रब बैठे थे। जब मेरा अपराध नहीं है तो फिर तुम्हारा ही क्यों हो? तुम्हारे एक नङ्का बम-सर्पिल की कमी नहीं तुम क्यों नहीं उसकी समाय जिवें पूरी करठे? कसूर किसी का नहीं माम् का है।

"माम् को भी हम बना सठे हैं। मेरे पास काछी पैसा है, मैं माम् पर भी जैसा चाहूँ वैसा रग पोतकर ससे बमका सफ़टा हूँ।

"फिर कोई तरकीब सोचो न जिससे यह नङ्का हाब में धा जाय। इसने तो सारे सहर में हमारी हँसी उका बी। बुबयनों की बत धाई।"

"यिछने बिना यह कैद-बक्स का तासा ठोबकर न जाने कितने स्पए निकाल न गया। एक महीने बाद बंबई से मौटकर धाबा वह भी जब एक-एक बाने की बहाँ मोहूताज हो गया। मझे सब माम्म है कौन बहूका से गया इमे।

"कौन?"—बीरे-बीरे उसकी पत्नी ने पूछा।

बताऊँमा समय धाने पर।" कुछ सोचठे हुए पठि बोसे— "इठना बड़ा कसूर किया। बताओ एक भी नफ़र कहा मीने कुछ सठसे?"

"कुछ तो कहुना चाहिए ना।

"धरे क्या कहता! क्यों कहता? सुनती नहीं हो तुम? वह कहता है किसी को धयिकार नहीं है बत को ठिबोटी में बंद करके रल बे। यह नरी की धारा धौर बबन के भोके की तरह बिना किसी इकाबट के बछती पर बहठे रहने की चीज है।"

"फिर क्या होगा जब तुम्हारी बात नहीं सुनता तो धौर कितका कहा मानेगा?"

"बहुने-सुनने का खमाना क्या धौर उसकी जमर भी। धब तो कोई धौर बात सोचनी चाहिए।"

"धना-सिखा नहीं इसने। बचपन में धरी संघट से धरी भोका समने

उसे ।”

“पढ़ने-लिखने से भी क्या होता है ? समझ लेलती मही हो तुम उसकी ? बहस में कोई जीत नहीं सकता उससे ? बुनिया की हर बड़ी घटना की खबर उसे रहती है । भक्तवारा का कीड़ा घोर मिनेमा का घोलीन । उनके पैसात उनकी बातचीत की सीनी देखकर कोई मही कह सकता कि यह सिर्फ नीचे बरजे तक ही पड़ा है । फिर तुम जानती ही हो सोने में सुर्गबि मही होती ।

“बंबई या कलकत्ते के किसी कमिज में भेज दो इसे । जितना बाजिब खर्च ही इसे दे दिया जाय । मेरा गलमब है इसका मन बही है । वही भेज देने पर पढ़ने-लिखने में मही लय सकेमा जी ? पत्नी ने पूछा ।

“भूटे में जाय पढ़ना-लिखना । ऐसा बड़े-बड़े पड़े-लिखों को नीकर रक्त सकता है । वही धमर यह निष्पाचरों के फेर में पड गया तो फिर बेंडे से भी हाथ खो बीठोनी । बुरा जना जैसा भी है धीनों के घाते सब ठीक है ।”

“ममबान् जार्ने क्या होया ? —बड़ी निपसा के स्वर में पत्नी ने कहा ।

“मेरी समझ में एक बात धाई है उससे बढ़कर वृषण धव धीर कोई इसाज मही है ।”

“कहो भी तो ।

“एक सुन्दर लड़की हुंकर इसकी साठी कर ही जाय ।”

“यह तो मैं कम से कह रही हूँ, पर तुमने सुना ही मही ।”

“धव बहदी करनी चाहिए । मुख्य बात लड़की सुन्दर होनी चाहिए । मुझे किसी के बहेज का नामज नहीं है । ममबान् ने मुझे काफ़ी दे रखा है ।”

“मेरक को भी राबी कर सेना चाहिए ।”

“उसकी राजी कौसी ? मैं उसका पिता हूँ । मैं वही कहूँगा उसको

करता होगा। अधिक-से अधिक उसे बहु की फोटो दिखा बी चाययी।”

पत्नी ने कहा— “सूचना तो देनी ही चाहिए उसे।”

“कूछ नहीं। तुम इससे अपने पक्ष की दुर्बलता दिखा दोयी।

“कहना तो चाहिए ही। फिर तुम ही कह देना किसे” बतुराई से।”

“देखा चायगा।

“सफल हो जाये तो।”

सफल होने कैसे पड़ी? होधिमार बहु ईड लेने की बात है। ठमी उसकी नाक में ऐसी गकल पड़ेयी कि इधारों पर राइट-सेफ करे।”

यह अपाय पत्नी के मन में गहरा पड़ गया था। बहु की अपस्थिति से सुने घर में कहम-नकल हांभी यह साब पूरी होने के सिवा बेटा ठीक राड पर या चायगा। इन बातों को याद कर माता के हृदय में एक नया धानव छा गया थीर बहु इस खबर को बट पर प्रकट कर देने के लिये साकुस हो उठी।

धाम को जब भीरव चाय पीकर बूमने को या रखा था उसकी माता ने उसके कमरे में जाकर बड़ी प्रीति क साथ कहा— “भीरव।”

बड़ी कसाई से उसने जबाब दिया— “यया कहुती हो?”

“बेटा तुम्हारे ही हित की बात।”

हो गया फिर, सीटकर धाम पर कहना। इस समय मुझे डेर हो प्यी है।”

“मेरा ककरी काम है।”

“मेरा भी तो मुझे बलब म जाना है। हमारा जामा हो रहा है।”

“तुम फिर या सफ्टे हा नहीं। ऐसी हठ टिक नहीं है। जब तुम तबाने हो कुक हो। तुम्हारे पिता तुम्हारे लिये एक मुम्बर बहु की लोम में है।”

“किसलिये?”

“विवाह के लिये थीर कित लिय।”

“उसकी धारक्यता ही क्या है ?”

“मनुष्य का धर्म है वह धीर क्या धारक्यता होगी है उसकी ?”

“मैं ऐसे धर्म को नहीं मानता ।

“किर तुम किस धर्म को मानते हो ?” माता ने तेजी से बाहर को बाते हुए पुत्र की बांह पकड़कर कहा— “तुम्हें जवाब देना हीमा ।”

“हर एक धाबाव है ये सब व्यक्तिगत प्रारण है ।”

“यह धाबादी नहीं कही जायगी ।

‘सूब । धाबादी तब इधी का नाम है ? तुम अपने पसब की किसी छोकरी की चोटी मेरी चुटिया से बाब दोगी धीर हम जगम मर रोने कड़ने के मिये छोड़ दिए ज येन ।

ऐना क्यों होया ?

“अरु ऐसा ही होया ।

‘कनी न होया सब दृष्टिकोशों से सुम्बर । अप रंग विधा विनय पन-सम्मान बाति-मृत सब कृष बेसकर माउपी मैं धपनी बहु ।”

‘जन-सम्मान की तावठ से बहु जो कुछ सोमों मे संसार के उग्म्वल पक्ष धपने काहु मैं कर भिए है यह धब धविक बिग तक ठहरनेवाले नहीं है । सब का जन समान हो जाववा । रहु पर्ये बाति धीर कुन की बात ।—मगवान् ने सबको एक ही सा पैदा किया है । जमड़े मे कर्क हो सकता है सहु सबके सात ही है ।”

‘बेटा ऐसी बातें नहीं करते । विपाह से पहले बहु की छोडो तुम्हें रिखा बी जायगी ।”

“मैं किसी की छोटी नहीं देखता ।”

“तुम्हारे पिता भी ने ऐसा कहा है ।”

“हूँ हूँ ! मुझे पारी नहीं करनी है ।” — कहकर भैरव लखा गया ।

माता ने मम-ही-मम कहा— “नैसे नहीं करेया पारी ? संसार का धर्म है । यों ही बक रहा है ।”

संभ्या हुत पगों से छा रही थी । जन्वी-जन्वी पैर बढ़ावा हुधा धापवा

जा रहा था भैरव भी। चौड़ी सड़क छोड़कर वह एक ठग घोर मैसी यन्त्री के भीतर बस गया। वहाँ कहीं उसका कसब था ?

द्वार-उपर देखकर वह एक इन्फर्मिजिबल खपरैल से छाए मकान के भीतर बस गया। बाहर के कमरे में एक प्रोवा सातटेन की चिमनी साफ कर रही थी। भैरव को देखकर वह कुछ सहमी। उसने कहा— 'घाहए भैरव बाबू !'

"यमी ठक दिया मी गही जना तुम्हारे वहाँ ?"—कहता हुआ भैरव बेमकूर भीतर के एक घेरेरे कमरे में बस गया।

माथो वह उसका घपना मकान हो। साफ-सुधरे मकान में रहनेवाला उस पंजी गनी में कैय बस गया ? क्या यही था वह नाटक जिसके चलने की बात वह अपनी माता से कह रहा था ? सुन्दर सुधरिगत कस में रहनेवाला क्या उठ मैल घोर घेरेरे कमरे के भीतर बिराममान हो गया ?

उसके मन में मनुष्यों के बीच में जो लज्जा का स्वप्न था क्या यही उसका प्रयोचारमक पल था ? मूँच की चारपाई की लमाम टूट घोर मलिनता ऊपर से एक साफ चार बिरामकर डक बी गई थी। भैरव उसी पर आकर बैठ गया।

प्रीड़ा सातटेन बलाकर से घाई थी। कहने लयी— 'सातटेन से ठेक ही नहीं था जब कुछ बाजार गई ठेक साई। इसी से देर हो गई !'

"बातो कहीं है ?

"राम बाबू के यहाँ बर्तन मतने गई थी।"

"घोर उठ होने को घाई घयी ठक नहीं लौटी।"—भैरव चारपाई पर से उठ घोर बा-बार करम द्दर-उपर टहमकर एक मैसी कुरसी पर बैठ गया। कुरसी की बैठ की बुनाई टूट गई थी घोर उसके ऊपर बीड़ के एक लकड़ का टुकड़ा रख दिया गया था।

"बाजार का कोई सीबा खरीदने लती गई होगी।"

"फिर भी इतनी देर ?"

भैरव बाबू गाराज होने की कोई बात नहीं है। अब नौकरी की बायगी तो मासिक का कहना मानना पड़ेगा।

दिन भर की नौकरी बोड़े है ? म्याडू पीर बर्तन बस इतना ही तो ? बहुत हुमा हन्सी-बनियाँ पीस दिया सिपड़ी मुलगा दी। घरे बड़दे-बड़दे इस छड़क का कहीं घन्ट भी है या कम से खाना भी पकाना पड़ेगा परछों से बच्चा भी बुमाना होगा।

पेट की खातिर सभी कछ करना पड़ेगा। हमें क्या कोई मौक है। घाप कुछ कर भी तो नहीं रहे हैं। रोज टास-टून ही करते आ रहे हैं।"

“तुम्हारा यह क्याल बिसकुम एलत है बासो की माँ। भैरव को तुम कागज की बनावट का घादमी न समझे कि अरा सो फूक में उड़ जाय। मैं घपने बाप से भी नहीं बरखा मुझे समझे बर। भैरव से पठनून को जब में हाथ बालकर सिगरेट निकामी घीर सभी जेबों में तलास कर दियासलाई को दिबिया न पाने पर कहा—“दियासलाई है ?”

जाना मूल पर बाजार स। घनारा से घाळ ? —बासो की माँ ने पूछा।

“रुमे हो। भैरव से लामटेन की बिमनी ऊपर उठकर घपनी सिपरेट सुसवा भी।

“मैं जानती हूँ घापको।

“मैं घलय मकान डूँड रहा हूँ तुम्हारे लिये। छिर कोई बकरत नहीं रहेगी तुम्हें किसी के यहाँ नौकरी करने की। सिर्फ एक ही घड़बन घा गई है। —भैरव ने सिगरेट में जोर का दम लगाकर बुधाँ घाकाघ की घोर छोड़ा।

“घड़बन कैंसी ?

“कभी सोचता हूँ कोई नौकरी कर डूँ। क्योंकि मैं घपने पिता से एक पैसा नहीं सेना चाहता।”

“घाप उनके इकमौते बेटे हैं। अब घाप ही बसे नहीं संभे तो वह किसके काम घाप्या ?

बहु शायद मुझे देने से इनकार करें। लेकिन मैं श्यामासय की मरह से घपना हक ले सकता हूँ।

“वर्षा नहीं ?”

“कभी सोचता हूँ किसी व्यापार में लप जाऊँ। व्यापार के लिये बन चाहिए और बन के लिये जरूरत है बाप से सड़ने की।

“इस सब बातों से पहले घापको बासो के साथ छाडी कर लेनी चाहिए।”

“छाडी ? —कृष्ण घरमाते हुए भैरव ने कहा।

“हो घापने कहा था मजिस्ट्रेट की मेज पर होना के दस्तखत कर लेने पर छाडी हो सकती है। इसी के लिये तो घापने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया। —बासो की माँ ने कहा।

तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है। लेकिन छाडी कर तुम्हें रक्खूपा कहाँ ? मनोरथन के लिये मैं कभी-कभी यहाँ घा जाता हूँ। बचपन रहने के लिये इस धंधेरी बस्ती में बड़ी मुश्किल की बाग है। देखो मैं बचपन इस किकर में हूँ मजान तलाश कर रहा हूँ। जब प्रेम किया है तो उसे घाखिरी हम तक निबाहा भी जायना। छाडी से ही क्या होता है ? हजारों घर ऐसे हैं जहाँ छाडी हो जाने पर भी पति-पत्नियों के बीच में छत-दिन जुती-बीजार होती रहती है।

“शायद बना जाऊँ। सिबड़ी सूतप रही है।

“नहीं नहीं कोई जरूरत नहीं है।” भैरव की फिर-फिर बासो की अनुपस्थिति घटक रही थी। जमने फिर बाहर की घोर देखकर कहा— नहीं घाई घमी तक ?

“बस घाती ही होगी क्या जाने बहुरी के साथ बस्ती गई ही कही भैरव को।”

“घर कह जाता चाहिए था। मैं घापने मरह का हजं करके घाया हूँ।”

मैं जाकर देख जाऊँ ?

“नहीं नहीं।

बासो की माँ ने म-जाने फिर क्या सपना ; कहूँ लगी— ‘छाबी तो हो ही जानी चाहिए बाबू ; कोई अविश्वास या खूबरखी की बात नहीं है।’ वह फिर चुप हो गई।

‘फिर क्या बात है ?’

‘बात तो कोई छिपी नहीं रह सकती। छहर की मैं नहीं कहती हमारे गृहस्ते में तो सभी इस बात को जानते हैं कि आपको बासो के साथ प्रेम हो गया है। मैं प्रेम को कोई खराबी की बात नहीं कहती। इसलिए चाबनी को एक का होकर तो रहना ही पड़ता है।’

‘फिर क्या बात है डरती क्यों हो ?’

‘डरती हूँ लोपो स। अगर आप छाबी कर लें तो मैं फिर मेरी धीर हाथ बढानेवालों की पीछो में कोच हूँ अपनी प्रेगुनी।’—बासो की माँ उल्टे-बना के साथ बोली।

‘धीर एक बटा उठ रही है। मेरे माता-पिता मेरी छाबी के लिये लड़की हूँ उठे हैं।’

बासो की माँ बिस्का उठी— ‘श्रेष्ठ बाबू ! वह क्या कर दिया आपने ?’ उल्टे माया पीट लिया।

‘है ! है ! क्या कर दिया मैंने ? सभी कुछ नहीं किया मैंने।’

मेरी बासो की चिपगो का नाच मार दिया। कहीं पार्से, क्या करें अब हम ?

‘बात तो मुज लो पूरी। उनके छाबी छहरने से क्या होगा ? धरे छाबी करनेवाला तो मैं हूँ।’

‘आपके कहीं धीर शाबी कर लेने से फिर बुरी बात हो जाती है। फिर आप बर्हानहीं पा सकते। मेरी लड़की को कर्मक लग जायगा। लेकिन नहीं ! नहीं ! आपके वहाँ न धामे से आपका तो कुछ भी नहीं बिपडेमा पर मेरी बासो कहीं बायनी ?’—वह रौने लगी।

श्रेष्ठ उसे डाढ़व बँधाता हुया बोला— ‘तुम्हें पैरी बात का विश्वास

रखना चाहिए। मैंने बासो को अपना हृदय ही नहीं दिया है, सर्वस्व दिया है—अपनी धारणा भी है।”

‘यह सब मैं देखे की बातें हैं। समय के बीतते आदमी को बदल जाने में कोई बेर नहीं लगती। मैंने बहुत-सी बातें सुनी हैं और कई देखी हैं अपनी आँखों से। मेरी इतनी उमर होने को आई। सस्यार की बहुत-सी कारी-संछेरी मेरे सिर पर से होकर बीती हैं। मेरी आँखों से होकर गुजरी हैं। आदमी कोई खराब नहीं है, सभी सच्चे हैं लेकिन बल्लभ सनकी नाक पकड़कर उन्हें घुमा देता है और वे कड़-के-बुड़ बन जाते हैं।—बासो की माँ के मुख पर मनुष्य की जाति के ऊपर और परिवर्षास प्रकट हुआ।

‘तब कैसे विश्वास दिलाऊँ मैं तुम्हें? भैरव ने कुछ सोचकर कहा—‘यह सोने की रिस्टबाब है मेरी घाठ ली स्याए की इसे तुम्हारे पास अमानत के रूप में रख देता हूँ। लेकिन तुम्हारा ऐसा क्या करना ही समत है।’

‘देखूँ कौसी बड़ी है? बिना चाबी दिए बसनेवाली जो भी?’

भैरव अब कनई पर से बड़ी खोल रहा था उसी समय बासो घा पहुँची। भैरव ने बड़ी खोलनी छोड़ दी। बासो की माँ ने पूछा—‘फिरने अब बए?’

बासो अमानत के सिर पर बैठा हुआ चाबी का मुच्छा घुमाती हुई घा रही थी। उसकी माँ ने दूर ही से उसकी साइट पहचान ली। वह उठकर बाहर को चल दी।

बासो उसे बाहर के ही कमरे में मिली। वही उनकी रखोई बनती थी। माँ चुन्हे की घोर बड़ौती हुई पूछने लगी—‘बड़ी देर लपाई?’

‘हाँ माँ राम बाबू का छोटा लड़का पकड़े ही बाजार चला गया। मीड़ में रास्ता भूल गया। हम सब उसे ही इँडने में रहे बए। छोटे बच्चे की बात थी मैं मना कैसे करती?’

‘मिना कहा?’

“घणम घाप घा गया घर । पार्क में बसा बसा था । उसके माता
मिम गए उस बहू पहुँचा गए, धीरे हम मोम सारे सहर की परिक्रमा कर
बब घर गए तो बहू लिखलिताकर हँस रहा था ।” —कहती हुई बासो
भीतर के कमरे में बसी पई ।

“इतनी रात तक तुम्हें घर पहुँच जाने की फुरसत नहीं ?”

हुँसकर बासो बोली— “मैं तभी नौकरी छोड़ देने को तैयार थी ।
तुम्हीं न मना कर दिया था ।”

“बासो द्वार बंद कर दो ।

बासो ने हसी हुई धाबान से कहा— “माँ बीठी है नहीं । जरा बेर
खर बासो ।”

शैरव ने खुद उठकर द्वार बन्द कर दिया धीरे धीरे बोसा—
“बासो मेरे माता-पिता मेरी शादी के लिये जोर दे रहे हैं । बताओ मैं
क्या करूँ ?”

“मैं क्या बताऊँ जो ठीक समझो करो ।”

“नहीं नहीं छोड़ सकता । माता-पिता को छोड़ सकता हूँ, तुम्हें
नहीं ।”

“मैं भी बुनियाद को छोड़ दूँगी पर तुम्हें नहीं ।”

“इस बात पर झगमग रहोगी ?”

“घनघानू घाड़ी है ।

मैंन एक बात सोची है । नहीं रहना मेरे लिये असम्भव हो गया
है । रूखा हूँ तो वे खबरेंस्ती मेरी शादी कर देंगे ।”

“उससे पहले ”

बीच ही में शैरव ने कहा— “नहीं उससे पहले मैं तुमसे शादी नहीं
कर सकता । तुम्हें खूब मानूम है तुम्हें देने के लिये मेरे पास अनंत पैसा
है पर पैसा कुछ भी नहीं ।”

“मुझे तुम्हारा प्रेम ही चाहिए ।”

“पैसा भी उठना ही पकरो है । पैके के होने पर ही

बढ़ता है। लेकिन बाप ने पीछे पर नजर रखना बेटे की सबसे बड़ी मुश्किल है। मैं अपने भाग्य के बंध डार कटकाटाऊँगा। तुम साथ होगी ? तभी सब कुछ संभव है।

“इसका पूछना ही क्या है ? मैं कहूँगा तो सागर भीर बचकते ज्वाला मुझी में भी तुम्हारे साथ कर सकती हूँ।

“हाय हो।”

बासो ने अपना भीर कोमल हाथ भैरव के हाथ में रिया। उसकी चूड़ियाँ कतक उठी।

तब मैं तमाम बाधाओं को कुचमकर अपना सितारा चमका मुँहा। सच्चा प्रेम सबसे बड़ी ताकत है। जिन्दगी की सारी कमी उसने पूरी हो जाती है। बासो जसो हम जसो।

कुछ प्राकृत भीर कछ उन्मत्तित होकर बासो ने पूछा— ‘कहाँ को जसो ?’

‘जसो इतनी बड़ी जरूरी है। पीरप के लिये ही उसका इतना बड़ा विस्तार है। संसार के प्रत्येक करोड़पति अपने पारमिणिक जीवन में कौड़ियों के लिये मोहताज बे। लेकिन उन्होंने संसर्ग किया सच्ची जगत में सच्चा प्रेम पाकर भीर संत में बे सफल हो गए। केवल तुम्हारे प्रेम की पूर्वी चाहता हूँ।’

‘तुम्हारा क्या मतलब है ?’

‘हम दोनों यहाँ से भाग जसो।’

‘कहाँ ?’

‘दूर बेघ को कहीं।’

‘कितनी दूर ?’

‘बहुत दूर, जहाँ ये सोच कोई न दूँक सकें हमें।’

नाम भी ठो होया सच्चा।

‘बंदई।’

‘बंदई ? जहाँ क्या करे ?’

“भाग्य को बुँड निकालेंगे ।”

माँ का क्या होगा महीं ?

अपनी हानत सुपर जाने पर माँ को वहीं बुना लेंगे ।”

ये सब बातें धीरे धीरे सबको ही छोड़ जाना पड़ेगा ?

हाँ बासो प्रेम के लिये । प्रेम में कोई जबरदस्ती नहीं है । मैं भी तो सब कुछ छोड़कर ही जा रहा हूँ । माता-पिता धन-शौलव इन्धन सब कुछ । बासो ! कहो तुम राखी हो मेरे साथ बनने की ?

हाँ राखी हूँ ।

“किस मही पूछने आया था ।

कब चलेंगे ?

“यह सब निश्चय कर लेने पर बताऊँगा तुम्हें बहुत शीघ्र । इस बात का एक सपना भी तुम्हें किमी पर प्रकट नहीं करना होगा । नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जायगी ।”

बासो की धाँकों में प्रश्न बनने लगे थे । उसने तबतद् कंठ होकर पूछा—“क्या माँ से भी नहीं ?”

“नहीं माँ से भी नहीं ।”

“बहु हूँ न पाकर रोना-पीटना शुरू कर देयी ।”

“कुछ दिन रोने-पीटने के बाद जब उन्हें हृषीकेश राखी-बुधी की चिट्ठी मिल जायगी तो उन्हें उतनी ही बड़ी बुधी पहुँच जायगी । बस सब बराबर हो जायगा ।”

“नहीं” बासो ने भीरव का एक हाथ पकड़ लिया धीरे धीरे अपना दूसरा हाथ उसके कंधे पर रखकर बोली—“नहीं माँ को साथ ले जाना होना नहीं तो यहाँ सब उसकी हँसी उड़ावेंगे ।”

“जस्ती से कोई साथ नहीं ।

बासो न मचलकर कहा— मैं किसके साथ जानी हूँ धीरे तुम किसके साथ ? इस बात को समझने में किसी को भी क्या देर न लगेगी मगर तुम्हारे पिता ने प्रीतिष की कद्रावणा से मेरी न

घुसू किया तो ?”

“किसी की मजाल नहीं है। हम दोनों कामिग हैं और एक-दूसरे की राखी से ही परदेस को जा रहे हैं। बासो तुमसे कुछ छिपाया नहीं है मुझे। मेरे पास कोई बड़ी पूंजी नहीं है। मुश्किल से दो व्यक्तियों के सिने राह-सर्ज और एक-दो महीने की पुत्र-वसर से अधिक नहीं है मेरे पास।”

‘तुम्हारी दो हुई ने दोनों सोने की बुड़ियां तो हैं मेरे पास। एक बेचकर मैं का टिकट खरीद लेंगे। बासो ने बड़ी धांधा में भरकर भैरव की धोर देखा। उसकी धाँसो में माता के सिने किए गए प्यास की तेजस्विता थी।

“मेरी भोली मासी क्यसी ! भैरव ने उसका बिबुक पकड़कर कहा—“उन बुड़ियों को पहले ही मैंने धरने हिमाच में सामिल कर लर्ज का जोड़ नपाया है।

‘उस कस होया ?’ —बासो बिल्ला छठी।

“इतनी खोर में न बिल्लाभो मैं सुन लेयी।

“फिर उसे बताकर जाने में क्या मुकसान है ?”

“बहु कमी तुमें न जाने रेंगी।”

“मैं उसे राखी कर लूँगी।”

‘इसत पता न बसो बासो घुसू की प्रगत पास में फिर धारा खोल ही चौपट हो आयगा। जिसके माने हैं सारा जीवन बरबाद हो आयगा। मेरा धीर तुम्हारा दोनों का।”

‘फिर कोई ऐसी तरकीब सोचो न जिससे बाप भी भूखा न बाप धीर बकरी की भी जाल रहे।”

“यच्छा मैं धकेले ही पाता हूँ। अब वहाँ कुछ ठीर-ठिंथाना हो जायगा तो फिर तुम दोनों को कैने यहाँ धा पहुँचूँगा।”

बासो पहले सोच-विचार में पड़ गई। उसके मन में खोर का। वह खीचने लगी—धगर भैरव बापस न धाया। बम्बई से धीर कहीं की

चल दिया या वहाँ किसी घोर के साथ उसने प्रीति बढ़ा ली तो क्या होगा ?

उठे हुए देवकर भैरव ने पूछा— 'क्यों इसमें क्या सोचने की बात है ? भगवान जानता है । मेरे घोर तुम्हारे बीच में कोई कपट नहीं है । जोसो वीर्य उत्तर दो । जस्वी ही मुझे इस बात का फैसला कर लेना है जो तीन दिन के ही भीतर ।'

'माँ से पूछकर इसका जवाब देती हूँ । —बासो द्वार की घोर नहीं घोर उसने साँकल पर हाथ रखा उसे जोसने को ।

नहीं " भैरव ने उसकी कमर पकड़कर बीच ली— 'माँ को इस बात का एक सपना भी बठाना नहीं है । किसी को भी नहीं । मेरे माता पिता नहीं हैं क्या ? क्या मेरी माँ मेरे लिये घाँसू न बहाएमी ? तुम्हारी माँ के लिये तो मैं जस्वी ही भपनी घोर तुम्हारी कुरास जिस भेजूंगा लेकिन मेरी माँ को मेरा पता कब मिलेगा—इसका कोई ठीक नहीं है ।'

'तो ऐसा क्यों कहते हो ?

'बिबाता का लेख ऐसा ही है ।

'कब बसौंगे ?

'जस्वी ही साँकर बता चाहेगा । लेकिन याद रखना इसका जरा भी सूठ किसी को न मिले । द्वार खोल दो ।'

'नहीं ।' बासो ने द्वार खोल दिया ।

बासो की माँ जाम बनाती हुई बोली—'जाम तो पी जाइए ।'

'जस्वी ही साँकेमा कल-परसों को । याद रहर हो पई है'—भैरव चला गया ।

‘वहाँ घासी कैसे हो सकती है ?

‘क्यों नहीं हो सकती ? मुझे सब मामूम है । किताब में बस्तबत करने से सब-कुछ ही सकता है । तुने धीर बस्तबत करने चीखे ही किस सिने है ?’

‘लेकिन यहाँ उन्हें शहरवालों की डर है । उनके पिता के सब बड़े बड़े सोम बाल-महानाम के हैं । वे सब रोडे घटका देंगे ।’

हूँ ! माँ ने एक ठडी साँस छोड़ी— ‘मैं तभी तुम्ह से कहती थी बासो समझ-बुझकर कबम रखना ।

‘एक बात हो सकती है ।’

‘क्या हो सकती है ?’

‘बाहर कहीं धीर आगह जाकर घासी कर सकते हैं ।

‘बाहर कहाँ ?’

‘कहीं हम दोनों जसे जायेंगे धीर घासी कर फिर वहाँ या जायेंगे ।

‘नहीं इस बुद्धिया को यही छोड़ जाओगे क्या ?

‘बस्ती ही लौट जायेंगे । अगर तुम इस पर राजी हो तो मैं उन्हें भी राजी करूँ ।’—बासो ने कहा ।

‘नहीं मैं इस पर तो राजी नहीं हूँ ।’

‘क्यों ? क्या हर्ज है इसमें ?’

‘सब हर्ज ही हर्ज है ! तुम दोनों की पालन बबानी कीज जाने क्या कर दो कहाँ जसे जाओ । हम बुढ़ापे में मैं मसहाय होकर कहाँ तुम्हें टटोलती किसैमी ?’

‘नहीं माँ तुम्हें सपने में भी ऐसा क्याल नहीं करना चाहिए । मैं क्या ऐसा पालन का कसेबा रखती हूँ कि तुम्हें छोड़कर चलूँ ?’

‘फिर तुमने लुसुर-मुसुर लुसुर-मुसुर कर क्या बातें कीं मुझसे छिमाकर ?’ माँ रोने लगी— ‘देखो बटी बड़ापे की घाल न फूट जाय माठी न लुट जाय । तुम ना-समझ नहीं हो घब । माता-पिता धीर किस सिने तमाम तकलीफें उठाकर कस्ताम का पालन करते हैं ?’

माता के स्वन को सुनकर बाघी का हृदय विद्रोह करने लगा अपने प्रेमी के विरुद्ध। वह चूँचकर उसके भी में धाटा कि सारी छप्पाई माता पर खोल दूँ। लेकिन फिर उसने सोचा—“माता को खींचा देने की तो कोई बात ही नहीं है। कुछ देर के लिये उसे धँसेरे में रखकर फिर तो बिजली के ज्वाले में उसे जीव मिया जायगा।

‘बेटी जब माँ बगोमी तमी पठा जलेगा माता सम्मान के लिये कितना कष्ट उठाती है।

‘बेटी होकर क्या मैंने तुम्हारी तपस्या नहीं देखी है?’

‘क्या माद है तुम्हें? क्या दसा है तुमने?’

‘अपना याद नहीं है घूसरों को तो देखा है। शाम का समय है माँ बिया बना रखा है तुम्हारा रोना भञ्जा नहीं जान पड़ता।’

‘बता दो फिर तुमने क्या तप किया है?’

‘क्या तप किया है? अपने मुक्त के पहले तुम्हारा सुख। माँ यही तप किया है।’

माता को कुछ भरोसा हुआ लेकिन उसका सवय गया नहीं। उसने पूछा—‘जाम पिओयी?’

बाघी ने अपने प्रेमी की बात सुनने न दी। अपनी इस बुद्धता पर वह भीतर-ही भीतर प्रसन्न हो उठी। वह बोली—‘हाँ पिडेंगी क्यों नहीं?’

दोनों माँ-बेटी ज्ञाप पीने लगीं।

मैरब वहाँ से सीधा अपने नाटक-क्लब में जा पहुँचा। सभी मेम्बर उसकी प्रशंसा कर रहे थे। नाटक-क्लब का प्रास-बिधाता मैरब ही था। वह उसका प्रधान नायक-अभिनेता तो था ही क्लब का प्रासिक धाधार भी वही था।

क्लब यद्यपि टिकट लगाकर ही अपने खेल करता था धीर टिकटों में उसे सञ्ची धायदनी भी होती थी लेकिन उसके खर्च भी काफी होते थे। बाइ मुवात महामारी धकाल-नीकितों की कवर को थे

पहले घाबे बड़ खाते थे ।

गाटक-कसब की जो मजमम की यकनिका घनी हास ही में बनकर आई है जो बार स्वागो पर से बल काकर परियों के पंज-सी सिमटकर पकबाइयों में छिप जाती है उसे भैरव बाबू ने पपवे ही सर्ब से बनवाया है और जो कसब का बार सप्तक का दौरबन है वह भी उन्होंने ही करीया है ।

उगने कलव में पहुँचते ही सबसे उम्हे बेर लिखा ; मंत्री कहने लव— कहीं रह गए घाप ? हम सब घाप ही की राह देख रहे हैं ।”

“मेरी राह क्यों देखी ?”

“घाप समापति बिना घापकी अनुमति के ही पाटे बेंडे बाँट दिए जाते ?”

“अप-समापति तो ये ही ।”

अपसमापति पीछे को छिमकटे हुए बोले— घापके सामने मैं ? मेरी क्या हस्ती ?

भैरव बोला— “बहु कनटा का काम है । एक पर इये नहीं टिकना चाहिए, हमें बहुतात्मकता की बेतना बढ़ानी है । माग जो घगर में भर गया होता तो क्या ?”

मंत्री बोला— “है ! है ! यह घाप क्या कह रहे हैं ?”

“भरा न सही लेकिन मुझ कही बाहर जाना है ।”

सञ्जेटी ने पूछा— “कितने दिन में लौटेंगे ?”

भैरव के हँठ ससकी हँसी को हठ न रख लके बहु बोला— “बहुत दिन लव जायेंगे ।

सञ्जेटी भैरव का अंतरंग मित्र था । उसने उसके काम में कहा— “क्या हुमीमून की माग है ?”

भैरव ने उसका हाथ पकड़कर खोर से बबा दिया— “क्या हर्ब है ?”

“कितने दिन में लौटाने ? हम सब तक त्रापा नहीं खेतने तुम्हारे बिना खेत भी नहीं सकते हैं ।”

“नहीं ऐसा नहीं होया किसी एक पर कलब का काम नहीं घटकना चाहिए । मेरे लीजने की कोई ठीक नहीं । घबर जहाज डूब गया तो ?”
 मीरब उठने लगा ।

संकेटरी ने उन्हें बँडाले हुए कहा— “अभी ना घाए हो ।

“बाईया जकरी काम है, तुम लोग बोले में न रह जाओ इसीलिए घाया हूँ ।”

“कब जाने का विचार है ?”—संकेटरी ने पूछा ।

“अभी लारीज का निश्चय नहीं है ।

“तो हम लोग कम को घापकी प्रतीला करने फिर ।”

“भाजद ही घा मई ।”—मीरब उठकर जाने लगा । कब के सही मीरब उसे बाहर तक पहुँचाने गए ।

घर पहुँचते ही उसे काटक पर पिता जी मिले । श्रीर दिन से बच्चा से मीरब पर अपनी दृष्टि फिर लेते थे लेकिन धाय उम्होने बड़ी प्रीति से उसे देखकर कहा— “मीरब ।”

“हाँ पिता जी ।”—मीरब ने मीटर को बाँधे हुए पिता का प्रबुद्धरण किया ।

“छोटी धाय में एक अपसता और एक सापरबाही होती ही है उसे माछ कर देना अभिभावकों को चाहिए ही । लेकिन नय प्राप्त हो जाने से जीवन पर यकीर दृष्टि बकरी हो जाती है । मनुष्य को अपने माता-पिता तथा देश और समाज के प्रति कर्तव्य देखने पड़ते हैं । तुम स्कूल की परीक्षा पास न कर लके वह कोई बात नहीं है । स्कूल या कसिम का सर्टिफिकेट मनुष्य की योग्यता का सबूत नहीं है । वह मौकरी के लिए सहायक हो सकता है । तुम्हें किसी की मौकरी करनी नहीं है । तुम चाहो तो कई मौकर रख सकते हो ।”—पिता ने कहा और चुप हो गए ।

बोनों-पिता पुन बैठक में घा गए थे । पिता को मीरब देखकर मीरब बोला— “हाँ पिता जी ।”

“तुम धन धकत्ता में बड़ गए ही । मनुष्य के जीवन

है ? मेरी यह कमर का दर्द कोई डॉक्टर अभी तक इसके कारण को नहीं समझ सका है । इलाज जो भी किए गए सभी बेकार साबित हुए हैं । यह प्रारंभ का पखेक न जाने किस समय बिजग को उड़ जाए कोई ठीक नहीं है — पिता ने बड़ी करुणा के स्वर में कहा ।

उठनी ही बर्बसाक बासी से बेटे ने तुक भिमाई— 'धीर पिताजी, दास के यहाँ कोई संतर नहीं माना जाता । यह बात जितनी एक प्रौढ़ के लिए सच है, उतनी ही एक नवयुवक के लिए भी—धीर क्या यह पानने में से कमियों की उठाकर नहीं मसत होता ?'

पिता ने कहा— 'हाँ बेटा जब तुम्हारे इतनी दायनिकता आप उठी है तो अवश्य यह तुम्हारी समझ का प्रेरित हो जाना है । पिता पुत्र को लेकर भीतर चले गए पत्नी के पास । पत्नी के लर्क से अपने बाक्यों का बल बढ़ाने के लिए ।

पत्नी भूमि पर बैठी हुई थी छकरबर में । भीठे ठेक क बीपक के क्षीण प्रकाश में राधायस्य के पाठ का विवम पृष्ठ कर रही थी । पिता पुत्र को इस प्रकार मातों के साम्य में धाता हुआ कभी नहीं देखा था उसने कई वर्षों से । उसने मन में समझ थाव मगवान् उस पर दबातु हुए हैं । उसने बस्ती से उन दोनों के बैठने के लिए एक नतीया बिछा दिया और स्वयं भी उनकी घोर मूक कर बैठ गई ।

पिता बोले— 'तुम्हारे विवाह के योग्य अवस्था हो गई है । पहले यह नियम वा माता-पिता अपनी छोट धीर पसद को संतान के कन्यास्य के लिए सर्वोपरि समझते थे । लेकिन अब समय बहुत गया है । विवाह की अवस्थाएँ बढ़ गई हैं । इसलिए अभिभावकों को संतान की सम्मति लेने की आवश्यकता पड़ गई है ।'

'छकर पिता भी पहले के युव संस्कार धीर एकानिपत्य के थे । घर के भीतर मूहस्वामी बनमानी करता था धीर घर के बाहर राजा धीर उनका परिपक्ष-वर्ग । लेकिन अब बहुमत धीर समानता का युव धा गया । मनुष्य को अपने अधिकारों का बोध हो गया । इस वरसे हुए

मृत में धर के पुराने सिक्के नहीं चल सकते ।”

लेकिन मेरी समझ में एकदम गरीबी भी उचित नहीं ऐसे ही बिसकुल पुरानी लकीरों की फकीरी भी ठीक नहीं । —पिता ने कहा ।

माता ने पिता के स्वरों में बुढ़ा रंग बढ़ाया—“हाँ बेटा धर्म का धाम्य ही सबसे बड़ा सहारा है । बाप-बादाओं से जमीं घाटी हुई रीत को तोड़ना बड़ी मारी मायानी है । बाब को पछताने से धमका है पहले ही ठीक रास्ता पकड़ा थाय ।

“तुम्हारा मतलब क्या है ?

पिता बोले— ‘मतलब है, तुम्हारी माता तुम्हारे लिये उपबुद्ध बहू हुई लैकी । तुम जाहो उसकी फोटो देख लो जाहे उसको खुद ही देख थापो ।”

‘पिता जी पहले समय में भी बराबर स्वयंवर होते थे । उनमें माता पिता के स्वार्थ धीरे उनकी इच्छा का कोई मूल्य न होता था ।

“धमकी बात है, तुम अपने मन से ही बहू हुई लो ।”

“आपको प्रसन्नता होगी जाहिए, मैंने हुई ली है ।

माता-पिता दोनों हकबकाकर मौन उठ एक साथ— ‘तुमने हुई ली है ।”

‘हाँ पिता जी ।

“कौन है वह ?”

‘पिता जी यह गरीबों का पुत्र है । मैं भावना का मोल जानता हूँ । बहिया कपड़े ठीके महल धीरे कीमती मोलन—ये सब मूठे रिखावे है । इनके संसर्ग में हमें मनुष्यता के बर्तन नहीं होते ।

“इस धूमिका की क्या करण्य है, हम तुमसे बसका परिचय पूछते है ।”

“है वह भी एक मजदूर की सड़की ।

“मजदूर की सड़की ! पिता उठकर लड़े हो गए— ‘उससे हमारी बात नहीं मिलती ।”

“सैक्रिन मेरा दिन तो मिसठा है। बिबाह हूय का सीधा है या बन-संपत्ति की प्रतिबोधिता ? मैंने बन-संपत्ति के चारों ओर बड़े मदानक गिड़ों को मँडराते देखा है। जिनके भीतर केवल अपने स्वार्थ की बलती हुई धाकाँझा हर समय बूझने को सूट लेने का कौशल ही साथ में चलता रहता है। बपीबों के सिवा जिनकी दृष्टि में पूणा हूय में पावाण घोर जया में प्रतिधोप ओबिठ है। उन संपत्तिवानो को बाद कर मेरे मदानक ब्वर बढ़ जाता है।”

‘तुम स्वर्ण एक बनी पिता के पुत्र हो तुम्हें ऐसे ध्वज बर सोच समझकर ही मूँह में निकालने चाहिये।

पिता भी इसीलिए तो मेरी बात में सज्जाई है। घोर इसीलिए मेरा मन परीब की तरफ झुक गया। मैंने निर्बल में कोई बनाबट कोई पाखंड नहीं पाया। सधकी बाली का संबंध हूय से रहता है। साफ सीधा घोर सज्जा। बनी बून होता है उसके ध्वज उसके मस्तिष्क की कूटता में रंगे होत है।”

“तुम्हारे इतने बड़े ध्याक्यान का मतलब क्या हुआ ?”—पिता ने पूछा।

‘मेरा हर वाक्य आपके प्रश्न का उत्तर है।

“तुम्हारी बर्ब के लिए सारे शहर में हर्षे धनिबा होना पड़ेगा। समाज में तो तुमने हमारी नाक ही फटा की। कहीं तुम ? कहीं एक मजदूर को लड़की ? बन-संपत्ति की बात जाने दो, बात तो देखनी ही पड़ेगी।

‘बात घोर बून—यह भी तो बन-संपत्ति का ही बूझप नाम है। मैं भरती पर मनुष्य की एक ही बात मानता हूँ। वह मानवी भाषों की प्रबानता है। उन मानवी भाषों से परीब ही भोज प्रोत है।”

‘बेटा यह क्या कह रहे हो तुम ? माता ने जस्वी-जस्वी रामायण का नियमित पाठ पूरा कर पुस्तक रख दी घोर बेने के निरुध घाकर बहने लगी— ‘यह भीष बात की मड़की हमारे ठीठ-रिबाज ह्याय

बसत हमारी बोली—सभी चीजों से प्रमत्त वह कैसे हमारे घर के भीतर बह बगकर आ जायगी ?

“यह मुझे याद पड़ता है कुछ लोगों ने मेरे कानों में इस बात का इशारा दिया था । मैंने नहीं समझा था यह इतना भयानक साकार रह लेगी । मैंने मुझे स्वप्न में भी तुमसे यह आशा नहीं थी । तुमने अपने पिता को बड़ा भोला दिया ।”

‘पिता जी उसमें बोलने की कौनसी बात है ? पोछा तो सब होता था मैं आपकी किसी की कन्या के लिए बचन-बद्ध करा अपनी मनमानी कर लेता ।’—मैंने ने कहा ।

‘नहीं मैंने ऐसा नहीं होगा । तुम्हें उस मन्त्रहूँ की मन्त्र की का ध्यान छोड़ना पड़ेगा । —पिता ने बड़ी दृढ़ता से कहा ।

‘नहीं पिता जी यह कदापि नहीं हो सकता । मैंने उसे बचन दिया है और मैं उसे बचन को पूरा करूँगा ।

‘यह कोई बचन नहीं कहा जाता । तुम उसकी तरह जाओ ही नहीं । मैं देख लूँगा कैसे वह मेरी कोठी में चुप सकती है ?’

‘किताब बड़ा स्वार्थी भाग्य आपके भीतर से बीज रहा है ! उसका भी एक समाज है । ऐसा कर देने से वह अपने समाज में किसनी तिरस्कृत और नाशित हो जायगी । आप उसकी शक्ति का प्रभाव ही नहीं लना सकते ।’

‘हम परमार्थ क्या लेकर उसकी शक्ति-सृष्टि कर देंगे ।

‘उसकी शक्ति-सृष्टि का क्षेत्र-क्षेत्र की शक्ति है क्या यह जो आप अपने मन के बल से उसे पूरा कर देंगे ? पिता जी किसी के धार्मिक भाव की शक्ति भी आप नहीं कर सकते । यह किसी के मन की हृदय ? कौन इसका मुकाम कर सकता है ?’—मैंने भी उठ गया ।

‘विवाह को वह गौरव छोटे समाज में नहीं दिया जाता इतना किताब तुम समझ रहे हो ?

‘क्यों नहीं दिया जाता ? यह आप अपने बुद्धिकीय से कह रहे हैं ।

एरीब के कोई धाबक-इस्बत नहीं है ? कभी मयानक यह धापकी मारणा है ?

“बाद-बिबाद से कुछ फल नहीं निकलेगा । एक बात है तुम मेरी संपत्ति के उत्तरदायिकारी उसी हात में हो सकोगे जब कि तुम मेरी आज्ञा का पालन करो । परन्तु तुम्हें छोकरा का मोह छोड़ना स्वीकार नहीं है तो भैरव ” कुछ सोचने लगे पित्त ।

माता एकदम बिह्वल होकर पति के निकट बढ़ी हो गई कि उनके मुँह से कोई कठोर वचन न निकले कहा कुछ भी नहीं बचने ।

“जहाँ मैं इस बारे में किसी की बात नहीं सुनना चाहता । रोप से पित्त का स्वर बहुत ऊँचा हो गया था—“यह सारी ब्याबहार मेरे अपने हाथों का उद्यम है । बाप-दादाओं से उत्तरदायिकार में मैंने इसकी कोई कोढ़ी नहीं पाई ।

“दो-चार दिन का समय देना चाहिए ।” पति से इतना कहकर माँ बेटे के धमिमुख हुई—“भैरव तुम सोच लो इस बात को । अपने मित्रों की भी सलाह लो और अपने सम्बन्धियों से भी जाकर पूछ लो ।”

“मैं अपना मित्र और सम्बंधी कुछ ही हूँ ।”

“मैं ऐसे कुसुत के साथ तक कोई बात नहीं करूँगा जब तक यह अपने मन के भीतर से इस बंदी मानना को तिलास नहीं देता । — कहते हुए पित्त बढ़ी ठेड़ी से चले गए ।

उसी छत्तेबना में भरकर भैरव भी दूसरी ओर को जाने लगा था । माता ने उसके पैरों में अपना चिर रख दिया—“भैरव हमारी मान रखो बेटा तुम जो कहोगे वही करेंगे हम । सिर्फ अपनी हठ को छोड़ दो । एक कुसुत और जाति से हीन छोकरा को हम कैसे अपनी बहू बना लें ? क्या लोप कहेँगे क्या भववान् ?”

ये कुसुत और जातिवाँ सब अनुप्य की अपना रचना है । इसमें भववान् का कोई हाथ नहीं है । मैं उसको किसी हात में नहीं छोड़ सकता । मुझे धातमनात स्वीकार है, बिस्वासपात नहीं ।”—भैरव अपने

कमरे में बना गया ।

माता उसके पीछे-पीछे चली । बड़ी देर तक वह उसे समझाती रही पर उस पापाण के नीतर उसका कोई धांसु न समा सका ।

उस रात मीरब ने पर में सामा भी नहीं खाया । उसकी सारी रात शबिब के लम्बे बनाने में बीती उसके पिता की चिंता करने में और माता की रोने में ।

दूसरे दिन सुबह होते ही मीरब उठ गया । रात भर में सोचकर उस ने यही निश्चय किया कि वह अपनी शगमभूमि का त्याग कर दूर भ्रम जाय । वह घर से चला सीधे बासो के घर जाकर, राठ-भर की चिंता के कलस्वरूप को कार्मकम उसने बनाया था वह सब उसे बठा घाना निश्चित किया । लेकिन वह कुछ दूर जाकर रुक गया— 'बासो की माँ के मन में इस प्रसंग में से लेकर कुछ रुक पैदा हो जायगा ।

वह मार्ग में बुविषा में पड़ गया । फिर उसे याद आई—बासो सुबह-साम राम बाबू के यहाँ काम पर जाती है । वह उनके मकान की घोर लपट और सीमाय से उसकी भेंट बासो से हो गई ।

'बासो ! बसने उसे याचाय की । सड़क पर अभी शबिब काम नहीं चलने लगे थे ।

बासो इधर-उधर देखकर मीरब के पास बीड़ी आई । मीरब ने बहुत भीमी याचाय में कहा— 'बासो याच घाम को ही जाना पड़ गया हमें ।'

'घाम ही ?'

'हाँ साहस रखो भगवान् सब ठीक ही करेंगे ।'

'एक-दो दिन ठहर नहीं सकते ?'

'नहीं धिनेवा देखने के बहाने से मैं तुम्हें बुला ने चाँहना और सीधे स्तेजन ही पहुँचेंगे । शबिब बातों के लिए समय नहीं तैयार रहता ।'—कहकर मीरब चल दिया ।

बासो के चिंताओं में एक प्रसंग फूट पड़ा । गौकरी में गई वह, किसी से कुछ कहने की याचा की नहीं उसे । वह जानती थी याच उसकी

नीकरी का अंतिम दिन है। कुछ भूसी-भूसी धीरे धीरे-धीरे-धीरे वह काम कर रही थी। मानकिन ने एक-दो बार जो उसे फटकारा तो उस फटकार को भी चुपचाप फूल की तरह उसने भाँचे पर रख लिया। मानकिन हमस्री किसी बुद्धिवा में पड़ी हुई है। सुबह का काम समाप्त कर वह घर को जाती। उसने मन में सोचा अंतिम बार! अब साबर यह मझू, यहाँ कोई दुसरा नवाण्या। वह शाम का काम भी दिन ही में कर छुट्टी मान ले गई।

बासो घर भाई बड़े उल्टे हुए पपों से। माता को सब वह कैसे देखेगी? इतना बड़ा निद्रोह उसके बिनाकु मन में छिपाकर माता से क्या बात करेगी वह। रह रहकर दर रही थी वह कहीं बागों ही बातों में मन का श्रेय न निकल पड़े उसके सामने।

किसी प्रकार दिन काट लिया उसने। एक-एक क्षण की गिनती करते-करते कैसा भारी हो गया वह दिन? हर घाहट पर वह मीरब को कल्पना करती। घंठ में मीरब धामा। उसने उससे कहा—“बासो जलो। सोने की बुद्धियाँ रख ली?”

बासो ने बड़ी चिंता में पढ़कर कहा—“नहीं बुद्धियाँ तो माँ के संसूक्त में हैं।

“अब तक माँ कपों नहीं ली थी?”

“कैसे माँगती?”

“अब जाकर बस्ती करो।”

“अपड़ बदन मुँ?”

“उकर।”

बासो माता के पास आकर बोली—“माँ मैं सिनेबा देखने जा रही

“जाती क्यों नहीं?”

“तोने की बुद्धियाँ है जो पहनकर जाती।”

“सिनेबा देखने जाओगी या अपनी बुद्धियाँ दिखाने?”

“दापद उनके कोई दोस्त लोप भी जा रहे हैं। ऐसे ही नये हाथों से उनका अपमान होना।”

बाता की कुछ समझ में नहीं आई। वह बोली— ‘वह नई साड़ी पहन तो स्मारक भी बपलत थी। बेकर कौन पहनता है धब ?’

‘मेरा भी कर रहा है माँ।’

‘लेकिन बुढ़ियाँ तो मैंने अपनी बहन को बे रखी हैं। उसकी बहू अपने माई की घाटी में उन्हें पहनकर गई है।’

‘तो फिर मैं कहीं नहीं जाती।’—कठकर बासो बोली।

‘नहीं तुम्हें उबर जाना चाहिए। वे तुम्हें अपने साथ ले जा रहे हैं क्या ?’

‘हाँ अपने साथ।’

‘उबर जानो बेटो। इससे इस-बीस घाँसी तुम्हारे सम्बंध को बानेने तो हमारी बात पक्की होगी और वे फिर एकाएक कुछ न कर सकेंगे। परी जब उनका साथ तुम्हें लोपों को दिखाने को मिला है तो बुढ़ी दिखा कर क्या करोगी ? वह धोछापन है। तुम्हारे प्रामुष्य मरन बावू हैं। भयबालू उनकी पति कायम रहें और उनकी संबुस्ती ठीक रहे उनकी लंबी उम्र हो। —माता भयबालू को हाथ ओढ़ती हुई बोली।

बाता बड़ी कठिनाई में पड़ गई माता के इस उत्तर से। क्या करती ? उसे कोई बात ही नहीं सुझी। कुछ देर के लिये तो उसकी बेतना सूनी धीरे उसके मुँह को मानो लकड़ा मार गया। कठिनाई से उसने बड़ी कातरता से माता की धीरे बेचकर कहा—‘हाँ !’

इतने ही मैं मरन ने भीतर के कमरे से धीरे-धीरे धाबाव ही—
‘बासो ! बासो ! उसकी धाबाव में धाकड़ता प्रतिध्वनित थी।

बासो मुठ ही नहीं जा पहुँची। मरन बोला— ‘अन्दी करो देर हो जायगी तो फिर कहीं बाड़ी न सूट जाय।’

‘लेकिन’—बासो घाने कुछ न कह सकी।

‘लेकिन क्या ?’

“बुद्धियाँ तो माँ ने मीठी की दे रखी हैं।”

“जाकर माँ लाओ।”

“मीठी की बहू उन्हें पहनकर गाँव गई है घपने माई की खापी में।”

मैरब ने धाकाध की ओर देखा बड़ी निराशा में धीरे धीरे घुंरत ही उठने कलाई की घपनी बड़ी पर नजर डाली।

बड़ी बिता से बागो बोली—“तो सब क्या होगा ?”

मैरब ने बड़ प्रेम से बागो की पीठ पर हाथ रखकर कहा—“कुछ नहीं ये सब बाबाएँ घाली है। लेकिन घपने निश्चय में बूढ़ मनुष्य एक हथ भी नहीं हमर-ठहर बिसक सकता। हम इसी गाड़ी से जर्मने इतमें कोई संघय नहीं। तुम धीरेन कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ। मैं घपनी माता हूँ।”

मैरब जला गया धीरे बागो मैरब के लिए हुए उन कपड़ों की पहनने लयी जिन्हें पहनकर वह प्राय तक कभी बाहर नहीं गई थी। उधकी माँ बहुत प्रसन्न हो उठी। बागो की उस प्राय सज्जा की देखकर घपने भाव्य को सराइने लयी। सब प्रसन्न यह डर बाठा रहा कि मैरब किसी दिन उसे बोखा दे जायगा।

बहू बैटी के पास जाकर बोली—“बेटी मुह बफ़र न जाना। छापी बुनिया को मानूम होना चाहिए कि इन कीमती कपड़ों में तू बाठी है। मेरा मतलब है यहूरे में सब पर बहू बात बल जान। इस मुहल्ले वालों की तो यह बात मानूम ही है यमु बानू के घर के रास्ते मत जाना। लमझ गई ?”

बागो ने धरंभे में घाटर पूछा—“क्यों बहर से जाने में कौन-सा खरका है ? मैं धाम का उनका लमाम काय करके रख पाई हूँ पूरा-अब पूरा।”

“यह नहीं कहती। धपर बहर से बहू सतरपी छाड़ी पहनकर शायगी तो कल को उनके यहाँ पैनी छोड़नी छोड़कर बँभे जाओगी ?”

बागो घपने मन में सोच रही थी—“धीरे जब प्राय रख को यह

मेरे घाने का इतबार करते-करते बक जाययी तब कहीं इस पर सारी सन्धाई जुम जावनी ।” उसने जाहिर ने कहा—“नहीं माँ न जाईयी उबर से ।”

भैरव साधार होकर फिर घर जा पहुँचा । वह वहाँ से मूक अंतिम बिदा ले चुका था पर बटनाबण फिर उठे वहाँ जाना पड़ा । वह अपने कमरे में जाकर अपने बक्सों को खोलकर कुछ ईदने लगा ।

पिता उसकी तरफ से बिलकुल उदासीन हो चुके थे । वह बेटे से प्रतिम शब्द कह चुके थे और अब तक भैरव उसकी धाजा पर अपने को निछावर न कर से तब तक उससे किसी प्रकार का व्यवहार करने की उमकी बरा भी इच्छा न थी ।

बेटे को धारा बान माता फिर उसके पास पहुँचा । कहने लगी—“बेटा समझ में नहीं धाई तुम्हारे कोई बात ?

“बिलकुल धा गई माँ ।”

माँ उसकी बोली से उसकी बात का धर्म समझ गई । उसने भावना को दूसरा मोड़ देते हुए कहा—“क्या ईद रहे हो ?”

“कुछ नहीं ।”

“मैं कहती हूँ दो बार ही इया की जो भी चकरात ही तुम्हें मैं धमी जा बैठी हूँ । लेकिन पिता की धाजा भागनी ही पड़ेगी ।”

भैरव ने कोई जबाब नहीं दिया और कमरे के बाहर हो गया । सीधे एक ज्वेलर के वहाँ बड़ी बेच ही धीर बासो के यहाँ जा पहुँचा बासो तैयार बैठी थी । उसे केकर बना । जाते समय उसकी माँ से बोला—“सिनेमा देखने जाते हूँ ।”

उसकी माँ ने पूछा—“कितने बज तक सोटोने ?”

भैरव ने जबाब दिया—“हाँ मैं खुद ही पहुँचा जाईया ।”

माँ शोध में पड़ गई इस जबाब से ।



बंबई से बिज

बकी ठकी से करम बढ़ाते हुए वे बीगो गली पार करने लगे । सा
का समय वा नदकों पर मीड़ बढ गई थी । अभिकाश लोग ना
पहचान सके नीची नजर कर जाती हुई उस बासो की । कपड़ों के बद
जाने से बकर उसकी धमल में भी कुछ परिवर्तन प्रकट हो गया था
लेकिन कुछ लोग बिम्बू भैरव का वह प्रेम का कथालक जाठ था उन्होंने
सहज ही बासो को पहचान लिया । वह बूबट में भी होती हो उनकी धमल
से नहीं छिप सकती थी । बली की नोक में बैठनेवाला वह रामू पनवारी
बला की उसकी नजर थी । वह पत्ते की हुरियाली तर पत्थर की सफेद
में लकड़ी का कत्था मिलाकर एक तथा रंग उपजानेवाला—सबसे वह
उसी ने इत बेद का पता बमाम्बा ।

तन्बाबू के सिधे हयेली कैसाते हुए बसका एक बाहक बोला—
“छापर बहू को अपने माठा-पिता को दिखाने के सिधे अपनी कोड़ी प
ने जा रहे है ।”

दूसरा बोला—“जब पसंद था जाब तब न ।”

पनवारी ने फँसला किया— “पसंद न जाने की क्या बात है ? कल
सिर्फ कपड़ों की थी । देखा नहीं तुमने ? बिम्बू ठठके से बली जा र
है । मैं रोज इसे धाँसे-जाँसे देखता हूँ मैं ही बोझा था नया था ।”

बासो ने जाँसे-जाँसे पूछा—“हुया कुछ ईतजाम ?”

“हाँ काम बला ही सेते है नमबाम् । धादमी को सिर्फ अपनी धमल
में बने रहने की बकरत है ।”

गली से बाहर धाकर ज्योंही वे लोहे के स्टब की धोर बड़े ए

तायेवाना षोड़ा घाटा । दोनों उसमें बैठ गए । भैरव ने उससे कहा—
“पिक्कर हाइम ।”

स्टेशन की सड़क पर ही का पिक्कर हाइम । तानिबास न उम
बोनों को वहीं उतार दिया । जरा-सी दूर पर रेल का स्थान का दोनों
पैरस आ पहुँचे वही । रेल के छूटन में धीमी पूरा बटा भर था । भैरव
ने जानो का बगिन कम में बैठाकर कहा—“तुम बठो पहाँ मैं बाड़ी बेर
में घाटा हूँ ।”

‘क्या रह गया ?

सभी कुछ बासो । परदे पर का सिनेमा देखन क निम बकर हमें
किसी चीज की उकरठ नहीं थी । लकिन हम ठो बड़ा ठोम जिदनी का
मिनेना देखने जा रहे हैं । उसका नियो ममी बोझों की उकरठ पड़ेगी ।
इस तरह बिना सामान के जागे में घपन ठो रास्ते भर प्रौर परदेम
में लक्ष्मीक उठवेले ही लोग भी ठो तरह-उरछ की बार्ने भीचन लॉगे ।”

बासो ने कहा—“बास्वी घाना ।”

हैमकर भैरव ने जबाब दिया—“हाँ बासो बड़ी लोकर मैं सब
मच्छी तरह समय के साथ बूल-मिल गया । भस मेरे हृदय में धड़कने
लगे ।”

“तुम्हार हाथ की बड़ी कहीं गई ?”—बड़ी चिंता से वह बोली ।

‘फिर बताऊँगा ।”

“बो गई ?”

“नहीं कोई नहीं ।”—कहते हुए भैरव चला गया ।

ताँका कर वह फिर बाजार घाटा । एक बूकान पर उसका एक
बिस्तर रखा हुआ था उसे लेकर वह फिर दूमरी चपह गया । वहाँ उसका
सो बक्से रख हुए से जगको भी उसी लाने में रख वह सीधे स्टेशन पहुँचा ।
दूतने दरवाजे के टिकट-बार पर वह उतर गया । कृमियों ने जगका सामान
उठा लिया । वह वहीं टिकट खरीद कर स्टेशन के पीठर चला ।

बगिन-कम में बासो बड़ी उद्विग्न होकर उसकी प्रतीक्षा कर

थी। भैरव ने पुरानी घाबल की लाचारी से समय देखने को फिर कलाई में लजर डाली। हाथ बाली था।

'कमी बड़ी कहीं गई ?'

भैरव ने स्टेशन की बड़ी में समय देखकर कहा— 'कमी दस मिनट बाकी है।'

कुलियों ने सामान बगह पर रख दिया। दोनों गाड़ी की प्रतीक्षा बैटिंग-रूम के भीतर ही कर रहे थे। भैरव ने डिगरेट बलाकर घट प्रवकाश की पुति करनी प्रारंभ की।

बाबो ने पूछा— 'बड़ी बे घाए क्या किसी को ?'

'नहीं ! राहु-सर्प की जकरत थी। फिर वहाँ पहुँचने पर भी तो जब तक कहीं कुछ नाम न मिल जाय। बुबर-बसर के सिये कुछ नकर पैसा बाहिए न !'

'तो क्या बेच री बड़ी ?'

'बेची तो नहीं एक मित्र के पास यिरवी रख घाया है। देखो घगर भाय कमक उठा बंबई में तो सुडा मुपा बड़ी को। नहीं तो माठा पिता का प्रेम छोड़ जा रहा हूँ। जमीन-बायबाब पर लात मार री। सखा पीर मित्रों से बिबा न नी— एक उघ बड़ी में ऐसी कौन-धी बात है।'—भैरव ने बड़ी लापरवाही के साथ कहा।

बाबो ने एक ठंडी साँस ली— 'और यह सब मेरे सिये ?'

'नहीं बाबो तुम्हारे सिये नहीं सब अपने सिये। तुम्हारी इस मुक्ति में मैं ही प्रम साकार हुआ है। पीर मैंने अपनी ही बूणा से इस सुख पीर मुपति के घाईबर को इस प्रनुता के पाबंड को तोड़ दिया।'

'घगर बंबई जाकर कछ न हुआ तो ?'

'ऐसी बुरी बाली यात्रा के इस शुभ प्रवसर पर न बोसो। बंबई में उचित घाफाया के अनुकूल सबको मिल जाता है। ह्य कछ घबिफ की घाफाया न करेवे।'

एक कमी बीड़ा हुआ घामा। ज्येटर्पामें पर बहल-बहल चरम नीमा

हो झूने लगे थी । कुली बोला— 'तुम्हारे पाकी का रही है ।

दोनों बाहर को चले । भैरव बोला— 'बासो मन में उत्साह बना करो । हम एक नए ही विश्व की पंखी पर पर रल रहे हैं ।

बासो के क्रोमल धमर विविध मुक्तकाल पर बिपे । जीवन की शक्तिता से मरी उसकी बड़ी-बड़ी धार्से प्रदीप्त हो उठी । दूर भित्तिन पर चढ़चढ़ाती हुई गाड़ी का रही थी ।

दोनों पाकी में बँठ गए, माम घसबाब की रज लिया गया । पाकी कम पड़ी । घब तक जो बंबई जाने का उत्साह का वह सहसा गाड़ी के चलने पर टूटने लगा । धीरे-धीरे नगर के प्रिय धीर परिचित घब बाट-बाट सब छूट गए, मदन-मंदिर धार्से से तिरोहित हो गए धीर गाड़ी शून्य निर्बल धीर जेठो पर से होकर जाने लगी तो बासो का मुख उबास हो गया ।

भैरव ने पूछा— 'क्यों बासो ? भूख लग गई ? मैं टिफिन कैरियर में खाना रखकर लाया हूँ ।'

'नहीं भूख नहीं लगी है । अभी समय ही कहाँ हुआ है ?

'फिर क्या बिठा व्याप गई तुम्हें ? वह सब मेरी जिम्मेवारी है । हम कहाँ खेने क्या करने क्या लार्पे ? बंबई के लिये मैं बिलकुल परदेसी नहीं हूँ । मैं वहाँ कई बार आया-गया हूँ । वहाँ की सड़की धीर लीपों से कुछ परिचय है मेरा । तुम्हारी उदासी मेरा दिल लोड़ देती ।'

'तहीं भैरव मैं तुम्हारे लिये धपना सब-कुछ निछनवर कर दूँगी ।'

'सिक्किन तुमने धपने मुझ की वह प्रसन्नता वह हँसी-बुशी कहाँ छिपाकर रख दी है ? तुम्हें बराबर उससे मुझे भीविश धीर उत्साहित रखना होना नहीं तो इस भवानक परदेस में बिना पैसे के हम लौ लार्पे ।

'कुछ पर की याद का यई की ।'

'तुम्हारा बिराण का बर है बासो मैं धपने बर में रूठा का, धीर बिपला धकेला बरपबिकारी मैं ही का ।'

बासो ने मुसकान के साथ कहा— अब न होयी मूस
उबर बर पर बासो की माँ सल ही बज से बासो के सीट घाने की
बाट देखने लगी । घान बजे घाठ का घटा ठमका नी घीर बस । अब
तो वह घबरा उठी । पास-पड़ोसियों के पास जा पहुँची ।

एक से पूछा—“कितने बजे गए थे ?

बासो की माँ ने जबाब दिया—‘साठ पाँच बजे ।

‘इस बज के खेल में या तो डेर हो गई होवी या टिकट नहीं मिली
होगा । घाठ बजे घाने में गए होये । घमी बस ही तो बजा है खेल
खतम हो रहा होवा । फिर सवारी किसी का नहीं इपर मनी में वह घा
मी नहीं सकता । घाटे ही हान ।”—एक ने जबाब दिया ।

डूसरी ने जान-बुझकर भी धनवान होकर पूछा—‘किसके साथ
गई है ?’

‘घीर किसके साथ जावेगी ? अपने बाब के साथ । बासो की
माँ अपनी सफाई देनी हुई बोली ‘मैं क्या करती ? मेरा कहना जाना
ही नहीं ।’

घीर एक तीसरी बोली—‘रामू पनवारी कच्छा या मीरब बाबू के
साथ चल ही घान बासो ।

बासो की माँ ने माया पीट लिया—‘है । चल ही । कहीं को चल
ही । वे तो सिनेमा देखने गए हैं ।’

‘अब बरा है क्या सिनेमा ? बस कब के बज गए । ग्याए बजे
घब ।’

बासो की माँ ने उसके हाथ पकड़ लिए । तिड़किड़ा उठी—‘बीही
कब बरा या वे होना नहीं गए फिर ?’

‘मैं क्या जानूँ नहीं गए ? एक बाल बना ही जो मुनी । तुम ही
साल उबड़ने का तैयार हो गए ।

बासो की माँ बीड़ी-बीड़ी बजरिया की तरफ गई । रामू पनवारी
अपनी डूकान बड़ा रहा था । बासो की माँ को उबर घाटे देखकर उसने

जब ही पूछा — 'क्यों बाबो की माँ क्या बात है ? बाबो कहाँ गई ?

'यही मैं तुमसे पूछने चा रही हूँ । —उधकी घाँटों में घाँसू भर गए थे ।

'अरे वह तुमसे पूछकर नहीं गई ?

'पूछा तो या सिनेमा जाने के सिये ।'

'अब तो ग्यारह बजेंगे । सिनेमा देखने कही नहीं गए थे । एक बाबू मम्बई के गए थे उन्होंने उन्हें ठाँगे में बैठकर स्टेशन को जाते देखा था ।

'माई री ! सिग पीटकर बैठ गई बुढ़िया पनबारी की वृकाम के सामने — अब क्या करूँ मैं स्टेशन जाऊँ ?

'अब बाबो स्टेशन में क्या बैठे होंगे थे ? छ बटे में वे पहुँच गए हो हो सी-टीम सी मील की दूरी पर ।

बड़ा बोधा विदा इसने ? अपनी मतान होकर एसा वृत्म कर गई । मीरब बाबू के घर से पत्रा लगेया वहाँ जाऊँ ?

'क्या बात करती हो बाबो की माँ ! जब तुम्हारी बेंटी तुम्हें कोई खबर नहीं दे गई तो मीरब बाबू क्यों कह गए होंगे ? वहाँ कौन तुम्हारी बात सुनेया और भाऊत में फँस जाओगी ! बाबो अर बाबो देखा जायया । दुनिया ऐसी ही है ।

अरे राम दुनिया ऐसी ही है । बाबो की माँ ने कहा—'जो उस बिल ऐसा जानती तो

'बुयो बुयो माँ पड़बड़ मत बको उधर से पुमिसबासा घा रहा है ।'—कहते हुए राम पनबारी में वृकाम बंध कर ली ।

माता उदास और निरास होकर अर लौट गई । पास-पड़ोसबासे हार हककर बुनबाप इस ठाक में थे बाबो लौटकर आई या नहीं जब उसकी माँ मकेली ही लौटकर आई तो एक बड़िया ने उसके यहाँ जाकर पूछा—'क्यों नहीं आई बाबो ?

'नहीं । —रहे हुए बाबो की माँ ने जबाब दिया ।

“अब बारह बजेमें कहीं गई ?

कहीं बटाऊँ ? भैरव बाबू ऐसे आदमी तो नहीं थे ।

“मैं तो समझती हूँ वह अपने घर ही ले गए होये होंगे । कल को मालूम हो जायगा । सो रही कोई ठिकर की बात नहीं है । — इत तख्त उसे डाढ़स बैठाकर बुढ़िया बसी गई ।

लेकिन माता का हृदय उसका तर्क उससे कहता था— “ये दोनों तुम्हें छोड़कर जैसे गए । ममता कहती थी— “नहीं कहीं नहीं गए । देर हो गई किसी कारणवश रात में नहीं प्रायेंगे तो कल सुबह तो जरूर ही आ पहुँचेंगे । इस प्रकार बुढ़िया क सो पाटों में पिसती रही वह । द्वार बन्द कर दिए उसने उन पर साँकल नहीं चढ़ाई । घाँसे बंद कर ली उसने नीच नहीं छाई उन पर ।

बाबूई पहुँचकर भैरव ने फिर एक बार अपनी लकड़ सम्पत्ति की बोझा घोर बासो से कहा— “अब क्या होमा ?”

बासो ने जबाब दिया— “मैं क्या बटाऊँ ?”

“बुद्धि से काम लेना होमा बासी । अब तक कहीं पर कोई धाधा नहीं बैवती तब तक पैसे की बहुत सोच-समझकर रखा करनी होमी । इस कमक-नयरी में मनुष्य को ऊँची मट्टालिकाओं में सुसोमित होते भी देर नहीं लवती घोर फूटपासों में बिछले भी बिलम्ब नहीं लमता — भैरव बोला ।

स्टेशन के बाहर एक फूटपास में कुलियों ने उनका सामान रख दिया था और वे दोनों वहाँ पर अपना मार्ग टटोल रहे थे ।

भैरव ने फिर कुछ सोचकर कहा— “बासो घमी किसी होटल के स्वप्न बैतना जचित नहीं है । मेरी समझ में किसी बर्तघाला में जैसे ।”

यही क्रिया यथा । वे दोनों एक बिक्रीरिया में सामान लाकर जैसे घोर हाव-पीर जोड़कर किसी प्रकार उन्हें एक पर्यघाला में आपह मिल गई । एक छोटे-से कमरे में दोनों ने अपने हाव में सामान उटाकर रख दिया ।

मेरे ब्रह्मा—“बासो भगवान् की यह प्रथम कृपा ही समझनी चाहिए कि हमें यहाँ जगह मिल गई। बिना वैसे ही जगह रिखाए यहाँ कौन कैसे पूरना है ?

दोनों ने महा-शोर मचाया कि क्या अब क्या हो ? दोनों निश्चय करने बैठे। बासो बोली—“बम्बई समुद्र के किनारे है मैं तो कहीं भी समुद्र नहीं देख रही हूँ।”

इसके बाद मेरे ब्रह्मा ने उत्तर दिया—“यह सब धीरे-धीरे देख लोगी। सब से पहले हमें वर रखने के लिये एक धारा को रुँड लेना जरूरी है। मैं शहर में जाता हूँ एक-दो जगह कुछ खान-पहान है जहाँ सब से कहीं किसी नोकरी का सिलसिला जाता है।

“तुम्हें भी साथ ले लो। मैं धकेली यहाँ जाने दूँगी ?

“हर कैसा ? हमारा हर समय साथ कैसे हो सकेगा ?

“हम माँ को साथ क्यों न ले जाए ?

“घाने का बसो अब क्या करना चाहिए। पीछे की बैरना नादानो है। भीतर से डार बन्द कर लो। मैं ब्यादा बेर नहीं लगाऊँगा। तुम्हें बिनाम की जरूरत है धाँके कह रही है। तुम सो जाओ। मेरे एक बात धीरे धीरे में पाठी है। मैं नीचे बूकान से एक टासा खरीद लाता हूँ। उसे बाहर से लगा दूँगा। जब लौटकर आऊँगा तो बिना तुम्हें कोई कष्ट दिए धीरे तुम्हारी नीब को बाधा पहुँचाए ठाका लोभ दूँगा।

घान में यही निश्चय हुआ। मेरे ब्रह्मा की इच्छा में ही स्थित बाहर की धोर की एक बूकान में से एक टासा खरीद लाया। जहाँ का कम्पन बूकान में बिना पक था। ठाका लेकर जब उसने अपने कमरे में प्रवेश किया तो एक मनुष्य बासो से पूछ रहा था—“कब होगा यह कम्पन खाली ?

मेरे ब्रह्मा ने कहा—“धाम ही तो यह कम्पन बिना है हमें अभी कहीं खाली होगा ?

“कहाँ से जाए हो ?

‘उत्तर प्रदेश में।’

‘भीकरी इंसाने ?’

‘हाँ।’—कहकर भैरव ने उसकी धोर पीठ फेर ली। वह म-जाने किस तरह चला गया।

कुछ देर बाद भैरव चला। बासो ने कहा— ‘जल्दी घाला।’

कोसिस तो मही रहेगी। लेकिन तुम्हें जानना चाहिए, इतने बड़े बिस्तार का यह नगर है। एक भावमी इस सिरे पर रखा है तो हमारा बिमकुल दूसरे सिरे पर। बीच में बीसों मीलों का अन्तर! काम अपना धीम-से-धीम कर लेना है। तुम्हें साहस रखना चाहिए अगर मेरे घाले में कुछ देर भी हो गई तो। देखो सामर कोई तुमसाचार लेकर धीम ही घा पहुँच—यह भी कोई असमम बात नहीं है। तुम तो जापो तुम्हारी धारों नींद में भापी हो उठी।

भैरव ने द्वार बन्द किया और उसमें लाला लगाकर चला गया। जब वह बस में बहुत दूर निकल गया तो सोचने लगा—‘भैरव बाहर से लाला लगाने की ऐसी क्या सूची मुझे। यह बासो की नींद को न तोड़ने का बहाना क्या उसके एक पार्श्व पर उसके प्रति प्रविष्टास नहीं है?’

भैरव ने भाषा हिमाकर उस विचार को भिचरेट के बुर्दे के साथ उड़ा दिया बायुमंडल में धीरे बस से उतर गया वह शहर की चौड़ी सड़क पर। कुछ दूर पैदल चलकर उसने एक जवन का फटका पार किया। घाट इन्धौर पर के एक मकान के दरवाजे में खडकर बंटी लवाई।

द्वार खुला एक परिवारिका ने बाहर पूछा—‘कौन है?’

भैरव ने पूछा—‘सरकार बाबू को बुला दो।’

‘यहाँ कोई सरकार बाबू नहीं है। यहाँ जायदा राब रहते हैं।’

भैरव बाहर चला घाला धीरे मन में सोचने लगा—‘कई कोठियाँ तो बिमकुल एक ही सी हैं। उनको पहचानना कठिन है।’ बहुत चुका किंग वह। नहीं सरकार बाबू का क इ पता न चला।

घरने पिता के किसी परिचित के पास जाना उसके मिय जोर घपमान की बात थी। उसे घरने ही बल घौर पीरुप का घांभमान बा। घघने फिर याद किया। उसका एक मित्र सांताक्रुस में रहता था। दादर के रेल स्टेशन पर इस बार उसने रेल का सहाय लिया।

रेल से उतरकर वह ज्यो ही मित्र के घर गया तो बाग पड़ा मित्र ने मकान बदल लिया है घौर माटवा की तरफ कहीं रहते हैं। ठीक-ठीक पता कोई नहीं बता सका।

फिर भैरव ने कमर कसी। उसे मूल सग नहीं थी। दोपहर बीत चुकी थी। उसने एक बसपाग-गृह में प्रवेश कर हल्का भोजन किया। उसे बानो की याद घाई—वह सोचने लगा— उसे ठाने में बन्ध कर कोई बुद्धिमानी का काम नहीं किया मैंने। जाकर लोग घाऊँ? घालिर वह भी तो मेरी ही मोठि एक जीव है। उसे मूल-व्यास लगी होगी?

इसी समय कोई दूसरा उसके मन में बोस उठा—‘येते भी क्या कमखोर मिट्टी के भागव हो तुम! मूल लगी होगी तो टिफिन कैरियर में बहुत खाने-पीने को पकवान भेजे घौर मिठाइयाँ रखी हैं। कंडी में संतरे घौर केस है। चाय की बासो को घबिक घादत नहीं घुराही पानी से मरी रखी है।’

होटल में खाते-पीते समय उसकी एक मनुष्य से जान-बहुचान हो गई। उसका सुल-बुख सुनकर उस मनुष्य ने उससे कहा—‘घाप घपनी तकधीर रगत पट पर क्यों नहीं घाजमाते? घाप का बिलास कर घौर बलन मुझे तो घण्ठा जान पड़ता है। बहुत सम्भव है तुम्हारी घाबाब भी माइक लूबसुरती से उठाले। जाकर क्यों नहीं किसी सिनेमा के बायरेकर से मिलते। बहुत सम्भव है कोई घापको ढूँढता हो। घनर घापने कहीं उसे ढूँढ लिया तो फिर एक ही राठ में घापका सिताठ बकक आमगा।’

भैरव के भीतर-ही-भीतर एक बड़ी मजुर पुतक पैदा हो बा ऐसा तो बाइता ही बा। इसी बिबवास पर वह बम्बई जाता

वह नूर मन्की तरह समझता था—बातों के रूप की एक-एक दिशा उसके गति-विधि का एक-एक कोण उसकी भावनाओं की एक-एक रेखा उसकी बोधी की एक-एक स्तर मँगिना उसकी दृष्टि की एक-एक सक्रियता और उसके भीहों की एक-एक प्रवि—रागी और बैरागी दोनों को प्रभावित कर सकती है।

लेकिन भैरव ने बातों को घागे बढ़ाकर किसी सिनेमा कंपनी के द्वार बटखटाने परमानजनक समझे। उस नए मित्र की बात ने उसके भीतर एक नया उत्साह लहरा दिया। वह सोचने लगा—“क्यों किसी मित्र की सोच करें? झूठी सुशामद! अपने ही घाबार पर स्थिर हो जाऊँगा मैं।”

उसने उस नए मित्र से पूछा—“तो क्या करना चाहिए मुझ?”

महात्मनी बने जायो। बोधी दूर चलकर वह बड़ी इमारत दिखाई देनी तुम्हें।”

“वह मुझे मामूम है।

“बस बही जायो और देखो तकबीर कौन-सा स्तर बघाती है।

शाय पीने के घनंतर भैरव ने उस मित्र को गिबरेट पिसाई और ठीक समय पर एक बढ़िया बात सुझा देने के सिवे सम्बधाव दिया।

मित्र बोला—“मैं ट्राम की लाइन में इम्सपेक्टर हूँ। चार बजे से पैरी हुयी है। नहीं तो मैं तुम्हारे साथ जाता।”

भैरव फिर महात्मनी के सिवे रवाना हो गया। वहीं पहुँचकर हजर-अजर डापरेक्टरों को टटोलने लगा।

एक ऑफिस पर पहुँचा तो बॉय ने कहा—“जरा बेर टहरो। मनी बॉयरेक्टर साहब बहुत जरूरी काम में हैं।”

दुलरी जबह मामूम हुआ—“डापरेक्टर साहब छ' बजे से पहले नहीं मिल सकते।”

ठीकरी जबह कहा गया—“एक काबज में अपना नाम-पता उमर और मतलब लिखकर रख जायो। साथ ही घनर अधिभव करना चाहते हो तो एक जोरो भी। तीन-चार दिन में जबाब मिल जायेगा।

तमाम प्रॉफिटों में झूमता रहा और उसने निश्चय कर लिया था कि घने को डूबनेवाले को डूब ही लूंगा। डूबते-डूबते उसे घाम हो गई लेकिन उसका अत्साह कम नहीं हुआ। बहुतों ने उससे बारे किए कई लोगों ने उसे मीठी-मीठी धाघाएँ बिलवाईं।

उसका धाघब था सुरल ही काम सिद्ध हो पाया। एक ने कहा— 'नाई सुरल ही कुछ नहीं होता। मिट्टी में बाना बोधो तो वह भी कई कई दिन से लेता है बमीन की सतह पर घाने के निचे ही। उस पर मी ठीक-ठीक पानी घौर बूप उसे भिसे तो। ऐसे बाजीपर यहाँ कोई नहीं है जो कुटकी बना हचेती पर पेड़ उपजाकर रखे है।'

घाम बलकर रात हो गई। निनेमा—विश्वास की उपज का क्षेत्र नहीं तो दिन में ही घेबेठ कर रात उपजा ली जाती है। बीपक बल उठते हैं। और बब घनेक प्रॉफिटों की परिक्मा कर धाघाघो के कई बम्बब बाजे बर्मघाला को बाने के निचे बाहर भाया तो चारों मोर बिजली के बीप अपममा उठे थे।

उसकी मति में जर्म्य थी। 'धबस्य कही-न-कहीं वह बर्मघाला की धबधि पूरी होने से पहले काह ठौर डूब ही लेगा। उसे काम मित जाने पर फिर बासो को काम नहीं डूबना पड़मा। काम उसे डूबता हुआ बना प्राएगा। फिर हमें कोई कष्ट न रहेगा।'—वह सोचता बना।

घाम हुई घेबेरा हो गया। बासो तब तक मी सोई ही रही। घबानक किसी ने बाहर से द्वार कटकायमा— 'उठो द्वार खोलो।

धाबाब बामी-पहचानी न थी। पहले बासो द्वार खोलते दिचकिचाई। दूसरी बार फिर किसी ने झिड़ककर कहा— 'धमी तक सो रही हो क्या ? द्वार खोलो।'

बासो ने द्वार खोले। वह बाने कौन था। साधारण बेब था बड़े परिचित की दिति वह बासो के कमरे में बूच गया और बिजली की बत्ती जलाकर खैरल ही बिस्तर बाबने मया।

बासो ने पूछा— 'और बाबू कहाँ है ?

“मैरब बाबू ही में भेजा है मुझे बाहर मोटर सड़ी है। जलो खोरन ही बुलाया है उन्होंने। उनके बोस्ट मिम गए हैं। जलो बेर न करो।” — प्रागन्तुक ने कहा। दो कुमियों को भी बुला लाया था वह।

बोड़ी ही बेर में सब सामान बाँधकर बाहर मोटर में रन दिया गया। प्रागन्तुक बासो को लेकर मोटर की घोर बसा।

बासो का क्याल था सामन मैरब मोटर में बैठे होंगे वहाँ उम्हे न पाकर वह कुछ हिचकिचाने लगी।

प्रागन्तुक बोला— “आज पहली ही मर्तबा बन्दई घाई हो ? किसी बाँध से क्या ? मोटर भी पहले कमी नहीं देखी ?

बासो बड़ी मरिमत हो गई। पूछा उसने— “वह कहाँ है ?

“कीन मैरब बाबू ?

“मोटर में बैठे तो सही। उम्ही के पास ले जा रहा हूँ मैं मुम्हे।

बासो मोटर में बैठ गई। मेफिन उसका हृदय बडक रहा था। मोटर तेजी से न जाने कहाँ जा रही थी मर-मारिया की ध्वार भीड़ से होकर। एक क्षण बासो का हृदय प्रसन्न हो जाना घोर बुरे ही क्षण वह उदास होकर सोचने लगती— “कहाँ जा रही है यह मोटर ? मैरब के निकट या मैरब न दूर। कहाँ जा रही हूँ मैं ? बिना उनकी आज्ञा या पत्र के ? यह मेरी बुद्धिमानी है या मुर्खता ?”

कई सड़कों पर मोड़ जाती हुई मोटर न-जाने कहाँ-कहाँ होती जाती बातों को क्या पता ? घट में वह एक कई संभिल की बपनचुंबी घट्टानिका के पास आकर रुक गई। मोटर का द्वार उस मनुष्य ने जोमा घोर बासो से कहा— “वहीं उतरना है।”

बासो ने उतरकर उस घट्टानिका को देखा और वह विस्मय-स्तब्ध हो गई। वह मनुष्य बोला— “तामान धमी या बाबगा। पात्र घाइए मेरे साथ।”

बामो उसके पीछे-पीछे जाती। बोड़ी दूर भीतर जाकर उस मनुष्य ने किण का प्रवेश बिभकाया घोर बासो से कहा— “बनिए इसके

भीतर ।”

बासो फिर हिककिचाई । उसकी समझ में नहीं आया वह क्या बना थी । मनुष्य हँसा—“तभी तो कहा मैंने घाप किसी गीब से मारी है ।”

बासो ने उसकी आवाज मानी । उसने स्वयं भी लिफ्ट में हाथिन होकर उसका द्वार बंद किया और लिफ्ट का बटन दबाया । लिफ्ट ऊपर की बिसक बना । बीपी मंजिन पर आकर रुक गया । दोनों उसमें से बाहर निकसे । लिफ्ट का द्वार बंद कर दिया गया ।

उस मनुष्य का अनुसरण करती हुई बासो एक न बाप एक दूसरे कमरे में जा पहुँची । लुब उबा हुआ का कमरा । चारों घोर परदे लगे हुए थे । बिजली की बत्तियाँ प्रकाशित थी । मेज पर सुव्यभिच रूप बना रखी थी । एक लम्पटी में कुछ फल भीर मेवे रले हुए थे ।

‘बैठिए ।’

बासो ने पूछा—“मेरेक बाबू कहाँ है ?

बैठिए तो सही घाप वह भी आ जावेमे । उनको ईँडकर लाता हूँ ।”—कहकर वह मनुष्य चल दिया बाहर की ।

बासो काँपते हुए हलक की लेकर बैठ गई । एक-एक क्षण कई-कई बुझो-वा बढ़ गया । वह कभी बैठती सोपे कर कभी फिर कुछ धम्यवा बिचार घाने पर उठ जाती । एक मिनट बीता दो मिनट—बस मिनट । मेरेक बाबू का पता नहीं !

मेरेक बाबू रजत पट की अनेक सुवर्ण घाघाओं की हृदय में लिए बमसाला की अने । सोच रहे थे—“बासो बहुत कुछ हो बापवी । चार बापरेफ्टरों ने तो ससे पूरी-मूठी घाघा बिचाई है धपने-धपने बिजों से काम देन की । एक ने कहा है धपर में कही से कुछ घाबिक सहायता बुटा सक्ती वह मुझे धपने घागामी बिज में हीरो का काम भी दे देंगे । भीर धपर उन्हें बासो की योष्यता का पता लग जाय तो ? बुद बासो भी नहीं जानती उसके भीतर सिनेना जपत की एक प्रख्यात मटी छिपी

हुई है। उसी दिन मैं बठाईया पिता की को जिस दिन बामो के चित्र भारत के चर पर टैप आयेगे। वही दिन इस बात का समूह होना कि विद्या धीर जमा पर कुसीमता का ही अधिकार नहीं है।”

भैरव बानू इन्हीं विचारों में सह्राते हुए ड्राम में जैसे जा रहे थे। ऐसी कोई प्रस्ती नहीं थी उन्हें धीर जो भी वैसे बच जाय बच तक उसके कमाने की शूरत नहीं बनती—बह लाभ-ही-लाभ था।

बह ड्राम के स्टेसन पर उतर पड़े धीर बर्मघाला की धीर वीरल जल पड़े। एकाएक उनके बड़ी चिता का उदय होने लगा— विचारी को दिन भर एक बेसकाने में बंध कर गया। क्या वह सोचती होगी धीर क्या लोभ? बस घुट गया होगा उसका। माननी अधिकारों के इस विमुक्त बामुर्मिल में उसके बूँबट के ऊपर यह कारागार का ताना—सबस्य पैरी बर्बरता है। धब भूलकर भी ऐसा नहीं करेगा।”

भैरव बर्मघाला का धटक पार कर भीतर को चला। कुछ लोभ उसे देख रहे थे। उनका जो भी मतलब हो पर भैरव को ऐसा जान पड़ा मानो वे उसी की बाबत कुछ बातचीत कर रहे थे। उनकी बह दृष्टि उसके हृदय में महरी चुमने समी बह जाँप उठा।

बह बर्मघाला की सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपर को जाने लगा। उसके ऐसा जान पड़ा—बह कहाँ जा रहा है वहाँ? कीग है वहाँ उसका? बह बीड़कर तील नंबर के कमरे में गया। मन में बह धपने लगाए हुए ताने को देख रहा था। बर क्या देला उसने?

कुछ लपट ही में नहीं घाया उसके। बाग धोद धँवकार देखने लगा बह। माया पकड़कर बरामदे की लौड़े की रेलिंग का सहारा निबा उनसे। सामने तील नंबर का कमरा लुना था। उसमें किसी धीर का बिस्तर सजा धीर सामान लुना पड़ा था। कोई हूसरी ही महिना वहाँ बिचबमान थी—उसके दो बच्चे खेल रहे थे उसके निबट।

धपने नवीन जपत का जो धबला दुस्य रख रहा था भैरव बह सब बानू के नगर-सा मूनि पर बिस्तर गया। साहस रखकर उसने बरामदे

में बसनेवाली बिजली की ज्योति में फिर अपने कमरे के नंबर को पढ़ा—तीन।

वह धीरे-धीरे-उबरा कई कमरों तक ही घाया धीरे किसी कमरे में उसका ठांसा नहीं था। उसकी ठामा सुभ-बुध जाती रही। वह क्या करे, उसकी तनक उसका साव देने से इनकार करने लगी।

वह तीन नंबर के कमरे के द्वार पर खड़ा हुआ। उसने उस कमरे को पहचाना। भीतर से महिला ने पूछा—“किन्हे बूँडते हो ?

महिला के शेरों बालक अपनी भीड़ा छोड़कर उसके कंधों पर लटक गए, ज्योंही उन्होंने एक अचरितचित्त को कमरे के भीतर अपनी नईन बालते देखा।

शेरव ने पूछा—“इस कमरे में हमारा सामान था वह कहाँ गया ?

‘अबक से पूछिए, हमें तो यह ज्ञानी ही मिला।

‘धीरे मेरी भीमती भी बी बह किस कमरे में बती गई ?”

‘हमें यह कुछ नहीं मालूम वह सामने दरवार है वहाँ जाकर पूछिए शायद कमरा बदल दिया हो।”—महिला ने जवाब दिया।

साक्षा में भरकर शेरव मीनेबर के पास गया। बोला—“तीन नंबर के कमरे में मेरा सामान क्या किसने खोला ?”

मीनेबर का एक सहकारी बोला—“हम नहीं जानते। जिसका सामान होना उसी ने खोला होगा।

‘मैं तो यह खड़ा हूँ आपके सामने। धीरे मीने नहीं खोला। —मग तो शेरव का मुँह पीसा पड़ गया।

‘हम क्या जानें हमने नहीं खोला। क्या, वा तुम्हारे कमरे में ?”

‘क्या था ? मेरा सामान था धीरे मेरी भीमती भी।

कुछ सोप जो वहाँ मौजूद थे सब हँस पड़े। शेरव के कटे में धीरे भी तनक-मिर्च पड़ गया। वह कछ रोप में भरकर बोला—“ज्यों इतमें हँसने की क्या बात है ?”

‘ज्यों हँसने की बात कैसे नहीं ? आपकी भीमती क्या कोई बकस

थी या होल्ड डॉल जो घाप उन्हें ताता लवानर बने नये ? बड़े घबरील घादनी है घाप ।

मैनेजर घपने कुछ मे कुछ मया था । उसने कोई बधाव नहीं दिया ।

मैनेजर का सहकारी बोला—“घबनी मैनेजर साहब घाते हैं उन्हें सामर कुछ माजूम हो ।”

मैनेजर एक कटे हुए बूख की मीनि घॉफिस की एक करसी पर बैठ मया ।

घास ही बैठे हुए एक घादनी न दैतिक पत्र हटाकर पूछा—“क्या कही बाहर स घाप हो ?”

“हाँ माई ।

क्या काम करते हो ?

“काम तलाश करने घाया हैं ।

उधने फिर घपना घबबार उठा बिना घीर उठे पढ़ने मया । बोड़ी देर में मैनेजर घा पहुँचे ।

मैनेजर ने घॉफिस के बाहर ही उन्हें बकड़कर कहा—“मैनेजर साहब मेरा कमरा किसने लौता ?”

“कौन-का ?

“बही मंबर तीन ।

“तुम्हारा ही कोई घादनी घाया होवा ।”

“बिरा कोई घादनी मही है वही ।”

“हम क्या जानें फिर ?”

“तुम क्यों मही जानते ? तुम मैनेजर बिल बात के हो ?”

“मैनेजर इतजाम के लिये है । इतजाम करते ही है । किसी के बेहरे पर तो कुछ मिसा है नहीं । उसकी जब मैं क्या है इसकी ही कौन जान सकता फिर किसी क बिल के क्या है —कय बता सकता है ? क्या माल या घापका ?”

“माल की ऐसी-तैसी ? बिस्तार-टुक की बरवा किस रूँ केरु

भीमती चीं कहीं गई वे ?"—भरत ने बड़ी बिह्वलता से तीन नंबर के कमरे की तरफ संकेत कर मैनेजर की ओर दृष्टि की। उसकी दृष्टि में एक विखिण्णता झींक रही थी।

मैनेजर ने धिर से पैर ठक भैरव को देखा और मन में यह निर्णय करने लगा यह धारणी पागल तो नहीं है।

भैरव उसकी यह मुद्रा देखकर चिढ़ गया बोला—“क्या देखते हो ? तुम अपनी ब्यूटी में हाबिर नहीं रहते ? क्यों नहीं रहते ?”

“बुप रहो। मेरी ब्यूटी की बेबमाल करनेवासे तुम कौन हो ?”

‘मिरा सबैसब बला गया और तुम्हें पता ही नहीं।’

‘तो क्या मैं तुम्हारी धीरज का चौकीदार बा ? टुक-बिस्तर बेजुबान चीबें हूँ कोई भी ले बा सजता है। लेकिन बीसा कि तुम कहते हा तुम्हारी धीरज को गई। कौत खो यह ?’

बहुत-से लोग घास-घास के बहाँ घाकर बसा हो गए थे। सब तमासा देख रहे थे।

‘यही ठी मैं तुमसे बूझ रहा हूँ कि वह कहीं नह ?’—भैरव ने पूछा।

‘अजीब धारणी हो ? मैं कहता हूँ अगर कोई बड़े बलपूरक से बाधा तो वह रोठी चिन्ताठी नहीं ? नहीं पर मरु ऑफिस है और वह चौबीसों बंटे खुला रहता है। वहाँ कोई-न-कोई हर बरत घर्मघासा की घाबाओं और टेलीफोन की बंती पर काम दिए रहता है। मैं कहता हूँ तुम्हारी धीरज को कोई नहीं बुरा ले गया।’

‘किर क्या कमरे में से उड़ गई हुआ में ?’

‘हवा में उड़ गई या किरवी के साथ उड़ गई ? मैं ठेकेदार हूँ क्या तुम्हारी धीरज का ?’

मैनेजर की बम्बई को सब तक भैरव बहर की बूट-या पीता का रहा बा सब तहल न हो सका उससे। बरामदे के कोने में एक कुझारान रखा बा टीन का। उसने उसे उठा लिया और मैनेजर के धिर पर जूँ दे मारने को बीड़ा—“बेईमान ! बँटे-बँटे तनया बाधा है धीर तनाम

शोर-उपशकों का घड़वा बनाकर रख दिया है मर्हा ।

लोगों ने बीच-बचाव कर दिया । मैनेजर बिस्माया—“पकड़ो इसे । क्या गया पीकर घाया है यह कोई ?”

झोष के घामेन में कुछ दिखाई-सुनाई न दिया भैरव को । वह सीढ़ियों से नीचे उतरता हुआ कूड़ा जा रहा था—“यह धर्मघाला है या बेईमानी धीर बबलाशों की पुष्ट ?”

नीचे उतरकर उसे धर्मघाला के प्रांगण में फुहारे के पास एक संगमरमर की मूर्ति दिखाई दी । घामेन वह धर्मघाला के किसी बाटा या संस्थापक की थी । उसे लक्ष्य कर भैरव अपने बलठे हुए जोस में बोला—“यह है इस धर्मघाला के संस्थापक । यह न हाते तो यह धर्मघाला भी न होती न मैं यहाँ बाटा न मेरी बासो जाती ।

फुहारे की बीवार के पाग मीम के समे की एक टूटी सोहे की छड़ पड़ी थी । भैरव उस प्रमान लगा ।

ऊपर से मैनेजर बिस्माया रहा था— पकड़ लो ।”

“किमकी ताकत है ? मैं सिर फोड़ रहा ।

किसी का साह्य न हुआ उसके निकट जाने का । घंत में उसने अपना सारा प्रस्ता निकाल दिया उस स्टैंड्यू के ऊपर । उसने वह सोहे की छड़ दे मारी उस पर । मूर्ति की नाक टूट गई । ऊपर से मैनेजर बिस्माया—“जाने न पाए । पकड़ो ! पकड़ो ! मैं टेलीफोन कर पुलिस को बुलाता हूँ ।” मैनेजर घॉफिम को भावा ।

कुछ लोग भैरव को पकड़ने लीं । वह भाग गया सबकी घाँगों में घुल भौंककर । एक वमी में होकर कुछ ही देर में कहीं का कहीं हो गया ? बाते-बाते चौपाटी पर निकल गया वहाँ एक सोहे की बेंच में बैठकर विचार-मग्न हो गया ।

“क्या कर्म ? घब कहीं बाळें ? बासो को कोई जोसा देकर उड़ा के गया वा वह मुझे जोसा देकर बनी गई ? कुछ समय में नहीं बाटा । नाकों अनुप्यों की घाबाही का यह नकर । मैं कहीं सोजूं उसे ?”

समुद्र की ठंडी-ठंडी हवा उसे घससा हो उठी। अपने मन में बोला वह— 'बड़ा भयानक यह जगत है। अपने जीवन की कठिनाइयाँ को उस करने प्राया था। यहाँ तो वे चरम सीमा को पहुँच गए ! धन क्या करना चाहिए मुझे ?' उसने बेब में हाथ डालकर टटोला। दस-दस के दो मोट, कुछ खिरीब के सिखा भीर सब स्पष्टा उसके संसूक में ही था। अपने को कुछ उसके बदन में से बड़ी उसके अपने रहे।

एकएक उसे धर्मघामा का उपजब माव धा गया— "बहु धैर्यवर हकर मेरे पीछे पड़ा होगा। उसने बकर पुमिस में मेरा हुनिया भिजा दिया होगा। यहाँ मेरे पास बुररा कपडा भी नहीं कि अपने उन पर का रंग बरस बालता। धपर पुमिस के हाथा में पद गया तो फिर बड़ी मुश्किल हो जायगी।"

भैरव ने अपना कोट खोलकर हाथ में ले लिया। रात के समय उसकी वह हस्त भी कोई महसूस नहीं रहती थी। समय का कोई अनुमान न हो सका उसे। सामने से एक बस धा रही थी। वह उसमें चढ़ गया और विक्टोरिया टर्मिनस बना गया।

बड़ी झूठ सगी थी उसे। सबसे पहले उसने कुछ सस्ता भोजन किया फिर सोचन लगा— "वहाँ जाऊँ ? बासो के बने जाने पर धन तो जीवन का कोई लक्ष्य ही नहीं रहा। फिर जो भी वहाँ की मी गाड़ी तैयार है उसी में बैठकर जमा जाना है टिकट ? नहीं वैसा कहाँ है ? उदर-पूति जरूरी है।"

भरव ने अपने विद्या को याद किया— "जिसकी लेकर मरणा था वह बासो तो गत्यक हा माई ! तब क्या करें ? घर हो जो बल ई धीर माता-विद्या का अनुचर होकर उनकी संपत्ति का उत्तराधिकारी बनूँ। नहीं ! संपत्तिवानों के इस धम्याचार का विरोध करना है मुझे। संपत्तिवान होकर कुछ एक धम्याचारी बन जाऊँ ? विनकार है ऐसे जीवन को। बासो की माँ को वहाँ क्या बचाव देना ? नामो किसी ठग्य कुछ छोड़कर गई ही। उसकी माँ के उसका बिछीह कपनेबाला तो मैं ही।"

"बासो बत्ती बई तो जाने दो । उसका पाप-पुण्य उसके साथ है घोर मेरा मेरे । जाने दो बासो को वह मेरे मन की दुर्बलता को लेकर बत्ती गई । घोर भी महान् ब्रह्म मेरे जीवन का बन सकता है । मुझे इन संपत्तिवानों के पाप का भ्रंश तोड़ना है घोर इन धर्म के ठेकेदारों की पोल कोसनी है । मोक्षी घोर गरीब जनता इन दोनों के पापों से पिस रही है । मैं उसके पास को मिटाऊँगा । मेरे जीवन का यही धर्म है ।"

शैल को जीवन में एक नया सद्य घोर नया मोड़ मिल गया वह उस पर प्रसर होने लगा—"बासो ! बासो ! उसके कारण मुझे बनी पिता के पालक का पता चला घोर बामो ! उसी की वजह से मुझे इन धर्म-मंस्थानों की पोल काट हुई । बासो यह इस जीवन में बही न मिलेगी यह मेरे दिल की आशा है । उसको छूटने की कोशिश बालू में से तेल निकालना है । बलू जब मेरे हृदय में चलने का सरसाह है तो चारों तरफ रास्ते ही रास्ते हैं ।"

शैल ने फाटक पर नजर बचाई घोर प्लेन्फोर्ड में बस गया । गाड़ी भर गई थी धमी उसके चलने में कुछ देर थी । उसके पास कोई सामान तो था नहीं । गाड़ी के चलने पर किसी भी दिग्घ में वह बस पड़ेगा ऐसा उसे विश्वास था ।

एक कामबाने से लेकर उसने एक प्याला चाय का पिया । यात्रियों के हल हजर-से-उपर था-था रहे थे । फिर उसके भीतर से उसकी कम-ओरी आग उठी—"नया वह संभव नहीं हो सकता इस भीड़ में नहीं पर बामो भी मुझे छूट रही हो ? तब तो फिर एक बार मेरे जीवन का सत्य बदन सकता है । नहीं ! नहीं !" —बड़ी निराशा से उसने चारों घोर देखा ।

"बासो को ठामे में कैद कर मैं गया था जैसा विश्वास किया मैंने उनका हमीलिये वह मुझे छोड़कर बत्ती गई ! —उसने जेब-से मिन्नेट का पैकेट निकाला वह खाली था । उसने एक सली मिन्नेट भी

घीर उसे सुमनाकर पीने लगा । वह उसके पसे में लपने लगी ।

साहें ने सीटी दी । वह दौड़कर एक बिम्ब में जा चुता । बड़ी निरुत्साह-सी दृष्टि से छूटते हुए बम्बई को देखकर मन-ही-मन कहने लगा—“बिदा ! बम्बई से बिदा ! भाया घीर उमरों की समाधि से बिदा ! बासो से बिदा ! जिसके निये सबको छोड़कर भाया था—उसे नी छोड़ देना पड़ेया । ऐसा जो परदे के पीछे छिपकर हमारे घमिमान की चूर चूर कर देता है कीम है वह ! कोई नहीं ! सिर्फ एक सयोग—एक ब्याल !”

कुछ लोगों ने उसके बैठने को जगह कर दी । वह बैठ गया ।

दृष्टासा में

वृषे राधा के पीन से ल्हाठा उड दिन के पड़ाव पर वा कसजम उस
 २ दूरी को एक ही दिन में तम कर लेने की दृढ़ता से बना । सायं
 में न कहीं पर जगु मर के लिये बैठकर उसने विनाय किया न किसी
 परिचित के मिल जाने पर कोई बातें ही की ।

प्रकृति उसके पक्ष में थी । साठ-स्वच्छ प्राकृत्य भारत का कहीं
 पर कोई टुकड़ा न था । वायु में न देव था न की ठण्डक । मार्ग में बर्फ
 भी नहीं थी कहीं पर पहले दिन की । या तो इत ठरफ भिरी ही नहीं
 थी या बर्षा प्रमदा धीर किसी कारण से ठहरी नहीं थी ।

झुनी बैप्टा करमे पर श्री कलजम दृष्टासा से दो कोस की दूरी पर
 ही था जब सूर्य अस्त हो गए । बाढ़ों की संध्या विस्तार में बहुत छोटी,
 धीम ही घेंबेरा ही गया । ठही हुआ बहुने सयी धीर पाला पड़ने गया ।

दिन-मर का हाण-बका कसजम अपने लक्ष्य में जरा भी परास्त
 नहीं हुआ । वह संयकार धीत धीर सम सबक साव मूढ करता हुआ
 हर इजम पर धाने को बढता ही जा रहा था ।

बाढ़ों के छोट दिन पर पहुँचते-पहुँचते मानो प्राचीणत भीत गई ।
 पास-पड़ोसवाले द्वार डक बीप बभ्य सध्या से ही पुम-सुम ही गए थे
 इतले धीर भी मिघा बमीर हो गई थी ।

धर के पात धाते ही कलजम को एसा जाल बड़ा मानो उस धर का
 धारा प्रकास बुझ गया धीर वह एक प्राणहीन बीब की भाँति पड़ा
 है—केबम पिजर ही पिजर । उसमें बहुत-बहुत धीर भीवन पैमानेवाला
 पधी न-जामे वहाँ को उड़ गया है ?

इतनी दूर से जिस घर की प्रीति से लिखा हुआ बीड़ता बना या रखा या अब उसके पास पाते ही सहसा बह उठ गया। उसके पैरों में मामो सीसा भर गया। वह मन में सोचने लगा— 'अकेले कैसे पहुँचा अब इस बेलन के भीतर? एक साथी तो अब किसी प्रकार नहीं भौट सकता और दूसरा मताने पर भी न आयागा।

उसने कौपते हुए हाथों से ताला कोसा। घोंघरे में टटोसता हुआ किसी प्रकार सीबट के पास गया। उससे बाघ घीर घामे हाथ बढ़ाकर उसने बुद्धदेव की प्रतिमा के चरणों का स्पर्श कर अपने पापों के लिये प्रथम झुंझने की भेषटा को 'यह क्या? उसने घीर घामे को हाथ बढ़ाया। 'चारों तरफ दोनों हाथ बढ़ाए। वह भील उठ्य— 'हे देव! इस दुर्बिन में कठकर क्या तुम भी बसे गए? अब संवेह नहीं रहा पापी मैं ही हूँ। जोड़ी देर के लिये वह सज्जानुम्य-सा होकर भूमि पर बैठ गया।

फिर उठ्य— 'इतने वर्षों से जिस ठाँवे की प्रतिमा को पूजता रहा वह निस्संवेह नहीं है अपनी अवह पर। फिर कहाँ गई?'

उसने हजर-उबर टटोसकर भूमि पर से एक गिट्टी का बीपक ढूँढा। उसके मन में संवेह बाग उठा उस घर की गृहिणी ही नहीं उस घर का बेबता ही नहीं उसका साथी भीनी भाई ही नहीं और भी आयाब सब-कुछ वहाँ से बना गया।

वह उस बीपक को लेकर पास ही एक पड़ोसी के यहाँ गया और उसके यहाँ से अपने कुछ भी माँपकर उस बीपक में प्रकाश की लौ उठवाई। पड़ोसी ने बड़ी धन्यमनस्कता से उसकी सेवा की। लेकिन अब अपने अपनी पत्नी के निबल की बात कही तो फिर वह मामो बड़ी गहरी नींद के बाग उठ्य और तब-मन-बन से कमजब को सहायता को तैयार होकर कहने लगा— 'मेरे मायक काम बताओ भाई। वह तो बड़ी बुरी खबर तुमने सुनाई।'

"सब ममबान की इच्छा है। तुम्हें समब है तो मेरे साथ बसो मैं

बर तक ।”

“क्यों ?”—कुछ डरता हुआ पढ़ीसी बीना ।

“मुझे बड़ी डर लग रही है वहाँ जाते हुए ।”

“मेरी समझ में इस समय तुम वहाँ जाना सबाकर यहीं था जाओ । सब कहेंगे वहाँ मोहन का प्रभाव क्यों ? कुछ पाँदा-सा वहीं खानीकर धाराम कर लो ।”

“तुम क्यों मेरा परिहास कर रहे हो ? इस पीढ़ियों से पुणित पूर्वजों की धरोहर वह बोधिसत्व की प्रतिमा बनी गई ।

“कौन से क्या ?”

“क्या मामूम ?”

“मे जाने दो । बाहर की प्रतिमा के जाने से क्या होता है ? पूजा की जो भावना है उसी में तो मयबान् प्रसन्न होते ह । जैसे कौन से का चकटा है ? सो रहो हकीम की भीतर था जाओ में डार बर कर लूँ । मोह ! कौसी ठही हवा बह रही है ।

“बह बड़ी धम्म त मूर्ति की जास भारतवर्ष से पाई की ।

“गारी मरती बोधिसत्व के जन्मो का बिस्तार है, फिर केबल भारत ही का तुम्हें क्या मोह हो क्या ? धीर तो कुछ मही क्या ?”

“जब सत्य भीर पहिसा बनी गई तो फिर रोप ही क्या रहा ? लेकिन बर्तन-माँडे कपड़े-कबल की बह मकबल-मास पोथी-यथा बस-दाक भी जो-कुछ का सबका सफ़ाया हो गया जान पड़ता है ।”

पढ़ीसी ने कनकन का हाथ भीतर लीचकर बरबाबा बर कर निपा धीर बोला— “तब क्या फिर है धर तो जाना मयाने का बसेड़ा ही क्या क्या । धीर छूटी पीड़ा बई !

कनकन सीटने मना— “तुम धभी अबान ही जीवन के साथ परिहास करने के लिये धमी तुम समझत ही तुम्हारे पाग काफी उमर है । मैं मृत्यु का भयानक ताँडब देखकर था रहा हूँ । मैं यमीर हूँ ।” उसके एक हाथ में जसता हुआ बीपक था । उसने दूसरे हाथ से डार की साँभ

खोस ली थीर साबधानी से बीपक की हुना से रसा करता हुआ बाहर को जाने सपा ।

पड़ीसी ने अपने घोड़े की तरफ हाथ बढ़ते हुए कहा— 'इक्रीम की खुरो में ना घाता हूँ ।

कसबन ने बड़ी उदासीनता से जबाब दिया— 'नहीं मित्र तुम्हारे जाने की कोई जरूरत नहीं । मैंने भय को पीठ मिया है ।'

किते ?

"मृत्यु एक घटक सत्य है । उस यात्रा में हम सबको धकेले ही जाना है, फिर धकेले का कौता भय ।"—कहते हुए कसबन बाहर को चला गया ।

पड़ीसी ने भी उसका अनुसरण किया । कौपते हुए कसबन ने अपने घर के भीतर प्रवेश किया । जो विश्व उसने अपनी कम्पना में बना रखा था उससे भी कही गया-बीता बृद्ध उसके देखने में आया ।

पड़ीसी ने पूछा— 'इक्रीम की क्या-जया गया ?'

तारे मकान में कूड़ा-कचरा ही सब पड़ा था—बीबड़े छीकरे धीर राख-कोयले का मोहाम-सा प्रतीत हो रहा था वह । जोर एक भी बीज नहीं छोड़ गए थे । काट-कबाड़ जो कहीं से जा सके थे वह सब वही जलाकर लेंक गए थे धीर जाला-बीमा पकाकर खा-पी गए थे ।

कसबन ने पड़ीसी को जबाब दिया— 'जो रह गया है उसी से जाने का अनुमान कर सकते हो ।

"नहीं मेरा पतनव है स्वयं-वीता धीर सोना बीबी-जबाहयत ?"

"मैं तो बतम का मिचारी । मेरे पास क्या रखा था ?"

तुम्हारा वह बीबी भाई ? वह तो मानवार भी ना धीर उसे सब कुछ संग्रह करने का पौक भी था ।

"वह अपना सब-कुछ ले गया ।"

"पत्नी की संवति तो तुम दोनों के सामने की बीज की ।"

"पत्नी का संपुक्त उसके पीके में है धीर उसके भंग के धानूपण मेरे

पास हैं ।

“तब तो फिर कुछ नहीं मया भगवान् का अर्थवार है ।”

“बाह ! यह सब कहा तुमने ?” कलबन ने कुछ पापज होकर कहा— “गया कैसे नहीं ? मैं तो कहीं का न रहा । मेरे पास कितनी ही बड़े परिश्रम से तैयार की हुई दवाएँ थी । वे जोर सब फेंक गए हैं यहाँ । अब कैसे मैं उन बीम-बुखियों का इलाज करूँगा जो बड़े मरोधे से मेरे पास घाते हैं । इस बात को भी जाने बिना जाए तो वह त्रीबिसत्व की प्रतिमा वह तो एक समुद्र निधि थी ।

तीब के उठने बर्तन से तुम्हारे हकीमजी उनका कुछ भी मोह नहीं रहा तुम्हें फिर वह प्रतिमा वह भी तो बातु का ही एक भार था । उसकी बहुमुखता कुछ समझ में नहीं आई मेरे । क्या कमी कुछ बातें करती थी वह तुम्हारे साथ ? —गद्दीसी ने पूछा ।

‘क्यों नहीं ? हमेशा ही तो जब मुझे क्तिती मृत्कम बीमार का सामना पड़ जाता तो उसी के इधारे पर मझे दवाघों का पता लगता और जब मेरे माथ पर कोई कठिमाँ या पड़ती उसी की कृपा से वह सुलभती ।”

‘अच्छा ? पद्दीसी ने बड़े धनरज से पूछा—“आज तक तो तुमने यह बात कभी हमसे नहीं कही । बिना जाए-नीए कैसे बोलती थी वह मूर्ति ?

“स्वप्न में बोलती थी ।”

‘आज वह मूर्ति खोई न होती तो क्या वह तुम्हें जोर का पता बता देती ?”

कलबन उत कड़े के डेर में करेद-करेदकर डँड रहा था वहीं कोई काम को चीज मिल जाय । कुछ भी नहीं मिला ।

पद्दीसी ने फिर उसका ध्यान आकर्षित किया अपने प्रश्न पर ।

कलबन कहने लगा—“हाँ माई कुछ पता तो बरूर मिल जाता ।”

“तुम्हारा एक मित्र पर है ?”

'कभी सोचता हूँ यह कोई आन-महान का ही मेरिया है, क्योंकि जो बीड़ यह ले नहीं गया है उसे फेंक दिया है। जैसे मेरी में बचाएँ।' कलजल बड़ी धाकून दुष्टि से बचाओं के उस चूरे की तरफ देखने लगा जो चोरों ने कई पुडिर्ण कोलकर एक ही साज मिला दिया था।

पड़ोसी कहने लगा—'बसो फिर हमारे ही यहाँ बसो अब यहाँ क्या रखा है ? न खाने को सत्तु न थोड़ने को कंबल ।'

'बकर मैंने कोई बड़े पाप किए हैं। इसी कारस इतने बरसों से मेरे पूज्य बोधिसत्व बसलोकिसेवर मुझसे नाराज होकर इस तरह बल दिए हैं।'

हकीमजी बीमी माई से तुम्हारा कोई म्हाबा तो नहीं हुआ ?'

कलजल ने कुछ सोच-विचार कर कहा—'नहीं तो वह म्हाबा लू नहीं है घोर मेरी माइत तुम्हें मामूम ही है।'

'सोग कई तरह की बातें करते हैं।'

'उन्हें करने दो माई !'—कलजल फिर कूड़े के ढेर में टटोल रहा था न जाने क्या ?

'बसो हमारे यहाँ जो हीमा था सो हो गया अब इस क्वाड़ में समय लट्ट करन से कोई काम नहीं।'

कलजल बोला—'जाना न-जाने कहीं रक्त दिया ?'

'ठाबा टूटा नहीं था ?'

'नहीं जैसा लवाकर रक्त क्या था वैसा ही मिसा।'

'जाने दो नहीं विमठा तो है ही क्या यहाँ बिसे बंद करोण।'—

बहकर पड़ोसी उसको धपने यहाँ ले गया। बह दिन भर का मूछा था। कुछ बिला-बिभाकर उसने उसके साने का प्रबंध किया। प्रायः दो दिन के हारे-बके घोर बावे कलजल की बड़ी महुरी मीद था कई।

दूसरे दिन सुबह उठकर वह धपने पर गया। उस क्वाड़ के ढेर में फिर धपने भाप्य को ढूँढने लगा। पास-पड़ोसी स्त्री-पुरुष बिसने भी सुना सब यहाँ धा-भाकर बसा हो गए घोर धपनी-धपनी भापा बोलने

जबे ।

एक पड़ोसिन बोली—“हुनिया भलाई को नहीं देखती । हकीमजी तुम बिना किसी साबण के धीरे-धीरे सबकी सेवा करते थे । क्या खोर को तुम्हारे ही घर पर हाथ साफ करना था ?”

एक दूसरी बुद्धिवा कहने लगी—“हे भगवान् न धाम की केतली छोड़ी न पानी का घड़ा न धोड़ने का बुरमा रखने दिया न बिछाने को दान । खाने-पीने की चीजें ठो मय बर्तनों के ही उड़ा दीं । मैं कहती हूँ यह किसी एक चार का काम नहीं है । पूरे पिटोह का बिरोह खान पड़ता है ।

एक धीरे पड़ोसी ने कहा—“हकीमजी मेरी समझ में तुम्हें फौरन ही पुलिस में खबर देनी चाहिए । अभी कोई देर नहीं हुई है । धीरे ही माल बरामद हो जायगा ।”

बड़ी उदासीनता से उसने जवाब दिया—“उसका मला हो बिचने यह सब किया । पुलिस का खबर देकर क्या करता है मुझे ? मेरे भाग्य में होना तो फिर सब-कुछ ओड़ लूँगा । लेकिन ओड़ना ही किसके लिए है ?”

धीरे एक तीसरी महिला कहने लगी—“क्या हुआ तुम्हारी घरवाली को ? हमने तो उसकी बीमारी के भी कोई समाचार नहीं सुने । बिचारी बड़ी भली थी । उसी के छठ से तुम्हारे घर में धूम-धाम धीरे सुख-समृद्धि थी । वह वैसी थी । मैं तो समझती हूँ बिच दिन उसकी मृत्यु हुई अभी दिन तुम्हारे यहाँ भी यह खोपी हुई । वह घर कर साथ बमलकार ममेटकर अपने साथ से यह ।”

कलत्रन घाबेड़ में था क्या धीरे उसके मँह से निकल पड़ा—“तुम्हें क्या मालूम यह क्या थी ? वह तो चीन का भाग रही थी न ?” सहसा वह रुक गया ।

उसके घर की पूर की पञ्चालाखा का बाहर निकलते देख सब पड़ोसी उसमें अपने हाथ धीरे हृदय से देने को उत्साहित हो उठे ।

बुढ़िया ने सबसे पहले पूछा— 'सतती तुम्हारी ही थी जो तुमने उस बीनी को भाइ बनाकर अपनी बहू का भी मासिक बना दिया ।

कलजलन जब अपने को संभालने लगा— 'लेकिन वह बीनी भाई बहू बीनी भाई " "

बुढ़िया फिर बोली— "हाँ वह बीनी भाइ जब बीमार होकर तुम्हारे पास आया था तब बड़ा घबड़ा था और जब तुमने उसके लिए दूकान खोल ली तब वह कुछ पैसा कमाकर मोटा हो गया और वेठे के नाम पर कमी उसने एक कानी कौड़ी भी तुम्हें नहीं दिखाई ।

"मैंने उस छोटे भाई के परिषम ने वैसा हुए वैसे को लेने से हमेशा ही इनकार किया । नर के सर्प के लिए वह सब-कुछ साता ही था ।

एक पड़ोसी ने कहा— 'ऐसा स्वामी और नेक बड़ा भाई पाने पर फिर क्यों वह तुम्हारी स्त्री को लेकर बीम थाप पाने को तैयार हो गया ?'

'ऐसा मत कहो ऐसा मत कहो जीव इनेक कमजोरियों का पुतला है, इमें उसकी कमजोरी को डक देना चाहिए, उसे सोलकर बड़ा देना पाप है । सखार बड़ा अखसंगुन है ।'

बुढ़िया ने तत्काल कलजलन की ओर पकड़कर कहा— "धनी तुम्ही ने कहा था कि बीनी उसे बना ले था रहा था ।"

"कह दिया होना मैं भी तो उसी कमजोर इंसान का एक मनुजा हूँ । बीनी कहाँ को भया के जाता उसे ? उसे तो वह महाकाल बना ले गया जो हम सबके पीछे पड़ा है ।

महाकाल का नाम सुनते ही बुढ़िया ने रंभ बरन दिया । धाँकों में धाँक मरकर वह गद्गद् कंठ से बोली— 'वह बड़ी घबड़ी सड़की थी ; पारहास जब मैं बुढ़िया से बीमार थी बिचारी रोज धाकर मुझे बचा ले जाती थी । बचा ही नहीं बार बार बार चाय पिता जाती थी । मैं उसके गुल नहीं भूम सकती । देवता करे वह स्वर्ग में पु

एक और पड़ोसी कहने लगा— "हकीम जी इत कुड़

कुछ मिसनेबासा नहीं है। गाइक में तुम्हारे कपड़े मैसे हो रहे हैं और समय बरबाद।

सेकिन कलबन को कोई दूसरा काम ही उस समय नहीं सूझ रहा था। वह घोर करता भी तो क्या? सब सोय धपने-धपने घर से कछ-न-कुछ ला-पीकर आए थे। कलबन को भी भूख लग रही थी। कई बार चाय बनाने के लिए उसके इच्छा पैदा हुई। लेकिन जब हाथ धोबीठी की तरफ बढ़े तब न उसको केवसी बिसाई थी न चाय का घोर सामान उस ने धपने छुपा के भीतर से सूबनी का सीम निकाला और सूबनी सूब-सूब कर धपनी छारी कमी पूरी कर ली।

फिर घोर एक पढ़ीठी को कलबन पर बया धाई, वह बोला—
“छोड़ दो यह सब जमो कछ ला-पी लो हमारे यहाँ जमो।

लेकिन न-जाने क्या एक भक-सी सवार हो गई थी उसके विमाग में। वह उस कूड़े-कचरे को कुरेदता ही जा रहा था।

पढ़ीठी ने फिर उसका हाथ पकड़कर बड़े धापह से कहा—“जमो।”
“नहीं भाई बहुत बकरी काम है मेरा।

“चाय पी लो तब घोर भी मन लजाकर इस कूड़े में डूँड सकोये।”
“नहीं पहले डूँड लेता हूँ।

“क्या डूँड रहे हो ?
“हाँ डूँड रहा हूँ। क्या डूँड रहा हूँ ? धपने इस कुर्मान्य के कारण को। मैंने कभी किसी को नहीं सताया फिर मैं क्यों सताया क्या ? मैंने कभी देवता की पूजा में धासत्य या प्रसाद नहीं किया फिर क्यों धबनोकिठे-इबर की मूर्ति मुझे छोड़कर जसी गई ? मैंने कभी किसी स्त्री की तरफ लासला की दृष्टि नहीं बढ़ाई फिर क्या मेरी स्त्री मुझम छीन ली गई ?”

पढ़ीठी ऊबकर बोला—“देवता धापय तम्हारे भीरब की परीसा कर रहे हैं। मन कै-धावेय को कम करी। ऐसी नासबन्धी से काम नहीं जलेना।”

“क्या नासबन्धी है इसमें ? मैं किसी से क्या कुछ कह रहा हूँ ?

किसी दूसरे पर धर नहीं कर रहा हूँ मैं अपने इस सर्वनाश के लिए, फिर क्यों तुम मुझे रोप दे रहे हो ? तुम सब बले पाओ यहाँ से । मुझे मारी चोट लगी है । रो नहीं सकता हूँ जो-कुछ यह कर रहा हूँ यह सब उसी रोने का एक रूप है । —कूछ छिड़ककर घीर कुछ बिड़गिड़ाकर कलजन ने कहा ।

कूछ पड़ीसी पहले ही बले गए थे कूछ को धर जाना पड़ा लेकिन एक पड़ीसी जो कलजन से कुछ खा-पी सने का भाग्रह कर रहा था उसकी परबधता ने इभीमूत हो उठ्य । कहने लगा— 'तुम्हारी यह हठ ठीक नहीं जान पड़ती इससे तुम्हारे दिमाग में असर पड़ जायगा ।

"जो-कुछ भी मागवान् को मंजूर है मैं क्या कर सकता हूँ ?

'तुम चाहो तो फिर सब-कुछ कर सकते हो । घीर बुटाकर तुम्हारे माय्य को नहीं स जा सके ।"

"धर कुछ नहीं कर सकता मैं । धर तो केवल एक ही इच्छा है घीर के ठमान पास कटबाकर सारी इच्छाओं को समाप्त कर किसी मठ में जाकर प्रन्नम्या स बने की ।"

'घीर के बाध बुटाकर क्या कामना समाप्त हो जाती है हकीम जी ?

'तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ तुम मेरे साथ धाब बहस न करो । बहस करने से हम किसी मठीजे पर नहीं पहुँच सकेंगे । कुछ देर के लिए मुझे यहाँ मकेले ही छोड़ दो । मैं कुछ सोच रहा हूँ । यह भूमि पर पड़ा हुआ जो बुका है यह सब मेरे जीवन के टकड़े हैं । मैं उसे सलट-मुसटकर कूछ पकर डूँड लूँगा । तुम योड़ी घीर के लिए चाओ घाई ।"—कलजन ने बड़ी बीमता से कहा ।

पड़ीसी चला गया । कलजन ने द्वार डक लिए घीर फिर उसी तरह पच कूड़े की सलट-मुसट करता हुआ सोचन लगा । कुछ धरकुमी बवाओं की पुड़िमें पड़ी थीं । बड़ी सावधानी से वह उन्हें सेमान कर धनय रखने लगा ।

“कब की बात है ? तब कहां से ?

‘समुदाय ।

‘बीनी माई कहां है ?”

‘मैं नहीं जानता ।

‘उसी ने तो नहीं दिया ?

‘तुम ज्योतिषी हो बता सकते हो टीक-टीक ?

‘विचार कर ही बता सकूंगा । इसी से कहता हूँ जसो मेरे घर जसो।”

‘धीर यहाँ ?”

‘धब यहाँ बसा रखा है ? घर बरनी को लेकर होता है बरनी तुम्हारी जल बसी । फिर घर माम-बसबाब को लेकर हाता है जसका ही धब कील निदान बाकी है तुम्हारे ? जसो मैं तुम्हारी बोटी का पना भगाऊँगा धीर तुम मेरी स्त्री का इलाज करोगे ।

जसजल को मित्र की घासा-गामन करने के बिना दूसरा धीर कोई मार्ग नहीं दिखाई दिया । उसने मकान में ठाला लपाया धीर उसके साथ जला ।

रिबूची ने जसजल को न जाकर जसनी बीमार स्त्री के सामने खड़ा कर दिया । जसजल न देखा वह हृष्टियों का डींचा मात्र रह गई थी । बीमार की घण्टी तरह पठीछा कर उसने उसे इलाहिन करने को कहा—
‘कोई बबराने की बाल नहीं है । बूगार तुम्हारे बहुत भीतर चुस गया है । गून का सगाकर वह लूनी के पाम तक पहुँच गया है । लेकिन वह घभी उसे छेदकर उसके पार नहीं घुम सका है । मैं पूरी कोधिषा कहूँगा । भगवान चाहेंगे तो दबा घुसू कल्ले ही तुम टीक होने लय जाओगी ।”

बीमार के घालों में घाँसू भरकर हबीम की तरह बेला धीर दावाघ को हाथ बटाकर न जाने क्या सोचा । बीमल धीर मंद स्वर में कृष्ण कहा जो मुमनेशामी पर स्पष्ट न हो सका ।

जसजल रिबूची का हाथ पकड़कर दूसरे कमरे में ले गया । कृष्ण बैर

वह सोचता ही रहा ।

रिबूषी ने बबराकर पूछा—“क्या हाल है ?”

उदासी के साथ कमजब ने जबाब दिया—“क्या बताऊँ ?

‘बचनेवासी तो नहीं है यह ।’

“भयवान् की माया घबीर है एसा तो नहीं कहा जा सकता कि यह बच नहीं सकती ।”

“फिर ?”

“कोशिश करेंगे मित्र । मैंने एक बहिया के इकतीरे बटे को बचाया था । उसने तो हड़्डी के भीतर भुम गया था तुम्हार ।”

‘भेरे अगर भी कृपा करो भाई ।’

‘भोच रहा हूँ कैमे ? बचाएँ कहीं से लाऊँ ”

‘मई बना दो बाजार से मैं सामान भे घाटा हूँ ।’

“बहुन कीमती बचा बनाइ जायपी । कुछ पूँजी है जया तुम्हारे पास ?”

पूँजी-ओ कुछ भी सब खर्च कर चुका हूँ । कुछ उबार धीर मिल जायगा । तुम बताओ श्री तो कैसी बचा बनाइ जायपी ?

कमजब हुँना । उमने अपने छपा के भीतर से एक कपड़े की पोटली बाहर निकालकर सोलनी पुरु की ।

“ये किमके घामुपख है ?”—रिबूषी ने पूछा ।

“मेरी स्त्री के । वह मर गई । मैं इन घामुपखों को पहन नहीं सकता मित्र । इनका क्या करूँ । इन्हें कहीं रखूँ ? यह मेरी एक समस्या थी । मैं इन्हें फूँककर तुम्हारी स्त्री के बिये बचा बनाता हूँ । इसमें अच्छा उपयोग धीर क्या हो सकेमा इनका ?

रिबूषी म कमजब की उबारना क इण माठे हुए पूछा—“भेकिन मित्र तुमने कुछ खाया भी ?

“कहाँ स ? बुल्ले धीर घर की हानत्र तो तुम देन ही घाय हो ।”

“कमजब मेरी कुदपरडी को बिककार है ! भबम पहले मुझे तुम्हारे

मोजन की व्यवस्था करनी चाहिए थी।

मोजन तोटा ही रहेगा। उससे पहले घमर तुम खोर का पता बठा देते। मेरे तो बिस्वासों की बढ पर ही कुस्थाही बन गई है। उसने मेरा बन ही खोपट नहीं किया है। मेरे बहार घोर स्वर्म दोनों को समाप्त कर दिया है।”

रिबूची बोसा— बठाईना मिय तुम जग मुझे हम बरबामी की बीमारी से बाहर निकालो। मैं खोर का पता ही नहीं कुछ ऐसा बन पड़ेगा कि खोर तमाम बीबो को मिए हुए तुम्हे ईडना हुआ बसा प्राएबा। लेकिन हम समय तो मुझे घनी गबम मुत्त तुम्हारे मोजन की बिठा है। तुम कुछ बेर बीमार के पास बैठो मैं जाना तैयार करता हूँ।”

रिबूची कमजम को लेकर फिर बीमार के कमरे में जा पहुँचा। उसने कमजम को उसके पाग बिठा रिमा घाहूट पाकर बीमार के घीले खोलकर बोना की तरफ देखा। बीगु स्वर में उसने पूछा— क्या कहने है य ?

“कहते हैं तुम जकर प्रच्छी हो जाओगी। —रिबूची ने जबाब दिया।

कितने दिम में ? —बीमार ने फिर पूछा।

रिबूची ने कमजम की घोर ग्यारा कर कहा— इन्होंने मुबह न घनी तक कुछ नहीं ज्ञाना-पिया है। मैं इनके मोजन का इन्तजाम करता हूँ। तुम्हारे प्रमन का यही जबाब दें। रिबूची नहीं से ज्ञाना मया।

बीमार ने घपनी घाबुम बुजि कमजम पर गड़ाई। उसने फिर घपना प्रमन दुहराया— “कितने दिम में ?”

‘तबस परम मुक्त तुम्हारे हम बहार को तोड़ना है। घमर यह टूट गया तो फिर तुम्हारी नून घोर नीर शनों जाग उठेंगी। जहाँ के दोनों पाग उठी कि फिर क्या देर नगनी तुम्हारे प्रच्छ होने में ?”

“हां हरीम जी जाने की दिनकुल इच्छा नहीं है घोर रात मूर करबट बरसते बीगता है।

“बिसरना मैं दबा बनाऊँगा तुम्हारे सिय ।” वह बेबरों की पोटली फिर खोसते हुए कलजन ने कहा— य मुझे घीर मोठी फूँककर इनका धरम बनाऊँगा ।

बीमार बेबरों की बमक पर उठकर बैठने की कोशिश करने लगी । कलजन ने उस हाथ का सहारा दिया । बेबरों को टटोसते हुए कहने लगी— “ये मुझे घीर मोठी की माताएँ हैं ये जान को बाजियाँ सोने की हैं । इनको फूँककर तुम कैसी दबा बनाओगे ?”

“तुम्हारी बीमारी दूर करने के लिये ।”

“कहीं हकीम की ऐमा मी कहीं कोई करता है ? इनकी राख से मत्ता क्या बीमारी दूर हो सकेगी ?

“हँ हँ ! ऐमा क्या कहती हो तुम ? इनकी राख बड़ी ठाकठकर होती है एए ही गुराक में पता बल जायगा ।

बीमार न माताएँ उठा लीं उनको अपने मने में पहन लिया घीर को बेचता का खड्डे या उम दिखाकर बोली—“इसे मी मखम कर बोने ? बड़े पकीन पारमी हो । कहां से से प्राए तुम इन बेबरों को ?”

“मेरी स्त्री के हैं ।

“उनसे पूछकर नहीं लाए तुम इन्हें ?

“वह मर गई ।”

“किसी की मौत से बिसबाइ करता बड़ा प्रासान है । तुम्हारे ब्योविपी मित्र ने मरे हुए घर की खास बिछा रकी है वह उस पर बैठ कर बहुत दिन तक बड़ा धर्य करते थे । मैं कहती हूँ क्या कमी जिदा खेर की पीठ पर बैठ सजने की जनकी हिम्मत हुई थी ?” —बीमार ने अपने पैसे में चारण की हुई उन माताओं को बूसरों की बृटि से देखा ।

कलजन बीमार की घटपटी बातों को चुप होकर सुन रहा था । वह फिर कहने लगी—“हकीम की एक बात नहीं मान सजने तुम ?”

“क्या ?”

“कुछ दिन तक इन माताओं को मैं पहने रखती हूँ । इनकी राख

के बदले इनकी जमक का घसर बयो नहीं देख सके तुम मेरी बीमारी पर ! हकीम बी ! हकीम बी ! मैं जन्म भर इसी के लिये तरसती रह गई । तुम्हारे ज्योतिषी बी ने कभी मेरी एक भी बात नहीं सुनी । यदि वह सुनते तो मैं हरगिज बीमार ही नहीं पड़ती । खैर अब सही ।"— वह बीटी न रह सकी फिर सेट गई ।

हकीम बी ने उसे फिर अपने हाथ का सहारा देकर सुला दिया ।

'क्या हुआ तुम्हारी बहू को हकीम बी ?

'उसका समय पूरा हो गया उस महाकाल ने बुला लिया ।

'उनके जेबरो को फूँककर तुमने उनकी प्रण्ठा करने की कोशिश क्यों नहीं की हकीम बी ?

कमजान करने लडा— "अधिक बोलने से तुम्हारी कमचोरी बढ़ जावगी चुप रहो ।"

'एक-दो सबालों का जबाब दीर दे बी । मारता कौन है हकीम बी महाकाल दीर जिलानेशाला ? ज्योतिषी है या बंध ? कौन है ?

'जिलानेशाला भी मरवान ही है ।

रिबूची दो फुग्यों में बाय बनाकर ले घाया । उसने एक फुक कमजान को दिया दीर दूसरा फुक लेकर अपनी स्त्री क सामने सड़ा होकर बोला— सो ।

क्या है यह ?

'बाय एक घूँट पी सो ।

'हूँ हूँ ।"

"कभी कुछ देर हुई तुमने बाय पीने को कहा था ।"

'तुम बहुत कमजान छाड़ लाए होगे । सोचन हो एक साब ही छूब कमजान घिला देने के मैं धीम्र ही बंबी हो जाऊँगी दीर तुम्हारे घर का साग काब निर पर उठा लूँगी । देखो तुम्हारे निम मेरी बधा के लिये यह कैसे साभूपण लाए है ।" उसने पानी छाठी पर लज्जती हुई मामाघों की दिशाकर कहा— तुम्हें कभी ऐसी मूढ बीबा ही नहीं हुई ।"

‘सो पी सो जरा सिर उठा लो।’—रिबूची ने कहा।

‘ऐसे ही पिना हो।’ रिबूची की स्त्री कहने लगी—‘कोई धीर रवा नहीं है हकीम भी तुम्हारे पास? धीरों के धामूपणों को फूँक कर रवा बना सेना किसने सिखा दिया तुम्हें?’

एक-दो घूँट पीने क बाद बीमार ने फिर मुँह नहीं खोला रवा के लिये।

बहु दिनों बीसा ही बसा गया। कलजबन धीर रिबूची ने कई तरह के मसखे किए। अन्त में निश्चय बड़ी मोठी धीर मूंगा को मसम कर रवा बनाने का हुप्रा। उसके लिये कुछ कंठों को बकरल पड़ी रिबूची ने दूसरे दिन उनका प्रबन्ध कर लिया। प्रब समस्या हुई बीमार के गल से माला निकालने की।

हाँ वह एक बिकट समस्या हो गई थी। धामूपणों के लिये उसके मन में बड़ी उत्कट खालता बाल पड़ती थी जो बीमारी की दुर्बलता के कारण उसके एक प्रमाद-शा हो गया था। रिबूची ने बर-बर उससे मासाएँ माँगीं वह देने को किसी तरह तैयार नहीं हुई।

उत में कई बार रिबूची ने बीमार की धाँस सगने पर उसके सने से माला निकाल देने की खेप्ला की पर बार-बार वह असफल ही रहा।

कलजबन ने उससे कहा—‘इस समय रहने दो कल को मैं किसी तरह माँय मूँबा। सभी जौन ऐसी धावस्यकता है?’

‘मह बड़े जिही स्वभाव की है। तुम नहीं जानते।’

‘खेला बायसा कल को। कंठे तो घा जाने दो। काफ़ी कंठों की बकरल पड़ेगी।’

‘पास ही एक बरबाहा रहता है। उसके यहाँ कई मोठ कंठों के बरे पड़े हैं। तुम जाहीगे तो वह यहाँ कंठों के पहाड़ लगा सकता है।’

‘कंठों की तो बफिन्नी हुईं लेकिन रवा कहाँ फूँकी बायगी?’

‘बर के भीतर नहीं फूँक सकते? कीमती रवा ठहरी

बहुत टैम धाँस बाहिए, बर के भीतर

'ठा सहर के बाहर किसी मैदान में जले जसैये मौसम ठो घाबकल ठीक है ।

बर से इतनी दूर ? घाब सबाकर बर नही घा सकते बराबर बरा की बीकसी करनी होगी ।

कितने दिन तक ?

'कम से कम तीन दिन तक तो करनी ही पड़ेगी । तुम बीमार को पकेले छोड़कर घा नहीं सकोने ।

उसी बरबाहे को कुछ घोर बाम बेकर बीक्रीबारी का काम नी करत सेगे ।

"उतनी दूर कीन जाए पाने-पाने का भ्रम्ट ! जाइ ! घपर पानी बरस बया ती ? फिर कीमती बीज । तुम्हारे घापन में जमह तो है ।

'हो जायगा यही ?

'नयो नही ।

रिबूची बड़ी बिला के साथ कहने लया — 'जमह तो हो मह सेकिन इसये मालाएँ कीम ली जाएंगी ? कबी से काट सेने पर घासानी से निफल घाबेबी ।

'इस समय सा रहो मित्र कम को देला जायगा ।

'जम को क्या देला जायगा ? बीमारी निफलने क लिये यह माबा लाए । यह माला ही इसके घरीर में बीमारी ये घबिक गहराई में जुम गई है । एक लुराक घपेय की होती ती इमे दे बने । जब नहरी नीद घा बानी महज ही मालाएँ हटाई वा मजठी । नयो मित्र ?

'यह एक तरह का बीला बेकर किली को लूट सेना है । माला से लेला ही हमार उह रूप नही है । हमार मतमब है बीमार को घच्छा करला । नीद क मय में माला देबाकर जब यह होप में घावेबी ती तुम क्या ममकन हा इमे कीई पहरी ठेन न लगेनी ?

फिर कये ? कीमे ह्य घपला काम मापेने ?"

पीरज रघो, उतावली न करो । बीच में एक रात को बीत जाने

हो। कम की कोई-न-कोई तरकीब सूझ ही चापसी। लेकिन न बल प्रयोग ही करना है न कोई बोलना देना। इससे बीमारी बुझाय्य से प्रसाध्य हो जायगी।" कलजन ने कहा।

दूसरे दिन सुबह होने पर रिबूची बीमार के पास जाय लेकर पहुँचा। कलजन भी साथ हो लिया था।

बीमार के बेहरे पर एक क्षीण मसकान थी। उसने कहा—“हकीम की सुझारी ये दोनों माताएँ सबमुच में मुझे बड़ा खायबा पहुँचा रही हैं। मुझे रात भर बड़ी घबड़ी नींद आई।

कलजन ने पूछा—कछ खाने को भी जी कर रहा है ?

‘हाँ चाय पी बूगी।

रिबूची ने उसकी घोर चाय का प्याला बड़ाया कलजन ने सहारा देकर उस उठमा। वह बीरे-बीरे चाय पीने लगी।

कलजन बोला—“इसमें कोई समेड नहीं ये माताएँ तुम्हें बड़ी सुन्दर बना रही हैं।”

बहुत खुस होकर वह बोली—धीर भी तो कुछ खेर थे ?

‘हाँ कुछ प्रैपुलियाँ।’

‘उम्हें भी मुझे पहला बो न। तुम्हारे मित्र ने मुझे सुन्दर बनाने की कभी परवा ही नहीं की। ये घपनी बबानी में बड़ी सन्दर थी। बबानी घपना रूप प्राप्त ही है उस समय किसी प्रामुपस की बकरत ही नहीं है, लेकिन उसक बाद प्रामुपस प्राब्रमक थे। तुम्हारे ये मित्र कभी बन नहीं कमा उनके इसीमिये मया बैराम्य धीर संपत्ति की शरण-संग्रस्ता का उपवेश देते रहे मुझ।”

कलजन बोला—“चाय पी तो बोलते-बोलते तुम्हारा गला सूख जाता है धीर चाय भी ठंडी होती जा रही है।”

बीमार ने फिर चाय की एक-बो बूट पीकर कहा—“तुमने प्रब्रम ही घपनी हनी की मासता को समझ और उनके सिय भीड़कर रज सिये।”

रिबूनी ने फिर उसके होंठों पर चाब का प्यासा लगा दिया । फिर चाब पीकर वह बोली—“धैरूटी कहाँ है वे ?”

“मेरे पास है ।”—कलत्रन ने जवाब दिया ।

“मेरी धैरुतियों में पहना दो न ।

“लेकिन तुम्हारी धैरुतियों में खून की कमी है । वे कितनी पतली हो गई हैं । धैरुतियाँ बिर-बिर पड़ेंगी ।”

“उममें खून बढ़ा दो न ।

‘हाँ उठी के लिये धावा हूँ मैं ।’

कैसे बढ़ाओगे ?

“जिन मामलों में तुम्हें बाहर से पहनन पर ऐसा रूप दिया है उम्हें धरत तुम भीतर से पहन बोयी तो तुम्हारी तन्मुखता ही नहीं तुम्हारी बहाली भी क्षीट घायली ।

“मैं नहीं समझी मामा भीतर से कैसे पहनी आयी ?”

‘वह मुझे का रंग धीर मोठी की धामा तुम्हारे रक्त में मिला दी बाबगी ।

कैसे ?”

“इन्हीं धीनकर तुम्हें पिला दिया जायगा ।

“यस में इन्हीं धपने यस में पहन चुकी हूँ तुम इन्हे मेरे गले से निकाल के बाधोले तो साध यता सुना न हो जायगा ?

“नहीं हम ऐसा न होने देंगे ।” कलत्रन न धपने घुरा के भीतर से फिर वह बेबरी की मोटली निकाली धीर उठे लोलकर उठके भीतर से एक खर्क बाहर निकालकर भीमार को दिखाते हुए कहा—“तो इसे तुम्हें पहना दिया जायगा ।”

“वह किसका खर्क है ? इसमें किसकी मुठि बनी है ?”

“यह डोन्मा की मुठि है । यह तुम्हारे गले में डोहण पतखन हन करेगी । तुम्हारे गले का सूबायन दूर कर उठकी सुन्दरता बढ़ायगी इसके । पिबा “यमें से दिन रात घलि की महुरे बिजलती रूनी धीर कचन

ही तरह तुम्हारी रक्षा करेगी ।”

इसी समय वहाँ उधर बरबाहे ने प्रणव कर कहा— ‘ज्योतिषी की कंड कहीं पर रज्जू ?”

रिबूची ने कस्तजन की धीर बेबा । कस्तजन बोला— ‘घायल में ही तो डीर है ।

रिबूची ने बरबाहे से कहा— ‘बड़ी घायल में डाल दो एक कौने में ।”

‘कितने बोट ?” — बरबाहे ने पूछा ।

कस्तजन बोला— ‘एक बोट देख लेने पर बता देंगे घनी । तुम जाकर बुधरा से घायो ।

बरबाहा जाता गया ।

बीमार बोली— ‘कहाँ का क्या होमा ? इतने कंड ?”

‘तुम्हारे लिये दबा बनाई जायगी ।”

मुल में बड़ी बिरुपया पैदा कर बीमार कहने लगी— ‘छी ! बड़ी घनीब बातें कर रहे हो तुम ? हुकीम की मैं समझती थी तुम एक ही रंग क होये । कमी कहते हो मूँगे धीर मोती की दबा बनाई जायगी धीर कमी कहते हो खबर याम के मोबर की ?”

‘दबा तो मूँगे धीर मोती की ही बनाई जायगी कंधों से उनको दबा में बदलने में सहायता ली जायगी ।” — कस्तजन ने सौम्यता के साथ कहा ।

‘क्या सहायता सोचो ?”

‘उनको जलाकर मूँगा धीर मोती का भस्म तैयार किया जायगा ।”

‘कंधों को जलाकर फिर मूँगा धीर मोती की राख बनाधोने । ऐसे भूम के रास्ते से जाना क्यों पसंद है तुम्हें ? बिना सबब ही मेरी छाती नंगी कर दे रहे हो तुम ।”

कस्तजन बोला— ‘तुम ऐसा कहकर मेरी बिरगी घर की बिधा का उपहास करती हो ।”

बीमार हँसती हुई बोली— 'हृदयवाँ सब एक ही सी है राजा की हों चाहे प्रजा की। एसे ही राज भी तो बह कबो की राज हाँ चाहे मूमा मोठी की। फिर तुम बूढ़ की राज पुत्रिया में बाँधकर क्या नहीं मुझे खिला देते? अगर मेरा जीवन बाँधी होगा तो मैं उसी से बँगी हो जाऊँगी। वे ज्योतिषी जी क्या कहते हैं, मुझ परमी कुछ दिन बीता है या नहीं?'"

रिबूची बोला— 'हाँ तुम्हें बीता है।

बीमार बोली— 'तब अगर तुम्हारी बिधा झूठी नहीं है तो मेरे जीने को क्यों तुम एक कीमती चीज की निहटी करने को तैयार हो ?

रिबूची बोला— 'जेल ऐसा ही है और हम में न किसी को इनके खिलाफ बोलने का कोई अधिकार नहीं। माफो मामाएँ दे दो।

रिबूची ने कछ बुझता और कुछ रोप नरी वाली स घपना हाथ उन मामाओं की तरफ बढ़ाया उसकी स्त्री फिर कोई विरोध न कर सकी। उनमें दोनों मामाएँ निकल ली।

कलजल ने उस विराय बीमार की सहाय्य देते हुए कहा— 'तो तुम्हें यह लक्ष्य पहना देता हूँ। यह ठारण करने वाली होस्मा है—हर घमाबम और पुत्रिया की इसकी पूजा करना। अभी तुम कमजोर हो जब कुछ ताकत या जायपी तो बन भी करना पड़ना।' कलजल ने वह मूर्ति उसको दिखाई और फिर उसके बस में पहना ली।

रिबूची दोनों मामाओं को लेकर उस कमरे स चला गया। उसकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था मानो बड़ी दुर्लभ वस्तु उसके हाथ लप गई।

मोती-भस्म

चरबाहे ने घाँगन में कड़ों का डेर जमा कर दिया। जब उसने घाँसिरी खेप बास की तो वह चुपचाप कड़ा हो गया रिबूची के पास। रिबूची कसजन से कुछ बातचीत कर रहा था। चरबाहे को धाता देख कर रिबूची के मन में कुछ कठिनाई-सी पैदा हो गई। कसजन बोला—
“कोई बात नहीं बबराघो मत।

चरबाहा पूछने लगा—“संजिन इतने कड़ों में क्या करते तुम ?”

रिबूची ने कुछ कल्पना से जवाब दिया—“बता तो दिया तुम्हें कि दबा बनाई जायगी।

“वैसी दबा बनाई जायगी ? दबा बनाने वाले तो यहाँ भीर भी हैं। मीने तो उन्हें इनमें कड़े जमा करते नहीं देखा।

कसजन कहने लगा—“बड़ी कीमती दबा बनाई जा रही है। न देखा हो तो मात्र देख लो।”

“कीमती कैसी ?” चरबाहे ने चौतूहसपूर्वक पूछा—“यों जो मेरे पास सकेव हा गए हैं उनको कासा कर सकेगी यह दबा ?”

रिबूची ने जवाब दिया—“कर क्यों नहीं सकेगी ? बास के मी सकोमें दबा के ?”

“एसे क्या हीरा-मोठी थोड़े पड़ होंगे इसमें।

“हीरा-मोठी ही पड़ है चरबाहा बी।” कसजन ने जवाब दिया।

रिबूची अपने मन में सोचने लगा—“कसजन बड़ा सीधा धावमी है। घायर बल्बी में बिना सीधे-समझे इसके मुँह में यह सण्ड निकल गया। उसने चरबाहे को बहका देने के लिए कहा—“हीरा-मोठी कुछ

नहीं हैं, तुमसे ऐसे ही हँसी में कह दिया।”

इतने कड़ों का पहाड़ जो यहाँ पर लाकर रख दिया है मैंने। मेरे का यहीने की कमाई है यह। इसका नगव पैसा न सूँपा। बका ही करीब सूँपा लेकिन कुछ कही भी तो। —बरबाहा बोला।

कलजल ने कहा—‘क्या कहूँ?’

‘यही कि लफ्फे बाल वाले हो जायेंगे व सब? और जो जो व बाँट टूट गए हैं तीन टूटने की तैयार हैं इनका भी कुछ जिम्मा लोगे या नहीं?’

‘क्या जिम्मा लेने को कहते हो? जो बाँट टूट गए हैं उनमें फिर तीसरी बार बाँट निकल पाएँ? ऐसा भी कही होता है? मरे हुए भी क्या कहीं बोलने लगते हैं? सुने हुए पेड़ में भी कहीं फल लगते हैं?’

बरबाहा ठहाका मारकर हँसा—‘बाहू! हमारे गाँव में एक बुढ़िया थी पत्नी चार-पाँच ही घाम तो उमे मरे हुए हैं। इसके दाँत भी बार टूटकर तीसरी बार निकल पाए। तमाम गाँववालों को मालूम है। और इसने बिना किसी की बका आए ही यह सब पाया।

रिबूची ने जबाब दिया—‘सब विश्वास की बात है। अगर तुम्हारे भी विश्वास है तो तुम भी जो चाहो कर सकते हो।

‘फिर तुम्हारी बका के घाम देने को क्या मुझे पागल कुत्ते ने काट बाया है?’

‘भाई, विश्वास को बमाने के लिए भी तो कोई चीज चाहिए? वह हवा में चोड़े ठहर सकता है?’—कलजल ने कहा।

कलजल के हाथों में एक डमक के घांकार की कोई चीज थी। उस पर वह गीमी मिट्टी और कपड़ा लपेट रहा था।

बरबाहे ने पूछा—‘यह क्या है?’

रिबूची उमे डाँटकर बोला—‘जाओ तुम्हें कोई मनसब नहीं धपना काम करो!’

‘क्या नाम कर्के सब? एक बोठ खाली कर सब कपड़ बहाँ जमाकर

बिगड़े दिन भर में । सराई घीर कर्णों के दाम देने का बकवत घामा तो तुम ऐसे डीठ रहे हो ?"—कुछ घसभुष्ट होकर बरबाहा बोला ।

बाव बिगड़ती बेब कलबन बोला—“भाराब मठ होघो । ये दो हाकिमाँ हैं जिनके मंह मेंने इस कपड़-मिट्टी की मदद से जोड़ दिए हैं ।

कुछ सहारा पाकर बरबाहे के मुक पर की लीखी रेखाएँ टूट पड़ी । उसने पूछा— इन हाकिमियों के भीतर क्या है ?”

‘उसमें बबा है । —कलबन ने बबाब दिया ।

‘क्या बबा है ? —उसने फिर पूछा ।

यब क्या बबा बठाऊँ भाई ! —बड़ी उलझन से फिर बुजाते हुए कलबन ने उत्तर दिया ।

रिबूची बुझा हुआ घमी तक चुप का फिर घामेस में बाकर कइने लगा— तुम जितने जिही हो उतने ही मूरस भी । कइ दिया तुम्हारे समझने की बबा नहीं है । ली बाठ की एक बाठ ! जाघो घपना रास्ता नापो ।”

बरबाहा मन-ही-मन बल उठ । उसने निश्चय किमा बकर कोई भेद की बाठ है इस हाडी में घीर बह उठका मण्डाफोड़ करने के लिए कटिबड हो गया । उसने बबाब दिया—“मेरे दाम दो लमी तो रास्ता मारूंगा ।”

रिबूची ने भी घपने स्वर में ठेजी भरी—“दाम अभी तय कइ हूँ ?”

“तो क्या कछ देने की मंघा नहीं है ?”

‘हैने क्यों नहीं ? बार घाबमियों से पूछकर रेने ।”

“मेरे घर में जाने को कछ नहीं है । मैं क्या बिमाऊँ बच्चों को ?”

रिबूची ने तुरन्त ही उसे उत्तर लीटाया—“घबर हन तुम्हारे कण्ठे नहीं कटीघटे तो ?”

“तब की तब ही देखी जाती ।”

“मण्डा जाघो उठ मे जाघो घपने कण्ठे ।”—रिबूची ने बहुत

बोला—“अब सूर्य अस्तावगत में चले गए, नीतर बसो बीमार बड़ी बेर से घबरेली ही है।”

कलत्र ने होमियारी से हाँडी उठा ली घीर दोनों नीतर को चले प्रांगण में घाए। प्रांगण में तीन घोग ऊँची ऊँची बीबारे थीं। चौबी घीर मकान का मुख्य प्रवेश था। होमियारा मकान प्रांगण को छोड़कर मकान की तीनों बीबारों में घीर कोई घाने जाने का द्वार नहीं था। बुरे के निष्कासन प्रकाश घीर बुरे के प्रवेश के लिए निश्चिन्ता थी।

मकान के सामने प्रांगण की बीबार में एक दरवाजा था रिबूची ने प्रांगण में पहुँचकर उसमें साँकस चका दी। दोनों नीतर जा पहुँचे। बीमार रो-बिस्ता रही थी। रिबूची उम इबति का पाही ही था। उम पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पडा। कलत्रन बौड़कर उसके पास जा पहुँचा। जमने पूछा—“बसों तबीयत कैनी है?”

“जीवन के लिए कोई धामरा नहीं मरने के लिए भी कोई सहारा नहीं मिलना। —कराहनी हुई बह बोली।

‘क्या बात हो गई? —कलत्रन ने पूछा।

“पानी रता तो है। —रिबूची ने कछ झिड़ककर कहा।

‘सब पी चुकी हूँ।’—कहकर बह रोने लगी निमकिया मरती हुई। रिबूची पानी भरकर से घाया घीर उमके निरहाने रकते हुए बोला— तो पानी न पाया। किमी दिन गुम पानी को सूनी भी नहीं हो घीर किमी दिन रखने ही बसंत टीना कर देती हा।

‘मैं क्या करूँ फिर? प्राण तिम दिन जैसा माँगते हूँ। पानी भी नहीं बोग क्या?’

कलत्रन उन हाँडियों का दिवाना हुया बोला— देखो यह तुम्हारे लिए हम बचा बना रहे हैं। मयबानू बाहँन तो गुम तीम ही रोग से मुक्त होकर घर के काम राज में लग जाओगी। तुम्हारी तकलीफ के

एक घण्टिक दिन नहीं है ।

रिबूची प्याले में पानी भरकर उसके पास से गया बोला— 'सो पानी पी लो ।'

'नहीं !' बीमार ने अपने निहचर में बदमकर कहा— 'नहीं पानी नहीं पिऊँगी । दवा पिऊँगी ।'

रिबूची ने पूछा— 'कोन-सी दवा पिओगी ?

बहु माराज हो यह मुँह फिराकर सो गई ।

कमलजन बोला— 'धमी दवा तैयार नहीं हुई । जब घीब पर रहेंगे । तीन चार दिन में मरम बनेगी । फिर कुछ घीर दवापों के साथ बीटकर हममें मंत्र दिए जाएँगे । अपने सप्ताह तक पहली सुराह दे मर्केपे तुम्हें बकर ।'

'इस बीब में मरि मर गई तो ?'

रिबूची बीरे-बीरे बोला— 'मयवान् की हया होगी पाप कष्ट जायगा ।

कमलजन ने कहा— 'नहीं कुछ नहीं होया बहरामो नहीं ।'

बीमार ने छाती पर के उस ठाबीज की उठाया । उसमें बनी हुई होम्मा की मूर्ति को सिर-मापे से लगाया घीर उसके पैरों का चूदन किया ।

कमलजन घीर रिबूची ने बीमार के पास से कुछ दूर पर जाकर गोष्ठी की । उन बीनों के मुखों पर भिम्ता की छाया की घीर बाणों में कंपन घीर मंत्रता ।

कमलजन बोला— 'दवा बनाने में शीघ्रता करनी चाहिए । कैसे हो ?

'धमी कण्डे सुलगा है । उनके बीच में ह्रादी रख दीजिए । सूख भी जाएगी घीर चूंक भी जाएगी घाब-ही-साप ।'

'ऐसा विधान तो नहीं है ।

'भावस्वकता घीर सूभीते के अनुमार विधान में बदलाव किया जा

“एक घसम्मब बात है यहाँ।

“संसार में घसम्मब कुछ भी नहीं है।

“कई सी बर्षों में यहाँ कुछ सकेगा।”

“सच्ची जयन होने पर समय अनूप्य की वासता स्वीकार करने सगता है और बेवता उसकी सहायता को दीक बने पाते हैं।”

कमजल मिन बड़ी बेर में तुमने मुझे यह बात बताई।”

बरबाहा बीरे-बीरे प्राणन कोरकर बाहर मिट्टी का डेर लमाता या रहा था। उसके मन में से उन हीरिया के भीतर की रवा के बारे में किया गया निरूप धमी तक जमा ही हुआ था। उस धपमान को सब तक भूल जाने की वह कसम खा चुका था जब तक उसक भीतर की वस्तु की उसे पूरी पूरी जानकारी न हो जाय। बीच-बीच में रूप में सूखती हुई उस हीरि की ओर वह बेवता जा रहा था।

कमजल ने रिबनी से कहा—“हर बात संयोज से होती है तुम ज्योतिपी हो इहाँ के योग को जानते हो। उसको जो टाल देने की चेष्टा है वह किसी यह को उसकी राह से हटा देने की कोशिश के समान कठिन नहीं है क्या?”

रिबुनी कुछ पकराकर बोला—“अरु ऐसी ही बात है। लेकिन इस समय तुम्हारा यह कहने से क्या मतलब है?”

“मेरा मतलब है रिबुनी तुम्हारी प्रीरत को बचना होमा तनी ता न मूंगा-मोनी कितनी भासानी है जलम्ब हो गए प्रीर इनकी फूँकर रवा बनाने का भी बोग था गया। ओर धरर उसे बनना नहीं होया ती इस रवा का घपूठ बनाकर भी हम उस जीवित नहीं रल सकते।

“तुम न जाने क्यों बड़ी बेसुरी बातें कर्ने लते?”

बाशावग्गु हमारे भीतर से खनि बलकर था जगता है। तुम कौन ज्योतिपी हो? क्या सूर्य की जल में भी रात नहीं है और बरबया के पध में भी कग्गु पण नहीं?” कमजल से हीरि की छाया मरी रिवा को सूर्य के प्रकाश की ओर चुमा दिया।

रिबुनी को कमजल की यह विचारधारा महल नहीं हुई। वह बीमार के पास बने जाने का बहाना बनाकर भीतर को दीक गया।

चारवाहे की मजद

गुल्हा तो बड़े घर में ही बुझकर तैयार हो गया था। लेकिन कनकन की हूँडी शाम तक भी नहीं सूख सकी थी। वह बुन्दरे गिन के लिए टाँगने की बात सोच रहा था।

रिबूची बोला— भाई मैंने ज़ाची देबी है। सर्पासन के बाद बहुत पक्की पड़ी है। मेरी सनक में घाब ही एक बो इन हूँडी को धरिन देवता की मोद में।

कनकन राजी हो बसा— 'धक्की बात है जहाँ तक देवा का सम्बन्ध है मैं जो कुछ भी कहूँ लेकिन जब पकी घीर लगन का विषय है तो मुझे तुम्हारी ही बात मान्य है। घाब ही सही। हूँडी करीब-करीब सूख तो गई ही है। जो कुछ कसर खोप है कंधो पर ही निकल जायेगी।

रिबूची ने कहा— "बताओ फिर क्या करें?"

कनकन— "करना ही क्या है? मट्टी के भीचे कुछ कंठे बिछोये बीच में हूँडी एक फिर बाकी ऊपर से रखे जायेंगे। चारवाहे की बुना लिया बाम।"

रिबूची— "रहने दो प्रभे। एक तो कौमठी देवा है मामूम नहीं किसीके मन में कहाँ पर पाप किया है? बताओ मैं बुझ कर देता हूँ।

रिबूची कंधों के डेर में से कंठे ठठा उठकर मट्टी में टाँगने लगा। कनकन उन्हें मट्टी में डबो-डबोकर धलाने लगा। परबानक रिबूची को कुछ धार धाया घीर जसने मीचन का दरबाजा बन्द कर बस पर साँकस बसा दी।

बीच में हूँडी रखकर जसको ऊपर तक कच्चे धिनकर एक

बया । सूर्य अस्तावनवामी हा मए ये । दोनों घूर्वास्त की प्रवीक्षा करने लये ।

रिबूची बोला— 'क्या यह जरूरी है कि हम दोनों रात भर यही रहें । डार बन्द है ही । फिर किसे मानुम है इसमें क्या है ? घोर काई भाग में हाव क्यों दे ?

'शौकती के लिए तो नहीं लेकिन रात भर यहाँ पर मानी घुमाई जायसी मन्त्रों के साथ कि पापात्माएँ भाकर हमारी बचा को खराब न कर दें "

'ऊपर से पासा मिरगा । ऊपर मकान की छिड़की पर से भी तो यही पर मजर पड़ती रहेगी ।

"नहीं यही नीच ही ठीक है । कनटोप से फिर घोर दान डक बुँबा कीहूग कर एक बुन्मा नीके बिठा लूंगा । सामने इनकी प्रबण्ड घाग । कैसा पासा ? कैसा बाड़ा ? कलजम न माकाय की घोर बंधकर पूछा— अभी घोर किजनी दर है ?

'घेर सूर्यदेव की ही है हमारे तो सब कुछ तैयार है । इधर यह मट्टी पुर गई है घोर उधर घाग गुलप रहीं है । बरा यह मकान की छत पर की पूव धोऊन हा बाय तक तक में तुम्हारी मानी घोर बुन्मा सा देना हूँ । मगर बीमार की उलझन न होती तो तुम्हारे साथ मैं भी यहाँ बैठ-बैठा रात-भर मग्न घुमाता रहता । —कहकर रिबूची बर क भीतर बसा बया ।

बह बर पैर कमरे में मया । बहुत धीरे से जब बह एक पुन्मा उठा रहा था तभी छतकी स्त्री ने बड़ी करबा नरी बाखी से पकारा—
"कौन ?

'मैं हूँ रिबूची ।"—उमने उत्तर दिया ।

मरे पास बैठो ।"

तुम्हारे पास अभी कैम बैठूँ ? —बह कलजम की मानी उठाकर बाहर को जाने लया ।

मेरी लबीबत बहुत मक्कती है।”

“किसी तरह उस पर काबू करो। तुम्हारे ही लिए तो यह सब उपाय हो रहा है। दवा बनाई जा रही है।”

“घाज रात छामे दो दवा रुब बना केमा।

‘समन हुँकर घाज का निकाला है। कल खँसे बनाएँ ?

मेरा बय पटा जा रहा है। मेरे पास घाकर बैठते क्यों नहीं तुम ?” —फिर उसने कहा।

“तुम तो रोब ही ऐसा कहती हो। मैं कुछ बकरी काम करने के बाद घाऊँगा।” —रिबूची कंबल घीर मानी लेकर बाहर जो जाने लगा।

बीमार ने फिर गिड़गिड़ाकर कहा— “हकीम की कहाँ है ?

“तुम्हारे लिए ही दवा बना रहे हैं।

“उन्हे बुना दो बरु बेर के लिए।

वह नहीं आ सकते। मैं घाता हूँ घमी। —रिबूची बाहर बसा गया।

उसने मट्टी के पास घुम्मा ले जाकर बिछा दिया घीर बोसा— “जो यह तुम वहाँ पर बसकर बैठ जाओ। जो कुछ करना-बरना होया सब बीड़-भाग मैं ही करूँगा। यह तुम्हारी मानी है।”

कमजब मानी लेकर घुमाते गया घीर धपना मन्ब अपने गया।

रिबूची के मुँह में कुछ दूटी हुई भावना को देखकर कमजब ने पूछा— “क्यों कुछ घन्मनस्कता कैसी हो गई घमी-घमी ?

“कुछ नहीं यह घाबी ही मेरी बरबाबी का कारण हुई कमजब। इसने कभी मुझे खँत से नहीं रहने दिया।

‘क्या बात हो गई ?”

“घती के लिए इतनी कठिनाई मे यह दवा बनाने की तैयारी कर रहे हैं घीर यह कुनसली ऐत मीके पर लीक रही है।”

बीमापी के सबसे उधका विभाग कमजोर हो गया भाई।”

“वह अब घच्छी की ठव भी एसी ही बी।

“सब मायना ही का खेल है। कलबन ने कहा— ‘मायना मत बिगाड़ो माई।’

‘कलबन एक बात समझ में आती है। यमी घाय नहीं बी है इसमें यमी कुछ नहीं बिगड़ा है।’

‘तुम ज्यादा लड़ पीकर तो नहीं घा नए घाव। तुम्हारा मतलब क्या है ?

‘मैं कहता हूँ हाँडियाँ निकास लो।
‘क्यों ?

‘बहु अच्छी होने वाली नहीं। मनुष्य बिश्वास से अच्छा होता है उसके पत्ने में येने कभी किसी प्रकार का बिश्वास नहीं पाया। निजा सो कहना है हाँडो निकासो। यकारण ही इन बबाहरा की राय न क्या फायदा ?’

येरी स्त्री मर चुकी थीर ये ठिठ किसी स्त्री से प्रेम नहीं का बाहवा तब किसक लिए इन बबाहरों को बचाओं ?

किसी का दान कर दो। मोय से दान की बहुत बड़ी महिमा है। बहुत धीक कहा तमने। ऐसे हम हाइ दान की भूल प्यास से हमारी धात्मा की जानमा बहुत बड़ी है। किसी के धरीर पर धामुपण पहनाकर हम उसके झूठ धमिमान को बड़ाते हैं थीर किसी को धात्मा का धोबन देकर हम उसके भीतर प्रकाश की धाँसे लोसते हैं। रोय क्या है ? यह सूक्ष्म थीर स्पुल की लंघि पर जपकी हुई एक घाँठ है। मन धीर देह की एक जड़ता है। नहीं धामुपणों के रूप में ये किसी को न दूया ये मोती थीर मूँसे। धगर किसी को देन ही हल्ले तो क्यों लम्हारी स्त्री के यत्ने से जतार जाता ? ये जमका रोग दूर करने के लिए इनसे बचा बना रहा हूँ।”

‘बहु न होगी अच्छी।’

‘देना बचा का प्रयोप किए तम ज्योतिष से बचा रहे हो क्या ?
‘दिल्ली भीतर की घोट दान थीर मन देकर बहाँ पर देखा या

घबराकर चौककर उठा— 'बही है फिर चिस्त्वाने लगी ।'

कमजोर कहने लगा— 'रिबूची में घपने तमाम कर्तव्य कर चुका हूँ । यह भट्टी अब सिर्फ धाप की ही प्रतीक्षा में है । तुम ठीक समय पर धाम ले आना इसमें । मुझे अब इस घासण से नहीं उठना होता ।'

रिबूची दौड़कर भीतर चला गया ।

'मे जितना चिस्त्वाई । तुमने मेरी कोई भी धाबाज नहीं चुनी' — उसकी स्त्री बोली ।

रिबूची ने देखा उसका मुख जिसकम पीसा पड़ गया था लेकिन धाबाज में बही कर्ममता घोर बही बर्बरता थी । उसने पूछा— 'क्या बात है ?'

घमी मोत के राजा के दो मिपाही धाप थे । एम समय में तुम नहीं चले जाते हो ? घमी घमर के मुझे पकड़ ले गए होते तो फिर तुम्हारी दबा खाने के लिए कौन बचा रहता ?'

रिबूची ने निरवचन किया— यह जरूर प्रसाप मे बक रही है । उसकी दोनों धाबों जिसकम खुली होन पर भी रिबूची ने उम झकझोरे हुए कहा — 'उठो उठो क्या तुम सपना देख रही हो ?'

'जब के मुझे बर्माट के जायेगे तभी करोये तुम बिरबास । नहीं मे कहीं न जाने बूमी अब तुम्हें ।' बीमार ने रिबूची के सबादे की छीनी बाह पकड़ भी बड़ी बूढ़ता मे घीर बोसी— 'घाज की राठ अब तुम्हें नहीं मेरे मिरहाने बैठकर बिठानी होपी ।'

रिबूची बठपुससी की तरह उसके चिरहाने बैठ गया । उसने उसकी जकड न घपनी बाह लुझाने की कोई काशिष नहीं की । कुछ देर बाद जब बीमार की धास लपने लयी तो उसका हाथ छीसा पड़ गया और रिबूची की बाह स्वयं ही छूट गई ।

उसकी सांस में एक घमीब स्वर बीदा होने लगा था । रिबूची ने बबराकर उसके मस्तक पर हाथ रखकर उसे पुकारा— 'तुम्हें नीच धा रही है क्या ?'

कलजल ने रिबूची से पूछा— "बूध है?"

होगा बोझ-सा। —वह एक प्याले में ले आया।

कलजल ने जबर्जस्ती बीमार के मना करने पर भी उसके बने में बोझ-सा बूध डाल दिया। उसके पी चुकने पर उसने पूछा— "क्यों कैसी है तबीयत?"

बीमार ने कुछ कहा लेकिन वह इतना घस्पष्ट और बिछल था कि किसी की समझ में नहीं आया। हाँ उसके मुँह की भाव भरी से ऐसा जान पड़ा बीरा अतम हाँ गया और धर वह ठीक है।

रिबूची ने पूछा— "इसकी जवान बिलकुल बन्द हो गई कहीं इस पर सकुचा तो नहीं पड़ गया?"

"कल दिन बाद पता चलेगा।"

दोनों कुछ देर चुप रहकर बीमार को देखते रहे। उसके बाद रिबूची ने पूछा— "कोई बचा तो नहीं होगा?"

"क्या बताऊँ? —कलजल फिर लुजाकर सोचने लगा।

"बाजार से लाने की हो तो मैं ले आऊँगा।"

"बाजार की बचा से क्या होया? बचा बन रही है। लेकिन इसने तो अचानक ऐसा बच ले लिया।"

"मैं समझता हूँ यह सतरा इसने पार कर लिया।"

"दूसरे झुंके का डर है मुझे।"

"धर धाब रात हम कुछ न होया।"

"कैसे कहते हो?"

"बीमार की सकल घीर बिष्णामों से।"

"अगर दो-तीन दिन इसे कुछ नहीं होता है तो फिर तो हमारी बचा तैयार हो जावमी रिबूची। घीर हम जी-जान से एक बार फिर इसे बचाने की कोशिस करेंगे। धाधा बहुत-कुछ है।"

मुम बाधो फिर बही घासल बाँधकर बैठो। प्रात मुसग गई होमी?

“बकर” कमजब एक बार फिर बीमार की तरह बड़ा । उसने उसकी माही पर हाथ रखकर कहा— “माही कमजोर नहीं है ।”

बीमार ने धपता हाथ हटाकर इशारा किया कमजब से जैसे जाने का । रिबूची बोला— “मह तुमसे बाधो कह रही है ।

कमजब ने जाने से पहले बीमार को धाकबाधत दिया— “मैं बवा बनाने जा रहा हूँ । पर तुम्हें कुछ न होना ।

बीमार ने फिर कुछ उठी प्रस्पष्ट उच्चारण में पूछा । कमजब ने ने कुछ समझ उसके उत्तर में कहा— “बस बग बाएमी दवा बो-ठीत न में ।

बीमार के मुख पर बड़ी उत्सन्न प्रकट हुई । उसने फिर धपता मतलब बाहिर करने के लिए कुछ कहा कुछ इशारा किया । कोई नहीं समझ ।

रिबूची बोला— “धायर इसका मतलब यही है तुम बाहर जाव दवा में धपता मन लगाओ ।”

कमजब बाहर को जाता गया । बरबाहा धापित में पड़ी हुई एन सुप को पखा बनाकर मट्टी में हवा कर रहा था । मट्टी घण्टी प्रकार घुमन उठी थी । कमजब ने बहु देखकर उससे कहा— “साबाध माई, तुमने तो पूरा काम कर दिया बस अब रहने दो । तुम जा सकते हो ।

लेकिन बरबाहा घाय संकटे हुए बोला— “कैसी है उतकी तबीयत ?

“ठीक है । बहुत पुरानी बीमारी हालत नाजुक ही है ।”

“मैं भी देख पाऊँ ऊपर जाकर ?”

“नहीं बीमार की बेचैनी बढ़ बाएमी । तुम बर को जाओ ।”

लेकिन बरबाहा धपती प्रमाणिकता दिखाने के लिए वहाँ पर कुछ देर घौर जमा रहना चाहता था । कहने लगा— “जाड़े के बिनो में पाय के पाय बैठकर फिर वहाँ से उठने को किसका मन करता है ? बस हाथ-पैर संक लेता हूँ ।” बरबाहा सोच रहा था कुछ घौर में

हां बाब तो उसके जाने में अधिक आसानी रहेगी।

कमजब बोला—“क्या संकट हो ? पर जाते-जाते फिर ठप्पे हो जाओगे।”

बरबाहे ने कहा—“ठीक कहते हो इमीम जी जाना साफ़ फिर मुझ तक जाती है। सब लोग इस बात की जानकर भी तो जाना साते ही हैं।”

“मैं तो भाव जाना भी नहीं लाऊंगा। यहाँ पर घासम बाँधकर मुझे पूजा करनी है। तुम जाओ तो मैं यह दरवाजा बन्द कर लूँ।”—
कमजब ने कहा।

बरबाहा अपना लबादा झड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसने आकाश की ओर देखा सय्या धीरे-धीरे उतर अभी धी चलती पर। वह कंधों के ठेंग की तरफ़ देखता हुआ कमजब से बोला—“कहाँ तो तुम्हारे सब धमी जलम हो गए हैं। धीर से जाओ ?”

“धमी काफी है।

ये तो रात भर में सब जल जाएँगे। सुबह जकण्ट पड़ेगी धमी कहूँगी। अगर सुबह तुम्हारा जबाब देर में पाया तो मानूँ नहीं मैं बर पर भिन्नू या नहीं ?”

कमजब ने कुछ शोक कर जबाब दिया—“सुबह दे जाना।”

बरबाहे ने बाहर को जाते-जाते फिर लौटकर पूछा—“कितने बोध ?”

‘यही एक-दो धीर कितने ?’

बरबाहा धीरग के बाहर चल दिया। कमजब ने द्वार बन्द कर उस पर लौकिक खड़ा भी।

घण्टघार बहुत घना हो हुआ नहीं था। बाहर निकल कर बरबाहा लौटने लगा—एक खककर बर का लबाकर धाँकी। तब तक धीरघ घण्टी तरह ही आया। फिर उसके मन में घुमरा विचार महारावा—
‘कीन देन रहा है मुझे ? देनने या क्या मैं बोली कर रहा हूँ ? मेरी

हूँसी उड़ाई है उसने। इसी लिए मैं देलता बाहूठा हूँ इस हाँडी में क्या है ? फिर जब कमी दूसरी बाग बह मेरी हूँसी उड़ाएगा तो मैं बता दूँगा हाँडी में कौन-सी बबा थी।

जब उसके मन में जोरी की माबता के खान में प्रतिहिंसा का बिचार जम गया तो उसके हाव-शैर धबिफ़ खिबर हो गए। उसे फिर सोचों का कोई डर नहीं रहा। वह बड़ी सापरबाही के साथ उन बिच्छ की मझी की तरफ बढ़ा। परपत्त निर्मयता से उसने छिनी हुई हाँडी को वहाँ से निकाला और अपने लुपा के भीतर डालकर घर को बसा।

घर पहुँचकर उसने अपनी स्त्री से कहा— 'जस्वी से एक दिया तो जलाकर ले था।'

स्त्री दिया जलाकर ले आई। पति के हाव में एक धबीब चीज देखकर पूछने लगी— 'यह क्या है ?'

'लुप्त जाने पर पठा लनेगा। मिल गया मुझ एक बयद।'

स्त्री उसके हाव से उसे छीकती हुई बोली— 'हूँ ! हूँ ! किसी ने कोई जाहू कर केंद्र रखा होगा। रस धायो इसे वहाँ से लाए हो। नहीं मही मैं इसे अपने घर के भीतर नहीं सोसने दूँगी।'

'पापस हो गई हो क्या ?' बरबाहे ने उसके हाव से हाँडी छीन ली— 'बबा है इसमें बबा।' उसने हाँडी में मिनटा लुपा करका लीब मिया। उसका एक परा निकल आया और भी सब। दोनों हाँडियाँ मंगी हो गई। मिट्टी ने उनका मुह जम गया था। बरबाहे ने जग जोर लयाकर दोनों हाँडियाँ प्रसंग कर लीं। छक्के से मूँसे धीर मोठी बरती पर बिस्तार पर। भी के बीपक के मन्त्र प्रकाश में वे छब्बे जबाहर प्रकाश के पूर्वों को प्रतिफलित कर उछ गरीब बरबाहे के घर में महामबमी के पराकों की तरह फैल गए।

बरबाहा पबराकर उन्हें बीनता हुआ बोना— 'घरे में तो मूँसे और मोठी है !'

'सुम ली कहते से बबा है।'

"मुझे क्या मामूम ? पन्द्राज लगाया था मैंने ।"

यह जबर जादू है । किसी ने हमें पंखाने के लिए बास बली है ।
केंक घाघो जहाँ से आए हो बही । —उसकी स्त्री भी उन बानों
को बीनने लगी ।

मूँवे प्रसंग रखा धीर मोती प्रलय । —बरबाहे ने घपती स्त्री को
घारेस दिया ।

वे सच्चे हैं क्या ? मुझे तो बड़ हन्के लग रहे हैं । —स्त्री ने पूछा ।

"हाँ-हाँ सच्चे ही हैं इनके अगर कमर बसक रही है उसे नहीं देख
रही है तू ? क्यों री । तू मोबर इतदू कर कण्ठे पावनेबानी पूने
कब मूँने-मोड़ी का भार संमाला था बड़ रही है ये हन्के लग रहे हैं ?

पहल ता नहीं है देख भी मही है क्या ? पिछले नए साल क मैने
में गारपन की स्त्री की मोली की लड़ी टूट पड़ी थी । मैंने उस बीम-बीम
कर दिए थे । तब की याद है मुझे ब पकर मापी बे ।

बरबाहे का माथा बकरासे लगा था । उसने स्वप्न में भी नहीं
सोचा था कि उन हाथियों में जतना बीमती माल मरा होगा उसने
घपती स्त्री से कहा— मुझे बननी बुद्धि पर तरस पाता है जो इतनी
कीमती चीजों को घाय में भूतने लगे मानो यह जांबा के लिए भी या
वेहूँ बे ।"

स्त्री ने पूछा— "किनकी ?"

बरबाहे के मुँह से बात निकल पड़ी थी जब वह उसे छिपाते
लगा— कुछ नहीं साधो तुमने बीम लिए सब एक बाना भी नहीं
रहना चाहिए यहाँ । हाँही को ठीक उसी तरह बन्द कर में है घात,
हैं घभी ।"

किनके घाते हो ?

"मरा मतलब है यहीं सबक पर केंक घाता हूँ ।"

"तहीं सबक पर इनकी कीमती चीज क्यों केंक घाघोने ? ये जादू
के होते तो हमारी नजर के बड़ते ही मिट्टी में मिल जाते । मैं तो इनकी

माता गूँघ कर पहुँची ।”

“हूँ ! हूँ ! यह क्या कहती है राई ! तु मझे बेलसाने भिजवाएगी क्या ?”

‘तब क्या तुम इन्हें कहीं से बुरा कर साए हो ? अपनी पीरत से सब बात छिपाते हो तो तुम्हारी मजदूर कीत करेया ?’

बरबाहे ने बात को बिचार की यहूराई में ठोका मन ही-मन—
 बड़े मामा पीर मेरी हड्डी में कोई फूँक नहीं लेते ही मूँचे-मोती की एक पीर जमरी के गोबर की रास में मी कोई भेद नहीं । इन बबाहरों को फिर हाँडी में भरकर उस मट्टी में छोड़ देना जरूर उनके साथ पापल बन जाता है । नहीं मुझे इन बबाहरों को इस पुर्वति से बचाना होगा ।”

दोनों हाँडिबा में धसन धसन मोती पीर मूँचे भर दिए गए थे । बरबाहे ने अपनी स्त्री से कहा— ‘अच्छी बात है, मैं इन बबाहरों को रखा करवा तो हूँ लेकिन तुम बहुत नहीं सकती हो इन्हें । इनको हिफाजत से रख लेंगे कमी काम धारेंगे । तुम एक कपड़े का टुकड़ा के भाँचो ।”

उसकी पीरत एक कपड़ा के धाई, उसमें स्या काँचो बँबा बा उसे खोलकर उसने पति के सामने रख दिया । बरबाहे ने सब मूँचे पीर मोती एक ही में मिसाकर उसमें बांध दिए पीर उन्हें साबजानी से अपने सिंछाने रख लिया ।

इसके बाद उसने कुछ एक कपड़े में छानी पीर दोनों हाँडियों में थोड़ी-थोड़ी भरकर बीच में दोनों दिवों का डकला जमाकर उधी कपड़े के बाँध दिया पीसी मिट्टी की सहायता से फिर बूँदों पर साय के सामने रखकर उसे गुंजा लिया ।

उसकी स्त्री ने पूछा—“इन हाँडियों में एक भर देने से क्या फायदा ?”

‘अरी बेनकूत, रास सब बराबर है साबजानी की हड्डी की ही बाँध पीर की हड्डी की या जमरी के गोबर की । सब मिट्टी से निकले हैं, सब

१३४

मिट्टी में मिल जानेवासे हैं ।

'अब क्या करोगे इसका ?

'जहाँ से लाया हूँ वही रख दूँगा ।

'जवाहरा के बचने रात पाकर वह क्या कहेगा ?

'उसका मतलब जवाहरों को रात में बदलना ही है तो फिर कहेगा ही क्या ?

'ऐसा प्रकृतमन्त्र कीत है यह ?

'अस यह मत पूछो ।

दोना सो गए । जवाहरा रात-भर यह सपना देखता रहा उन जवाहरा का क्या कहेंगे और उसकी परबानी यह कि उनको किस पहनेगी वह ?

मांस की गध

दूसरे दिन सुबह होते ही बरबाहे को कुछ भी नहीं सुझा । उसने सबसे पहले उठकर टोकरी उठाया और उसमें हांडी को रखा और ऊपर से भर दिए कण्ठे ।

उसकी स्त्री बोली— 'मैं ही बूटा किए बिना ही कहां को बत दिए तुम ?'

किर देर ही आगयी । तुम नाम बताकर रखो मैं अभी आता हूँ । —बरबाहे ने टोकरी की तरफ इशारा कर पत्नी से कहा— 'बरा हाथ बनाकर यह टोकरी मेरे सिर पर रख दो ।'

पत्नी चुपचुप बीबेरा ही बा । बरबाहा टोकरी सिर पर रखकर भाभा टिखी के घर को घाघे बस्टे से घबिक का रास्ता मही था । घामिम का द्वार मझमझाकर यह बोला— 'बरबाहा खोलो ।'

कतजन भाभी सुनाता तुम उँच रहा था । बरबाहे की आवाज सुन कर बीर-बीर से मंत्र अवता हुआ उछर— तुमने तो सुबह भी नहीं होने दी गई ।' उसने द्वार खोल दिए ।

बरबाहा मांस में चुसते हुए बोला— 'काम मुझे काटे की तरह तुमने समता है । अब तक उँचे पूरा नहीं कर लेता मुझे बिन नहीं पड़ता ।

'मैं बरा लघुसंका के लिए बाहर हो आता हूँ । —कहता हुआ कतजन ओठों की तरफ बजा गया ।

बरबाहे की पीर भी सुनीठे से बग साई । उसने डोकटा लट्टी में उलट दिया पीर हांडी को एक लकड़ी की मदद से धड़ी के बजा दिया ।

कमलजन घाम पर बोला— 'हूँ ! तुमने तो तमाम कण्डे मट्टी में ही डाल दिए ।'

'धरती एक रात में कहीं बचा कुकड़ी है ? धरती तो कम-से-कम घाठ-बस बोझ कण्डों के घोर पड़ेंगे ।

कमलजन मन में सोचने लगा— 'बात झूठी नहीं कहता यह । बड़ी बूटी तो है नहीं कोई कि परम हुई घोर रात में टूट गई । धूँसा घोर पीठी है । धरती तो मूकिकल से बाहर की उसकी कास भी परम नहीं हुई होगी ।

'तुमने तो सब कण्डे लतम कर दिए रात ही में ।

'बचा को भी कुकना वा घोर मुझे भी तो सिक्ना वा । —कमलजन फिर अपने घासन में बैठकर मानी बुमाने लगा ।

बरबाहे न बड़े धारधर्म का नाट्य करते हुए पूछा— 'रात-भर ऐसे ही बैठे रह तुम मन्त्र खपते हुए ?

"हाँ ऐसे ही ।"

मैं तो तुमको एक इकीम ही समझे हुए वा तुम तो एक सिद्ध पुरुष भी जान पड़ते हो ।

"मिठाईं तक जान पड़े जब बिचारे रिजुची की धौरत की जान बच जाय ।"

'रात में कौसी रही उसकी लबीपत ?'

"रात में तो फिर धीरे कोई बीरा घाया नहीं । इस समय तो उसकी घाँठ लन रही है । दको मन्त्रानु की इच्छा ।"

बरबाहा टोकरा उठाकर बोला— "पर जाकर कुछ घाँसेना-पिड़ना । उसके बाह कीरज ही एक टोकरा बाल बाँझना ।"

कमलजन ने कुछ सोचकर कहा— "घण्टी बाल है ।

"तुम्हारा बीसत यह ज्योतिषी बड़ी घण्टी घाँठों का है । घाब रिन-भर के टोकरों को घण्टी तरह तुम विगत रहना । धीरे कहु की कोई परतीत न होनी उसको । एक-घाब टोकरे भी भूकी जाएगी तो

बड़ बरीब मर जायगा।"—बरबाहा बसा गया।

कसबन ने दरवाजा बन्द कर लिया घीर फिर मज-पाठ में लग गया। घम खूब झञ्झी ठण्ड उबाला हो गया था घीर पास-पास क डूबे पर्वतों पर घूर्म की प्राभातिक घुमहरी फिरमें जयमबा उठी थी।

घाघ मतठे-मतठे रिबूची या पहुँचा। मट्टी के पास कुछ डेर बैठकर उसने घाग सेकी घीर तम्बाकू पिया। कसबन तम्बाकू पीता-खाता कुछ नहीं था वह सिर्फ सूँघता था।

कसबन ने पूछा—“कैसी हासत है इस समय ?”

“कैसी ही घास बन्द कर बुर-बुर कर रही है। नीर तो कहा नहीं जा सकता उस।

“भाबाब लुत्ती या नहीं ?”

“डूँडूँक !”

मट्टी के कर्धा को ठीक करता हुआ कसबन बोला—“यही एक बहुत बुरा लक्षण जान पड़ता है। हाथ-पीर या मुँह की पकत में तो कोई टेढ़ापन नहीं है ?”

“नहीं घीर तो सब ठीक है।”

“देखो फिर भगवान की क्या इच्छा है।”

“दबा नहीं फू की होनी ? कण्ठे तो सब फूँक दिए तुमने।”

“घभी एक बोझ घीर फेंक गया है वह। बूसरा सेने पया है।”

“मेरी समझ में तो फूँक मरे होगी क्या।”

“अस्ती क्यों मचाते हो कञ्ची दबा देने से तो दबा न देना ही पच्छा है। घाग उत मर घीर बलने से मट्टी को।”

“उसके बहुत राम हो जामेये घीर वह मड़ी बुरी ठण्ड से तफाजा करता है।”

“इतने घीरी घीर घुने फूँक रहे हैं हम। तुम्हें बोबर के फूँक बाने की इतनी छिन्नर हो गई। मच्छा घाबमी है वह बरबाहा उसके शानों की कीई बात नहीं है। सिर्फ ठीक-ठीक निमती पाद रखना उसके बाब

क बोझों की।”

“तुम जागो माई।” —कहकर रिबूची बाहर जवस की तरफ घीब के लिए चला गया।

घीब से सीटकर रिबूची मट्टी में से घीब ले जाते हुए बोला—
“कसजन इस समय तो थोड़ा-सा चतू लोये न चाय के साथ ?

कसजन कछ मोचने लगा।

रिबूची बोला— ‘चतू घीर चाय में क्या हानि है ? मास चाही तो न लेना माई बिना काए-बिए भी तो मन खाने ही में सब जामया मग्न में कहीं से टिका रहेमा ?”

कसजन ने हल्की मुसकाम से घपनी सम्मति जता दी। रिबूची ने भीतर आकर एक बार बीमार की घोर देखा घीर फिर बूझा जना चाय बनाने लगा।

बरबाहे से घर जाती ही टोकटा मुमि पर एक घपने सिरहाने हाथ मारत लेकिन उसके होश उड़ गए जब उसके हाथों में कछ भी नहीं लगा। उसने घुम्ने की एक तरह उठाई बूझरी—नहीं कही कछ नहीं। सिरहाने से पैठाने तक उसने दो-तीन बार हाथ मारे, लेकिन बही घोर बूमता। उसने सारा बिस्तर उभेड़ डाला उसका एक-एक तामा-बामा छान डाला लेकिन नहीं—कहीं कुछ नहीं।

उसकी स्त्री भी बही पर घा गई भी चाय बनाना छोड़कर घीर बड़ी चिन्ता में भरकर घुब भी बूँडने लगी थी।

तुम कहती हो तुमने हाथ भी नहीं लगाया तो फिर कहां गई वह पोटनी ?”

“मयचान् जानता है जो मैंने उसे घुसा भी हो।”

‘रानी बड़ी सम्मति तुम्हारे घर के भीतर। मैं कहता हूँ तुम ऐसी बोह-भावा से बुर संभ्यामिनी हो क्या कि तुम्हें जब तक बसकी याद ही नहीं घाई ?”

“तुम्हें ही क्यों न घाई नुबह से ?”

“यों नहीं घाई ? रात-भर मैंने उसी के सपने देखे और सुबह उठकर जब मैं गया था तो उसे टटोलकर ही गया था । उजामा हो गया होता तो मैं उनको जोस सूर्य की रोशनी में उनके दर्शन कर ही जाता ।”

“तुम्हें संभासकर जाना था ।”—उसकी धीरठ ने सारे बिस्तर को टटोलकर बड़ी निराशा के स्वर में कहा ।

“संभासता और कहाँ ? तासा और सन्धुक बोड़े हूँ मेरे पास ? ठकिए के ऊपर सिर रखे हुए तो पड़ी थी तू । मैंने समझ था अभी ढीङ्कर तेरे उठने तक मैं था ही जाऊँगा । मुझे उस हाँडी को लीटाने की फिर भी सबसे बड़ी तुम्हें क्या था ?

“मुझे भी बही फिर भी मैं समझी थी कहीं पकड़े जाओगे तो क्या हुआ ? धमर किसी बड़े धाबमी के घर में डाका बालकर जाएँ हमें तो शोनों की गर्दनों में रस्ते बाँधकर लहासा की लगाम सड़कों पर बसीट दिया जायगा । —उसकी धीरठ रोते-रोते बोली ।

“तू बड़े बरिस्तर जानती है, जरूर तूने कहीं छिपा दिया है उस शंटली को इस डर से कि कहीं कोई हमारे घर की तलाशी से न पाता हो ।”

“नहीं अनजान की सीगन्ध है ।

“फिर कहाँ गई मेरी पोडली ?”

“मैं क्या जानूँ ?”

बरबाहे ने पागलों की तरह साए कमरा छान डाला । कहीं कुछ पता नहीं चला । बहु हारकर भूमि पर बैठ गया । उसकी पत्नी भी पागल ही बँठी रो रही थी । बहु क्या करे कुछ समझ में नहीं घाई बात । उसने स्त्री से पूछा— “कोई धाया था यहाँ ?”

स्त्री ने जबाब दिया— “नहीं, कोई नहीं ।”

“ऐसा हो नहीं सकता जरूर कोई धाया होगा ।”

‘सूद-बाम का शरीरबारी तो कोई नहीं धाया । हवा के रूप में

कोई मूठ-मेठ पाया हो तो मैं नहीं कह सकती। वह तो बानेबाबा
 पर कोई मूठ-मेठ नहीं था तो वे मूँवे-मोठी सबमूठ में जाबू के बने
 होंगे जो हमें बोर बनाकर मिट्टी में बिना गए।
 'घरी वे मूँवे-मोठी मिट्टी में मिल गए तो वह कपड़े का टुकड़ा भी
 क्या जाबू का था वह कहाँ समा गया?'—बरबाहे ने पूछा। वह
 उठकर फिर एक बार गए छिर से दूँक मचाने लगा।
 पीछ की भी कुछ समझ लीटी बोली— 'हाँ वह कपड़े का टुकड़ा
 तो दिखाई देता।

इस बार बरबाहे का बिचार स्त्री से मिल गया। वह फिर उन
 जवाइरों की याद कर रोने लगी। बरबाहे को विश्वास हो गया किसी
 ऐसी कारण से ही मूँवे-मोठी प्रकृत्य हो गए हैं। स्त्रोतिपी घोर हुकीम
 की मूर्तियों में उसे मूठ-साबकों की परछाई दिखाई देने लगी।
 स्त्री बोली— 'मैंने तभी तुमसे कहा था जहाँ से जाए हो वही पेंक
 पाओ उन्हें। तुमने नहीं माना अब क्या कहें मैं? मुझे बड़ा नय लग
 रहा है।'

स्त्री के यत्ने में किसी देवता का एक लंबे का खंडे पा। उसने उसे
 निकालकर हाथ में लिया। उसको माथे से लगाया फिर उसने एक बपह
 पर जमीन को घोंसा घीर वही उस लठे को रखकर उस पर पानी
 बझाया फिर एक जस्तते हुए कण्ड पर कुछ मसबल डालकर देवता को
 रूप सुंपाई, फिर हाथ जोड़ मुन्ने टैक उसने माथा नवाकर कहा—'दे
 देवता धैरे मालिक की रसा करणा मैं तुम्हें बहुत बड़ी पूजा दूँगी।'
 बरबाहे क जो भी संघाय से वे सब उड़ गए। उसने अपनी स्त्री से
 कहा—'मैं कहता हूँ जो जाबू मूँवे-माठी को उड़ा सकता है उसका उस
 कपड़े क बीपड़े को पायब कर देना क्या मुश्किल बात है?'
 उसकी स्त्री की पूजा अभी चलन नहीं हुई थी। पति का यह वाक्य
 सुनकर उसने अपनी प्रार्थना को नहीं तोड़ा घीर भी बीर-बीर से
 बोली— 'अब वही हमारे मूँवे-मोठी सब-के-सब मिल गए तो मैं माथे

तुम्हारी पूजा में निष्ठावर कर दूंगी।" अपने पूजा समाप्त की और धरुके को घसे में डालते हुए पति की तरफ देखकर पूछने लगी— "क्यों ?

"हाँ बकर तुम ठीक ही कह रही हो।

"और तुम भी तो जो धूँगे-ओली जैसी कीमती चीजें गायब कर चकता है, उसके लिए एक बीमारे को मिटा देना कौन बड़ी बात है ?

"तब क्या करें फिर ?"

"होने ही से तो बीम जाती है। म पूछती हूँ तुम उन्हें लाए कहीं से से ?

"यह पीछे बता दूँगा। पहले तुम जाय बनाकर लाओ। मुझे ज्योतिषी जी के यहाँ कष्ट सेकर जाना है।"

"ज्योतिषी जी क्या करेंगे इतने बच्चा का ? लेकिन घब कष्टे है कहीं ?"

"बुधरे मोठ में।"

"ये तो कनी के बलम हो गए।"

"तब क्या होमा ? मैंने उनसे बाबा किया है।"

"एक टोकरा म्याङ-योङकर हो जायगा। सुनो जब तुम ज्योतिषी जी के यहाँ जा ही रहे हो तो क्यों न उन्हीं से यदा सगबायो इत भवानक मेर का ?"

जाय पी एक टोकरा कष्टों का किन्ती लच्छ पुरा कर बड़े हीले परी से बरबाहा फिर जला कमबल के पास को।

रिबूची ने जाय बनाई। पहले बीमार के पास से गया। उसने बीमार को जमाकर जाय पिलानी चाही। बीमार कुछ नहीं बोली केवल फिर हिमाकर उसने असम्मति प्रकट की और फिर धीरे धीरे बन्द कर ली।

रिबूची जाय लेकर कलजन के पास पहुँचा। दोनों ने साम साम जम्मा के साथ जाय पी।

कलजन ने बीमार की कुशल पूछी रिबूची बोला— "जाय पीमे को गया कर रही है।"

स्विरठा को ईदना मनुष्य की मूर्खता है। मुझे देखो। मेरे हृदय में पत्नी के वियोग की पीड़ा अभी बिलकुल हरी है। मैंने उस पंच मुर्तों के निर्माण की अपने हाथ से टुकड़े-टुकड़े कर फिर पंच मुर्तों को ही लीप दिया। ऐसी ही तो हमारी प्रवृत्ति निर्दिष्ट होता है।”

रिबूची ने लड़कड़ाते हुए कमजब का कटबा पकड़ लिया—“क्या होगा फिर ?”

“कुछ नहीं होगा केवल बानेवाला जाता है और सृष्टि उसी तरह चलती रहती है।

“नहीं फिर कैसे मन लयेगा ससार में ? मैं भी चल दूँगा।”

बिना प्रश्न के कोई नहीं जा सकता। संसार में मन नहीं लगेगा तो चल देगा किसी मठ में—सिन्धु में क्या मठा की कमी है ? कमजब जाते हुए जाता— प्रश्न मैं देखता हूँ क्या को। भगवान् ने प्रार्थना करता हूँ किसी प्रकार क्या में प्रेम पैदा कर दे।”

रिबूची भी उसके साथ-साथ जाता। दोनों अब प्रांगण में आए तो चरबाहा बाहर बरबाबा बटखटा रहा था।

कमजब ने द्वार खोला। कर्बों का टोकटा फिर बर लिए चरबाहे ने प्रांगण में प्रवेश करते हुए कहा—“पुबबी कण्डे तो बन लसम हो गए क्या कर्बे बड़ी लाचारी है। उसने टोकटा जमीन पर बटक दिया।

कोई चिन्ता नहीं भगवान् की क्या हो गई होगी तो हमारी क्या बन चुकी होगी। कर्बों की कोई जरूरत नहीं है। —कमजब ने कहा।

“तो इन्हें उछर ले जाऊँ ?”—चरबाहे ने पूछा।

रिबूची बीता—“ओ ला गए छो ला गए। इन्हें हम बर के काम में ले लेंगे।”

चरबाहे ने रिबूची की घोर ईसा घोर बड़ी बीमला से हाथ जोड़ते हुए कहा—“मेरे ऊपर क्या कीजिए।”

रिबूची ने कहा—“एक कोई नहीं जानी जायगी मुम्हारी। इतना बुराये में उकर कुछ देर होगी ही।”

“हिंसा के लिए नहीं कह रहा हूँ।

फिर ?”

“मेरे घर से एक चीज मायब हो गई। जरा अपनी ज्योतिष विद्या से उसका पता लगा लीजिए उस कौन से पत्रा ? वह मुझ मिसेगी या नहीं मिसेगी तो कितने दिन में ?”

रिबूची बोला—“देखो मेरी स्त्री बहुत बीमार है। इस कारण मेरे मन में जरा भी जन नहीं है। ये बातें सब मन की शान्ति से होनी हैं। उसके प्राणम का विलसित्तु नय जाय तब घाना।”

जराबाहा चल गया। कलजन ने एक लकड़ी की मखर से मट्टी में पड़ी हाड़ी को टटोलना शुरू किया। रिबूची पास लड़ा हुआ बैल रहा था।

कलजन बोला—“दया बोटने के लिए है कुछ ?”

रिबूची कहीं पड़ीस में से एक पत्थर का खरम माय लाया। उसके पाने तक कलजन ने हाड़ी को मट्टी के बाहर निकाल लिया था। उसके बाहर की कपड़-मिट्टी पककर माल हो गई थी। कुछ देर तक हाड़ी में से सपटें निकलती रहीं। कलजन ने उसे अपने घासन के सामने ठण्डा होने के लिए रख दिया।

रिबूची बोला—“धन प्राणम में क्या काम है गुम भी भीतर ही बल्लो। वहीं साब-साब बँठे रहेंगे। बीमार को भी कुछ भरोसा प्राप्त होया।

कलजन ने कहा—“गुम जाधो में धमी घाता हूँ जरा यह हाड़ी ठंडी हो जाय।”

रिबूची के जाने पर कलजन की बधीरता बढी। उसने लकड़ी की मखर से बीरे-बीरे उस हाड़ी को फटबॉन-सा मारे प्राणम में घुमाना शुरू किया। कुछ देर में उसके बाहर की मिट्टी धीरे कपड़ का बहुत-सा घस टूट-टूटकर घसप हो गया। हाड़ियाँ भी धीरत हो गईं।

बड़े माल से उठने अपने घासन पर से जाकर बोनो हाड़ियों को बोला। लोमने पर जो देखा उसे देखकर कुछ देर के लिए तो वह स्तंभित

था रह गया। इसी महीन मस्म तो पहले कभी नहीं हुई थी मूनी पीर मोती की। उसने उन मस्मा को रंगमिमा में लेकर मसमा। वह मग ही-मग कहने लगा—“बहुत महीन इन्हें लगस करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। क्या इनमें परमी काफी पहुँच गई इस कारण ऐसा हो गया ?

जिस बुजुर्गता के हाथ पर उसका उत्तरदायित्व या बहाँ तक कमजोर की कल्पना पहुँच ही नहीं सकी। उसने एक कण मूनी के मस्म का घपमी जीम पर रत्ना फिर मोती के मस्म का पीर घन्ट में उसने कण्ड की मस्म को बला। वह उन तीनों के बीच में कोई घन्टर स्थापित नहीं कर सका।

दृष्ट्य उसके रंग से निकल पड़ा—‘मोती राजा की हठी पीर बँबर नाथ के गोबर की मस्म इन तीनों में कोई घन्टर नहीं है। पीर फिर उसके मत की घाँसों में दिखाई देने लगा उस धम्मुठ बाबब का कहनेवाला वह चरबाहा वा या रिबूची की स्त्री ?

कमजोर ने बेबैनी म इपर-उपर देखा— जब सभी मस्म एक ही ती फिर क्यों देने मोती-मूनी के मस्म को विद्यापता ही ? बूढ़े की राज की ही पुड़ियाँ में बाँपकर क्यों नहीं बीमार का तिला ही ?

कमजोर ने देखा बड़े प्रचण्ड बेग ने भ्रम उनकी घात्मा को दबोचने लगा था। उसने चारों दिशाओं में बूक दिया—‘बू ! बू ! बू ! बू !’ इसके बाद उसने मानी हाथ में लेकर मूमामी शुरू कर दी। रिबूची ने पर के भीतर ने घाबाब की—‘कमजोर या घाघो भीतर ही।

कमजोर ने सहमकर मानी की बाल रोक दी—‘घमी घात्ता है। ‘बहुत क्या कर रह हो ? वह यहीं कर सकते ही। मट्टी में मट्टी शाम हो।

‘बड़ी दुष् । पाप की एक घात्मा यहाँ बनी घाई है उसे मया रहा है। —कमजोर ने लजलकर कहा।

‘वधा फिर मट्टी में डाल दी क्या ?’

‘नहीं तो !’

‘तब उस पापात्मा को डाल दो मट्टी में । ऊपर से मिट्टी भाई । सब वहाँ खाती समझ बरबाद मत करो । वही घा जाओ ।’

‘सत्री माठा है । बीमार की तबीयत कैसी है ?’

‘ठीक है । सो रही है ।’

कलजल ने मट्टी की निकली हुई मिट्टी मट्टी में डालती धुक की दोनों हाथों से । वह मन-ही-मन मन्त्र जपता हुआ उस पापात्मा को घात की मट्टी में गड़ने लगा । हाथ-पैरों के हिलाने डलाने और मन्त्रों के उच्चारण से बोड़ी ही देर में उसके सब की सब बिचाग्धारा बरस गई । उसने दोनों हाथियों को दो दिगों से डक दिया ; वे दोनों धीरे-धीरे ठंडी हो गई थी ।

कलजल ने कन्धस ऋद्धकर मन्त्र पर डाल लिया छुरा के नीतर डाल सी जाती । दोनों हाथियों और खाल को साबधानी से दोनों हाथों में लेकर मकान के भीतर चला गया ।

रिबूची बोला—‘तुमने हाथियाँ खोलकर देख ना क्या ठीक-ठीक लंक गई ?’

कलजल ने बचाव बिना—‘बिलकुल ठीक ऐसी घाटा नहीं थी ।’

रिबूची ने बुझा—‘कब तैयार हो जावपी ? बस्ती ही ही जाती तो झीक था ।’

‘घभी दोनों को चोटकर दोनों का योग करता हूँ । तुम तब तक कुछ दूध पिलाओ इसे ।’

‘घभी पूछा या मैंने । दूध पीने को राजी नहीं हूँ ।’

‘चाय के लिए बूझो ।’—कलजल मन्त्र जपता हुआ मुँह की धम्म को करल में चोटने लगा ।

रिबूची ने बीमार की उठया—‘उठ ।’

बीमार ने घोंघें खोली । बड़ी बिरन्धि बिखाकर फिर मन्त्र कर

लीं । रिबूनी ने फिर उसे घटाकर कहा— 'तुम्हारी बधा तैयार हो गई है ।'

“हूँ । —बीमार ने बधा के प्रति कोई उत्तराह नहीं बिखाया ।

'बधा लाभी पैट खाई नहीं जामेदी । कुछ बूब या जाम पी लो ।

हूँ ।'—फिर उसने असम्मति प्रकट की ।

कलत्रन उठा । उसने अपने व्यक्तिगत का उपयोम करना चाहा ।

बह करल हाव में लेकर उसके पास गया । बोला—'बधा बन गई कुछ जाम पी लो तो बधा दे दी जाम ।

उसके तब भी बधा के प्रति कोई असुरन्ति नहीं उपजी ।

कलत्रन ने कहा—'इसकी आवाज फिर बन्द हो गई यह भारी भिन्ता की बात है । बह बैठकर बधा भोटने लया ।

बरबाहे ने घर पहुँचकर अपनी स्त्री से पूछा—'ज्यों सगा कछ पठा उस पोटनी का ?'

उसकी औरत बोली—'घीर में कछ नहीं जानती यह देखो ।' यह कहकर उसने एक मोठी का नाम उसकी हृषेरी पर रख दिया ।

'यह बकर उसी में का मोती है मैं इसके पानी को लूब प्रच्छी तरह पहचान रहा हूँ । बाकी कहीं हैं जल्दी बताओ ।'—बरबाहे की भीहे तन गई ।

बह भी रोप में भर उठी—'मैं क्या जानूँ कहीं है एक का पठा लया लाई यही क्या कम है ? तुम लड़-भिड़कर लया लो बाकी का पठा ।'

बरबाहा कुछ शांति में बोला—'यह कहीं मिला तुम्हें ?'

'तुम्हारे जान के बाह जब मैं मोबर फेंकने को जा रही थी तो यह रास्ते में मिला मुझे ।

'किम रास्ते में ?'—बड़ी जतावली से उसने पूछा ।

'हमारे मकान के पिछवाड़ ओ जमार रहता है उसके दरबाने के पास ।'

“मैं उस मनुष्य को जानता हूँ वह लम्बरी बरबाद है। बकर वही करा वे गया। बरबादा ठेकी से उसके घर की घोर आते लगा—“मैं अभी उसके घर में बुझकर अपना मांस निकाल लाता हूँ।”

उसकी धीरज ने उसका हाथ पकड़ लिया—“ठहरो ठहरो बिना सोचे-समझे कहीं बाठे हो?”

“उसके बरबादी के पास एक दाना पड़ा मिला! वही ले गया मैं पहचानता हूँ उसे।”

“तुम्हारे ले जाने के लिए उसने सामने पीड़े रख दिए होने?”

बरबादा कुछ सहमकर सोचने लगा—तुरन्त ही बोला—“लेकिन वह बाकू किस समय ले गया?”

“मैं क्या जानूँ?”

तुम्हें बकर मानूँ है। बिना तेरे साथ मैल-जोस बढ़ाए वह बेईमान मेरे सिन्हाले से मेरी पोटली ले कैसे जा सकता है?”

“यह तो मैं बता सकती हूँ तुम्हें। मेरा भगवान् मेरे भीतर से मुझसे कह रहा है वह पोटली उसी के हाथ लय गई है। लेकिन कैसे तुम उससे माँगीये और क्यों वह तुम्हें देने लगा?”

“पहले क्या वह कैसे ले गया? फिर मैं उसके घिर के दो टुकड़े कर ले पाऊँगा अपनी जान।”

“तुम क्या कहोये उससे?”

“कहूँगा—ता मेरे मूँजे-मोटी की पोटली।”

“तुननेवाले इस बात पर विश्वास कर लेंगे? एक नरीब बरबादे के बात कहीं से घाए मूँजे-मोटी?”

“राज बठाती क्यों नहीं कर ले गया वह? सब ठेरा उससे भगदा हो गया इसी से उसका मन्दा छोड़ती है।” बरबादा उसकी मोटी पकड़ने को बढ़ा—“बता।”

“बठाती हूँ। तुमने मांस के कपड़े ये मूँजे-मोटी बांध लिये। उसकी बिस्ती बटाकर हमारे घर धाती है। सिंकार की बच पाकर बकर वह

किसी समय उस पोटनी को उठा ले गई रात में ।

बरबाहे को कुछ विचारा हुआ—उसने उसकी चोटी छोड़ दी—
“तुम ठीक कहती हो । मैं जाता हूँ उसके पास ।

लेकिन ठेकी से काम न लना । बुझी से घमण पोड़ा-बहुत हिरसा
भी करता पड़े तो पबरामा नहीं ।

बरबाहा उसी बदन बमार के घर पहुँचा । बमार उस समय धराब
पी रहा था । बरबाहे को देखते ही बोला—“तो तुम भी विधो ।

“नहीं इस समय नहीं पिढेगा । मैं एक बकरी काब से घाया हूँ
तुम्हारे पास । मेरी एक पोटनी लो गई है तुम्हारी बिस्नी अपने मुँह में
दबाकर न घाई है । मुझे दे दो । मेरी नहीं है वह । तुम्हें कुछ इनाम दे
दूँगा मैं ।

“मेरी बिस्नी को क्या तुमने कोई उठाईमीर समझ रखा है वह
ऐसे काम नहीं करती । दूब-भककन मसे ही खाट जाय वह तुम्हारा
पोटनी कभी नहीं उठव सकती । या क्या उस पोटनी में ?”

धीरे धीरे बरबाहा बोला—“उसमें बे रूंग धीर मोती सब्जें
घसती ।

बमार हँसते हुए कहन लगा—“तुम मजाक कर रहे हो मला जाए
कहाँ से ?

“किसी ने सुनार को देने को मुझे दे रल दे ?

‘दारपन की स्त्री से ? तुम्हारे-बीँघा होशियाए घादमी दूमरा नहीं
मिला क्या उस ?

“द्वेप्री गयाहा बतुराई न खेतो । पोटनी निकामो मैं बहुत घण्णा
हिस्मा उसमें न तुम्हें दे दूँगा ।

लेकिन दारपन की स्त्री की बिन्ती कैसे पूरी होगी ?

बरबाहे से बिड़कर उसका हाथ पकड़ लिया— निकाम पोटनी ।

“बीर ! बीर !”—बमार ने धार करना शुरू किया ।

बरबाहा बुधबाए उमक पर से बाहर निकलते हुए बोला— ‘घण्णा

मैं घबमी उस पाटसी के घसली मासिक को बना लाता हूँ।"—बहु उसी समय सीबा रिबूची के घर को बीजा।

फिर रिबूची की स्त्री की तबीयत बराबर गिरती ही गई। कसबन को रखा मोटते हुए इस मिनट में नहीं बीठे होंगे कि बीमार को फिर वही दौरा शुरू हो गया। उसके हाथ-पैर धीरे धीरे ऐसे लगे।

कसबन ने जल्दी-जल्दी रखा तैयार कर एक कुगाक ही कोई फामदा नहीं हुआ। उसकी हासल बहुत बराबर देखाकर रिबूची बोला—“कसबन और बी रखा।

“घबमी तो बी है।”

मह बल बसती है। एक कुगाक घोर दे दो खुब बढ़ी रखा न दे मकने का दुख तो न रहेगा।”

कसबन ने रखा बी धीरे बीड़ी देर बाव उसके प्राण-पत्तन मनमान बिछा की तरह उड़ गए।

रिबूची बिस्ता उठा—“कसबन तुम तो कहते थे रखा बसतीर है।”

“कोई रखा बसतीर नहीं है, रिबूची बागा-मानी हो तो एख ही बसतीर है।”

रिबूची भास पर हाथ रसकर बैठ गया बोला—“कसबन माई घब क्या हो?”

कसबन ने पबाम बिमा—“सबसे बकरी काम तो इस समय इस पिट्टी का अमित्य-अस्कार है। बाकी फिर जैसे-जैसे समय बीतता बापया वह घबमी पूर्ति स्वयं ही करता बापया।”

इसी समय नीचे पापन में बरबाहे ने बरबाजा सटकाटाया।

कसबन ने जाकर द्वार खोले। बरबाहे ने उसके पीर पकड़कर कहा—“मासिक मेरा कसूर माक कर दो।”

“क्या बात है? क्या कण्डों के काम मानने पाए हो?”

“पहले कह दो तुम्हें माक कर दिया।”

“माक कर दिया माई। कसबन के पाठ को कुछ था बह

क्या उसके श्लेष का कहीं ठिकाना ही नहीं रहा। सब माफ हो माफ है, फिर तुम्हें क्यों न माफ कर दूँगा। लेकिन कहा भी तो बात क्या हो गई ?

“तुम मेरे साथ बसो वैसे तुम्हें उस बेईमान के घर का पता देता हूँ। मैं उसका हाथ तुम्हारे हाथ में पकड़ा देता हूँ प्रसमी चार बही है, बसो।”

“वै कहीं नहीं जाता। रिबूची की स्त्री ने प्राण त्याग दिए हैं। उसकी मिट्टी पर मैं पड़ी है जब तक उसका इस्तजाम नहीं होता तब तक मुझे अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ना चाहिये।

कमजान को चरबाहे के साथ बहम में पडा देखकर रिबूची भी बही पर घा गया। चरबाहा बोला— फिर वह सब मूँते-मोतिया को किसी जूठे के भीतर सीकर पामब कर देया।

रिबूची ने पूछा— “कैम मूँगे-मोती ?”

कमजान चौंक पडा। चरबाहा बोला— तुम्हारी हाडी मैं दे बी।”

कमजान बोला— “कैसे निकाल ले गया ?”

चरबाहा कमजान का हाथ लीचकर बोला— “उसी के पास तो बसने को कह रहा हूँ।”

वह कब ले गया ?”—कमजान ने पूछा।

“यही से तो मैं ले गया। —चरबाहे ने जबाब दिया।

कमजान ने रिबूची की तरफ देखकर कहा— “रिबूची इसीलिए मैं कहता था बवा ने घपना घसर बयो नहीं दिखाया ? लेकिन जाने को भवधान की इच्छा सबसे बड़ी है।” उसने चरबाहे को बाहर करके हुए कहा— “बाघो भाई हमने उमे भी माफ कर दिया। तुम भी माफ कर दो बाघो। संसार में मूँते-मोती से कीमती बी चीज है उसी का नाम माफ़ी है।”

चरबाहा बड़बड़ाता हुआ चला गया।

उध गाड़ी में बैरब मुणसराय तक बसा गया। वहाँ एक टिकट लेकर ने उसे गाड़ी से उतार दिया। उसके जाने की कोई निश्चित दिशा तो भी नहीं बह उतर गया। मुसाकिरखाने की एक बेंच में जाकर सो गया। कोठ में बसकी समय पूंजी सुरक्षित भी जिसे उसने छिछ्छाने रक दिया। घट को न जाने पड़े-पड़े ही उसे किली ने क्या सु बा दिया कि वह बेहोश हो गया और कोई बखवास उसके छिछ्छाने से बसका कोट निकाल कर भाग गया।

मुबह पुलिसवाले ने बैरब को बिना किसी सामान के एक घनीव स्थिति में लेकर बसाया—“उठो कीन है सोनेवाला ?”

‘सोता हूँ तो क्या पका-माँका हूँ इसीलिए। सोने-बैठने ही को तो’—‘बैरब दूटे-पूटे सब्बों में इतना कह सका था।

पुलिसवाला मिडक कर बोला—“कसा पीकर सोए हो क्या ?”

“नहीं तो।”

“बकर सकम से ऐसा ही बाहिर होला है। कहां बाघोये ?”

“कहां बाडेना ?” बैरब मानो अपनी ही सता से पूछने गया।

“क्यों बोसते क्यों नहीं कहां बाघोये।”—पुलिसवाले ने फिर प्रसन्न

किया।

“कसा बठाऊँ कहां बाडेना ? कहीं नहीं बाडेना।”

‘बर कहां है तुम्हाए ?’—पुलिसवाले ने कुछ संशय की दृष्टि से बैरब को देखकर कहा।

“कहीं नहीं है।”

'सामान कहाँ है ?

सामान के नाम पर मैत्रय को कुछ याद आई । उसने बैच को घोर देखा—उसका कोट याकन था । वह बिस्लाया—'येरा कोट कहाँ गया ?'

'कहाँ रखा था कोट ?'

मैत्रय ने बम्बई की चोरी का सामान भी कोट के ही साथ खोज दिया । सिर्फ़ बामो का अस्तित्व हटा दिया उसने । वह बोला—'कोट का कोट में मेरे मकसद क्या थे । टूक का बिस्तर था ।

'नशा कर सो गए तो फिर कौन जिम्मेदार होता तुम्हारे मास का ?'—वृत्तिसवासा बोला ।

'नशा नहीं किया ।

'जकर किया है । तुम्हारी सकल कह रही है । यमी तक तुम्हारा नशा जहरा नहीं है । तुम्हारे बात करने का ढंग साबित कर रहा है ।

'मैं सब कह रहा हूँ मैं एक भले घर का धारमी हूँ ।'

'बुरी मगत में पड़ गए होय । परदेस में इतना बेकबर होकर कौन सो जाता है ?'

मैत्रय ने कहा—'कुछ नशा-सा जकर मामूल देठा है, लेकिन मैं कोई नशा करता नहीं ।

मैत्रय की सकल-मुरत घोर माद-बाद को देखाकर वृत्तिसर्वन को कुछ परतीठ ठो हुई । अचानक उसे कुछ याद आई । उसने पूछा—'कित्ती धारमी के तुम्हें कुछ सिखाया तो नहीं ?

'नहीं ।'

'तुम चोर का कोई हुमिया बठापो तो हम कुछ करें भी । एम हूँ हम किसे पकड़ लें ?'

'अल्बर्ट रंग का कोट है मेरा इसके हरे रंग का कैनवस का हुस्ब यौन घोर काला टूक ।'—मैत्रय बोला ।

सिपाही कहने लगा—'बनो चौकी मैं सिखा को । देने बबानी कुछ न होया ।

भैरव ने मन में सोचा—“बोर को पकड़वाने में कहीं कुछ न फँस जाऊँ ।” वह बहाणा बनाकर खिसक गया । लेकिन धब बड़े संकट में पड़ गया । इस-बीस रुपए को पस्ते में बे बे मी पण ।

क्या करे ? किबार जाय ? धब तो भोजन के भी उसे सामे पड़ नए मुसाफिरखाने के बाहर निकल आया वह । बड़ी बोर की उसे भूख मयने लयी । वह सड़क पर एक जयहू विचार करने लया—“तो क्या धब परा जय स्वीकार कर ली जाय ? विताही को एक तार भेजकर रुपए मँया लूँ । वह फौरन ही भेज देंगे लजिम ?”

फिर बासो उमक सामने प्रकट हो गई और उसका सारा विचार कम जहाँ-कहाँ-तहाँ रह गया दूसरी बाय बनी—‘नहीं पराजित होकर जीना भी कोई जीना है ? जन की पक्षि का विरोध करना है मुझे । इसके लिए यह पर्यंत स्वाभाविक बा मेरे लिए कि कोई पाइ मेरे रस्ते में न रहती । यह ठीक ही हुषा है । मैं मेहनत-मजबूरी कर अपनी जीविका के लिए पैसा कर मुँगा ।’

एक बमीज एक पतलून और एक जूता उसके पास रह गया बा कपड़े भी मँसे हो गए थे । सड़क पर कुछ मजबूर खोद-खाद कर उसमें नए रोड़े बिछा रहे थे । उसकी इच्छा हुई वहाँ जाकर कुछ काम करे लेकिन उम भूख लपी हुई थी । मुझे पेट जैसे शारीरिक धम होता ?

वह कलियों के बर्कमुन्ती के पास जाकर बोला—“मैं भी काम करना चाहता हूँ । मुझे मी कुछ काम दे लीजिए ।”

“कौन हो तुम ?”

भैरव ने कुछ बटा-बड़ाकर अपनी रामकहानी उसे सुनाइ । बर्क-मुँगी को क्या धा गई । उमने उसे पढ़ा-लिखा जान कहा—“तुमसे सड़क नहीं कुछ सकती ।”

“मैं बोर मुँबा ।”

“कमी एता कठोर धम तुमने नहीं किया है ।”

“यादस्वरता सब कुछ करा देती है ।”

“हर एक काम को सीखना पड़ता है।”

कुछ कम मजदूरी दे देना मुझे।”

“घोर कहीं हाक-पीरों में कुबाल मार भी तो खिन्चनी ही बेकार हो जायेगी।”

“उसका जिम्मेवार मैं ही रहूँगा।

“सूबक मुझे तुम्हारी घबस्था पर क्या प्राती है। तुम क्यों इतनी बहुमूस्य जवानी के साथ मजाक कर रहे हो? तुम्हें मेरी घबस्त मान लेनी चाहिए। जाधो घपने घर लीट जाधो पिता से म्मका करना ठीक नहीं है। उनम माफी माँग सेने से तुम्हारी कीमत बहुत बढ़ जायेगी।”

“मह तुम्हारी पिटा ठीक ही है। लेकिन उनके पास जाने को रैत का भाका चाहिए ही। मैं माँगना नहीं चाहता किसी से।

“उधार तो लिया जा सकता है।

“उधार कौन दे देगा इस परसेम में?”

“म तुम्हें एक स्वया देता हूँ। तुम घर पिताजी का तार देकर तार में ही स्वए मँगा लो।”

“नहीं।”

“क्यों नहीं?”

“नहीं मुझ बड़ी जोर की मूल लगी है। मुझे तुम स्वया बोन तो में जाकर घने घपने लाने में खर्च कर दूँगा।”

“मैं तुम्हें वो स्वए उधार दे सकता हूँ।”

“नहीं मैं नहीं मूँगा।”

“क्यों नहीं लोये?”

“मैं घर को तार नहीं भेजूँगा।”

“क्यों नहीं भेजते? घमी ता तुमने मुझसे कहा था तुम्हारे पिता बनवाने हे घीर तुम उनके इजलीते बेटे हो।”

“घण्टा लामो दो स्वए लो।”

बर्कमंधी ने भेरव को दो स्वए निकालकर दे दिए। स्वए लेकर

बहु बोला—“किसी को मेरे साथ नैब नो ।

“नहीं उसकी कोई बकरत नहीं है । मुझे तुम्हारा बिरबास है मुबक ! तुम्हें क्यों नहीं है अपना बिरबास ? बिना घातबिरबास के मनुष्य का कुछ भी मूह्य नहीं ।”

‘घण्टी बाध है । रो हण के उन दोनो मोटों को मीरब हाथ में लेकर बोला—‘बहुत बुरी चीज है यह ठपया । इसके बिरबास में अपनी लड़ाई शुरू करना चाहता हूँ लेकिन बार-बार मुझे इती से सन्धि कर लेनी पड़ रही है ।”

‘अधिक समय बिकार बिवा देने से कोई लाभ नहीं है मुबक ।” बर्कसुधी ने कहा ।

“तार किस पते से मँवाऊँ ? घाप अपना पता तौ बताइए । — कहता हुमा मीरब अपना जूठा खेसने लगा ।

“मेरे पते की क्या बकरत है ? स्टेशन मास्टर के मार्फत मँवा लो ।”

“कल तक या पन्द्रहों तक बकाब धावेगा ; घाप कइो मिलेये ?”

“यही न मिले तो कलियों से पूछ लेता ।”

मीरब ने अपना जूठा नहीं पर खोलकर रक दिया—“यह जूठा यही पर रक जावा हूँ ।”

“किसलिए ?”

“वीर में दर्द हो रहा है । धमी धाकर ले जाऊँगा ।”

“कौई उठा ले जायगा ?”

“कोन ले जायगा ? घापके कूली यहाँ मौजूब है ।”—कहकर मीरब स्टेशन की तरफ बला पयर ।

उसके उस पीते धीर बीहीन बेय में बहु नया जूठा उसकी बड़ी बेगुकी मूर्त बना रहा था । बहु भूमि की कठोरता का सम्वासी भी हो जावा चाहता था । बन के बिकर बिद्रोह का धर्म या धीनता के साथ दोस्ती ; नया वीर बटीसी की पहली सूचना थी । एक अनिश्चित ने उसे रो हण के बिण, क्यों न मीरब जमानत के तीर पर बहु गया

रक्त बाता ?

स्टेशन के भीतर सबसे पहले उसने पेट-मुखा की। इसके बाद वह ज्यों ही तार-बन की तरफ जाना चाहता था कि एक पाकी के इंजन ने सीटी दी। बैरक कठिनाई में पड़ा था उसकी मूर्च्छित सुसज्ज बर्त। वह पाकी की घोर दौड़ पड़ा घोर उसमें चढ़कर चल दिया। कहाँ ? किन्कर ? पिता की तरफ नहीं बहो उसकी सबसे निपिठ दिशा थी।

एक क्षया उसकी जेब में था कुछ घोर लिटीज भी बाकी थी। बोड़ी देर में उसे ज्ञात हो गया गाड़ी चलकत की घोर था रही है।

केवल शीनता बैरक के साथ था रही था। निश्चित हो गया था वह। सोचने लगा— 'कीन कहता है शीनता प्रभिसाप है ? भय-भिमता सम्पत्ति के ही मये है। धात्र मुझे पता चला सम्पत्तिवान विठने धामाये है। बड़ी निम्मार उनके संग की कल्पना है।'

उसे उसके ऊपर क्या करनेवाया वह बर्कमुष्ठी पार प्राया— 'धात्र तो नहीं चल को मोक्षेया वह जकर मुझे जब धपमे बोनों स्पनों में म एक भी बापन नहीं पाणगा। सेकिन पम्पह रूप का जुता घौर किमलिए रक्त प्राया मैं कहाँ ? उन इरगिज ममे बेईमान नहीं समझना चाहिए। मैंने उससे मजदूरी का पहला पाठ माँगा। उसने मुझे क्यों नहीं दिया ? क्यों वह मुझे फिर बल की धक्ति की तरफ हाँक देना चाहता था। धब मैं बड़ी धासानी से मजदूरी कर सकता हूँ। धब किसी से नहीं कहूँगा कि मेरे पिता बड़ धनी हैं और मैं उनका एकमात्र उत्तराधिकारी हूँ।'

पास बैठे हुए एक धावपी ने उसने पूछा— "दियातलाई है ?"

"नहो है।"

"बोड़ी नहीं पीते ?"

"पीता हूँ।"—बैरक ने कहा।

"वहाँ बापीये ?"

"कतबता।"

“कोई रिस्तेदार है क्या ?”

“नहीं।

क्या करने जा रहे हो ?”

“मजदूरी।

“कभी पहले भी गए हो ?

“हाँ मया हूँ।

उस घाबली ने घुसरे से ठीली लेकर घपनी बीड़ी घुलया भी व एक बीड़ी भैरव को देते हुए बोला— ‘तो बीड़ी पिघो।’
भैरव ने घाब तक कभी बीड़ी नहीं पी थी। वह पहली बीड़ी हो से लगाते हुए बड़ा घबोह-सा लगा लेकिन घब उन्ही लोगों के साथ व घपना माई जाण बोडना था। उसकी सम्पत्ति तो उसके पास थे घबूर हो ही गई थी बिद्या की जो दीमठ भी उसे छिपाना था उसे। व घाबलागी बरतने लगा कि कहीं उसके मुँह से ऐसा कोई शब्द न निकल जाय जिससे उसकी बिद्या प्रकट हो जाय धीर उसके माईचारे में फर्न पड़ जाय।

उत बीड़ी के जोड़ से भैरव ने एक मजदूर के साथ दीवी धारम्भ की।

मजदूर बोला— “मेरे रिस्तेदार है तो सही कमकत्ते में लेकिन मुझे ठीक पठा नहीं मानूम है। कभी जिस ही जायेंगे। अपने घपनी माई-बन्ध तो अपने हाथ-पैर है जिससे मजदूरी मिलेगी। तुम क्या काम करत हो ?”

“मजदूरी जो भी मिल जाय।”

“कर कहाँ है ?”

“बरत में” भैरव ने बड़े बीमे स्वर में उससे कहा— “लेकिन एक बात है माई।”

मजदूर कुछ तक में पड़ गया। उसकी बात सुनने के बरते उसने पूछा— “तामान कुछ भी नहीं है तुम्हारे पास ?”

“तब जोरी जमा गया। फोट की बेव में स्पए, टिकट जो कुछ व सब जोर ले गए—रुपये बर्तन बिस्तर सब।”

इतने ही में एक मनुष्य मीरब के पास जाता था। उसने मीरब को पहचान लिया जब वह पुलिसवाले से सामान को जाने पर बातचीत कर रहा था।

उसने आकर उससे प्रश्न की में पूछा—“क्यों मिस्टर, तुम्हारा सामान मिना या मही ?

मीरब ने जबाब दिया—“नहीं मिना।

मीरब के पास को मजूर बैठ था उसने बकराकर मीरब की घोर देखा।

उस घानेवाले ने मीरब से पूछा—“कसकसे किसलिए जा रहे हो ?”

मीरब ने उस मजूर की घोर देखकर कहा—“जो भी मजूरी मिल जायेगी।”

“पढ़े-लिखे होकर मजूरी क्यों करोगे ?

“समाज के प्रति अपनी प्रतिहिंसा पूरी करने को।”

उस व्यक्ति ने उसकी पीठ पर अपना हाथ रख दिया और वह मजूर उसकी माया और माबता को देखकर कुछ हटने लगा। उसके कुछ झिझक पैदा हो गई।

“समाज के प्रति तुम्हारी प्रतिहिंसा क्यों है ?”

“उसका प्रभाव और उसकी विपन्नता का मैं शिकार हूँ।”

“सबक तुम्हारी बातों से मैं आकर्षित हुआ हूँ। संभवतः हमारा एक ही धर्म है। कुछ और विस्तार से तुम अपना रहस्य कह सकते हो तो कहो। —बड़ी प्रीति और प्रभाव मरी बाणी से उस व्यक्ति ने मीरब से कहा।

मीरब ने देखा प्रत्यन्त साधारण बेश में था वह। कर्ता बोली और पैर में आपत। तिर और बाड़ी के बाल बड़े स्ये और प्रसन्न-म्यन्त। ऐसा जान पड़ता था मानो उसे बाहरी बगड से कोई मतलब नहीं है। बिचारी की दुनिया को ही वह बड़ा मान बैठा है।

मीरब ने उससे पूछा—“तुम कौन हो ?”

तुम्हारा ध्यान मित्र है। धपना परिचय हो।

“धपना क्या परिचय है? मैं परीख मजदूर हूँ।”—बड़ी निपट्टा से देरब जाता।

“नहीं मित्र इस तरह निपट्टा होने की बात नहीं है। परीखी हमारा दुर्भाग्य नहीं है, वह हम पर बलपूर्वक लाव भी गई है।

भाष्य द्वारा ?

नहीं—अत्याचारियों के अत्याच स्वार्थ के अन्वेषण द्वारा।

मैत्र ने तीरक रहकर धपना भाषा हिमाया।

इस अत्याचार के सहायक कौन है तुम्हें पता है ?”

“नहीं।

“इसके सहायक वो है—एक घोर चिकके। एक के मय भीरुसरे के मोत्र के कारण न्याय फैल ही नहीं पा रहा है भरती पर।

तुम डीक कह रहे हो।”

“इसलिए पृथ्वी पर से इन लोगों की मिटा देने की धामयकता है। तभी वहाँ अखली म्याम भीर सखी सान्ति फैल सकेगी।”

“तुम क्या काम करते हो ?”

“बन घोर प्रमुता के इस अत्याचार को मिटाना ही हमारा बत है।”

“क्या नाम है तुम्हारा ?”

“कोई नाम नहीं। इन जित दिन बत में दीक्षित होते हैं उस दिन हमें भर्म जाति कुल योत्र के साथ धपना नाम भी मिटा देना पड़ता है।

“नामने तो शक से पहचाने जाते होंगे ? परीख में ?”

संकेत की संख्या से।”

“कुलकुल कही है तुम्हारा ?”

“बब तक तुम धपना विश्वास नहीं देते घोर अतिक्रम कृष्ण नहीं बतल सकता मैं तुम्हें।

“क्या विश्वास चाहते हो तुम मेरा मेरी समझ में नहीं

धमी तक । —जेरब ने कहा ।

‘तुम कौन हो ? किस उद्देश्य से कहीं जा रहे हो ? उम्हारा विवाह हो क्या है या नहीं ? घर पर धीर कौन-कौन है इत्यादि सब बातों का उत्तर दो ।’

‘मुझे एक कभी मजदूर समझो बिलकुल निरुद्देश्य हूँ मैं । घर से दूरकर निकला हूँ अपने ही पैरों पर कड़ा होने के लिए ।’

‘क्या व्यापार करने का विचार है ?’

‘नहीं मैं सम्पत्ति को सबसे बड़ी विपत्ति मानने लगा हूँ ।’

‘तब तुम हमारे ही पक्ष के हो । तुम्हारा विवाह हो चुका या नहीं ? तुमसे इस बात का उत्तर नहीं दिया ।’

‘इस बात का धर्म क्या है ?’

‘हमारे मठ में भरती होने के लिए अविवाहित होना जरूरी है ।’

श्रेष्ठ को बासो याद आई । वह समझने लगा बासो उठे घोड़ा लेकर भाग गई है । नारी के प्रति बूणा पैदा हो गई उसके सही समय । उसने कहा— जिस प्रकार सम्पत्ति से तुम्हें बूणा है वैसे ही क्या नारी से भी है ?’

‘बूणा तो नहीं है लेकिन हम उसे मार्ग की बाधा समझते हैं । ऐसे ही सम्पत्ति से भी हमें कोई बूणा नहीं है । सम्पत्ति का वा पनुचित बटवारा है हम उस प्रथा के धनु हैं ।’

‘मैं तो नारी का भी शत्रु हूँ नारी-जाति का भी । नंगार की घण्टि की जड़ में मैं उसे भी समझता हूँ ।’

‘तो तुम अविवाहित ही हो ?’

‘हाँ ।’

‘तब हमारे मठ में भरती हो सकन हो तब ।’

‘बासो मेरे लाने-नीने धीर रहने की बेकिसी हों जायगी क्या ?’— जेरब ने पूछा ।

बासो तो एक रमायण धीर उपस्था का जीवन है । लाने-नीने धीर रहने

की जो बेफिक्री है मुझक वह तो तुम्हारे ही मन की एक प्रबन्धनाम है। तुम बेफिक्र हो जाओगे तो फिर सभी कुछ अपने ध्यानमात्र। मनुष्य का भोजन बस धीरे निवास वह तो स्वयं ही प्राप्त हो जाता है। वे महती प्राणालाएँ हैं जो उसे खा जाती हैं।

“वह बहिया बाठ है। तुम्हारे मठ में धीरों कोई भी नहीं है ? सिर्फ एक है।”

“एक क्यों है फिर ?”

“तुम रहो ! उसके खिलाफ भावना मत बिगाड़ो वह माता सबकी माता है।”

“नहीं मैं तो ऐसी बयह बना चाहता हूँ जहाँ नारी की कोई परछाई देखने को न मिले।”

“वह नारी नहीं माता है। जसो हमारा ही मठ तुम्हारे शीघ्र है तुम कहाँ जा रहे हो ?”

मैरव ने बड़ी कठिनाता से उत्तर दिया— “कहीं नहीं।”

“टिकट कहाँ का लिया है ?”

“कहीं का नहीं। स्पष्ट कोट में से कोट पुरा लिया किसी ने तुम मामूम तो है।

“पकड़ लिए गए तो ?”

“तुम बचा सकते हो ?”

“हाँ हमारे मठ में भयान होने को तैयार हो तो बकर बचा सकता हूँ।”

“तैयार हूँ।”

“बचन दो।”

“बचन दे दिया। कहाँ है तुम्हारा मठ ?”

“निजम एकान्त में। मयकों की भीड़ धीरे कोनाहन से दूर प्रकृति के शांत आनाकरण में। मयकों में क्या है ? एक-दुसरे को बीछा देने की वृत्ति हीन-दुर्बलता को ला जाने का धर्म। हर तरफ कुश्मिता ठमी

बन्दगी घोर बिकारा। प्रकृति में वबिभता है सादगी है, वही प्रायः
स्वकथाओं का ध्यान नहीं है। हमारा मठ हिमाचल की उपत्यका
में है।”

“असकते के पास-पास नहीं ?”—ठाकुर से शेरव ने पूछा।

“नहीं राजिनिन से भी ऊपर ? सिद्धम घोर भारत की सीमा
पर।”

“बहुत दूर।

“बहुत तुम्हें सम्पत्ति घोर नापी से बूझा है वो फिर क्यों शहरों
की धरतल पसन्द कर रहे हो ?

“नहीं शहर पसन्द नहीं है। शहरों में बन्दे बूझा है। शहरों में
मेरी ” कहते-कहते शेरव रुक गया।

वह व्यक्ति कुछ ठाकुर से शेरव की देखने लगा।

“हां शहरों में मेरी सारी सम्पत्ति बूझ नी।”

उसका सशय मया।

शेरव ने पूछा— “कोई सामिक सम्प्रदाय है तुम्हारा ?”

“बर्ष से कोई सम्प्रदाय नहीं। हम बाल्यना को कोई ध्येय नहीं रते।
हम बाल्यनिकता को ही मान देते हैं। वह बाल्यनिकता है—मन्य मान
की समता घोर भाईचारे की।

“बया नाम है तुम्हारे मठ का ?”

“अर्धकरवाधियों का मठ।”

शेरव के मन में एक गुबडुडी-डी उठने लगी। वह प्रायः मन में
सोचने लगा— “बम्बई धर्मशास्त्रा में उक्त धीने उस धीनेकर क ऊपर बूझे
का टीन फँका क्या उठी समक अर्धकरवाधी नहीं बन मया में घोर उगके
बाद जब धीने लोड़े की छड में उक्त धर्मशास्त्रा के ठेकेदार की नाक तोड़
दी क्या ठमी मेरी दीना नहीं हो गई अर्धकरवाध के भीतर ? मैं बरा
बर छीक ही मार्ग न आ रहा हूँ। हम निधि में इन मठ के सिवा घोर
बूझरी को मजिन ही नहीं है मरी।”

उस व्यक्ति ने कहा— "क्योंकि जब तुम हमारे हो चके हो तुमने प्रतिज्ञा कर ली है इसलिए जब तुम्हारे लिए छिपाने की मेरे पास कुछ नहीं है, तुम जो पूछोगे मैं बताऊँगा।"

रैल तीसरे बरिसे पठना का स्टेसन पीछे छोडकर रस्त के सम्मारे में बसी जा रही थी। तीसरे दर्रे के उस बेंच में धबिक्कठर कसी मजदूर ही थे जो सबके सब सो रहे थे। केवल वे ही वहाँ पर जागकर बाते कर रहे थे।

मैरथ ने कहा— "तुम्हारा कछ नाम तो होता ही।"

"केवल एक संकेत है।"

"कैसा ?"

"एक संख्या है—५ ब इती से मैं व्यक्त हो जाता हूँ।"

"धब्का निम्न ५ ब संख्या ही नहीं एक मखर भी है तुम्हारे नाम में ?"

"मखर भी तो बीजयशित की संख्या होती है।"

"कुछ व्यक्त और कुछ धम्कत ! धब्की बात है। मठ है, होता क्या है नहीं ?"

"मठ में साबना होती है।"

"तुमने तो धम्की कहा था मठ धर्म और साम्प्रदायिकता से दूर है।"

"तामात्रिक साबना होती है। —५ ब से उतर दिया।"

"बह कैसी ?"

"जब कही कोई मर्यादाएँ हाने लगता है तो हम उसका प्रतिकार करते हैं।"

"प्रतिकार कैसे करते हो उसके बिरुद्ध धाबाजें उठाकर ?"

"नहीं बह तो दुर्बलों की साबना है। हम मयकरवाही है। हम व्यक्ति में नहीं धर्म में विश्वास रखते हैं। हम मर्यादाही की तीव्र बाव साबनाल करते हैं जब बह नहीं संभलता तो फिर हम उसे जोनी से बड़ा देते हैं।"

भैरव चौक पड़ा— 'नौजी स कौन उड़ाता है ?

'बिससे नाम का टिकट खुस जाता है । टिकट माता जी बोसती है । कोई पकपाठ नहीं होता । क्या तुम्हें जय लयता है ?'

'पहले सभी को लयता है लेकिन जैसे मनुष्य अफीम और मीठा जैसी निकट चीजों का घायी हो जाता है और बीरे-बीरे बिना उनके वह भी नहीं सकता ऐसी ही कुछ दिन बाद जब तुम उस मयाबने बातावरण में रहने लगेगे तो फिर वह जीवन की बड़ी प्रिय और प्राकरयक वस्तु हो जायगी ।'

'अच्छी बात है । जो भी होया ।

'बरो मत । सभी मही घायगी तुम्हारी बारी । कभी कभी हम लोग एक-दूसरे के बदले भी बन जाते हैं ।'

'मुझे भी अपना नाम बिसजित कर देना पड़ेगा ?

'हाँ क्या नाम है तुम्हारा ?'

'भैरव ।'

'हाँ भैरव बीसा की रात को तुम्हें तुम्हारा संबर दिया जायगा ।' तुम्हें कोई सरकार पकड़ती नहीं ?

'हमारा बड़ा पक्का समलन है । हमारे सबसब मौल पर लसते हैं । वे प्राणों की बाजी लगाकर भी अपना मेह नहीं लेते ।

'तुम इकर कहाँ से पा रहे हो ?

'बनारस से ।

'वहाँ क्यों गए थे ?

'हमारा एक सरस्य वहाँ बहुत दिन हुए एक कर्तव्य को लेकर गया था वह नहीं लौटा जब तक । मैं उसी का पता लेने गया था ।'

'कुछ पता बता ?'

'नहीं ।'

'फिर क्या हागा ?'

‘मुझे प्रसन्नता है। मेरी यात्रा व्यर्थ नहीं गई। हमारे एक सभ्य का सिर गिरा तो एक दूसरे सभ्य का सिर मिल गया।’—५ ब ने उत्तर दिया।

भैरव उस भयंकरवादी को देख-बेखकर कमी दरवाह में मर जाता था और कमी उगने लगता था।

५ ब ने टिफिन कैरियर छोड़ते हुए कहा—‘भोजन करो।

‘मैं तो खा चुका हूँ।’

‘कुछ खान लो बोहा-सा।’

सा-गीकर दोनों बैठे ही बैठे ही गए। कुछ दूर जाने के बाद ५ ब ने भैरव को सठाकर कहा—‘मित्र तुम्हारा नाम क्या है?’

‘मित्र नाम भैरव है। क्यों पूछते हो फिर इतनी बार?’

‘क्या नहीं रहा।’

‘बन्धु, और भी जो चाहो तुम मुझसे पूछ सकते हो। मैं कुछ भी नहीं तुमसे छिराऊँगा।’

‘मैं और कुछ भी नहीं पूछूँगा। कहीं तक कोई किसी के सम्बन्ध में पूछ सकता है? हम लोग धार्मिक अन्ध-अन्धकारों में विश्वास रखते हैं। तुम कहीं तक बताओगे। तुम्हें केवल एक इसी अन्ध के माता-पिता की बात मालूम है। इसके प्रतिरिक्त यह सब धर्म-सम्पत्ति का लेना हम धार्मिक सम्पत्ति को कोई सम्पत्ति नहीं मानते।’

‘फिर सम्पत्ति क्या है?’

‘विचार, भावना, कर्म।’

भैरव बुझने लगा—‘सती कलकत्ता कितनी दूर है?’

‘धरती बहुत दूर है। लेकिन हम यहाँ नहीं जायेंगे।

‘फिर?’

‘जसमें पहुँचे ही कर जायेंगे।’

‘कहाँ?’ भैरव सज्जी तरह जागकर बोला—‘कूर जायेंगे क्या कूर में क्यों?’

“तुम्हारे पास ठिकठ खो नहीं है।”

कूरन से हड्डी टूट गई तो ?

५ ज ने भैरव का हाथ पकड़ लिया— बन्धु, यही तुम्हारे विचार की कमी है। तुम्हारा विचार बीमार है। विचार की इन दुर्बलता को ठीक करना पड़गा हीनैवासी बात पहले विचार में ही प्रत्यक्ष हो जाती है। रेल से कूदने पर तुम्हारी हड्डी टूट आयेगी—इस विचार की कोई भीलु रेखा भी तुम्हारे मन में रह गई तो जरूर हड्डी टूट आयेगी।”

“कैसे वह विचार की दुर्बलता आयेगी ?

“केवल निश्चय से विश्वास से माता के घापीर्षद में।”

“मैंने माता को नहीं देखा है।

“मेरे ध्यान के देखो।”

“कौसी है माता ?”

“उसके एक हाथ में रक्त में मना हुआ लवण है और उसके दूसरे हाथ में भीमे कमल का फूल। उसके घने में मनुष्या की भाषणियों की माला है। उसकी कमर में बाण की लाल बँधी है। उसकी जटाओं में साँप लिपटा रहता है।” — ५ ज बोला।

भैरव ने कहा— “बड़ी उग्र माता है यह तो।

५ ज ने प्रत्यक्ष में कहा— केवल बाहर से देखने में। भीतर में बड़ी मीम्व और बड़ी कल्याणमयी है। जब देव भोग तक पना चलता।”

भैरव बोला— जब देव भूंगा ? माई यह किस माता का तुमने वर्धन किया वह तो कोई पौराणिक देवी जान पड़ती है। जने देव कौसे भूंगा—उसकी मूर्ति को पूजते हो क्या तुम लोग ? लेकिन मैं तो बुद्धि बारी हूँ मैं मूर्तिपूजा को बच्चों का खेल समझता हूँ।”

“हम बुद्धिबारी हूँ लेकिन माय ही मूर्तिपूजक है। मारा विरह मूर्ति पूजक है। मूर्तिपूजा बुद्धिवाद की चरम सीमा है।” — ५ ज ने कहा।

मित्र में नहीं मजबूत तुम्हारी बात। जब तक तुम इसे बर्धे समझा न सोने तक तक ही-मैं-ही मिलाना कोई धक्की बात नहीं है। — भैरव

ने कहा ।

ठीक है बिना बात को समझे ही कह देनेवाला को— चरित्र नहीं रखता । ऐसा व्यक्ति न अपना बस है न किसी सत्त्वा क घोरब का हो बड़ा सकता है ।”

‘मित्र मैं समझता हूँ मेरी बचनबद्धता अभी प्रमाणित नहीं है ।

३ अ ने कुछ आश्चर्य के साथ कहा—‘तुम हमारे मठ में प्रविष्ट हो जाने के लिए बचन दे चुके हो ।”

‘दीक्षा कहाँ ली अभी ? जीस में धाकर कुछ कह गया था ।

‘जीवन में सठक होनेवाला व्यक्ति इन तरह घाये को बड़ाए हुए पैर पीछे की तरफ नहीं ले जाता ।”

‘मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि मैं तुम्हारे मठ में दीक्षा न लूँगा ।”

‘फिर क्या है ?”

‘तुम कहते हो सारा विश्व मूर्ति-पूजक है कम है मूर्त समझघो भी तो ।

“जिनको तुम मूर्तिपूजक नहीं समझ रहे हो वे मिनके की पूजा नहीं कर रहे हैं क्या ? तिकों पर क्या किमी न किमी की मूर्ति बनी गई नहीं है ? ये सब मूर्तिपूजक हैं । इनके देवता घससी सोने चाँदी के होते तो भी एक बात भी ब कोरे कागज के ह । पानी की एक बुँद में जो मल जाम सोम की एक फँक में जो जड़ जाम घोर घाग की एक जिनगारी में जो मस्मीन्त हो जाम ।” — ३ अ ने कहा ।

घैरब ने बिचारकर उत्तर दिया— ‘हाँ बन्धु तुम ठीक कह रहे हो ।”

३ अ फिर बोला—‘जिजिन हमारी बहू माता जिनके बारे में अभी मैंने तुमसे कहा वह न तो कागज पर की कोई लेख है न मिट्टी परबर या किसी बातु की निर्माण । वह हमारे-तुम्हारे ही ममान हाइ-जाम की एक हस्ती है जो हमारे प्रत्येक मुल-बुल में हमारा साथ देती है जितकी बरब जामा हमारे समस्त कर्म की प्ररणा है घोर हमारी घलिल

भावना की बर-बमृति ।

भैरव की छाया मिट गई वह बोला—“मे मठ में भरती होने के लिए बिलकुल तैयार हूँ मित्र ।

‘वह तो जानता ही हूँ । क्योंकि हम लोग बिना छाया के जंग-मैल के ही इस बात का पता पा जाते हैं कि यह व्यक्ति हमारे मठ के उपयुक्त है या नहीं ।

‘कैसे मित्र ?’—भैरव ने पूछा ।

‘जान सेते हैं । माता के आशीर्वाद से धीरे-धीरे ? भाव की बड़ी विभिन्न गति है । जब तक सारी मृष्टि में भावना का विस्तार नहीं समझ पड़ता तब तक हमका बोध नहीं होता ।

फिर दोनों चुप हो गए धीरे-धीरे अपनी-अपनी जगहों पर बैठे-बैठे सोचने लगे । गाड़ी एक के बाद दूसरे स्टेशनों को पीछे छोड़ती हुई जाने बढ़ती गई । जब वह नावलपुर के जिले से होकर जा रही थी ।

१. जब बड़ी सतर्कता से यात्रा कर रहा था धीरे-धीरे जब उसके व्यक्तित्व में एक सहायक पाकर अपनी सारी चिन्ता को चुका था धीरे-धीरे बेचक सो रहा था ।

२. अब बीच-बीच में बिड़की से बाहर मुँह निकालकर देखता जा रहा था । हृत्पुत्र की प्रमाण-व्यापिनी शीतली समाजस्वा के निकट की तिथियाँ में थी । उस वीरु प्रकाश में १. अब वह चूकर रेल के पास-नाम के ग्रामों से तो धीरे-धीरे को पहचानने की भीति कर रहा था । कभी दूर निमित्त की रैगाहों में कुछ परिवर्तन होता ।

कुछ देर बाद उसने पहचान लिया । उसने भैरव को उठाते हुए कहा—‘उठी भैरव उठी हमारा स्टेशन था गया ।’

‘माम क्या है ?’

‘हमारे स्टेशन का क्या नाम होता है ? कुछ नहीं कोई जंगल समझ लो । जम्बी करो तैयार हो जाओ ।’

‘रेल को तो ठहाने दो ।’

रेल टिकटवाले यात्रियों के लिए ठहरती है। सिड़की से कब पड़ो। मठ-सवेद्य की पही तुम्हारी पहसी परीक्षा है।”

“मैं कायर हूँ क्या ?”

“तो मेरे पीछे कूद पड़ो। कोई भय नहीं कोई बिन्ता नहीं बसुम्बरा की मोह माता की गोद के समान तिरापब है। बाहर से कछ नहीं बियड़ेपा तुम्हारा अंगर कछ बिबड़ा भी तो भीतर भावना के ही बिब्रोह है। माता की बय पुकारकर कूद पड़ो। जो मैं कूद गया जिस प्रकार।”—५ ब कूद पड़ा चलती रेल की सिड़की से।

पीरब की भी साहस हो गया। उसने मन-ही-मन माता की बय पुकारी पीर कूद गया वही सिड़की से।

आत्मा की खोज में

पत्नी की प्रतीति कर रिदूची कमजबन के बाब घपने भर घाया ।
उस बार तिरागा में उसका एकमात्र छाबी कमजबन ही था ।
उसके मन में बैराग्य की भावना बड़ी पुरानी थी । उसने घपन
साबी रिदूची के नामे बाब में उस बैराग्य का बिरवा बड़ी घासानी से
रोंप दिया ।

कमजबन बोला— रिदूची जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य 'मैं' नहीं
है 'मैं' को बनाकर जो बाकी बचता है वह है । इसलिए घपनी मुन्नी बही
है जो निरन्तर हमारे से सुख को साबठा है ।”

कमजबन कहाँ से है वह मुन्नी ? कहाँ भिना तुम्हें वह सुख ? तुमने
हमारे की स्त्री को मन्नी करने के लिए घपनी स्त्री के अबाहर फूंक देने
बाइ से । बीच ही में कोई क्यों उम्हे चुरा ले गया ? घीर वह बहना है
उम्हे उसके पाग में भी कोई चुरा ले गया ?

“मैं मुन्नी हूँ रिदूची क्योंकि मझे तुम की अपेक्षा नहीं है । वह
बरबाहा मेरा हाथ लीचकर ले जा रहा था अगर मैं उसका पीछा बसा
जाता तो घपन ही लख की खोज में जाता घीर वह कभी न मिलता
मझे ।”

“तुम्हारी बातों में प्रतीति उपजती तो है कमजबन । मझ न बोव तुम
इस सुख की बाबी ? कौसे तुम्हारे हाथ लगी यह ?

‘बाब फिर बही पर घानी है । जितना हमारा अणनापन न ट होता
आदमा उतने हम मुन्नी हाठे जावेंब । मेरा गृहम्ब नष्ट हो जाने पर मैं
घाया मन्नी हो गया घीर पर क नुद जाने पर ती बिसकन ।”

‘नहीं यह तुम बहुत बात कह रहे हो। संसार में अधिकतर तो पण्डितों ही का है। विद्यार्थ में वे जो इतने मठ और गृहस्थों के क्या वे सब के-सब सुखी हैं। वा इनके लिए—मोजन बस्त्र और तरह तरह की मुक्त-सुविधाओं के उपजाने वाले ये तमाम गृहस्थी सब सुखी हैं?’

‘गृहस्थ में रहकर भी धनदायक मठ किया जा सकता है। ऐसे करनेवाले वे सब सखी हैं। कोई-कोई मठ-वासियों से भी अधिक भी हैं।’

फिर कलजल तुम क्यों निर्जन और सुख विद्या की ओर संकेत कर रहे हो ?”

“मेरे लिए तो भयवान् में वही दिशा लोभ दी है। तुम्हारे भी इस स्त्री के मरने का कारण ”

“मैं फिर और क स्त्री से विवाह कर सकता हूँ। मेरे हाथ में यह रैला पड़ी है देखो कलजल। —कहते हुए रिबूनी ने अपने बाहिन हाथ की हथेली उसकी तरफ बढ़ाई।

सरसकर मिटा दो इस रैला को।

“यह कहीं मिट सकती है क्या ?

‘हाथ काटकर फेंक दो। नियति के हाथों में इतने सस्ते बिक जाने से अच्छा है तुम मूमे होकर जीवन धारण करो।’

“कलजल मैं तुम्हें बड़ा उदार और धर्मियावादी समझता था। तुम यह घातमहिम्न का कैसा उपदेश दे रहे हो ?

‘यह तो अपनी कामनाओं की बात है बोधिसत्व के जर्म में इसका नियेश नहीं है। मन की इच्छाओं पर धाकड़ डोकर ही प्राणी जन्म के लक्ष्य को प्राप्त करता है।’

“तुमने बोधिसत्व का नाम लेकर फिर मेरा विश्वास उपजा दिया। कुछ साफ-साफ कहो मैं तुमसे तब सीखना चाहता हूँ अपना पदकार मिटाकर।

“मैं स्वयं ही उसकी साज में हूँ रिबूनी क्या कहें।”

भीतर कुछ सीखने की गुप्त कामना पैदा हो गई है तो हमें स्वयं ही कुछ सीख लेने ।”

“बढ़ ऐसा है तो कहीं क्यों कलत्रन वहीं क्यों नहीं ?

“कलत्र ऊपर बड़े बड़ा चाकचक प्रवेष्ट में बड़ी हिम की सुभ्रता में जाने विचार नहीं समते ।”

“क्यों नहीं समते ?

शीत में बाना नहीं पलपटा घोर शाने के न होने पर बहाँ कोई जीव नहीं है । बड़ा घट्टू त एकान्त मिलेबा ।

‘मन तो साब ही आयदा मन के साब बायेगी घनस्त कामताएँ, फिर एकान्त कैसा ?

“उस ऊँचाई पर जिस तरह बरती पर की हुरियाली घब्रम हो जाती है ऐसे ही हमारे मन के रंग भी ।”

“तुम्हारा बड़ा विविध तर्क है ।”

रिबूची हम तर्क में तत्व को नहीं पा सकते । व्यवसाय वाया जा सकता है । इनलिए तत्व को चाहते हो तो हृदय में बासकों की ती पवित्रता घोर सरलता उपजानी पड़ेगी ।”

“घण्टा में तर्क नहीं करेबा कोई सारतत्व बताओ ।

कलत्रन ने लीसकर यत्ना साक किया । कुछ विचार किया घोर बहने सया— ‘हम जिस नारी की बहुत बड़ा सत्य समझते हैं वह मिके एक माया है । एक कल्पित रत्नाघों का आन !”

“एक गिरे पर नारी है तो दूसरे सिरे पर पुष्ट्य क्यों नहीं ? तुम दोनों का माम क्यों नहीं गिनने ?”

“यह पुष्टयो क बीच की बात है, नारियाँ ऐसा कह सकती हैं ।”

घण्टा घोर घाने बड़ी ।”

‘इसीलिए मैंने उन माया में बीना भाई को हिस्ता दे दिया घोर बहुत शीघ्र उन रहस्य में ऊपर उठ सया । साबना के मार्ग की बहुत बड़ी बाधा है—यह नारी रिबूची बिना इस बाधा का पतिवमण लिए

कृष्ण न होना ।

धीर फिर मेरे मन में अविश्वास पैदा हो गया । तुम ऐसा बहककर क्यों धार्मी सृष्टि का बहिष्कार कर रहे हो ?

कदाचित् तुम भरे मन का ठीक-ठीक धर्म नहीं समझे । मारी तो मेरा धर्म है, वह जिसे तुम धरने सब धीर विलास की सामग्री समझे हो । मैं तुमसे उस मारी से ऊंचा उठने को कहता हूँ उसके भावत्व में ।”

“कहाँ ? किसर ? वह कहाँ है कभी की मर गई ।”

“नहीं वह न चापटी है न कभी मरती है ।

जीन है वह ?”

“वह है डोस्मा वह तारिगी ।”

“वह क्यामा ! वह सहारिखी ! वह रक्तमयना ?”

“हाँ-हाँ ! वही वही—वही तो उसकी प्रियवधिता है ।

‘वह धाम्त-स्विर बोधिसत्व ?

“बोधिसत्व को उसी की कोख में उपजाया है धीर उसी में उसका जन्म हो जाता है ।”

“कलज्ज तुमने यह क्या मन्त्र सच हो कहा है ?”

वही केवल एक विचार की स्फुरण है । तुम्हारा मन धरत हममें मत लाता है तो जसो हम धामे बहककर देखें कदाचित् यह सत्य है ।”

“मग मन मेत साता है । पर इस धर धीर मामान का क्या कहें ? कतिन एक बात बड़े धारधर्म की है । रिबुधी रक्त गया ।

कलज्ज बोला—“इस सृष्टि में धारधर्म ही तो धार वस्तु है । किना धारधर्म का जीवन भी क्या बोर्ड सता है ? बहो तुम कहाँ पर धरत गए ?”

“मैं कहता हूँ तुम्हारे विचार पहले कुछ धीर तरत के थे ।”

“विचार सवा एक ही से रहते हैं केवल बहिष्कार बरसता है ।”

“महायात ने उतरकर तुम बचवान में बड़ गए !”

“विधेयता मान की है रिबुधी, महा या बख हन विमर्शों के कोख

बिभ्रमता नहीं पैदा होती ।’

‘कलजल जब ऐसी बात है तो फिर तुम मझे कहीं को से बाते हो ? यह जो मेरा बर है वह एक पान ही तो है—फिर क्यों तुम मुझे इससे धुड़ा रहे हो ? तुम्हारे पान-द्रोह का कारण मैं जानता हूँ । मुझे क्यों बिभ्रोही बनाते हो ?’

‘नहीं कोई बल प्रयोग नहीं है । क्या है मेरे बिभ्रोह का कारण ?’

‘एक ही रात में कलजल तुमसे अपने क्यों की पूजा शून्य में मिला भी !’

‘क्या कष्टा फिर ? मेरी पूजा को वह प्रतिमा क्यों कट गई मझमे ?’

‘प्रतिमा को जो उठा से जायगा—उसके साथ जायगी क्यों नहीं ?’

‘यही पर तर्क पराजित हुआ थीर मेरी भावना को स्फूर्ति मिली । मैं मूर्तिपूजा छोड़कर ब्रह्म दिया । जिस प्रतिमा में मैंने क्यों से प्राण प्रतिष्ठा की थी उसे उठाने को जब थोर से हाथ बढ़ाया तो क्यों नहीं उस थोर पर लकवा पिर पड़ा ? लेकिन नहीं रिदुर्बी में मूर्तता के बस होकर तुम्हारे बाब यह तर्क कर रहा हूँ । ऐसी कोई बात नहीं है ।’

‘क्या है फिर ?’

‘वह प्रतिमा मुझसे छिन वह इमी कारण मेरा मानसिक धारण बरल गया थीर मुझे इससे दृष्टिकोण पर घोल लहानी पड़ गई ।’

‘कष्टा मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ । इस बात का क्या कहे ?’

‘इसको ऐसे ही छोड़ जाओ ।’

‘किमी का दे क्यों न हूँ ? इनकी कठ धारणक बीजें तो मे बलें ।’

‘किमी को देने से मोह बड़ेगा । कठ इसमें मे से जाने से बलन बरेगा । मरने पर हम देने धकेले जाते हैं रिदुर्बी एग ही जाना पड़ेगा ।

‘रिदुर्बी से कुछ धारणक के साथ पूजा—‘क्या इमीलिए इसका नाम बयमान है ?’

‘थीर नहीं तो क्या ?’

“मैं तो समझना था मकार इसके साथी है।

“नहीं रिबूची यहकार ही बख्तानी का मर उसका वह यहकार बाहर नहीं प्रकट होता वह उसे निरन्तर पीता रहता है और बीबीसों बच्चे उसे उसी का लधा रहता है उसका मास उसका अपना ही स्मृत घरीर है—वह उसी को खाता रहता है।”

“लेकिन कमजोर बख्तान के सम्बन्ध में जो ऐसी बातें कही हैं वे क्या हैं ?”

“मैं नहीं जानता जो जानता है तुम्हें बता दी।”

“मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ।

“कहाँ चलोगे ?”

“जहाँ कहाये।

“कब चलोगे ?

“जब कहोगे।

“हां रिबूची बिना ऐसे पूर्ण आत्मसमर्पण के आत्मा नहीं मिलती। जलो हम जैसे घनी जैसे। हमें कोई प्रबन्ध नहीं करने है। सब बर्णों से हम मुक्त हैं। कोई उत्तरदायित्व नहीं, किसी से कुछ लेना-देना नहीं। जलो चाइ-बइ प्रदेश में खंगी सामा का मठ है। तुमने सुना है उसका नाम ?”

“नहीं सुना।”

“बहुत कम लोग उसे जानते हैं। वह बहुत दूर घोट में रहना परान्व कला है उस मठ में। बहुत बड़े सीन उसकी सक्ति से परिचित हैं। वह बहुत छिपकर रहता है। प्रकृति की ऊँचाई और धीर को उसने अपना कवच बना रखा है।”

“वह क्या खाता है वहाँ ?”

“वह एक सिद्ध है। वह जो बख्तान करता है, वही उसके पास पहुँच जाता है। लेकिन-तुम समझते हो उसकी कोई आवश्यकता है ?”

कुछ नहीं बसो वहाँ उसका शिष्यत्व ग्रहण करें। अगर उसमें हमें स्वीकार कर लिया तो निश्चय हमारा काम सफल हो जायगा।”

रिबूची बोला— ‘घण्टी बात है कलत्रन बसो यमी बसो वेदक ही बनेंसे न?’

‘हाँ माई सवारी में जाने के लिए न तो हम मुझे के घासक ही न देख के बनी व्यापारी।’

‘मैं यह अपना पुराना घोड़ा बदल देता हूँ और मेरे पास एक बिल बल गया चुग रखा है तुम्हारे ठीक प्रायगा। तुम उसे पहल लो। हमें बहुत खपती और पहाड़ी मार्ग से जाना होगा कलत्रन।’

‘हाँ हाँ यह मृत्यु का मार्ग है इस विचार को अलग करने के लिए भी मत लोडो और मृत्यु के मार्ग में तुम्हारे क्या रुकव काम पायेंगे?’

‘मृत्यु के मार्ग में कोई रुकव काम न पायेंगे वहाँ तमाम दूरबसिता मूर्खों का प्रसाप है—तुमने यह सब ही कहा कलत्रन।’

‘हमें कोई डर न रहेगी तो हम भद्रवान् के अधिक भिदट रहेगे। रिबूची यह भय की ही भावना है जो हमारी आत्मा को विस्तार नहीं देती।’

‘ठम नीर है। हम निर्भय है।’

‘घबराय। मृत्यु की शृणा ही हमारा भय है हमने उमम प्रीति कर अपने मार्ग का चौड़ा और फूलों से बिछा हुआ बना लिया है। तारिणी डोल्मा की जय। रिबूची उसके एक हाथ में मनुष्य के कपाल का लण्ड है एक हाथ में एक संजित घड़्य है। तुम्हें डर लग रही है?’

‘नहीं।’

‘तो बसो।’

‘एक राग ठहर जाओ। मैं दो बुझे उठा नि माता हूँ। पाऊ बड में बड़ा बीत है।’

‘रिबूची तुम्हें जरूर डर लग रही है। मैं कहता हूँ जब तक तुम मे घरीर के बरफे भी लौलकर न रख दोमे तब तक तुम उसके श्म्य

के पीछर प्रभिरट न हो सकीसे ।”

‘कसबज बली ।’

‘बपो लामा के निकट जाने की इच्छा के धीर कस साक न लो जाई ।’

रिबुषी ने लामा प्राङ्गणों के बंजन काट दिए । बड़ी सहज तति से वह मकान के बाहर लो बला— बली भाई ।”

दोनों मकान के बाहर बल दिए । कुछ पड़ीसी रिबुषी के बुल में समवेदना ब्रकट करते आ रहे थे । वे बोले— ‘हम तुम्हारे यहाँ आ रहे हैं तुम कहीं बस दिए ?’

‘तुम बाघी बही बूल्हे में घाग है केठली में पानी बबड के बंते में बबकन है बाबा है मटक में छड है । जिसे जो रचे ला पी धमा ।’

‘तुम कितनी देर में आओसे ? एक ने पूछा ।

‘कसबज मुझ के आ रहे है अब छोड रे ।

बुधरे ने कहा— ‘मकान लो घमा ही है तुम्हारा ?

‘कसबज बन्द कर गए ल इन्होंने मुझे एक अनुभव दिया । मुझे लाला सजाकर कित्ती का कीतुहल बजाना लही है ।’

पड़ीसी समझे लारव उन दोनों ने धपना बुल भुषाजे के लिए बुर सपक की रली है । उन्होंने रिबुषी के पर बाकर बहुत देर तक प्रतीक्षा की । वे नहीं लौट । राठ हो गईं तक भी उन दोनों ने से कित्ती का बला न ला । पड़ीसियों ने समझ बाकर उनका विमाग सपक हो गया । उन्होंने रिबुषी का बकान बन्द कर लमें लामा सबा दिया धीर धपने धपने कर बसे बा ।

अब उनका हमरे दिव भी कोई बला न बला धीर भी कई दिन बीठ गए तक लो उनके विरवास का अनुधीदन हो गया ।

रिबुषी धीर कसबज—बकर उन दोनों को बुल हो गया बा । वे बराबर बाड बाड के उस सीठ प्रवेग के एक ऐसे मठ की धीर आ वे बही का लाम लेते ही वे साधारण मनुष्य भव से कीय लल्ल

घाट-बत दिन उन्हें यात्रा करते हुए हो गए। दिन भर बसते। रात को किसी गाँव में बसे जाठ। लोग उनका प्रतिबिम्ब-सत्कार करने में कोई कसर नहीं करते थे। कमजब और रिबूची दोनों की ही बुर-बुर तक घण्टी प्रसिद्धि थी।

इसमें दिन रिबूची बसते बसते पक गया था। सप्पा भीत चुकी थी और रात का घण्टकार विषम तीव्रता से बड़ बसा था। उसने पत्रपत्र कहा—“कमजब क्या ऐसा नहीं हो सकता ?” कमजब की बड़ी प्रीहों को देखकर उसने घबरा प्रदा पूरा नहीं किया।

कमजब ने हँसकर कहा—“क्या करते हो ?

रिबूची—“मैं पूछता हूँ कभी ऐसा भी तो हो सकता है हमें रात के विषाम के लिए कोई गाँव न मिले।

कमजब—“उध रात को हम बसते ही खेने वह कब तक न मिलेगा ?”

रिबूची बककर बैठ गया—“कमजब तुम यह क्या बह रहे हो ?”

“मैं कहता हूँ जंगो लामा स धारण मनुष्य नहीं है।”

“उनका नाम देने से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?

वह घबरायी पुस्य है। हम उनकी ही इच्छा में उनके मठ को जा रहे हैं।”

रिबूची ने चौंकर कमजब को देखा।

“हाँ इसमें बरा भी संशय नहीं। मैंने जंगो लामा को उध रात तुम्हारे प्रायत में देखा जिस रात मैं मट्टी में दबा फूंक रहा था।”

“जंगो लामा नहीं कैसे था गए ?

“तुम्हें नहीं मामूम है उनका भव। वेरा घोर काल उनकी वृत्ति में कोई भी बाधा नहीं है। वे जाहे अहाँ लणों में जा मफते हैं। जिस प्रकार हम विचार और इच्छा की महायत्ना में मूठ घोर भवित्य में जा मबते हैं—उत्तर-बदिलग या पुष-परिषम में प्रवेच कर सकते हैं वह बीते ही अपने प्रत्यक्ष घाटीर को लेकर जा सकते हैं मन की महायत्ना से। हमारा

केवल मन ही बेच-काम को पार कर सकता है वह अपनी दसो इशियों को घाब लेकर बने बाटे हैं कही भी ।”

“उन्होंने क्या कहा तब तुमसे ?”

उन्होंने मुझे कहा—“रिबूची की स्त्री बूतरे दिन मर जायगी ।”

“है ! तुमने मुझे क्यों नहीं बताया ?

उनकी आज्ञा नहीं थी ।”

और क्या कहा उन्होंने ?”

यही कि रिबूची को लेकर धीमे ही बाढ़ बड़ में स्थित मेरी गुंवा में घा जाना ।

उन्होंने क्यों बताया है हमें ?

“यह प्रश्न पर तो हमें विचार करना ही नहीं है । यह प्रश्न ही हमारे कल्याण के लिए है रिबूची ।”

“मुझे तो भय बना ही नहीं आता ।

‘तुम बनोने रिबूची प्रश्न ही प्रयोग ।

“स्त्रिके सहारे से ?”

“सबसे के सहारे से ।”

क्या अभी कितनी दूर है ?”

मैं नहीं जानता ।”

किर कैसे लक्ष्य प्राप्त होया ?”

“पूछो-पूछते ही तो बने जा रहे हैं ।”

“यह घोर निष्ठा, वैर सम से बने हैं, पैट में लुधा घोर आकाश से पाता गिर रहा है ।

“यह सब एक नल्पना है रिबूची मैं तुमसे सब कह रहा हूँ । मन को इन सब बाधाओं से हटाकर कहीं दूसरी जगह रख लो ।

“कहाँ रख लूँ ?

“अव्यक्तवाची मृत्यु की ओर में ।”

“कलकल तुम्हें न जाने उस रात से क्या हो गया ?”

“यह सब ही है रिबूची बतों उठो।”

इतने ही में दूर पर एक उबाला दिखाई दिया। रिबूची सठ गया।
बड़े उत्साह से वह बोला—“वह देखो वह प्रकाश है।”

“हां प्रकाश ही वह हमें झूठने पाया है।

“हमें क्यों झूठना ?

बोनों उध प्रकाश को मध्य कर घाय बड़ने गते। वह एक यात्र
का यकक था।

कलत्रन ने उधसे पूछा—“तुम किते बंद रहे हो ?

हमारी दो बमरियां भाव नहीं पाइ। उन्ही को डोब में हूँ।

“गाँव किनभो दूर है ?

पुबक को ठठाए बोधी दूर पर बरली हुई बमरियां दिखाई दी।
वह बोला—“बे मिय मद मुझ। बला मर साप ही बला। मैं घबो
पगहैं हाँक साता हूँ।

रिबूची घोर कलत्रन बही गये रहे। यत्र बानीं बमरियों को हाँक
साया घोर के गाँव की घोर बसे।

माय के कलत्रन ने पूछा—“किन्ना बड़ा गाँव है ?”

पुबक ने जबाब दिया—“घगर बमरियां भेड़ो घोर बमरियों के
पोंकों को नवान नहीं मिला जाय तो मिक एक ही मकान का गाँव है।

रिबूची ने कहा—“बहुत छोटा।

कलत्रन ने उत्तर दिया—“घोर क्या ? मनुष्य को जाने के लिए
बाना चाहिए। हम नहामा ऐ बहुत ऊपर या गए हैं। यही तो घायब
सात-अर में बो की भी कई कमल न हाठी हागी।”

पुबक के कलत्रन का प्रतिबाध करते हुए कहा—“जो क्यों नहीं
होना ? हमने सेतीं में बहूबड़ा रहे हे बासें घाय ही बानी हूँ।”

पुबक—“बरक किन्नी बिरती है ?”

—“कृप।”

?”—रिबूची के पुबक।

“मैं और मेरी माता केवल दो ही मूर्तियाँ।” —इसने प्रत्युत्तर में कहा।

रिबूची ने पूछा—“क्यों धरमा का मठ अभी और कितनी दूर है ?”

“धीरे-धीरे के रास्ते से दिन की राह और भुमकर पाँच दिन की। उस भुमक ने कहा—“और कभी-कभी तो मात्री बसता ही रह जाता है मठ का पता हो नहीं सकता।”

रिबूची ने पूछा—“पता कैसे नहीं लगता ? मनुष्य कहीं छिप सकता है मठ कहाँ जा सकता है ?”

“यही तो उनकी सिद्धि है।” कलत्र ने कहा—“मेरे मन में उनके दर्शन का इतना उत्साह हो गया रिबूची जलो अभी क्यों न बसते ही रहे। रात हमारे माम की बाधा है और नींद हमें वास्तव जगत से हटाकर स्वप्न की सृष्टि में लैसा लेती है।”

“मेरी तो घाटी बेई चूर चूर हो गई। भाई ! जाने को नहीं चाहिए मेरी तो बसते बसते ही जाने लगी है।”

हाथ टूटा

५ व फूल की पलुटी की भाँति भूमि पर कूब पड़ा तीव्र पति से रोइती हुई रैन से। उसके मन में कोई भय थीर घायका नहीं थी। लेकिन उसका लाबी भैरव—बु बड़िबारी उसके मन म पहले ही से डर का समावेश था। यह पहला ही दिन था उसका। कमी एम सेत खेले नहीं थे उसने।

मन-ही-मन माठा की जय पुकारकर ज्योंही वह खिड़की से दूरा था कि नीचे भूमि पर उसे एक बनी छाया में किसी खार्द का घोका हो से चीतकर घाने ही हाकों में ले ली।

वह भूमि पर पैरों के बल पिरने के बहले बाहिनी करबट से गिर पडा। उसका बाहिना हाप बब यया नीच हो-तीन ईटें पड़ी थी। भैरव बिस्ता उठा—'है मयबान।

१ व रोइकर उसके पास घा पडा। उमने पूछा—'भैरव ! क्यों हो गया ?

'भिर पड़ा है ईंटों में। बड़ी जोर की बाट लग गई। —रोने हुए भैरव ने कहा।

'कहाँ लगी ?"—कहने हुए १ व उसे उठान लगा।

'यो 5 5 इबर हाप न लयायो। बड़ा बर्द है। नहीं जानना हाप बट यया या टूट यया।'

१ व ने घण्टी तरह रोकर कहा—'बटा होवा ली मून निकलता।' ने थीर-थीरे उमको महाग देकर उठाना चाहा।

"नहीं नहीं उठाओ मत मर जाऊँगा।"

"घबने काप उठी औरक। कुछ चोट तुम्हारे लप गई इसमें कोई धक नहीं लेकिन तुम बहुत बहादुर हो।

"नहीं कुछ नहीं है। मेरी ही पलती से यह चोट लपी। मैं तुम्हारे साहस को देखकर प्रसन्न हूँ। इस वक्रे में जमती रेल से पूरा पड़ना आसान बात नहीं है। बहुत थोड़े से लोगों में ऐसा साहस होता है। यह तुम्हारी पहली परीक्षा थी और तुम इसमें बहुत अच्छा तरह सफल हो गए। आबास।"

"लेकिन यह दाहिना हाथ ऐसा जान पड़ता है यह मेरा नहीं रहा। धक क्या करके बहुत इस समयक जगल में हमारा कौन है?"

"ऐसे दिम नहीं तोडा जाता। मैं हूँ तुम्हारा सब कुछ धीर बह भयभाल है। कोई बिग्या न करो। उन्ने उठने की कोशिस करो। बड़ी मुस्किल से २ ज ने औरक को उठया धीर हाथ की जेपनियों की मुट्टी बाँधने को कहा। नहीं बँधी उसमे। २ ज ने अपनी भोनी में से एक बजरी फाड़ी धीर उनके हाथ को बाँध दिया। इसके धनन्तर दूसरा पाल फाड़कर हाथ स्तिप में रख दिया।

ठंडी साँस लेकर औरक ने कहा—"धक क्या होया?"

"साहस रखो। धीर कठिनाई क बीच में जो हँसने ही रहगा है, नहीं मरबा धीर है। बिमकुस न बबरपयो यह मेरा परिचित प्रान्त है। इसके जयम धीर पाँकों को मैं प्रच्छी तरह जानता हूँ।"

"जाऊँगा कैसे?"

"मेरी पीठ पर चला।

नहीं हाथ में चोट है और ठो ठीक ही है। मैं बलूया मिच। तुम धाये-धाने चलो। मैं तुम्हारी पीठ पर हाथ रख लूँगा। मुझे इतने ही सहारे की जरूरत है।"

दोनों जमने लप। २ ज के पास एक भोला बा उद्यमें एक साया एक बोडी-बैपीठा बा। औरक क पास कुछ भी न था।

मुझिया जी का सेबक एक कटौरी में कड़वा तेल में धाया। माबो ने उसमें कुछ समय पीसकर मिला लिया। उसने भैरव ने कहा—“बस भी बर्न नहीं होगा। घाप बर्न का बिलकुल ख्याल ही छोड़ दो।” लेकिन भैरव ने माबो को हाथ नहीं सगाने दिया। मुझिया ने कहा—“बेहरे से तो घाप हमें बड़े साहसी जान पड़ते हैं। एक ही क्षण की बात है। एक ही बटके में हठी जगह पर घा बायेगी।

माबो ने मिथी का टुकड़ा मँगाया। कुछ उसे पीसकर पानी में थोसा घीर एक टुकड़ा भैरव को देकर कहा—“इसे घाप में सेबर दोनों बबड़ों के बीच में दबाकर तोड़िए। मैं कहता हूँ घापसे जग भी बर्न नहीं होगा।” उसने धीरे-धीरे तेल के हाथ से फिर भैरव के हाथ को मुपमुखाया— देखिए, एक बात पक्की है। हठी को घापी जगह में घाना है जकर घाना है। जितनी देर होती जायगी उतनी पीड़ा से यह काम होना। तब घानी क्यों न हो?

रब बोला—“भैरव सध-दुख केवल मन की कल्पना है। नहीं पीड़ा नाम की कोई बस्तु नहीं है और बिन नाम की भी कोई स्थिति नहीं। तुम इन दोनों से ऊपर के जीव हो।

माभा ने कहा—“यह मिथी का टुकड़ा मुँह में धीजिए। जब मैं कहूँ तब इन दोनों बबड़ों के बीच दबाकर तोड़िए। जितनी देर मैं यह टटेगा निक उतनी ही देर के लिए घापको एक हीस-सी जान पड़ेगी— फिर बिलकुल ठीक हो जायगा।

भैरव ने माबो की बात का बिस्वास किया। उसने मिथी का टुकड़ा मुँह में रखा।

माभा ने घापी घाने भैरव के मुँह पर रख कर उँगलियों में उनकी हठी टंगीनी। उसने कहा—“हाँ जार से दोनों बबड़े मिना कीजिए।” भैरव ने ज्योंही बबड़े मिलाये इसी समय माबो ने बड़ कीमत से गिरकी हुई हठी टिक जगह पर लया थी। भैरव को घपिक पीड़ा नहीं जान पड़ी। जगहा घ्याम जठ मुँह के मीठे पर रख गया था कुछ मिथी

को लीकने में ।

भैरव की हड्डी-सी चीख पर माधो ने कहा—“अब कैसा दर्द ? अब तो घापकी हड्डी जबह पर बम गर्ई ।”

भैरव के मुँह पर मुसकान छा गई— हाँ अब तो कहीं नहीं जान पड़ती पीड़ा ।

माधो बोला— ‘उँगलियाँ हिलाइए ।’

भैरव ने सभी उँगलियाँ सभी सम्भव कोनों पर झुमा ली ।

“बिलकुल ठीक हो गया हाथ । लेकिन कुछ सतकता लेनी ही पड़गी दो-चार दिन ।”—उसने हाथ में पट्टी बाँध ली और हाथ फिर स्थिर में ही सटका दिया ।

मुंबिया जी हँसे—“बाधा पञ्चभान की सकल बेखबर लापरवाही घाप लोगों को यह सम्झाव नहीं हुआ था कि यह इतनी बन्धी घापकी पीड़ा हर मेमा ।”

भैरव की पीड़ा बिलकुल बनी गई थी उसने कहा—“इन्होंने तो यह एक बाहु-सा कर-दिया ।”

माधो ने कहा—“बाहु-बाहु कुछ नहीं ब्रह्म महाराज की कृपा है । मेरे मन में कोई स्वाद नहीं है इससे घबरा कर सेता हूँ ।”

“कुछ नहीं लेते किसी से ?”—इ ने पूछा ।

“नहीं, कुछ नहीं । ब्रह्म महाराज की आज्ञा ऐसी ही है ।”

‘मैं तुम्हें एक कछरठी अन्न ही समझता था, जो बेचल अपने बाहरी माँस-पुद्दों के बनाव में ही दिन बिताता होगा । तुम्हें तो मनो-विज्ञान का ज्ञान है ।’—भैरव बोला ।

“क्या मनोविज्ञान ? कुछ नहीं पढ़-लिखा पौढ़ हूँ मैं ? ऐसे ही टटोम-टटोमकर अपना काम चलाता हूँ ।”—माधो ने बड़ी विनम्रता से कहा ।

इ न कहने लगा—“हम फिटाबी विद्या को कोई चीज पछबी विद्या की लहरें बाहुमण्डल में ही ध्याएँ चखती

शब्द के माध्यम से प्राप्त नहीं होती। वे प्राप्त होती हैं सवाचार द्वारा। परोपकार की बलि ही सबसे बड़ा सवाचार है। शीश-मात्र पर प्रेम करने वालों को अनेक सन्निवृत्तियाँ प्रताप्यास ही प्राप्त हो जाती हैं।

सभी ने इस बात को माना। मद्रिया भी न उसके लिए भोजन का प्रबंध किया लेकिन माधो बोसा—“मुद्रिया जी मुझे तो याज्ञा हीजिए।

भैरव ने भी उपग्रह किया लेकिन माधो नहीं माना किसी पाँच में समय था उसके संयोजन के लिए जाना था। वह बना गया। जानीकर मुद्रिया जी की वृत्तवृत्ता स्वीकार कर भैरव और मास्टर जी भी जाने को तैयार हो गए।

१. मुद्रिया जी ने एक रात पाराम कर देने को कहा। लेकिन भैरव को माता जी के दर्शन की लागतमा हा रही थी। वह बोसा—“मेरी पीडा बिसफल ठीक है। मैं याज्ञा के सर्वथा योग्य ही गया हूँ फिर कुछ साध में बोझ तो है नहीं।”

मुद्रिया जी हँस पड़े जब उभा समय उनका एक चाकर भीतर से बलिया में कुछ लेकर वहाँ पर उपस्थित हो गया और भैरव की घोर सन मुद्रिया का बहाने सवा।

भैरव भी हँस पड़ा—“मैं तो सोच रहा था साध में कुछ बोझ है नहीं। यह क्या है?”

मुद्रिया जी ने कहा—“कुछ कम घोर बोझ-मा एकबाम धीमती ने जेजा है साध लौनों के रास्तों के लिए। पाँच छ दिन की याज्ञा है।

२. वह बोसा—“लेकिन हमें एक लोटा घोर बोझी के सिवा घोर कुछ रखने की याज्ञा नहीं है।

मुद्रिया जी ने कहा—“सापके सापी भैरव जी तो अभी सापके मठ में बरती नहीं हुए हैं।

३. वह बोसा—“लेकिन इनके हाथ में पीट है और कुछ दिन पाराम जरूरी है।”

मुद्रिया जी ने फिर अनरोध किया—“हमरा हाथ तो ठीक ही है।”

भैरव ने यह हाथ बढ़ाकर उभिया सेठे हुए कहा— 'मुझिया जी आपका यह स्नेह हमें स्वीकार करना ही होना इतनी प्रीति और प्रतीति से दिया गया आपका यह उपहार कदापि हमारे कष्ट का कारण न होना ।'

मुझिया जी बहुत दूर तक उन्हें पहुँचाकर सीट गए । १ व न भैरव से कहा— "टोकरी भारी समझी है तो मुझे बे दो ।"

भैरव हँसा— तुम्हारा नियम टूट जायगा ।

"गहरी दूसरे की सहायता करना हमारा प्रथम धर्म है । इस टोकरी के भीतर की किसी चीज पर मैं ममत्व न रखूँगा । — २ व न हठपूर्वक भैरव के हाथ से यह टोकरी ले ली ।

पंचमे दिन वे लोप बिलकुल पहाड़ों के निकट पहुँच गए । पर्वत की ऊँची-जीबी मूमि बनों की माँति माँति के बड़ी-बूटी घीर पत्त-फूलों से भैरव के उद्विग्न मन को बड़ी आँति मिथी । गाना प्रकार के गर्द-गर्द आँति के बूजों में मनोसे पसी धपन तरह तरह के रंगों घीर मीठे स्वरों से उस एकान्त में रस की बर्षा कर रहे थे ।

सैदान की यात्रा से धर पर्वत का घाटोहल कठिन धम माँगने लया वा लेकिन मुवासिग पवन की धीतलता ने जतना ही उस धम को सहज कर दिया था । हर ऊँचाई पर एक शिखर की सम्भावना घीर प्रत्येक मोड़ पर एक अनोख दृश्य के कौतूहल में मन विमग्न हो गया था ।

कभी उनका मार्ग पर्वतों की चोटी पर खसा जाता था कभी नीचे उतरकर फिरी लरी की मनोहर घाटी मिल जाती थी । पर्वतों की कठिनाई को काटकर सोपान-मेढी-खैठे लत । उनके बीच में छोटे-छोटे नौन कहीं मारी मारी शिलासखों के मध्य में होकर बहती हुई राप गर्जन भरी पहाड़ी लरी । कहीं-कहीं हवा के झोंकों में हिंसते हुए पेड़ों से निकलती हुई धारा ।

जब वे घीर भी ऊपर चढ़ गए ठण्डक बढ़ गई । एक नए ही वातावरण के बीच में धरने को पाकर भैरव प्रसन्न हो खड़ा । दूर

नीची छायाओं से संयुक्त हिमालय की रजतगुह्य कांति देखकर वह भुग्म हो गया। प्रकृति की उस विलसासिता से उसकी भावना में बड़ा घन्तर पड़ गया।

उसने बड़े चहुरों की उस भीड़ कोमाहल घोर जीवन के संघर्ष को घाय किया उसे पार्क में रखकर फिर उसने हिम में सञ्जातित एकान्त पर विचार किया। मानवी घाक्रासा के पद वहाँ पर नहीं बने थे। अपना स्वार्थ वहाँ उसे भूला गया। केवल उस खूबसूरत से मरी प्रकृति के स्रष्टा को ढूँढने के घोर उसके कोई कामना ही नहीं रह गई थी।

मैत्रेय ने मन्त्र-भुग्म होकर कहा— १. व तुमने मठ के लिए इतना भूय एकान्त क्यों चुना ?

विचार की सुविधा के लिए।”

“ऊँचाई पर क्या विचार शाब्द रहता है ?”

“हाँ इन पर्वतों को देखो।”

“हाँ ये नि सन्देह मत्तोमुग्धकारी हैं।”

घोर भी तो एक बात है। पर्वों-पर्वों से ऊँचे होत गए हैं त्यों-त्यों जीवन की कठिनाता बन्दी गई है इन पर। घन्ट में एक ऊँचाई पर ये विलकुल ही निर्लेग हो गए हैं। घाटी घनेच्छता घाकर ये एक कैवल्य की प्रतिमा बन गए।”

“मैं नहीं समझ।

“समझ तो मैं भी कुछ नहीं हूँ।”

“फिर किस घाकार पर तुमने यह सब कहा ?

“एक बाहरी वर्णम है, मित्र। मेरा मतलब महाकाल शिव की इस बिहार भूमि में है। इनके सनातन हिम में कोई भी बीज संदुरित नहीं हो पाता। इनलिंग पत्तियों को लाने को बाने नहीं पिलते न बौंससे बताने को तिनके ही प्रान्त होते हैं। केवल एक रंग की सुभ्रता को समय-समय घूरी के मेर से मूर्त की सारों फिरकों को प्रतिप्रमित कर देती है। केवल

एक स्वेत कील की प्रभावता जो अपने सिवा किसी दूसरे को नहीं रखने नहीं देती।"—५ पर ने बजाव दिया।

शैब ने कुछ समझने का-सा नाट्य किया। उसने पूछा—“मठ से हिमामय कितनी दूर है?”

“बहुत दूर।

‘मठ में कितनी सरसि पड़ती है?’

‘अधिक नहीं।

‘हिम गिरता है?’

‘गिरता है आर्कों में पर ठहरता नहीं।

‘मठ कितना बड़ा है?’

‘पूरा घाँव है एक।

‘कितने लोग ह मठ में?’

‘साधकों की संख्या तो संकड़ों है, परन्तु सभी नहीं रहते हैं। अपने-अपने कर्तव्यों की पूर्ति के लिए वेस-वेद्यान्तरी में केंद्रे रहते हैं। सौ-नबास नहीं भी रहते हैं।

शैब ने पूछा—‘उनके भोजन-वस्त्र का प्रबन्ध नहीं से होता है?’

‘वे सब अपने-आप उपजाते हैं। नहीं खेती होती है। सब खेती करते हैं। गायें पाली जाती हैं।

‘जो जरूरी चीजें नहीं महीं होती, उनके लिए क्या दूसरे देशों से व्यापार करते हैं?’

‘व्यापार तो नहीं करते पर वे चीजें कहीं-कहीं से प्राप्त हो ही जाती हैं। कुछ मिट्टा में कुछ माछा भी के मकतों द्वारा भेंट में मिल जाती है। जो चीजें नहीं मिल सकतीं हम उनकी जरूरत ही नहीं रखते।’

‘मुझे नहीं निमुकठ किया जायेगा? मठ ही में रहूँगा या कहीं घाम्य?’

‘प्रत्येक नए साधक को कुछ समय तक नहीं मठ में रहकर अध्ययन

घौर अभ्यास करना पड़ता है उसके बाद ही उसे कोई काम छोड़ा जाता है। तभी वह बाहर जाता है।"—५ ज ने जवाब दिया।

भैरव का हाथ जब बिलकूल ठीक हो गया था। जब वे लोग मठ के निकट घा पहुँचे तो उसमें पूछा— 'घाब घाम तक पहुँच जायेंगे हम मठ में ?

"हाँ।"

"तो मैं जब इस हाथ की पट्टी को खोल देता हूँ।

'घमी रहने दो।

मही यह भेरा एक कर्मक है। हाथ ता जब बिलकूल ठीक हो गया। फिर क्यों मैं इतना दुःख बनकर मठ को जाऊँ ? माता जी इसे देखकर कोई अच्छे विचार न बनायेंगी मेरे लिए अपने मन में।"

५ ज न हँसकर कहा— 'जैसी तुम्हारी इच्छा हो।"

भैरव ने पट्टी खोल दी। उसने हाथ को जगै घोर घुमा फिराकर देख लिया। जब उसमें कोई कतर नहीं रह गई थी। ५ ज ने भी उसकी बात का अनुमोदन किया।

मुसिया जी की ही हुई टोकरी क फल-फूल उन दोनों ने मिलकर उसके दूसरे दिन ही समाप्त कर दिए थे। उसके बाद वे सोच जहाँ भी ठहरे उनका अच्छा प्रतिधि-सत्कार हाता। फिर भैरव न जही ता लाने पीने की चीजें साथ बाँधने की कामना नहीं रखी।

५ ज ने कहा— 'खाने-पीने की चीजों का संग्रह हमारी दूरबगिता समझ जाता है। देना जाय तो वह हमारा प्रपत्य है ?

भैरव की समझ में वह तर्क गड़ा नहीं। उसने दुविधा में पड़कर बरबन हिमा बी।

५ ज बाला— "एक छोटी-सी चीटी से मेकर बड़े-स-बड़े हाथी के पेट भरने का जिम्मा भगवान् का है। हम मोहन का मन्त्र कर सगकी सत्ता को परधीन करते हैं।"

संध्या से कुछ पहले ही वे दोनों मित्र मठ में पहुँच गए। दूर से

मैरब ने देखा वह एक साधारण-सा गाँव था।

‘यही है क्या मठ?’

‘हाँ।’

माता जी किस मकान में रहती है?

‘धीरे-धीरे मामूम हो जायगा।’

बोनों जाकर मठ में पहुँच गए। मैरब को पाँव के बाहर के एक मकान में ठहराने को कहा गया। मैरब ने कहा— ‘माता जी के दर्शन?’

‘जब वे बजाव दिया— उनकी इच्छा पर ही उनके वसन होते हैं।’

‘यह तो बड़ी विचित्र बात है।’

‘उनका नियम ही ऐसा है। वह बिल्कुल बाहर नहीं निकलती। एकान्त में साधना करती रहती हैं।’

‘अन्त कहीं उनके दर्शन करते हैं?’

‘जब वह भाजा देती हैं तब वही जाया पड़ता है।’

‘वह कब भाजा देंगी?’

‘पहले तुम्हारी परीक्षा होगी उसके अनन्तर।’

मैरब ने कहा— ‘मित्र इस समय तो तुम बड़े स्वयंप्रसाद से उत्तर दे रहे हो। मार्ग में जब तुमने प्रारम्भ में बाँटें की थी तो तुम बड़े सहृदय बान पड़ बे।’

‘जब कहते जया— ‘ऐसा न समझो बन्वु मैं तुम्हारे लिए बड़ी हूँ। जब हम मठ के बाताबरम में आ गए हैं। मही का बड़ा कड़ा अनुपासन है। हर समय बहुत कामकाज होकर रहना पड़ता है। मझे धमी माता जी के सामने जाकर धूपनी यात्रा का सारा कार्यकर्म रचना है मैं उसी के ध्यान में पड़ा हूँ।’

‘जब तुम कब धायोये?’

‘जब समय मिलेगा। मैं माता जी के पास बाँटें ही धमी तुम्हारे समाचार देना।’

‘मुझे मही ले जा सकते उनके पास?’

‘बिना उनकी छात्रा के नहीं।

“तब तक मैं यहाँ क्या करूँ ?”

“बहुत सावधान धीरे सतर्क होकर रहना कि कहीं तुम अयोग्य समझकर यहाँ से निकाल न दिए जाओ।

‘सावधानी कैसी ?

‘यहाँ भावना के विपद् जाने पर भी मानव-मठन माना जाता है। इसलिए कर्म की तो बात ही जाने दो तुम्हें भावना में भी पबिध रहना है।

“कैसे है तुम्हारी भावना की पबिधता ?

‘सारा संसार केवल भाई के रूप में है उसके साथ धीरे हमारा कोई सम्बन्ध ही नहीं है।”

“अच्छी बात है।

‘मृतकाम धीरे यहाँ के प्रतिरिक्त दूसरे देशों की स्मृति को बिलकूल अपने अन्तर पटल में न गुरथकर मिटा दो। केवल वर्तमान में निबाम करो। अबिध्व क सातव धीरे उसकी भाषा के साथ भी ब्रीड़ा न करना।

“अपों अबिध्व क्या बुरा है ?”

‘अबिध्व हमारे हाथ में नहीं है। यदि अबिध्व का तुम अपने मन मुझों में रँगना शुरू करोगे तो बोधा का प्रायोगे। —२ अब जाने लगा।

‘शेरव ने प्राणुम होकर कहा— ‘ठहरी मित्र अभी जायी नहीं। कुछ धीरे पूछना है मुझे।

‘अस्वी करो मन्त्र डेर हा रही है।

‘शेरव बड़ा अधीर हो उठा। रोने क स्वर में पूछने लगा— बगपु अन्तजाल में गहरे पड़े हुए मानव के बिधों धीरे अघरों को कैसे धारकर मिटा हुआ ?

“कम से बागुनी में धीरे बृद्ध दृष्टा से।

‘अह कैसे ?”

‘माता’ के नाम की पुड़ाई । जब संकट में पड़ो जोर जोर से माता की जय पुकारो ।

‘धीरे मन्त्रिष्य के बगते हुए बिभ्रों को कैसे मिटा दूँगा ।’

‘माता का नाम ही मन्त्र है । धारमन में धीरे धीरे नहीं जोर-जोर से करना पड़ना बाव को जब लघमें बस पकड़ लोने तो स्वयं ही धीरे धीरे हो जायदा फिर तो वह तुम्हारी सौध में बसने लबेगा । माता की जय हो !’ ५ व जाने सया— माता की जय हो यही हमारे मठ में सिद्धि की चाबी है । इसी जय-नाद पर हम एक-दूसरे से मिलते बिकुड़ते हैं धीरे इसी पर निरन्तर हम छोटे धीरे जगते हैं—माता की जय हो ।

भैरव ने भी हाथ जोड़कर कहा—‘माता की जय हो !’

५ व बहाँ से न जाने कहीं को जाता गया । भैरव लघ एकान्त कटीर में धकेला ही रह गया । उस कमरे में कोई साज-सामान नहीं था । मूमि पर एक लौने में एक अटाई के ऊपर कबल बिछे हुए थे । कछ बहीं पर सपेट कर रक्त हुए थे । एक जाने में एक मुठही धीरे सौटा था दूसरे में एक घाय की छिगड़ी ।

बरती पर सन्ध्या के रंग फैलकर शक्तिमा में छिमटने लगे थे । भैरव कटीर के बाहर जाता पया । रमणीक नदी की चाटी थी । उसका कूटीर लतो ने बीच में धकेला ही था । नदी भी समीप ही थी । बीच में एक छोटी-सी पहाड़ी थी । उसके ऊपर बहुत से मकान थे । एक बहुत ऊँचा मन्दिर-सा बास होता था उसके ऊपर का कलघ धब धी बमक रहा था । नदी उस पहाड़ी के घाघार को ही जाती बास हो रही थी । धीरे भी इनर-उभर कई मकान थे । पहाड़ी पर जाने के लिए घोषान-बवित बनी हुई थी । भैरव को ऐसा नाम पड़ा मधरप ही माता का निवास उसी पहाड़ी पर है ।

उस पहाड़ी के पीछे धीरे विद्यान पर्वत लड़े थे । कुछ बने जंगलों से मरे थे कुछ हरियाली से बह्नीम म । उनके पीछ धीरे भी दूसरे रदों

में खोए हुए पर्वतों के बिनास काकार थे। सबसे पीछे घोर डोंडाई पर हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ बान पड़ती थी। सूर्य की पुनहरी किरणों का सामास घब भी उस पर दिखाई दे रहा था।

उसका कुनैर एकमुँबिला ही था लेकिन उसके साथ घोर भी कई कमरे सम्बन्ध जात पड़त थे। कछ में से बसा सा रहा था घोर कछ में पायें घोर बछियें रम्मा रही थी। मनी बटीर चारों घोर बीबारों से बिरै हुए थे।

भैरव ने देखा चारों घोर घेतों में कई प्रकार के बस थे—कछ पना मे परिपुसं से कछ में तिराबणण जाके बिता देने के बार घरर फूटने मुक हुए थे कुछ ब बुक्तों में स्वेत घोर कुछ क रक्ताङ्गीलिमा मिथित फून तिल रहे थे। भैरव न घनमान लपाया ब पहाड़ी पन फूनों के पेड़ हयि। उनके पना को लाया होगा उसने पर देह घोर फूनों से कोई पहावान न थी उसे।

लेतों में जो घोर गड़े लहूँलहा रहे थे। वही सरना की ब्यारियाँ मे पीतिमा केमने लती थी। भरती पर स पूष जा बुकी थी लेकिन प्रावान में कछ रैपना घोर मगमली बाबना के रंय नाना प्रकार के बिन्न बना-बनाकर मिटने जा रहे थे घोर बुखा में पटी समबत स्वर से या रहे थे घोर वही प्रावान म उठते हुए ब मनारम प्रतीत हा रहे थे।

बड़े घोर घोर निबिन्न परगों मे गण रना के घोर गण स्वरो को लिए हुए ऋषु था रही थी। भैरव ने अनुमान लगाया तमे माहूब देग में बहु मैदान पर नही घानी। बहु कछ डेर तक घातम-बिगमत होकर प्रकृति के उन माया-जाल में कैमता ही रह गया। घंभग घब बड़ बना था। उसने देखा सामने न चाई बिनुसपायी एक हाव में दीपक घोर कमरे में घाम की चैतीग सटकाए उमटे बगीर की दिशा में था रहा। भैरव उमठ घाने मे पूष घान कटीर के भीनर बना गया।

त्रिदालिनी

भैरव के नीतर जाते ही वह व्यक्ति भी वहीं पा पहुँचा। जाते ही उसने कहा— 'माता की जय !'

मैरव ने भी हाथ जोड़कर उसके धर्मिबादन को सौटाया— "माता की जय !"

उसने जाकर हाथ के बीच से उस कटीर के बीच को प्रयत्नित कर दिया धीरे उस कोने में रखी हुई सिगड़ी में धनी सिगड़ी से बने हुए कोमके रख दिए उसके कोयले सुलगाने भर को। उसके हाथ में जो शिगूल था उसे उसने भूमि पर मही रखा, हाथ ही में लिए-लिए उसमें मपने दोनों कर्तव्यों को पूर्ति की।

मैरव उस मौम्य मूर्ति को देखता ही रह गया। नने सिर कमर तक लटकती हुई उसकी केशराशि की कभी धीरे भस्म चर्चित। उसके माने पर भी भस्म की रैसाए थीं। बिलम्बत पैरों तक लटकता हुआ एक चौड़ी बाहु का कुरता उसमें पहन रखा था। उसके मुँह में एक अद्भुत ठेस प्रकाशमान था उसके सारे शरीर में एक सौम्यप्य पृष्ठा पड़ रहा था उसे डककर जितना छिपा देने की कोशिश की गई, वह जतना ही हृदयवैधी हो उठा था। भैरव उसके पीत वज्रस्वभ को देखकर बड़े विस्मय में पड़ गया।

उसने पूछा— "तुम कौन हो ?"

"मैं इस मठ का एक स्वयंसेवक हूँ। मेरा नाम मैरव है।"

"मैरव मेरा भी नाम है। बड़ा विचित्र यह नामों का सामंभस्य है। लेकिन तुम्हें देखकर मेरी धंकाएँ जान उठी हैं। ऐसा जान पड़ता

है तुमने झूठे बेष में घपने को डका है। बेबा ही नहीं तुमने पसत भापा का भी प्रयोग किया है।

“नहीं कोई झूठ प्रयोग नहीं है जो कुछ है सब स्पष्ट ही है।

‘स्पष्ट’ कहाँ है सुन्दरी ! तुम नारी हो और पुरुष की मुद्रिका में क्या ठग नहीं रही हो ?”

‘नहीं ठग रहा है।’

‘कैसी भापा है यह ?’

‘आश्रम की नीति को रखने के लिए उसके नियम की प्रतिष्ठा के लिए, भोले बुद्धक तुम्हें सब सात हो जाएगा। शीघ्र ही।’

‘झूठ के प्रसार का यह कैसा आश्रम का नियम है ? — भैरव में पूछा।

‘आश्रम का नियम है यहाँ माता जी के सिवा दूसरी कोई नारी नहीं रखती इसी की प्रतिष्ठा के लिए मैंने यह बंध बनाया है और मैं ऐसी नापा बोलता हूँ।

तुम यह जो पुरुष का अभिनय कर रही हो

“सावधान !” बीच ही में उस त्रिगुणी ने भैरव की जीभ पकड़ ली ‘मेरे इस अभिनय की सत्यता स्पष्ट करने के लिए तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी।

“क्यों ?”

“सारा बिना एक अभिनय ही है। हर्ष अभिनय करने-करते ही बड़ी मार में प्राप्त हो जाता है। मुझे नारी संबोधन बोले उन्हें नारी समझोये तो तुम मेरा आश्रम इतना बिगाड़ न कर सकोगे जितना घपना पतन।

“द्वैतता है हम आश्रम में दिलाने पर अधिक धोर दिया जा रहा है।”

बुद्धक अगर तुम घपनी भावना में अडिग हो तो यह दिग्गता तुम्हें कुछ भी प्रभावित नहीं कर सकेगा। — त्रिगुणी भैरव बोला।

भैरव ने उसकी बात को तोला धीरे बह समझ गया। उसने उत्तर दिया— 'तुम्हारा कहना ठीक है। यही उपदेश मुझे ५ ज में भी दिया था। तुम ठीक कह रहे हो भैरव यह मेरा मीरव है जो भोला सा रहा था।'

"भाबना को बच में रखो कोई कुछ न बिबाह सकेगा तुम्हारा।"—
त्रिभुलिनी भैरव जाने लगा।

"ठहरो मीरव।

"क्यों ? किसलिए ? मुझे कई जगह जाना है।"

भैरव। तुम मेरे नाम की ही प्रतिष्थिति नहीं हो। तुम मेरे कामना की भी छाया हो। कुछ देर ऐसे ही कड़े रहो।"

"हमें स्वयं समय नष्ट करना नहीं चाहता। तुम्हें भी यही उत्तर सोचना चाहिए।

"केवम एक बात का उत्तर दो।

दूसरा भैरव मुचकराकर बोला— "बहो भी तो। ऐसा जान पड़ता है मागो नहीं तुम्हें देखा भी है।"

"यही मुझे भी भागता है। तुम्हारा बिबाह हो गया ?"

भैरव की सीढ़ों में बस पड़े।

पहला मीरव कहने लगा— "नाराज क्यों होतें हो ?

बिबाह नाम का इस मठ में कोई उष्य नहीं है।

"अब तुम कब घावोगे यहाँ ?"

"जब काम पड़ जाएगा।"—कहते हुए वह त्रिभुलिनी पुरण बेधवारिणी नारी बर्ही से चली गई।

मीरव अपने मन में सोचने लगा— "पुरण के बेध में छिपी हुई या नारी रात्र में दबी हुई धाग की तरह से बड़ी भयानक जान पड़ती है मुझे। किते यहाँ के नाबकों का मन धन्यवा भावनायो में न टूट जात होया ?"

इसके मुक में कुछ गानुरूपता क्या बाधो की नहीं है ? बाधो धन्य बिस्वातबात के बारस मेरे हृदय ल उत्तर गई, उसकी जगह यह क्यों

रही है ?

प्रधानक प्रेरक को याद आया उसका मन प्रतीत में बसा गया था । उसे प्रेरक का उपदेश याद आया । उसने अपना मन वहाँ से खींचकर वर्तमान में रखा । वह जोर-जोर से बिस्मा उठा— माता की जय ! माता की जय !

फिर उसके सामने उसकी भावना में वह बिद्युत्निमी घाबर लकी हो गई । मन-ही-मन उसने उससे प्रश्न किया— हे सुन्दरी इस मूर्खता में मैं कैसे बातावरण में तुमने क्यों मस्म मसकर अपना यौवन की हँसी उड़ा दी ?

माता उसने उत्तर दिया—“हे मोने मुझ क्या तुम प्रकृति के ऐसे घटन मत्स्य का नहीं जानते ? यौवन एक खलिकता है एक मोबा है जो घाने से पहले ही बना जाता है । कोई उसे बन्धी नहीं कर सकता वह कहाँ को बना जाता है यह भी कोई नहीं जानता ।

“बास्वकाल प्रीर बुडाबन्धा भी तो ऐसे ही समय है । व भी तो यौवन क समान ही बचन है । जब बास्वकाल में हम बीडासीन रहे प्रीर बुडाबन्धा में घसहाय प्रीर जबर रह आएंगे तो क्या यौवन का गुण खोह है ? यौवन धार्मिक है इमीलिए तो हे सुन्दरी ! धन घर यहाँ बैठ आया—हम इमीलिए तो हे सुन्दरी ! धन घर यहाँ बैठ

उम बन्धना की सुन्दरी न उत्तर दिया — बास्वकाल एक बिम्बुति की घाय थी बुडाबन्धा बग-जीलना की । इस बीना बिबधतापी के बीच में यौवन ही एक ऐसा समय है जब तुम उस क्षम देने वाले प्रभु को पहचानने की कोशिश कर सकते हो । धनरानी सुविधा में भी तुम हाइ काम की ही प्रीर घाट्टव्य रह गए तो फिर यह नर जगम का सुयोग यों ही बना आएगा ।”

हृत्पु भरव की कुछ याद बजा । वह मन ही-मन बोला— ‘घब क्या हुआ ? उपर मूर्खान में बहक गया था ता घब मविष्य के जाल में लगे । नहीं मैं वर्तमान में जीव माना हूँ । उनक मन में फिर

धीरे धीरे से निकल पड़ा— "माता की जय ! माता की जय !!"

उसी समय—"माता की जय !" की पुकार के साथ ही वह त्रिगुली
 बैरव फिर धा पहुँचा उस कटीर में । उसने हाथ में कपड़े से ढकी हुई
 एक चाबी थी ।

उसने घाने ही कहा— "बैरव तुम इस कोम में चुपचाप क्यों बैठ
 गए हो ? घाय की गिरफ्तो क्या उतनी दूर रहने ली है ?

"उसका क्या करूँ ?

क्या तुम्हें यहाँ जाड़ा नहीं ज्ञान होगा ? मुझ-घाम तो होता ही
 है । वह तुम्हारे नापने के लिए ही यहाँ रखी गई है ।

"धीरे यह क्या लाए हो ?

"तुम्हारे लिए भोजन । हाथ-धैर सो लो । तुम्हें भूख लग गई
 है ना !"

तुम बड़े हृष्याणु हो । —बैरव ने कहा ।

"माता के सिवा यहाँ धीरे किसी की कृपा नहीं मानी जाती ।
 उठो भोजन कर लो ।"—त्रिगुली बैरव ने कहा । घब मी त्रिगुल
 उसके हाथ में था । उसने भोजन की चाबी को एक चौकी पर रख
 दिया ।

बैरव ने उठकर सूर्यही में से पानी लिया धीरे हाथ धोने के लिए
 बाहर चला गया । उसके मन के भीतर नामा प्रकार की विरोधी भावनाओं
 का तुमुन मुड हो रहा था । जब वह हाथ धोकर घाया लो उसने त्रिगुली
 को मुसकराते हुए पाया ।

बैरव कुछ हनप्रय-ना प्रतीठ हुआ । वह उसमें कोई बात करना
 चाहता था कुछ मी नहीं कर सका । त्रिगुली चुन ही रहा । बैरव को
 एक विचार मूळ गया । उसने पूछा— "तुम इस त्रिगुल को हर समय
 घपन माप क्यों रखते हो ?"

"क्योंकि यह मेरा रक्षक है ।"

"तुम्हें कंठी रसा चाहिए ? मूल्यवान घामुपण लो कोई भी तुम्हारे

श्रंग में नहीं है।

"मेरा स्वरूप उसमें कहीं बहुत मूल्यवान है। फिर यह मुझे—इसके
तीव्र मूल्य जकड़ी है। कभी इसकी आवश्यकता पड़ सकती है।
किसलिए?"

"कभी कोई मेरा या अपना स्वरूप मूल्य खरीता है। इसकी सहायता
से याद दिला दूंगा।

"तुम इस कमी भूमि पर नहीं टोकते क्या ?

"यह इसका अपमान है। हाथ में लेने से यह हर समय मेरी चेतना
में सजीव रहता है।

माता जी की जटाओं में घिने मुता है एक भयंकर कामा नाग रहता
है। क्या यह सच है ?

"क्यों नहीं मेरी जटाओं में भी ना है।

दियोगो तो। —भैरव उमक पीछे जाने लगा।

निगूनी ने तुम्हारे ही अपना विशाल धाग बढाया घोर उसकी घोर
धूमकर कहने लगा— मावधान क्यों उनके नाग होल में समय करते
हो ? घरे गए मावक हमना हम प्राणघातक है। बच न सकोने फिर
कभी।

"बीजन की मल्य के बात के लिए ही रचना हुई है। मोन से डरना
बाधरता है। मैं नहीं डरूँगा। तुम्हारा गुण धारण है मैं अपनी
बुद्धिमाना में नहीं तुम्हारी प्रबलता में तुम्हारी घोर विषय रहा ?। यह
केवल एक प्राणित्वता है। "मैंके लिए हम में म बीज बायी है ?"—
भैरव उस भरबी की घोर धावृष्ट हुआ।

हमारे धायम में केवल प्रतिमि के ना में है। प्रयर तुम्हारी भयकर
बाधियों में बीजा हा खुबी हाणी हा इनने ही पाप के लिए तम्हें वेद
बाय बायी में उठा दिया जाना ।"

"पाप ? कौन पाप ?"

“पाप ही वैसा धीर कैसा ?”

“ये दोनों केवल परिभाषाएँ हैं।”

“ठीक है, सबकी परिभाषाएँ समग प्रसंग हैं। सब समग रीति से उन्हें मानत हैं। तुम्हें यहाँ रहने के लिए हमारी परिभाषा को मा ना पड़ेगा।”

“क्या है तुम्हारे पाप की परिभाषा ?

“तुम मुझे नहीं छू सकते हो। कोई भी मरु छ नहीं सकता मरुकर बादिनों के इस मठ में।”

“क्यों तुम घबूँत क्या हो ?

“पाप और पुण्य की परिभाषाओं का तर्क साब नहीं दे सकता। मरु कोई नहीं छ सकता—यह एक घटम विधान है। इसका अपकारी बोधी से उड़ा दिया जाएगा—यह झूठा सत्य है।”

“धीर वो मानसिक जबत में तुमको छू लूँ ? तुमको पकड़कर अपने मन में बिठा लूँ ?—तो क्या होगा ?”

भैरवी ने तुरन्त ही उत्तर दिया—“ता नी नहीं बण्ड !

“घसम्मब है।” भैरव सिलखिलाकर हँस पड़ा—“घसम्मब है ! मन की बाहू पा कीत सकता है ?

“इस समण्ड में न रहो ! सभी तुम इस मरुकरबाद की केवल बाहरी परिधि के बाहर जाइ हो। सभी तुम्हें इसके एक रहस्य का भी पता नहीं है।

“कछ बताओ भी तो।”

“माता के निकट जाने पर माता तुम्हारे मन की पुस्तक क पृष्ठ की मीनि पढ़ सकती है। तुम अपने मन के किसी भेद को मन की किसी तह में छिपा नहीं सकते इसलिए मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूँ।

“मेरी भावना को माता पढ़ सकती है ? कैस मित्र बताओसे नहीं ?”

“घम लोग ही भावना की निस्मारता समझते हैं। वास्तव में

भावना ही कर्म का बीज है। जो-कछ यह सारा भौतिक प्रपञ्च हमारी इन्द्रियों के सामने है वह भावना का ही प्रसार है। विचार की सूक्ष्मता से ही इस सारी स्वतन्त्रता का जन्म हुआ है। जाना जा नो।

आ मूँवा तुम बसी बापो।

भैरबी चौंकर बोली—‘यह क्या कहते हो ? माया ठीक करो अपनी तमी भावना भी ठीक रहेगी।’

‘विचित्र सरय है तुम्हारा। घोर सामने जो तुम इस प्राकृत्यसु मरे कम को लेकर लड़ी हो वह क्या पुस्त्य के परिच्छर में डक गया ? सुम्हरी ! ऐसे कौन-कौन ठगे जा रहे हैं इस मबंकरवारियों के कलब में मुझे भी तो बताओ। —भैरब ने पूछा।’

‘तुम फिर अपनी हूठ पर बड गए हो। तुम हमारे प्रायम में मरती होमे के लिए घाए हो-घाए हो अभी से उसके प्रति तुम्हारा यह किद्रोह ? —भैरबी न रोप-भिभित स्वर से कहा।’

‘तुम कितना ही भेब क्या न करो मेरे ऊपर। मैं एक बात कहूँगा— तुम घेरी बृष्टि में समझदार हा। नर घोर नारी—म सुष्टि के जो मेह है एक भेब को बिलकल मिटा देने से कम भारी घम्याय न हो जाएबा ? लेकिन प्रकृति में कोई घम्याय अधिक दिन नहीं बस सकता। जो प्रतिबिम्बा जपजेमी बलमें तुम्हारा यह प्रायम नहीं ट्ठूर सनेना। शायद इसीलिए तुमने इसका नाम मबंकरबाय रखा है।’

भैरबी हँसकर बोली—‘बड़ा कड़ा विधान है हमारा घोर हम दण्ड सेने में बडी उपना का व्यवहार करत है इसीलिए मबंकरबाडी है।’

‘दील जायगा फिर, मृत्यु का एक ही दिन तो है।’

‘मुबक मुझे तुम्हारी विचारणा पर दया घाठी है घोर तुम्हारी घबस्था पर भी तो अभी कुछ नगी बिमडा है। तुम अपने घर को लौट गकने हो अभी महुंगल।’

‘मैं ५ ब के साथ प्रतिशाबड हो चुका है घोर इसके बिबा सेने तुम्हारे दयन कर बिण है। मैं कड़ी नहीं जाऊँगा घब।’

क्या तुम्हें धपने माता पिता का मोह है ?

“वे सामग्य तुम भयंकरबादिमा से भी अधिक भयंकर हैं ।

भैरबी धपनी हँसी को धास बनाकर बोली— ‘ऐसा अजीब जीवन देने कोई नहीं देखा अब तक । क्यों तुम्हें धपने प्राण प्यारे नहीं हैं ?

“तुम्हारे प्रेम के लिए इतनी बड़ी कीमत चुका देने को तैयार हैं और तुम्हारे फिर भी कोई प्रतीति नहीं उपजती ।

“तुम फिर बचने सगे ।

‘ये मेरे प्रेम के गीत हैं मझे ही इनमें कोई ताल और तुक न हो हे क्यसि !”

भैरबी की मौह तन गई—“सावधान ! मैं सीधा माता के पास जाकर तुम्हारे बिह्वल धमियोग रक्त हूँगा अगर तुम मन्दिप्य में सावधान रहने की प्रतिज्ञा न करो तो ।

अगर तुम सबम हो जाओ तो मेरे प्राणों के व स्पन्दन कतिता और गीत में भिन्न पड़ेंगे—हे क्यसि !

‘तुम्हें कोई भय नहीं ?”

‘प्रेम निर्भयता ही तो है । भयंकरबादियों के बोध में मुझको भय नहीं है ।

‘मैं अब तुम्हें कोई धक्कर न दूँगा । सीधा माता के पास जा रहा हूँ ।”

‘मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ ?”

‘तुम नहीं जा सकते !”—भैरबी धपना जिगूम हुआ मैं जमकाती हुई दूध पानों से जमी गई ।

भैरव भोजन पर टट पड़ा—“भोजन तो सुस्वादु है । इसमें किसी रस का अभाव नहीं जान पड़ता । फिर यह भयंकरबादिता केवल गारी के ही बहिष्कार पर क्यों टट पड़ो है ! देखूँ तो सही यह माता से पाकर क्या कहती है ? जो भी बहे बहने दो । मैं कुछ न छिपाऊँगा । प्रकृति के इस रहस्य को छिपा भी कौन सकता है ? दुर्रों के कपड़े

“नहीं।”

“क्यों नहीं दी ?

“मैं सोचता हूँ मुझे तुम्हारा विवाह कर क्या लाभ होगा ?

“तब तो तुम्हारे लिए मेरी धीर भी अधिक भक्ति हो गई। तुम्हें बन्ध है। एक ही बात बराबरी की है। मुझे तुम्हारा यह भावना बुझा देस परमत्र नहीं है। अबर तुम मेरी बात मानो तो

क्या बात है तुम्हारी ?”

“जलो हम दोनों साथ-साथ स्वर्गारोहण को चल जायें यह बरती बड़ी कठोर है।”

“कैसे स्वर्गारोहण ?”

हिमालय पर चढ़कर बहु मार्ग मिल जाता है। बिबर से होकर पाण्डव गए थे। कितना सुन्दर यह हिमालय है घाब तक मैंने इसे नहीं देखा था इसलिए मेरे दूसरे विचार थे।”

“तुम बड़ी मजीब बातें करते हो मैं जना।

“अब तो तुम कल न कहोये कितनी से मेरे विषय ?

“भाव तुमने अपनी बाखी धीर भावना को संभव ही रखा है।”

“बाखी को रखा है भावना की बात तुम्हें कैसे ज्ञात हो गई ? क्या तुम भी भावना को पढ सकते हो ?”

मैरवी बानी— तुम धायद अब सीमा छोड़ दोये। मैं जना जाता हूँ।” मैरवी जसी गई।

नैरव के नास्ता कर चुकने के बोड़ी देर बाद ५ व घा पहुँचा उस देखते ही मैरव ने कहा— “अब देखी की !

५ व ने कल धारधर्य से सठकी घोर देखाकर कहा— “अब जाता की मिल। तुम यह किस देवी की अब पुकारते हो ?

“ओ देवी मैंने जहाँ देखी है।”

“तुम एक ही पत में यह कहाँ बहन गए, बिब ?”— ५ व ने पूछा।

'जिसे देखा है मैं उसी को जय पुनार रहा हूँ । मैं प्रकृतिवादी हूँ, कल्पना को नहीं मानता ।

'किसे देखा है तुमने ? कौन देखा है यहाँ हमारे प्राथम में माता को छोड़कर ?'

'तुम क्यों नहीं जानोगे उसे ? वह त्रिभुवनी ? उसे छपबेध में तुम लोगों ने जितना डका है वह उतनी ही कुल पड़ी ।

'मित्र धर तुम इस प्रकार बहक जाओगे तो कैसे वर्तमान को संभाल सकोगे ? धीरे कैसे मैं तुम्हें बीसा के लिए तैयार कर सकूँगा ?

तुम्हारे इन वर्तमान की संभाल म क्या रखा है ?

'तुम अपने को प्रकृतिवादी कहते थे । प्रकृतियत वर्तमान ही मैं हूँ । मूल धीरे सक्रिय वे दोनों एक कल्पना है ।

'तुम्हारा दर्शन समझ नहीं पड़ता । कभी तुम भावना को ही सब कुछ बनाते हो कभी कल्पना से जुगा करना मिलाते हो ।

'भावना वह विचारणा है जो कर्म में बदलती जाती है धीरे कल्पना केवल हवाई उड़ान है जिसका नीतिक जगत से कोई सम्बन्ध ही नहीं है ।'

'माई मेरा वर्तन शासन में इतना प्रम नहीं है । मैं तुमसे पूछता हूँ वह त्रिभुवनी कौन है ?

'तुम्हारी दुर्बलता है मित्र । उसकी कल्पना मैं न को बाधा । तुम्हें पठाना पड़गा ।

'मुझे तो वह मेरी सक्रिय ज्ञान पड़नी है । मैं उठे कहीं धीरे देखा है ।

'धम्मम्ब ।'

'तुम जन्मजन्मान्तरों की बात मानने हो । किसी जन्म में जरूर मैं उठे देगा है मित्र ।'

'तुम्हें अपने मन के मूल धरनी बद्धि के हाथ में देने सकिन है । सा नहीं टि बाहर की कोई चीज तुम्हें बसीटती टिरे ।'

“फिर वह त्रिभूलवारिणी कौन है ?”

त्रिभूलवारी कहो ।

त्रिभूलवारी ही सही । वह कौन है ?

“वह एक स्वयंसेवक है ।”

“मैं उससे प्रेम करता हूँ ।

‘तुम उससे प्रेम नहीं कर सकते । तुम वैदिक प्रेम की बात कर रहे हो—तुम्हें स्वार्थ का प्रेम ।

‘मैं ही मैं विभूत प्रेम की बात कहता हूँ ।

‘उसके कहने की धारकता ही नहीं रह जाती । वह एक में बाहर ऐसी भावसा से केन्द्रित भी नहीं होता । सृष्टि पर सर्वत्र ही तुम प्रेम करने के लिए हो । वह एक मामी हुई बात है, उसे कहा नहीं जायगा—कहते ही वह प्रभु हो जाता है । कहने ही से उसमें भावसा समा जाती है ।’

“क्या बन्धु ।”

“उसका त्रिभूल बड़ा टीका है वह तुम्हारी भावसा को छेदकर पार हो जायगा । केवल वर्तमान में रहो । तुम्हारे भुक्त का यही एक मन्त्र है ।”

“मृतकाल को तो मैंने मिटा दिया है मित्र । उसके वे जो स्मृति में बुरे हुए बहुत मरे हैं उनमें मैं वर्तमान को ही पीस-पीसकर मर दे रहा हूँ । घोर यह भविष्य मेरे त्रिभूल धाकर बड़ी तो वर्तमान बनता जा रहा है । बहुत सुन्दर जो कहोगे तुम तुम्हारी भावा भावने के लिए मे प्रतिभाबद्ध हो चुका हूँ ।”

“मैंने माता भी से तुम्हारे लिए बातें की हैं । वह सभी कार्य-कारण है । धीरे ही सब बन्दे परसठ मिल जायगो तो मैं तुम्हें बुसा से पाऊँगा ।

“तब तक मैं यही क्या करूँ ?”

“जो तुम्हारे मन हो ।”

“वहीं मैं जाऊँ या चकटा हूँ ?

“नहीं सब जगह चौकी-पहरा है । बिना प्रवेश-बिह्व या प्रवेश-शब्द के तुम कहीं न जा सकोगे ।”

“बन-पर्वतों में तो कोई नियम न होया ?

“वहाँ क्यों होया ? लेकिन तुम्हें कहीं जानी नहीं घाबरपकटा क्या है ?”

“यहाँ बैठे-बैठे अकेले मन पबरा उठमा ।

“मन के भीतर बस पको बम्बु ! वहाँ क्या बाहर से कुछ कम बिस्तार है ? सारा बाहरी जगह जसमें समाया हुआ है । मन के प्रत्यक्षार में दीपक जसामो भावना का फिर सब दृष्ट पर बैठ ही मिल जायगा ।”

“लेकिन तुमने भूत धीरे मन्त्रिण्य के बिजों का नियम किया है ।

“भूत चिन्ता का दूसरा नाम है धीरे मन्त्रिण्य भाषा का ये दीनों मन के मूल है । गुड सातिवकता वर्तमान की है—वही ती घसती बग्यन मुक्त भावना है कोई उलझन ही नहीं ; बिना प्रयास ही सब-कुछ होने लगता है ।

“मैं कुछ नहीं समझता तुम्हारी बातें ।

“प्रयास करो प्रीति रखा प्रतीति उपजाया तो सब कुछ हा जायगा । सब कुछ समय में घाने सवेगा अपने-घाप । सच्चे जिज्ञासु पर रहस्य स्वतः ही खुल जाता है ।”—५ अ जाता गया ।

बैरव कुप देर बैठा रहा । बाहर बूँप घा गई थी । वह वहाँ जाता गया । गाँव बनों को जा रही थी । कोई भी उस जमकी तरह घबकाए में नहीं दिखाई दिया । उसे पूर में ठेकी माजूम देने मकी वह फिर उठकर भीतर जाता गया ।

क्षपोत्तमा

अंत में घोंघ घम ऊँचाई और बृह-व्यास के कष्टों को सहन करते हुए वे दोनों धारमा के सम्बन्धक क्षपोत्तमा के मठ में पहुँच ही ठे गए ।

उसकी स्थिति अपने-आप बोल उठी थी । कसबन दूर ही से बिस्माया—“रिबूबी मैं तो समझता हूँ मठ यही है । लेकिन इसके पास के मैदान में वंश फैसाए यह जो विशालकाय बिड़िया पकी है, हमारी पटीला के लिए महाराज ने कोई सीमा तो नहीं रखी है ?”

रिबूबी बोला—“मुझे तो यह कोई मशीन बाल पकड़ी है । मैंने स्थापना में जकर इधका बिच देखा है ।

“मशीन ? इतनी बड़ी मशीन ? एक हजार बुसी भी तो इसे हम पहाड़ों पर नहीं बढ़ा सकते फिर घाई किस छस्ते ?”

रिबूबी ने कहा—“बसो उसके मजबूत बाकर अपना भ्रम दूर कर लें ।

कसबन सम्मत नहीं हुआ—“अपने इष्ट से बहकौ महीं माई । सीधे मठ को ही बसो ।

दोनों चरघर ही बढ़ । छोटा पर निर्माण में बड़ा ठोस बह मठ था । उसके निकट ही हिम-सिंचित पाठ स्टैटिक के रंग में एक बल की बारा लहपती थी । पैड़-पीधों का कहीं नाम नहीं ।

बह इमारत तीन तल की थी । एक तल धरती के नीचे था अतक्य नाम था पैठ-पाताम । दूसरा तल का कहसाठा था दिस-दुनिया और सबसे ऊँचा था नीलाकास में मरुत ढँचा किए हुए था उसकी सजा

थी—सिर-सरन ।

बाहर से केवल वो ही तस उन्हें दिखाई दिए । वे दोनों मठ के द्वार पर वा पहुँचे । द्वार बन्द था । उनके बाते ही वहाँ एक गंगा मनुष्य उन्हें दिखाई दिया । उसके सिर पर सम्भे-सूखे बाल थे । दाढ़ी मूँछ का पता नहीं था । कमर में भड़ की खाल सपेट रखी थी ।

कमजान ने केवल माँघ के द्वारे से रिबूची को बता दिया कि वह गुस्सेन है बिनको मजबूत बनाकर वे दोनों पर छोड़कर चम पाए है । बोना उनके चरणों से ऐस खिच गए जैसे चुम्बक के त्रिरि पर दो छोटी-छोटी लोहे की कीर्से खिच जाती है ।

कीन हो रे तुम ? मेर वेरो में क्या झूठ रह हो ?"—धीर भी कर्कश स्वर में उमने पूछा ।

वई बार उनके चरणों में माथा टककर कमजान ने बचाव दिया—
“महाराज हम घापकी ही धाखा-वालन के लिए महाँ पाए है ।

‘मेरी कौसी धाखा ? क्या मैंने डोर पाल रख है वो उन्हें चरणों-के लिए मुझे किसी ग्वाले की जरूरत है ? या मेरे लती हाती ? जो मुझे हज जोतने के लिए हाली चाहिए । पापो भापो वहाँ से पाए हा ।

‘कहाँ जायें महाराज इमाच कही पर नहीं है —रिबूची ने उत्तर दिया ।

कमजान बोला— महाराज हमें ता घाप ही ने बुलाया है ।

महाराज ने कहा— ‘तुम क्या आभाये महाँ ? मेरे पाठ बूझ नहीं है घोर पाठ-मडीम में भीम माँघने के लिए कोई गाँव भी नहीं ।

कमजान बोला— महाराज हम घापके घासीबाँह पर ली जायेंगे ।”

महाराज घट्टहाम कर ईन पड़—“धाखाग !” उन्होंने हाथ पकड़ कर कमजान को उठा लिया धीर फिर रिबूची को उमने हुए बोले—
“धीर तू धरमी ठो कह ।”

रिबूची बोला— ‘महाराज मैं भी घापका बात है ।

अकिन तुम मेरा घासीबाँह किम चीज के गाय आभाये ?

रोनों हाथ जोड़कर लड़ रहे हुए चुपचाप ।

महाराज ने पूछा—“छद्म कितनी पीते हो ?”

कमजल ने कहा—“नहीं महाराज बिलकुल नहीं ।”

महाराज ने फिर पूछा—“क्यों नहीं पीते ? चर्मसम्पत्त नहीं है क्या ?

दोनों चुपचाप लड़ रहे ।

महाराज ने फिर पूछा—“मांस खाते हो या नहीं ?

कमजल ने कहा—“खाते हैं महाराज ।

अहिंसा के धर्म में उसका ज्ञाना कैसा है ?

कमजल ने इधर-उधर देखकर कहा— महाराज इन ऊँचाइयों पर लेनी तो लड़ नहीं सकती । बीबन धारण को मांस खाना ही पड़ता है । खाने के लिए नहीं खाते ।

“फिर छद्म क्यों नहीं पीते क्या उसने कुछ परमी नहीं मिश्रती इस छद्म में ?”

कमजल समझा महाराज धामर उसकी परीक्षा में रहे हैं वह चुपचाप रह गया ।

चार कुत्त प्राकर महाराज की कमर पर बँधी उस ज्ञान पर बार बार मुँह मारकर उसे खींचने लगे थे । महाराज का मन कमजल और उसके साथी के साथ बागों में अधिक भगा था । उन्होंने फिर कहा—
“पाम-वड़ीस के गाँवों से धगर जो की मीन माँगकर ला सको तो रहो नहीं । मेरे पाम बहुत पुराने बड़े-बड़े मटके हैं यहाँ जो सड़ाने के लिए । क्यों हो राजी ?”

रिबूची मसकराते हुए सामने हाथ जोड़कर लड़ा था पर कमजल लड़ संकोच के साथ रिबूची की घोट में छिप गया था । इतने ही में एक कुत्ता उनकी कमर पर घटकी हुई भेड़ की ज्ञान को लेकर भागा और तीनों कुत्ते उस एक के पीछे दौड़े ।

“तुम मुझे हाँ तो क्या मुझे लाड़ा नहीं ममता ? —बहते हुए

महाराज भी उस कुत्ते के पीछे बीज ।

कसबन और रिबूची ने अचर पीठ कर सी । उन्होंने अपनी हँसी को बाँटों में पीस लिया । वे दोनों अपने-अपने मन में विचारने लगे अगर जरा भी महाराज का अपमान मन में सोचने लगे बड़ा मारी घनिष्ट हो जाएगा ।

कसबन ने धीरे-धीरे रिबूची से कहा— 'देखो तो कहीं महाराज इसी महाने से बने न पए हों ।

रिबूची ने पूछा— 'क्या कहीं गुरुदेव संतोसामा हैं ?'

'धीर नहीं तो कौन ?

'ऐसे मरे ?

इसी समय कमर में कहीं खाल बाँधे वह छिद्र घाते दिखाई दिए । कसबन और रिबूची बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर उनके सामने गढ़े हो गए ।

उन्होंने घात ही मुँह सम्भन्न करते हुए कहा— 'ता क्या हीरा पीठी सोने चाँदी रेशम धीर कहीं में बका हुआ धाबेमा बह ?'

'धमा ! धमा ! महाराज लमा !'—कहते हुए दोनों उनके चरणों पर गिर बड़े ।

'हूँ ! संतोसामा से जान न पहचान बने घाण तुम उखटे घर । तुम्हें रास्ता कहीं में मालूम हो गया ? —संतोसामा ने पूछा ।

'सब घानही क्या न महाराज !'—कसबन ने बड़ी विनम्रपूर्वक कहा ।

रिबूची ने भी कहीं दुहट्या ।

'छिद्र क्यों नहीं पहचाना तुमने मुझे ?'—तुछ ठेकी क नाब संतोसामा बोले ।

कसबन बहने लमा— 'मैंने पहचान लिया था महाराज घाणको ।'

'तुमने कहीं देला मुझे ?'

'घाणने मेरे घर दर ही मुझे बर्तन दिया ।'

“तुम्हारे घर में कब ध्याया ?

स्वप्न में ध्याए महाराज ध्यान में दिखाई दिए ।”

स्वप्न-ध्यान को तू सच्चा समझता है ? मूरख कहीं का ।

स्वप्न और सत्य में नाम और रूप का ही अन्तर है, महाराज ।
 ध्यापके नाम और ध्यान में अंतर कोई सच्चाई न होती तो हम कैसे यहाँ
 तक आ जाते ? —कनकन ने कहा ।

“तू बड़ा होधियार है । अच्छा सच बता क्या तू अपनी ताकत से
 ही यहाँ तक आया है ? —संपोत्तमा ने पूछा ।

‘भापकी सब माझूम है । ध्यापकी आज्ञा-पालन करने को हमें
 बताना ही होता । डोल्मा माता ने हमें राह दिखाई । क्योंकि अब हम
 ध्यापकी धारण में आ ही गए हैं हम पर क्या कीजिए ।’

संपोत्तमा ने पूछा—“तुम किस मतलब से ध्याए हो यहाँ ?”

‘भापकी सेवा के लिए ।

‘झूठी बात ! कीमिया का रहस्य जानने को ?’

‘नहीं महाराज ।

फिर छद्म पीने को ?

‘नहीं महाराज ।

‘धमरत्व की बूटी माझूम करने को ?

‘बहु भी नहीं ।’

‘फिर क्या अपराधों के साथ नृत्य करने को ?

‘हमारे अपराध क्षमा कीजिए, महाराज । हम आत्मा का रहस्य
 जानने के लिए आए हैं ।’

‘यह तुम्हारा घोर स्वार्थ है । तुम्हें आत्मा का रहस्य अब तक नहीं
 मिस झकटा जब तक तुम झूठों के हित के लिए प्रयत्नशील न होओगे ।’

‘हम झूठों के हित के लिए निरन्तर बेव्या करोगे ।’—कनकन
 ने बिस्बास दिलाया ।

‘क्या करोने ? क्या सम्पत्ति है तुम्हारे पास ?’—संपोत्तमा ने

पूछा ।

“हमारे पास बिहार की सम्पत्ति है । —कमजबन ने तत्क्षण उत्तर दिया ।

‘तुम बिहार की सम्पत्ति को हर बड़ी विश्व-मंगल के लिए खर्च कर सकोगे ?’

‘हाँ पुन्डेव ।’—कमजबन ने हाथ जोड़कर कहा ।

‘धीरे तुम्हारा यह साक्षी ?’—खानासामा ने पूछा ।

‘हाँ महाराज यह भी । —कमजबन के उत्तर पर रिबूची ने भी प्रथम हाथ जोड़ दिए ।

विश्व-मंगल के लिए तुम क्या बिहार करोगे ?

कमजबन बोला— ‘घर-घर भोगा में सदुभावता जैसे ईश-देश की बातियों का बलह दूर हो ऊँच-नीच बड़े-छोट का भेद भाव मिट जाए ।

धीरे तुम ? —खानासामा ने रिबूची से पूछा ।

‘सम्राट में सपन्न बड़े ठीक समय पर न ज्यादा-न कम बर्षा हुआ करे जहाँ सिबाई का प्रबन्ध हुआ सके वहाँ नदियाँ घोड़ी जाएँ व्यापार में ब्याबा मनाफा न भ कोई चीजों में मिलावट न रहे सबके दिल में भयवान् का डर रहे दुनिया से भयानक बीमारियाँ दूर हों । —रिबूची बोला ।

‘लेकिन तुमने तो यह बड़ी मेहनत का रास्ता लिया । कोई एक मंत्र नहीं मामूम है तुम्हें ?’—खानासामा ने पूछा ।

‘मुझे मामूम है । कमजबन बोला— मणि पद्य है ।

खानासामा डूमने लगा— मणि क्या है धीरे पद्य क्या है ?’

कमजबन ने प्रत्युत्तर में कहा— मणि प्रकाश है मगनात् का प्रकाश धीरे पद्य हृदय-पद्य ।’

‘हृदय-पद्य किसका ?

‘व्यक्ति का ।’

‘तुम्हारा ?

कुछ द्विचक्रबाह्य के बाह कलजन में कहा—“ही सुखेव !

“बस तो हो गया ! प्रकाश भगवान का हृदय तुम्हारा यही तो बीर स्वार्थ है । बिचक का कन्याण कहीं पर रहा ?”

‘अपराध क्षमा हा देव ! अनेक एक में ही निहित है । बाहर भीतर का ही पैमान है ।

यह मूम नहीं है ब्याख्या है ।

‘हम बोना मूल की पिछा के निमित्त आपके चरणों में बिनत हैं । आप हमारे ऊपर दया करें ।

“इन्द्रियों के भ्रम से अब तक नहीं निकल सकते तुम्हें मूल प्राप्त नहीं हो सकता । जब तक तम्हारे घनने विषय मर नहीं जाते तुम बिचक का कन्याण नहीं बगा सकते अपनी नास में ।

‘हमें इन्द्रियों के भ्रम से निकाल दीजिए, हमारे विषय नष्ट कर दीजिए ।

‘बुद्ध की चरण बाधो ।

‘बुद्ध की चरण में है ।”

‘बुद्ध कर्मा का मर बुद्धा । नवान बस की कामना करो । मैत्रय की साधना करो । बिचक-संगत की सबसे बड़ी भिदि बही है ।

‘हम मैत्रय की कामना करेंगे ।

“मोक्षम् मणि पत्ते हूँ ।” अपोमामा बोला— ‘मणि ही मैत्रय का प्रकाश है, पद्य बिचक का कमल है उसकी पैरुवियाँ उसकी रिघाए हैं । मंत्र बही है साधना के अन्तर से सब कुछ बदल जाता है । भीतर के हाने से ही बाहर है तो बिना बाहर की सत्ता के भीतर भी कुछ नहीं है ।”

पाशों के घावेघ में कलजन में कहा— सुखेव की जय हो !

‘मैत्रय की जय बहो वह पुत्र का भी पुत्र है ।

“मैत्रय की जय !” कलजन पीर रिबूजी एक साथ बोले—“जस होने वाल बुद्ध की जय !”

“बहु होने वाला नहीं है । —संपोसामा ने कहा ।

कसबन और रिबूची ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा ।

“बहु होनेवाला होता तो सब क्यों न हो जाता ? संसार में एसी चाहि चाहि मची है । बाठियों में ऐसा कमह फेला है । मनुष्य मनुष्य को प्या जाने के लिए तैयार है । बहु स्वयं पैदा नहीं हुआ न होगा । उसे पैदा किया जाएगा ।”

“उसे पैदा किया जाएगा ?”

“हाँ यह प्रजातन्त्र का मग है । सबकी बयौती समाप्त हो जाएगी । जिस तरह राजर्षा समाप्त कर दिए, राजस्व प्रजा के हाथ में था गया—ऐसे ही बेबस्व क्या हमारे अधिकार में नहीं हो जाएगा ? अब हम बलाई सामा में प्रबतार की कल्पना कर सकते हैं तो क्या हम मंत्रेय की नहीं बना सकते ? बहु हमारे ही बीच में है । बड़ी तेजस्विता से संपोसामा ने कहा—“मैंने मिट्टी के सँकड़ों मंत्रेय बना दामे ।

कसबन बोला—“मैंने आपके बनाए मंत्रेय के बसंत किए हैं ।”

दिए होंम । बस उसी में प्राण देने बाकी है । तुम कराग इसकी साधना ?

“हाँ दोनों ने जबाब दिया ।

“तुम इसीलिए यहाँ पाए हा ?

दानी ने हाथ जोड़े ।

संपोसामा ने पूछा—“तुम्हारा क्या नाम है ?

कसबन बोला—“मेरा कसबन है और मेरे साथी का रिबूची ।”

प्रच्छा तब दोनों अपपाप मेरे पीछे-पीछे चल घायो ।” सगो सामा पावे-पावे बना ।

उन दोनों के हर्ष का ठिकाना न था क्योंकि जिन लिए उग्होंने उगने कष्ट की यात्रा की थी वह मफल होनी जान पड़ी । वे संपोसामा के पीछे जाने लगे ।

प्रधान संपोसामा का कुछ धार घायो । उग्होंने मुड़कर पूछा—

“एक बात ! तुम कहाँ से भाये हो ?”

‘स्वप्ना से ।’

“बही घोर कौन तीन हैं तुम्हारे ?

“नजदीकी रिस्ते के नाम पर कोई नहीं ? — कलजन ने जवाब दिया ।

“घोर सम्पत्ति के नाम पर ?

‘सम्पत्ति के नाम पर भी कुछ नहीं ।

अपोलामा फिर घामे को बटा— ‘भच्छा चले भायो । उसने बाटे-जाते पूछा— ‘किसी मठ में दीक्षा ली भी क्या ?

‘नहीं महाराज !’

फिर फिर क्यों बुटा रखा है ? — अपोलामा फिर ठहर गया ।

दोनों चुन रह गए ।

‘विवाह नहीं किया ? बास बह्याचारी हो ?

‘विवाह किया महाराज दोनों की स्त्रियाँ चल बसीं ।

‘हा हा हा ! स्त्रियाँ चल बसीं ! अपोलामा बोले— ‘लेकिन मन में कौ नारी चल बसी या नहीं ?

‘चल बसी महाराज वह भी ।’—रिबूची ने उत्तर दिया ।

‘भयत तुमने अपोलामा से भूठ बोला तो तुम्हें मठ के भीतर के घब घून में डाल दिया जायगा ।

कलजन ने रिबूची की बात सही ली— ‘महाउज नारी के उच्च रिक्त स्थान में हमने माठा की मूर्ति स्थापित की है ।’

‘लेकिन हमें मनेय के लिए माठा की क्या जरूरत है ?’

कलजन ने अपोलामा की बात काटनी उचित नहीं समझी और कहा— ‘ठा मनेय को भाप मिट्टी की मूर्ति से बना देंगे ?’

‘वह तो बहुत सी बना चुका है ।’ बड़ी जराती से अपोलामा ने कहा— ‘लेकिन कुछ काम चलता नहीं ।

कलजन ने कहा— ‘फिर वीसी घापकी घाजा हो देता ही किया

बाप ।

“सैसा ही क्या किया जाय ? हमारी तुम्हारी हकियत बड़ी सख्त थीर पुछनी पड़ गई है । उनमें हम संवेद्य की कलम नहीं बढ़ा सकते । मगर किसी के बालक को यहाँ हम से पावें थीर उसमें संवेद्य की धारणा का धाकाइन घुसू करेँ तो उसका सम्बन्धी हमारी सारी क्रिया बिगाड़ देंगे थीर फिर इतने प्रबलारी सामा को तिम्बत में फिरले रहते है, उनमें थीर हममें क्या अन्तर रहा ?

“मगर किसी बिना माता-पिता का सिधु हमें मिल जाय तो ?

“तो हूँ उसका मानव ज्ञानी होने तक उसके भीतर बडलक के संस्कार क्या देते । ज्ञान हो जाने पर वह फिर अपने भीतर संबोधितत्व की डग मेटा । कलजम बुझ हम सबके भीतर है—लेकिन सुप्य थीर मूर्च्छित । पच्छा बली । ज्वाबा बातो में कुछ नहीं होता । हूँ अपनी इन सुप्य के द्वार पर पड़ है । जैसे पाछो इसके भीतर । — संबोत्तामा पड़ कइते हुए बड़ी तबी में उस सुप्य के भीतर पड़ गए । उन्होंने अपनी मजिल का द्वार बंद लिया ।

रिबूची थीर कलजम भी बडी ताबबानी से तटोमते हुए वेद-वाताल की उस धारणाकार थीर बरबू से मगी सुप्य के भीतर मुसे ।

ऊपर में संबोत्तामा की धाबाज भा रही थी— ‘यह संवेद्य थीर मम की सुप्य है । इसमें तुम्हें तब तक रहना पडना जब तक तुम अपने भीतर के इत मनु के ऊपर बिजय न पा सोये । — इसके बाद फिर संबोत्तामा की धाबाज नहीं सुनाई बी ।

कुछ बेग प्रतीया करने पर कलजम ने कहा— ‘रिबूची तुम्हें कसे गए क्या ?’

‘सैसा ही जान पड़ता है । धंधरे की कोई बात न थी बड़ी बरबू धा रही है ।’

‘कछ ममय बाद इसका धम्माम हो जाने पर फिर वह अपनी पंख नहीं धलेयो ।’

“किस चीज की बरबू है यह ?”

सूखे मांस की जान पड़ती है और कुछ सड़े हुए घमम का भी आभाव मिलता है।—कलजग ने समाधान किया।

“कलजग मुझे भय भय रहा है।—उसकी टटोसकर रिबूची ने कहा।

कलजग बोला—एसा न कही माई। यह घमम कारणार कसी भय के बदले में मिसा है।

“मूक भी भय रही है और बाबा भी।”

“वे भी तो सब भय के ही परिवार में से है। इन सबकी जीठना है।”

“धीरे-धीरे ही तो बीते जा सकेंगे। कस घोर इबार-उबर टटोल में। मायद इस मुझा में पुष्प-बासिबा के लिए कही कस सोने-जान का ठौर ठिकाना हो।”

“बसो बाहर खंम्या हो गई जाब पड़ती है। दिन में धाबर इस मुष्प में इतना धंवेरा न होमा।”

रिबूची बोला—“किस तरफ को जा रहे हो ?

“जिपर भी बड़ बामे कोई बानी-गहबानी बिभापे तो हूँ नहीं।”

“बरा ठहरो में तुम्हारा कया पकड़ लूँ।” रिबूची ने कलजग का कस्य पकड़ लिया।

कलजग के हाव किसी चीज पर पड़े—“यह क्या है ? एक मटका सा जान पड़ता है। बहुत बड़ा है। जान पड़ता है इसमें छड़ है।”

कलजग किसी गहरे विचार में पड़ गया।

रिबूची बोला—“कलजग, तुम चुप हो गए, क्या सोच रहे हो ?”

कलजग विचारों में डूबना-उठरता हुआ बोला—“अच्छ नहीं।”

“मेरे हाव सूख मांस के संप्रहृ पर है। बसो सामे-पीमे की बिष्ठा यो गई। मुष्प की छत पर से लटक रहा है जनका बोभा यह कही जाना का सवता बह हमारे कामे के लिए है मा उन शक्ति कुत्तों के ?”

कलजग चुप था।

रिबूषी बबराकर बोला—“यह शीपक तो है।”

“नहीं यह मेरे साथ ही घासा है, मेरे साथ ही जला भी चायया। कतब्य क्या बताई ? यह सारी गुफा तुम्हारी है जो चाहे करो।

उस कमरे में कुछ बानबों के बेहरे बे । व दोनों बडे ध्यान से उन्हें देख रहे थे।

“ये तुम्हारे साथ करन व लिए है । इनको पहनकर तुम यहाँ से बुरी धात्माओं को घासानी से भगा सकोगे । खपोलामा ने एक कुँटी से मनुष्य की जोगड़ी की खंजरी घोर बाँप की हड्डी की बनी बाँसुरी निकाली । खंजरी रिबूषी का देकर कहा— ‘सो इसे बजाओ ।

रिबूषी उसे बजाने लगा ।

खपो ने बाँसुरी कसजन को देकर कहा— ‘जो तुम इसे बजाओ ।’

कसजन ने उसे बजाने की कोशिस की पर वह ठीक-ठीक नहीं बजी ।

खपो ने कहा—“दोनों एक-दूसरे का साथ कर बजाओ तभी एक-दूसरे को ठाकठ से दोनों को सहायता मिलगी घोर बाजे ठीक-ठीक बज उठेंगे ।

दोनों ने बजाना शुरू किया पर नहीं बजे ।

खपोलामा ने कहा—“तुम बक गए हो । चाय वी सो ।

दोनों न चाय पीकर बाज बजाए फिर भी नहीं बज । खपोलामा ने कहा—“उस उड़ के मटर के पास जाकर बजाओ वहाँ बज उठेंगे ।

“नहीं” कसजन ने विरोध किया—“वहाँ डर लगता है ।

“क्यों ?

“वहाँ एक घोरत घडी है वह कौन है गुल्लेब ?

खपोलामा हँस पड़ा—“है है-है ! घोरत वहाँ है । वह ती मिट्टी की एक मूर्ति है । मैंने उसे बड़े घोर कुछ जेवर पहना दिए हैं । जलो, उबासे में बिना देता है तुम्हें ।”

तीनों उबर गए । कसजन घोर रिबूषी ने देखा सन बटक के पास व बड़ी सुन्दर मूर्ति लगी थी । उनके जीबित होने का बोधा हो रहा

बपोतामा

२२७

मा । कलबम ने उस मटके में का सेल पड़ा—“भोरम् मणि पद्मे हूँ !”
उसने बपोतामा से पूछा—“पुरबेक इसमें क्या है ?”

“इसमें छड है और क्या ? तुम उसकी यम नहीं पहचानते ?

“छड के मटके में यह मंत्र क्यों लिखा है ?

बपोतामा शीपक लेकर जम दिए बड़ी तेजी से ।

वृ मरम अर्चित विदुसिनी भैरव व मानस में बड़ी पहचान में समा गई थी वह उससे तमाम धनीत पर बहुत परवा डामकर सामने पड़ी हो गई थी । उसकी घोट म उसके माता-पिता पर-दार घोर बासी सब छिन गए व । मृतकाल उसकी अजना पर से पुन गया था । ज ने उसे वर्तमान को पकड़कर उस पर म्भिर हो जाने को कहा वह बड़ी कठिनाता में पड़ गया । भैरवी उसे निरंतर भविष्य क मनीहर विष दिखाने लगी ।

“भविष्य वर्तमान का ही वह भाग है जिसके ऊपर राशि की छाया पड़ी है । यह कबम समझने की बात है । भैरवी के प्रेय की डोर में बिबा हुआ मैं जिस भविष्य की घमर घुगी पर बिहार कर रहा हूँ वह वर्तमान का ही एक घंग है । मैं क्या बुबिधा रानू ? क्या मन में संघष उपजाऊँ ?” — भैरव मात्रन की प्रतीक्षा करता हुआ सोचने लगा ।

घब उसे नीतर जाड़ा सगने लया था । वह उठकर फिर धूप में जाने को था कि किसी की घाहट मुनाई ली । “घायर वह घा गई !” — विचारना हुआ भैरव संभलकर बैठ गया ।

कोई घुमरा ही था जो इस समय मोशन लाया था । बोला—
“घायरा मोशन है कहीं पर रानू !

“ररा वा बहीं पर ।” बड़ी र्त्ताई से भरव बोला—“कौन हो घुम ?”

“स्वयमिबक हूँ ।

“वह कहीं पर ?”

“वह कौन ? घाँसे बिस्पारिन कर स्वयमिबक बोला—“यहीं मात्रा की ली लोड़कर घोर कोई नारी नहीं रहती ।

शैरब ने मन-ही-मन कहा— ये सब बने हुए हैं। पुरुष के बेश में कमी क्या नबमुबती छिप सकती है ? फिर य सबके सब ऐसा क्यों कहते हैं ?

स्वयंसेवक बोला—“घापकी सुराही में पानी ला देता हूँ।

‘ठहरो।’

घाप स्नान करेमे क्या ?

‘हाँ स्नान सी कबेमा। पहले एक बाठ का उत्तर दो : वह भिमूल पाये कीन है ?

‘भिमूलपायी ? स्वयंसेवक हँसकर बोला— ‘उमी नए घामे मामों की यही भ्रम हो जाता है। घाप उन्हीं के बारे में पूछ रहे थे ?’

‘हाँ कीन है वे ?’

‘वे नारी नहीं ह दिखाई कुछ बसे ही देते हैं। वे हम सब स्वयं सेवकों के प्रधान हैं। मैं अभी घापके लिए गरम पानी ला देता हूँ बूप में नहा सीजिये। —स्वयंसेवक नमा गया।

शैरब मन में बोला—“कैसे संयेंचिस्वास से इनकी बुद्धियों में तामे सपा दिए गए हैं।

स्वयंसेवक ने बूप में पानी रस दिया बोली शौर संगीछा सी। शैरब ने स्नान करते हुए उससे पूछा— ‘यहाँ घाभम में क्या होता है ?

‘हम स्वयंसेवक हैं। सदा शौर चौकसी हमारा काम है। कुछ नहीं जानते।’

‘कितने बरस से यहाँ रहते हो ?

‘साठ बरस से।’

साठ बरस में कुछ भी नहीं जान सके।

‘द्वार बन्दकर, घायनों में परदे लगाकर न जाने भीतर क्या करते हैं। नभी कट-कट सुनाई देती है बस बहुत धीरे-धीरे बोलते हैं।

‘कीन सोप भीतर जाने पाठे हैं ?

‘जो मेंबर है कार्यकारिस्सी के।’

“घटे, छठ छान हो गए। कुछ अनुमान भी नहीं समा सके तुम लोग यमी तक।”

हो कुछ संभाव है। एक काली भीर एक मन्दर को मुरखों की लोपड़ी लड़ाते हैं ये लोग।”

“काली लोपड़ी कैसी हुानी है ?

“काले घाबमी की।

भरव हँसा— मुझे मासूम नहीं था— बाँके घाबमी की छापड़ी का रंग बामा होता है। पच्छा भीर क्या करत है ?

“भीर बम बनाते हैं।

“बम किससिये बनाते हैं ? —भीरब लड़ा चुका था। उसने पाबामा बही छोड़ दिया।

स्वयमेवक बोला— आ लोग मरीच प्रका पर प्रम्याय करते हैं उनके ऊपर छोड़ने हैं। वे बाँके बामे हा बाँके मन्दर।

तुम तो करते थे काली भीर मन्दर लोपड़ी को मराने हैं।”

बहु बुनरी बात है। —स्वयमेवक भीरब का पाबामा फीचने लगा।

भीरब भीतर में घबनी रीमी बमीच भी निकाल लाया— ‘दृष्या कर ह्ये भी था दा जरा गायन सदाकर। बहुत रीती हा गई है।

स्वयमेवक बोला—“घोहन मुन्तारन दे जाऊगा।

जम्ही दे जाना। मरे पास चीर कुछ लड़ा है।”

स्वयमेवक चला गया। भीरब भावन करम लगा। मर्यकरबासियों के लक्ष्य पर नहीं पहुँच गया वह। गाबने सदा—“बड़ी विचित्रता का समावेश जान पड़ता है यहाँ। घबनी लड़ा म इन्होंने राजकीति घब गाबन और घब की विचित्रो मिसा है ?”

गा-नीकर उम जाड़ा लगा चीर बहु फिर धूप में चला गया। स्वयमेवक कुछ देर में उमके बपटे मगाकर दे गया। बपड़े पहनकर। गाबा कुछ दूर तक पहाड़ों पर मीर कर पाई।

सबंकरबाबियों की बास्ती से दूर एक पहाड़ की घोर को चला वह । बसंत के प्रवेश पर भाँति भाँति के नबीन पक्षे अनेक कुँखों ने पहन लिये थे । भूमि पर छोटे-छोटे फूलों के पत्तीके बिछे थे कुछ छोटी-छोटी झाड़ियों में रंग बिरंगे हुए थे और अनेक कुँखों से सदे पैड़ ऐसे जाम पहते थे मानो रंग बिरंगी चुनरियाँ पहनकर भारियाँ बनदेबठा की पूजा करने जयल में अभी आई हूँ ।

शैरव बड़ी उमर के साथ पहाड़ पर चढ़ गया । मूढ सुवासित पवन वह रही थी । उसकी भाँति बूँसों की मनोहरता में जो गई । वह बराबर एक के बाद दूसरी चढ़ाई पर चढ़ता गया ।

दूर पर हिमालय का दुस्य बिसाई दे रहा था । एक ऊँची चोटी पर चढ़ गया था वह । वहाँ विधाम करने लगा वह । कहीं जग में कोई या रहा था । वह उस पीठ के चम्बों का तो कुछ नहीं समझ पर उसके स्वर्णों में उसे एक निश्चितता और एक परिपुष्टता के बचन होने लगे । बड़े ध्यान से शैरव उस शीत को सुनने लगा और उसके गायक को बुँदने लगा ।

कभी उसे उस पीठ में रमणी के कड़ का बोका होने लगा । कुछ बाबें पर्वत की उम चोटी पर चढ़ रही थीं । शैरव गीत की मोहनी में मूग्ध होकर उस गायक को बुँदने लगा । उसके मन में एक सुरद्वारी-सी उठ रही थी—“क्या यह संभव नहीं है यह गायिका वही विभूतिनी भी हो सकता है । उसके हृदय की बेधना उसे पुरुष के कण्ठे पहनाकर नहीं मिटा दी जा सकती । वह प्रकृति में मानव धरणी बेधना कम करने आई होगी ।”

सञ्चानक शैरव का एक घिसा-सड़ पर बैठा हुआ एक बालक बिसाई दिया । वह बालक के पास गया । उसने उससे पूछा—“वहाँ अभी कोई था क्या ?”

बालक एक अपरिचित को सामने पाकर कुछ तन्त्रित-सा हो गया ।
“कौन था क्या था बालक ?”

कठ मुमुक्षुकर उसने उत्तर दिया— "मैं नहीं जानता ।"

"तुम या रहे थे ?"

बासक ने कोई जबाब नहीं दिया ।

"बकर तुम ही थे । बड़ा सुस्वर तुम्हारा कंठ है । तुम्हारी बोली न समझने पर भी मुझे वह गीत बड़ा प्यारा लगा । तुम फिर वा दो तो ।

"तहाँ उसकी क्या बकरत है ? जब तुम उसे समझने ही नहीं तो ।"—बासक बोला ।

"पीत में उसके शोनों से अधिक शिव उसकी तज होती है बासक । जैसे पक्षियों के मीठे गीत कीज उसकी भाषा की समझना है ।

संयोग से इसी समय कुछ बिरिये बोल रही थी वाम क बर्धों में झड़का कहने लगा— "हम तो इनकी बानी समझत है । तुम घायल कही शहर में घाए हो ।

"हाँ घाया ता महार स ही हूँ । क्या घहरबाने पाँज-कान नहीं रखत तुम्हारी तरह ?

बताओ फिर यह बिड़िया क्या कह रही है ?

शेरब ने ध्यान लगाकर जम बिड़िया की घाबाज का मना । वह कठ भी स्थिर न कर सका । उसने पूछा— "क्या कह रही है ?

"यह कह रही है" बासक ने बिजय क र्व क घायल कहा— "कही हा ?"

"क्या माने हुंग हमरे ?"

माने ऐसे ही निकम माने हैं क्या ? परमे हम बात का बताओ यह पती मरी कहु री है ?"

"हाँ ऐसे ही कह रही है ।"

"कही हो ? पती कह रही है । इसके साथ एक कथा है—एक राजा का मद्राया या घोर एक प्रजा की लटकी । बानों में बड़ी मीठी थी । बानों बड़े गुस्कर थे । राजा का मद्राया जिनना सध्यम या प्रजा की लटकी बननी ही गरीब थी । बानों क माना गिना बानों की मना करते

वे कि वे साव-साव न बोलें । —कहते-कहते बालक चुप हो गया उसका ध्यान फिर उस चिड़िया की ओर हो गया जो बड़े करुण स्वर से नीले आकाश में पुकार रही थी—“कहाँ हो ? कहाँ हो ?

मैरब ने बालक का ध्यान उधर से हटाकर कहा—‘हाँ माई फिर क्या हुआ ?

‘लेकिन वे मातनेवासे कब थे ! जोटी-छिपकर फिर लेलते घोर रोज उन बोगों को मार पड़ती । राजा कहता—‘अपने से छोटे के साथ क्यों लेलता है ? प्रजा का गरीब व्यक्ति कहता—‘उतने बड़े भीमान के साथ क्यों ललती है ? एक दिन उस गरीब ने उस लड़की को बहुत पीटा । उसी समय वह राजकुमार उसे धरैय से बुला ले गया । दोनों नदी के किनारे घोष-मिथोनी खेलने लगे । लड़की राजकुमार की धाँवें बंद कर छिपने के बदले नदी की गहराई में नूर गई । राजकुमार सकेत पाकर उसे बुँडन बना । जितनी भी समय दिघाएँ घोर त्वाग से राजकुमार ने लोज लिए, पर उसकी धँपिनी का कहीं पता ही नहीं बना । जब उसकी धाँवें बंद गईं तो फिर वह पुकार-पुकारकर उसे ललाघ करने लगा—‘कहाँ हो ? कहाँ हो ?

‘उसके रँर बक गए घोर लसबा पला रँप गया । उसकी लली का कहीं पता नहीं बना । उसे नदी के लल का कुछ लोज लो हो गया था ऐसी कल घाबाब सुनी थी उसने । लीट-फिरकर वह फिर फिर उसके लल में लूँक रहा था । लेकिन न-जाने कहीं को वह गई वह । एक बार उसे उसक लूँके में लंसि हुए कल लपा के लूल नदी के एक लूल से लगे हुए दिखलाई दिए । वह ललबा पकड़कर बीठ गया ।”—कहते कहते वह भरबाहा भी कुछ बेर अपने कहानी के गायक की मुझा में बीठ गया मानो वही वह बुँडनेवाला राजकुमार था ।

मैरब उस बालक के लोपेपन ल लम कथा में मानो इतिहास लून रहा था बोला—‘क्या फिर राजकुमार अपने घर को लीट गया ?’

‘नहीं लीटा । जब धँपेय हो गया लो लड़की के माता-पिता लड़की

को डूबने लगे और राजा के भोकर-बाकर प्रकाश लेकर राजकुमार को । राजकुमार चुप रह गया एक पेड़ पर बह गया और मीठा पाकर—
 'कहाँ हो ? कहाँ हो ? —कूटा हुआ पेड़ पर से नहीं मैं कूद गया । कई दिन तक संभ्रा के समय उस पेड़ के पास एक घाबाज घाकर पूछनी—'कहाँ हो ? कहाँ हा ? और बोधी बैर बाद एक दूमरी घाबाज घपने छीए स्वर में उतर बेनी—'यहाँ हूँ ! यहाँ हूँ ! फिर वे दोनों घाबाजें मित्र गईं और वे बानो दूमरे जम्म मे जमे गए । यह चिडिया घब भी उसी सगिनी को प्येत्र रही है—'कहाँ हो ? कहाँ हो ? तुम समय रहे हो न चितने साफ हमके स्वर है । ऊर बबल गया पर स्वर बही है । यह राजकुमार उसी किसान की बस्या को प्येत्र रहा है—
 'कहाँ हो ? कहाँ हो ? और यह उने नहीं मिमता । मैदान न डूबते डूबत यह यहाँ पहाड़ पर घाई है । जब घमिषों में घनी घुप और तेज हो जापपी ता यह और ठडे हिमरेषा को बली जायपी फिर जाडा बड़ने पर मैदान को ।"

भैरव उम चरवाहे की कम्मण-जम्मना पर धारम बिम्भुत होकर मोचने लगा— 'प्रेम के पीन ना बादी स्वर यथा बिरह की घूम्यता है ।
 कहाँ हो ? कहाँ हो ? एक दिन के बाद दूमरा दिन एक देम के बाद दूमरा देघ—और एक जम्म के परबाल् दूमरा जम्म—यह घनस्तम्भ्यपी चरकर ! यही है प्रेम की माधंरता ।

यह चरबाज का बासक भी न जाने किम चितन में बिनीम हो गया था । घबानक फिर बह पधी ना उगा—'कहाँ हो ? कहाँ हा ?

दोनों का स्वन टूट गया । बानों घपनी घपनी मागगिक स्थिति से छूटकर बरली पर गिर पड़ ।

भैरव बड़ने लगा—'बया बासक कहानी समाप्त हो गई ?

"एक हिमाब मे हो गई और एक हिमाब से नहीं ।

'बया हुआ फिर ?"

बासक ठंडी घाड् सेकर उठ सड़ा हो गया— 'बुछ घन न हुआ

तुम्हें यह कहानी सुनाकर, तुम नहीं समझ पाए — वह जान पड़ा।
 मेरे ने लक्ष्मी प्राप्त कर उनका ज...
 हीनियार जान पड़त हा बाबक...
 करने का बी कर रहा है।

मइका एक इबदाक का देह की छत्र म...
 मिनाबद्ध क ऊपर बही भैरव नी...
 मीति। बाबक भरव की बिनयगायना का...
 पास ही एक दूसरे देवदास क यह क...
 मसबा पड़ा देखकर मेरे ने पूछ —

“भूमिया देवता का था।
 “यह टूट क्यों है ? क्या इस देवता क...
 “जब तक भूमि है तब तक भूमिया के...
 तक उसके पूजा करनेबाम भी।

“गा” बिनने दिया छिदर म...
 “बराह बाबकने मयकरबाशिश की टली की...
 “न माया मे ?”

“इन मयकरबाशियों मे ?
 मइके न बुपचाय मिर हिमायां।
 “क्यों ? क्यों ताइ रिमा न माया मे

“महीन एक बम बनाया था उसकी माया धात्रमाने का।
 देवता क घर में ही धात्रमाना था क्या ? य कैम माय है ?
 “यै क्या बनाई ? मैं ता मही का शोक है।
 मेरे ने जप हिसकिबाकर पूछ — य माये मही की क
 “है।

“य बम बतात है ?”
 “है बम में बनाते हैं। धीरे ” बाबक ने बहुत धीरे से मेरे के
 कान में कहा—“धीरे से कई राग्यो के आभी कितक बासते हैं धीरे कीट

२३८

भैरव बहो पर बैठे ही बा कि ठिर उस किसी का गीत सुनाई दिया उसने पापे व्यक्तित्व मे पूछा— 'गीत गा रहा है यह ? वही बालक बरबाहा है क्या ? वह तो नहीं है लेकिन इस बार यह निश्चय ही गायी-कण्ठ है । मैं जोना नहीं पा सकता । कहाँ ? किस तरफ ?

भैरव उठा घीर उस गीत की पाग को पकड़कर उस पायक की छोप मे चला । वह कुछ ही मीने उतरा बा कि उसे वही विमलित्नी गानी हुई घाती दिल गई थी । मंगल मे मन में सोना— 'घर यह मने देल मेरी तो फिर इनके गीत में यह रम न रहेगा । उसने छिपने की चेष्टा की पर वह जि न सका । वह उसकी गगिन के बाहर की बात हो गई ।

विमलित्नी ने उस देल लिया । देखते ही उसके घररा पर का गीत को गया एक धीरा समकान म । वह अल मर उस देगनी रही ।

भैरव ने कहा— "तुमने गीत क्या बन्द कर दिया ? पापा वह बन्द मपुर है ।"

नहीं घब उतकी कोई प्राववपवता नहीं है । मैं इन स्वरों प्रकाश मे तुम्हें ही सुँड रहा बा । जब मेरा मतलब हल हो गया तो नि उस गीत को क्यों न बन्द कर दूँ ?

"क्योंकि मैं निरन्तर तुम्हारे ही चिन्तन मे हूँ इसीलिए तुम मन्डे रही हो ।"

"तुम फिर घग्नी मापा के प्रसाद उपयोग से घग्नी कमुपिन म को प्रकट कर रहे हो ।"

'माबारी है । लेकिन मैं उन घग्नों मे बहुत घग्ना हूँ को नि मे कुछ घीर मन्डों में कुछ घीर है । मेरी बाली घीर बिचार बा तुम्हें ?"—भैरव न बहुत निरर होकर पूछा ।

विमल का तनु ...

“क्यों विभूतिनी ! इन सूक्ष्म एकांठ में तुम मुझ क्यों बूँद रही हो ? तुम्हें कोई मय नहीं लगता ? सायब इसमिए कि समझाएँ क लिए पुस्य हो धीर नासमन्ध पक्षुओं के लिए तुम्हारे हाथ में यह तीखा विभूत है । —कहते हुए भैरव उसके विभूत को “कड़मे तथा ।

है ! है ! तुम यह क्या करते मने ? मुझे मही सू सकता तुम !

“क्यों मही सू सकता ? मैंने मुता है तुम्हारे कलब में जब नाथ होता है तो धाबे पुस्य तारिखी के परिच्छद पहन कर बाकी धाबे पुस्यो के साथ नाथ करते है । यह तो बताओ ठब तुम किस बख में सामिल होती हो ? धीर उस नाथ में क्या कोई किसी का नहीं उठा ?”

“यह किसने कहा तुमसे ?”

“किसी ने कहा हो । क्या मूठ है ?

लेकिन कोई अपरिचित धीर हमारे आधम का धवीकित मुझे नहीं सू सकता ।”

“मैं क्या अपरिचित हूँ ? तुम्हारे साथ मेरे आत्म-आत्माभरों की पहचान है ; यह बई तुम्हारे आधम की बीजा—मैं प्रेम को सबसे बड़ी बीजा समझता हूँ । अगर मुझे तुम्हारा प्रेम प्राप्त हो जाय तो तुम्हारे आधम के समस्त द्वार मेरे लिये धापस-आप खुल जायेंगे ।

यह विभूतिनी धपनी नीची नजर कर बरती पर कुछ हँकने लगी ।

बरती में क्या हँक रही हो ? मेरी धाँकों की बहराई मैं दखो । मैं पूछता हूँ क्या तुम पुस्य हो ?”

विभूतिनी ने धीरे-धीरे धाँके उठाकर भैरव को देखना चाहा । उसकी धाँके फिर नीची हो गई । उसने नीची दृष्टि कर ही कहा—
‘तुम बड़े निभीक हो तुमने मेरा साहस तोड़कर रख दिया ।

कैसा तुम्हारा साहस ?”

“तुम्हें देखकर मेरे मन में कुछ दृसपी ही जायता हो गई ।”

“कही नी तो ।”

'यमर हमारा मन एक है तो भयंकरबादियों का मठ भी तो बन ही में है ।

वहाँ ?

'नहीं कोई हमारा कुछ बिबाद नहीं कर सकेगा । मिर्क तुम प्रतिज्ञा करो ।

कैसी प्रतिज्ञा ?

कि तुम मुझे बोला न शामी ।

'हम दुर्बल भावना को पान्धो के पाखंडर से सञ्चित कर देते हैं ।"—
बह त्रिमूर्तिनी बोली ।

'अच्छा प्रेम की स्वीकृति दो ।'

'किसे तच्छ ? वह भी तो एक पारख ही है ।

'मरा मन नहीं मानता ।

'क्या कहूँ पहल तुम बठामो ।'

'बहो कि तुम मुझ से प्रेम करती हो । —भैरव ने बड़े धामह से सससे कहा ।

'मनुष्य प्रेम करने के लिये ही तो बनाया गया है । इसमें कहने की क्या आवश्यकता है ? जिसके हृदय होना वह प्रेम करेगा ही । जिसके माँस होंगे वह बेगेगा ही ।'

भैरव ने हट करी—'नहीं तुम्हें कहना ही पड़ेगा ।'

'मही कि मैं कबल तुम्हें बेगता हूँ । धीर सारी सृष्टि के लिये तुम मुझे धंथा बना बना बाहते हो । यह कैसा प्रेम है ? यह प्रेम नहीं है यह वा पार स्वार्थ है—शुभ्रणा है ।

इसी समय पैर पर बैठा हुया परी कूज पठा—'वहाँ हा ? वहाँ हो ?'

भरव बोला—'रत तच्छ ! ऐसा प्रेम कर रहा हूँ मैं ।

मैं नहीं गमम्य ।'

'एक से मच्छा प्रेम करने पर ही तो सारी सत्ता से प्रेम किया जा

सकता है। यह पत्नी अपनी प्रेमिका को खोज रहा है तुम्हें यह प्रेम-कथा मासूम नहीं है ?”

मासूम है हमसे क्या हुआ फिर ? इससे तो मेरा ही पक्ष बृद्ध होता है। यह प्रेम की सुखता है कि इस प्रकार बम्ब-बम्ब-मातर में यह अपनी प्रेमिका को ढूँढता ही रह गया। अगर इसके प्रेम का विस्तार हुआ होता तो पग-पग में इसे इसकी प्रेमिका मिल गई होती। क्या इसी तरह तुम भी मन्त्रे ढूँढते ही रह जाना चाहते हो ?”

“महीं तुम निरन्तर मेरे साथ रहोगी।”

निरन्तर कोई किसी के साथ नहीं रह सकता।”

“अच्छा तो तुम जमी जाओ। मैं इस पत्नी की माँति तुम्हें बगल में खोजता ही रह जाना चाहता हूँ।”

तुम्हें धाव पाणि को माता जो के समस्त उपस्थित किया जायगा। मही संदिग्ध कहते भाया हूँ जवा जाऊँगा।”

ठहरो। तुम जा नहीं सकती।” बड़े तीव्र साधन के स्वर में मैरबी ने कहा— “तुम एक पय जाने नहीं बढ़ सकती।”

“क्यों नहीं बढ़ सकता ?”

“मैं शीघ्रकर तुम्हें हूँ सूँघा घीर जो यह बूझने की छूट से अविनि हो जाने का अतिमान तुमने बना किया है, मैं उसे घभी बूर-बूर कर सूँघा।”

मैरबी सहमकर कड़ी हो गई।

“इस एकान्त में तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता घीर तुम्हारे इस लौह विधुत की मुझ बरा भी परना नहीं है।”

तुम बड़े अमानक जाप पढ़ते हो। सो मैं ठहर गया। लेकिन तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ मेरा पत न तोड़ना।”

“वह एक कोरा संभविरवाच है।”

इसी समय फिर वह पत्नी आकाश मार्ग में बोला— “कहाँ हो ? कहाँ हो ?”

भैरवी बोली—“यह तुम्हें क्या के प्रेम की कामना बोल रही है। तुम्हारी भी यही कामना है। इसी को तमने प्रेम का पवित्र नाम दिया है। क्या तम ऐसे ही उसे तुम्हें को ईदते रह जाना पसन्द करते हो? या अपने प्रेम को बगुन-बगुन में बिखराकर उसकी परिपूर्णता प्राप्त करना चाहते हो?”

“मेरी कामना है हाथ काम का बना फिर मैं एक धार्मिकवादी प्रेम से तुम्हें हा सजता हूँ? मेरी व्यास बल्यता से नहीं बन्ध सकती। मैं जब चाहता हूँ तो क्या घायल है? यह मिट्टी जल चाहती है धारण नहीं।”

“हे मूस हुए मानव! तुम यह क्या नहीं हो। यह सिर्फ एक खोम है—एक मनुष्य है। इनके भीतर रहनेवाली जो प्रकाश की निधि है वही तुम हो। क्यों तुम्हें इस पर्वत की तरह जल के बबकुरा में मटकते रह जाना ही पसन्द है?”

“अब प्रकाश बिना मनुष्य को सोम हम उसके भीतर की निधि को नहीं वा सकते ऐसे ही बिना हाथ काम की तृप्ति फिर हम प्रकाश को नहीं वा सकते। हे विगुमिनी जोरे धारण की होइ मैं कुछ नहीं हा सजता। बात ऐसी करो आ व्यवहार में वा सरे।

“कहाँ हो? कहीं हो?—ही धारणों में ईदते रहना ही तुम्हारे नाम में लिखा है। मेरे यही गमक में घना है।”—बहुतर भग्नी जाने सभी।

“सिद्धि यह तभी मभव है जब तम जल में डूब कर घायल ही कर कर वा ऊँचे पहाड़ में फिर कर धारणकर कर सोनी।”

ममक लेनी धारणकर्या की क्या पड़ी है?

“ता मुझे ही यह धारण हैनी पदवी। सखी बात है सभी कुछ दिन का मभव में तुम्हारे मोच सने क निचे देता तो हूँ। उसके बाद यही जिनी पहाड़ के भीचे मेरी मगत की गिड घोर नीचड परिजमा करते होने। घोर इन निचरे में रहनेवाली धारण दिन रात तुम्हें भरती रहेगी। देना ताच तुम कहीं जापोवी कीन तुम्हारी रक्षा करेगा?”—

रब बोला ।

भैरवी खींच उठी ! वह बीड़कर ऐसे मापी जैसे कोई कुँटवार
जलकर घास की सपटों से भागता है— हे भगवान् ! बचाओ !
बचाओ !

भैरव हँसकर बोला—“भौर यह तुम्हारा विद्वान ! सिर्फ तुम्हारा
गार है तुम्हारी टक नहीं ।”

भैरव ने उसका पीछा नहीं किया । एक दृढ़ हुए पैर के तने पर बैठ
कर सोचने लगा— घाब रात को मुझे माताजी के मन्त्र उपस्थित
क्या आयगा । लेकिन वह नही मामूम अभियोम का उत्तर देने क
लये मेरी पेसी है या मठ की घठरंग सभा में मरछी के लिय ?”

वह उठकर चला । थोड़ी दूर जाने पर फिर उमने देखा एक पेड़
के सहारे उसकी घोर पीठ किए वह त्रिभुमिनी खड़ी है । उसका एक
पाप कंधे पर त्रिदूल को धारण किए वा घोर दूमरा हाम पेड़ के सहारे
उसकी गाल पर धाभित ।

भैरव ने उमे देखते ही दूर से धावाज बी— क्यों ? तुम घमी यहीं
हो !

‘हाँ ।’

त्रिदुकी पत्नीधा में ?

“तुम्हायी ही तो । तुमने मेरे ऊपर कोई जाहू कर दिया है । सोचती
हूँ यकागग ही तुम्हारे साथ भगड़ा मना बुधिमानी नहीं । लेकिन
एक प्राबंता है । —वह जूय हो गई ।

“क रे न तुम्हारी प्राबंता नहीं वह घाजा है ।”

“तुम्हें क्या मुझे बरनाम कर देने में मुय भियेया ?

“तुम्हायी बरनामी मेरा मरछु है ।”

“मैं तुम्हें बीधित चाहती हूँ ।” ;

“तुम चाहती हो ?” भैरव उछल पड़ा—“तो तुम्हायी चाहना का
में विनाम सेवक हूँ जो कइोमी वही कइेया ।”

युग-चेतन्य

भैरव के मन में अब यह सरेह बरा भी नहीं रहा था कि माता जी के सामने जने अभियोग का उत्तर देने के लिये जाना है। अभियोग केवल उस भैरवी की घोर गं ही समय का घोर वह भैरवी अब उसके अंगर शत्रु हो गई थी।

जब दोनों साज-साज पहनाइ पर ग उतर रहे थे भैरव ने अमक निराकरण के लिय उससे पूछा— 'माता जी के सामने मेरी पछी किस लिय है। तुम बता सकती हो ?

भैरवी चौक पड़ी बोली— 'यह क्या कहते हो ? तुमने क्या क्या कहा था ?'

भैरव घबराकर पूछने लगा— 'क्या कहा था ?'

यही कि तुम मझे बदनाम न कराव ।'

भैरव की ममक में बात का गई। इतने घपनी माया की टीक करते हुए कहा— 'अब न होवी यह भूल। माता जी ने मुझे किस लिय बुलाया है, बता सकते हो ?'

'तुम्ह मठ की चतईन मरुपता का जायगी ।'

'यही क्या कला पढ़या ।

'सबग पहले तुम्हारी परीछा ला जायगी ।

'कौसी परीछा ?'

'तुम्हारे माहन की ।

'किस प्रकार ?'

'तम्हे लोहे की एक लाम टीक की घपनी जाप के एक बाप ने ला

कर बूसरी घोर निकाल देती पड़वी ।”

“मैं मर जाऊँगा ।

“नहीं कुछ न हागा । साहस रखने पर केवल एक सूई न बुझने से अधिक पीड़ा न होगी । हृद्दों में बुझाया नहीं है । मांस को छेदकर बूसरी घोर निकाल देना है ।

“अब मेरे पीड़ा हुई । मैं सहन न कर सका घोर मैंने इतकार कर दिया तो क्या होगा ?”

धैरवी ने कहा—“यह माता जी की इच्छा पर निर्भर है । वे तुम्हें मरती भी कर सकती हैं और घस्वीकृत भी ।

मरण ने पूना—“और कौन-सी परीक्षा है ?

धैरवी ने उत्तर दिया—“असंत हुए घपारों को दोनों हाथों की धैर्य में जठकर मातृ-मस्तिष्क की एक परिजमा करनी होगी ।

हाथ बलिये मही ?

“असकी बसा हो जाएगी ।”

“और क्या परीक्षा होगी ?”

“कुछ तुम्हारी कल्पना और स्मरण-शक्ति के सम्बन्ध की ।”

फिर ?

“कुछ और प्रश्न पूछे जायेंगे—तुम्हारे धारे में ।”

घगर में झूठ बोल गया तो ?

“माता जी के सामने कोई झूठ नहीं बाल सकता । वे सबके मन के विचारों को बाल लेती हैं ।”

“वा उन्हें पूछने की क्यों आवश्यकता होती है, वे बने ही क्यों नहीं बाल लेती ?”

“मैं नहीं जानता ।”—धैरवी बोली ।

“और क्या होगा फिर ?”

“फिर तुमसे कुछ प्रतिज्ञाएँ कराई जाएँगी ।”

“कौन-सी ?”

घाजगम प्रविवाहित रहने की एक ।

भैरव ने कुछ मोचकर कहा— 'प्रेम विवाह नहीं है । मैं घाजगम प्रविवाहित रहने की प्रसिद्ध कर लंया । प्रेम न करने की प्रतिज्ञा तो नहीं करनी पड़ेगी ?

'मैं नहीं जानता ।

घण्ट उ जाने मेरे-नुम्हारे बीच के प्रेम को जान लिया ता ?

तो बोनो को गोभी से उगा दिया जायगा ।

अब बता दो क्या वे मेरे मन के भावों की जान लेंगी ? भैरव ने बड़ी व्यथा के साथ पूछा ।

'घबर नुम उमक नामने घण्टे मन की भावना को जानूत रखावे तो अरुत जान मेंगी ।

'भावना का जानूत रगना क्या ?

निरन्तर स्पष्ट मोचन रूना और क्या ?

'और कूमरी कील-सी प्रतिज्ञा करनी होनी ?'

'इस्य का मसह नहीं करना होगा ।

वह मसह माग्य है सजिन एक वाक बनायो मही मठ में जो वाली गिरक वाले जाने हैं धीर नवनी माट छोटे जाते है—वे किग लिए ?

'मैं नहीं जानता ।

मसह्या का बेतन देन क लिए ता मही ?

मभी मसह्य घनाननक है । अब इस्य के मसह का लियेव है ता फिर बेतन केमा ?

'और कील-सी प्रतिज्ञा है ?

'ऐसे ही धीर भी कुछ है

बोना भैरव के बट र के निरुट घा मल से । भैरवी ने बट दूर पर न ही घाना मार्ग घनम करने के लिए कहा— 'अब मैं यही से जाना हूँ ।

'इत बटीर एक छो बचा न ।

बह राजी न हुई । बोनी—'नहीं न जाने य लोय क्या मसह्ये ।

मैरब ने भी अधिक आग्रह नहीं किया। मैरबा मठ की घोर बली गई। आज ही भावना में यह पहली बार इस प्रकार संकोच का प्रथम रूप। मैरब अपने कटीर में सौट घाया।

संख्या निकल थी। वह बैठा बैठा साधने लगा— 'मैरबा के प्रेम के लिए मैं समाप्त परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो सकता हूँ। उसका प्रेम एक घोर मेरा सखि है तो दूसरी घोर प्रेम मेरी दुबलता सिद्ध हो गई ता क्या होगा ? माता जी के सामने उन बात का मोर्चा ही नहीं।

कछ दर बाद उसका मित्र ३ ब आ पहुँचा। घाते ही उसने कहा— 'मित्र तुम्हारे ऊपर माता जी बड़ी सख्य हुई हैं। इतनी अच्छी कोई भी बीसा के लिए नहीं बना गया। तुम प्रथम ही बचाई के पात्र हो।'

३ व मैरब का हाथ पकड़ लिया था। उसने बड़ी उदासीनता में अपना हाथ उठाकर कहा— 'लेकिन मित्र मुझे तो बड़ा भय लगता है।'

'भय कैसा ?'

तुम्हारे इस व्यवहारबाद मैं। नाम ही क्या है और तुम पूछने हो भय कैसा ?'

निर्धन दुस्मनों को डराने के लिए क्या नाम रखा गया है। शास्त्र में हम विदुष मानवता के पक्षपाती हैं। बस्ती पर के भाई-बारे के समर्थक हैं। बगवाण, ब-छाने कासे-गोरे की विभक्तिओं के पोषक नहीं हैं।'

'लेकिन माग में जो मयावक सखि परीक्षाएँ हैं उनका क्या होगा ?'

'ब सभ नाममात्र की है।

'नहीं।'

'किसने यह दिया तुमसे ?'

'मुझे मायम है।'

'माता जी के सामने क्यों भी ता। भयम है माता तुमसे कुछ बात कर लेने पर उन परीक्षाओं को अच्छी न समझे। वे काट भी ही जा सकती हैं। सबसे बड़ी परीक्षा भावना की है।'

'भावना की परीक्षा ? बन्धु देवो मैं विद्वे का मनुष्य हूँ कहीं पर

‘माजन्म पबिवाहित रहने की एक ।’

भैरव ने कुछ सींचकर कहा— प्रेम बिबाह महो है । मैं माजन्म पबिवाहित रहने की प्रतिज्ञा कर लँवा । प्रेम न करने की प्रतिज्ञा तो नहीं करनी पड़ेगी ?

मैं नहीं जानता ।

‘अगर उहूँने मेरे-जुम्हारे बीच के प्रेम को खाम लिया तो ?

तो दोनों का पोली से उदा दिया जायगा ।

‘सब बता दो क्या व मेरे मन के भावा को खान लेगी ? भैरव ने बड़ी व्यथा के साथ पूछा ।

‘अगर तुम उनके गाममे अपने मन की भावना को जाकृत रतावे तो जरूर खान मयी ।

‘भावना का जागृत रयना कैसा ?

निरन्तर स्पष्ट साधन रूना घोर क्या ?

‘घोर घुमरी कौन-सी प्रिज्ञा करनी होगी ?

‘द्रव्य का संग्रह महा करना होगा ।

‘बहु महत्त्व साम्य है सेटिन एक बात बतायो यहाँ मठ में जो खाली निरुद्ध डाल जात है धार नरभी नाए छान जाते हैं—वे किंग लिए ?

मैं नहीं जानता ।

‘मरुत्यों को बेगन देन क लिए तो नहीं ?’

‘सभी मरुतय पबिवाहित हैं । जब द्रव्य के महत्त्व का निवेस है तो फिर बेगन कैसा ?’

घोर कौन-सी प्रिज्ञात है ?

‘ऐसे ही घोर मी कुछ है

बागों भैरव क बटर के निरुद्ध छा गए थे । भैरवी न कुछ दूर पर ने ही धरना माय पलन करन के लिए कहा— अब मैं यहाँ से जाना हूँ ।

‘इस कृटीर एक तो क्या न ।’

बहु रात्री न हुई । बागी— नहीं न जाने व सोग क्या सनभें ।’

भैरव ने भी अधिक आग्रह नहीं किया। भैरवी मठ की घोर बली गई। धात्र ही भावना में यह पहली बार इस प्रकार सकोच का वदय हुआ। भैरव अपने कटीर में लौट आया।

सध्या निकल भी। वह बैठ बैठा सोचने लगा—“भैरवी के प्रेम के लिए मैं लामाम परीक्षाओं में उतीर हो सकता हूँ। उसका प्रेम एक पार मेरा शक्ति है ता तुम्हारी धार धर मेरी बुद्धता सिद्ध हो गई ता क्या होया ? माता जी के सामने उन बात को सोचूया ही नहा।”

कछ देर बाद उसका मित्र २ व आ पहुंचा। साथे ही उसन कहा—“मित्र तुम्हारे ऊपर माना जी बड़ा सचय हूँ हूँ। इतनी ब्रह्मा कोई भी बीखा के लिए नहीं जुता गया। तुम ब्रह्म ही बचाई क पाव हा।”

२ व नै भरव का हाथ पकड़ लिभा या। उसने बड़ी उगामीनता से धरना हाथ छोडाकर कहा—“लेकिन मित्र मुझ ठी बड़ा भय लगता है।

‘मय कैमा ?’

तुम्हारे इस भयकरवाद में ; नाम ही लया है और तुम पूछने हा मय कैमा ?”

‘मिर्क बुद्धता को डराने क लिए लया नाम रजा गया है। बास्तव में हम विनुड मानवता के रक्षणारी हूँ। बरली पर के मार्ग बारे के सम्यक हूँ। बगवान् ब- छोटे काम-मोरे की विमक्तियों के पोपक नहीं हूँ।”

‘लेकिन माम में जो भवानक धर्मि पगीलाएँ हूँ उतना क्या होगा ?’

‘वे सब काममान की हूँ।”

‘नहीं।”

‘किसने कह दिया तुममें ?’

‘मुझे मामम हूँ।”

‘माता जी के सामने परो भी ता। संभव है माता तुममें कुछ बात कर लेने पर उन परीक्षाओं की बकरी न समझे। वे काट भी दी जा सकती हूँ। सबसे बड़ी परीक्षा भावना की हूँ।”

‘भावना की परीक्षा ? बम्बु दया में मिट्टी का मनुष्य हूँ कहीं पर

मेरे दुर्बलता रह सकती है अगर माता भी मेरे उभे पकड़ कर मुझे तिरस्कृत कर दिया तो इस अवस्था से मैं फिर जीवन में कभी उबर न सकूँगा। इसलिए मुझे जाने दो मेरे अपराध क्षमा करो।

“अहीं राध” ५ ज ने भैरव का बड़े घायल के साथ हाथ पकड़ लिया— ‘मयवात को तुम्हारे हाथ से हमारे संभवा बहुत बड़ा काम कराना मंजूर है। इसलिए तम हमें निराश न करो।’

भैरव कुछ सोचन मया।

‘यह सच है मही तुम्हारा कोई बेटन न होया। भोजन घौर बस्ना बास की भी मही बिसकुल सतोभुली व्यवस्था है। लेकिन माई तुम समझ-दार हो तुम्हें ठिकके की पोस का बठा है। उनके इकट्ठा हो जाने से तिम मर भी मनुष्य के सुख की बृद्धि नहीं हो सकती घौर न भोजन की बहु मून्यता से ही हमारे स्वास्थ्य का सभार होठा है। बस्ना घौर रदन-सहन की जो कमक है वह भी तो कबल एक मरिठपक की बटिमतामाब है। हमारी सम्पत्ति घौर हमारा घसमी स्वरूप हमारी भावना है। भावना की परिष्कृति ही हमारी मूख प्रगति है। यहाँ तुम्हें भावना के जगत का बिस्तार देखने घौर समझने की भिसेवा।

भैरव तब भी सोच बिचार में ही पडा था।

‘यहाँ तुम्हें ध्यान की बिबिध भूमिकाओं को पारल करने की शक्ति प्राप्त हागी। तब तुम्हें पठा चलया—वह बाहर का जितना भी रंबसंच है इसमें जितने भी पात्र धमितय कर रहे हैं। सब की ठोठा रट मची हुई है इनके बापों की जोख घौर हीन किमी घौर ही मूख मार के हाथों में है। कीन है वह मूखचार ? वह मही भावना है।’—
५ ज न कहा।

भैरव हँसा— बहुत बहिमा तुम्हारा पाठ प्रवाह जसा यह। ठीक है। एक बात मही समझ। हमारी या यह ध्यकिजत भावनाएँ है इनका मूखचार कीन है ?”

“इन सब में प्रबल भावना बिमयी है वह।”

“माता जी की भावना हम सब में प्रबल होगी ?”—मैरब ने पूछा ।

“इसमें सन्देह ही क्या है ।” १ ब धीरे-धीरे कहने लगा— “धीरे धीरे उसकी भावना से भी बड़ी भावनापल्लव की प्रावन्प्रकटा है । उसी के लिए तो हमारा यह संघ है ।”

“माता जी क्यों नहीं अपनी भावना से मेरे बीचत-रुम का पत्र बना देती ?”—मैरब ने पूछा ।

१ ब हँसा— “सब पूछो तो यह उम्मी की भावना है जो तुम्हें बीहड़ एकान्त में माता-पिता और भर-दर का मोह छुड़वाकर बीच सार्ई है ।”

मैरब ने कहा— “कितर तुम क्यों मेरे पीछ पडे हो ? तुम्हारे इस भावह धीरे विनय का क्या मतलब है ?

१ ब ने जबाब दिया— “सिर्फ मेरा मोह ।

‘मुझे छोड़ दो कितर । मैं अपनी राह बुर बना सँगा ।

१ ब ने कुछ सोचकर कहा— “घबली बात है बन्धु तुमने मेरी एक बुबलता बुर कर ली । तुम अपनी इच्छा का अनुसरण करने के लिए स्वतन्त्र हो ।

मैरब बिना मैरबी की बैसे ही मयकरबाहियो के संघ पर लिखा हुआ था उसके बदन पर तो अब उन लठ मठ के सिवा बूसर कोई स्वाग हो नहीं दिखाई दे रहा था । उसने पूछा— “माताजी की भावना से बड़ी भावना किसकी है ?”

“मुप-भैतम्य की—बहो हमारा लक्ष्य है ।

“मैं नहीं समझ ।”

“हमारा एक बिलेप लक्ष्य है । यह जो तुम हमारे बन बनाने चाहि के बारे में मुनते हो वे सब हमारे प्रावरण हैं । वास्तव में हम मयकर बासी नहीं हैं यह नाम हमें हमारे मनुष्यों द्वारा दिया गया है । हम परम शान्तिबारी हैं ।

“मह तो है ही । मुप भैतम्य को समझो ।”

'हाँ बही तो । हम प्रतिमानदता पर पक्का विश्वास रखते हैं । वह मानव को अपनी भावना से सारे मग और बिरह को प्रभावित कर देगा—बही उस चैतन्य है ।

किर तुम मजदूरबाही हो ।

"हाँ कुछ मोर्चों को यह नाम पसन्द नहीं इस्तीमिण हमने एक नया नाम रख लिया है । सिद्धान्त और ठिकाना बही सनातन है ।

ठीक है तो तुम्हारा यह धार्मिक और राजनीतिक संगठन नहीं है ?"

"भावना की ही जो साधारण मानते ही विश्व का बीज समझते हैं उनके लिए ये विश्वों के टुकड़े ये विश्वानों के सूत्र ये अस्तित्व के निहानन विसर्जन मुच्यता ही है ।

मैं समझ गया । मुझे तुम्हारे संगठन पर जाने काय भ्रम हो गई ! मैं तुम्हारे अधीन हूँ । मेरे हृदय का नाम क्या तुम उसका बाहो बैसा उपयोग कर सकते हो । —भरत ने कहा ।

"बनो हम तुम्हें उनी पत्र चैतन्य के पत्र पर बैठकर तुम्हारे भीतर उनी की प्राण प्रतिष्ठा करेंगे ।

भैरव के प्राणों में बही मीठी रागनी बजने लगी । वह बोला— 'मुझे हमका कोई पहचान न हो ।

तेने ही नाम में उसका धार्मिकता हीना ।

भैरव बोला— 'बनो ।

"हाँ बनें । तुम हमारे मग के प्रबसंक बनोगे । माना जी के धामन में भी ऊपर तुम्हारा स्थान होना ।

'मेरा ? भैरव चौक पड़ा— "देसा क्यों ?"

"यह उगही का आदेश और उन्ही की इच्छा है ।"

"सक्रिय उग्होंने मझे कभी देना नहीं है मानुस नहीं मेर भीतर कौन सी कमबोरियाँ हैं ।

बस-सपह करोने तुम । हम सब तुम्हारे ऊपर विश्वास की सहर्षे

छोड़ें—तुम्हारी सारी कमजोरी बलिष्ठ में बरस जायगी। १ ज ने अपने साथ के एटीसी को खोलकर कहा— वे तुम्हारे बदन हैं इन्हें पहन कर जाना होगा।

“भाबना को तुम फिर यह क्यों बस्त्रों की तुच्छता में लपेट रहे हो ? नहीं मैं जैसा हूँ ऐसे ही बनूँगा।”

“नहीं तुम्हारे ही बिचारों से नहीं दूसरों के बिचारों से भी तुम्हारी भाबना बनेगी। तुम्हें ऐसे बेज में म ठा जो के सामने जाठे हुए कई मोग बेसकर तुम्हारे विषय में जो धारणा बनायेगे उससे तुम्हारे व्यक्तित्व को हानि पहुँचेगी।

‘असी तुम्हारी इच्छा। भैरव बोला— मैं निष्क्रिय होकर तुम्हारे सामने पड़ा हूँ—जाहें जैसा रग भर दो। मैं तुम्हारा कोई विरोध नहीं करना चाहता।”

१ ज ने उसे घुटनों तक सटवटा हुआ एक रेसम का सबाना पहनाया लूब बीला-बाया। रेसम का ही एक पीताम्बर बाँधा। पैरों में एक बरी क काम का बूटा पहनाया सिर में एक नरपी रंग की मलमली टोपी दी तुर्की टोपी से मिसली-बुलती। श्राव में एक नई रिस्टबाच बाँधी गई, सबादे की बाई छाती पर की जब में एक फाउण्टेनपेन। भैरव क हाथ में एक पुस्तक बकर उसकी साज-सज्जा को पूर्णता दी गई।

भैरव ने उस पुस्तक को खोलकर कहा— ‘यह ता काफी है सब लासी पेज है।”

हैं तुम्हें जब प्ररणा मिलेगी तो तुम इसमें युग-वैतन्य की पीठा मिलाने।

बड़ी मन्नता न भैरव ने कहा— ‘मैं ता कुछ भी पढा लिखा नहीं हूँ। मैंने तो कोई भी परीक्षा पास नहीं की है।

‘तुम्हें किमी दफ्तर में नौकरी करनी नहीं है। पढ़न-लिखन से क्या होता है ? पढ़ने-लिखने से बाई क्या लिख पाता है ? प्ररणा से मिलोगे जो लिखोगे सोचकर नहीं देखकर। जसो जब देर हो रही है।” — १ ज

बोला ।

बतो । —कहता हुआ भैरव जब बाहर आया तो उसका देखा एक स्वयम्भुव एक घोड़ा एक छत्र धीरे एक बँबर लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था । भैरव ने २ न की घोर देखा नेत्रों में एक प्रस्न सेकर ।

'हाँ तुम्हारे लिए हूँ इसमें बढकर जाना होगा । तुम हम सबसे विशेष ऊँची स्थिति पर हो । तुम्हें यह सम्मर्पना स्वीकार करनी होगी ।'

भैरव ज्यों ही बोड़े पर बढकर जागे तथा । एक बस कुछ लोगों का धीरे भावे लडा था वह सल धीरे बडिमान बवाने सगा कुछ भैरव के ऊपर पुण्य धीरे प्रलठ बरसाने लने ।

हम छोटे-से बरस के साथ भैरव मातृ-मन्थिर के द्वार पर जा रहा हुआ । वहाँ धनेरु सेवकों के साथ कई साथ हुआ में धारती लिए बड बे ।

भैरव प्रविधा त नेत्रों से उन लोगों के बीच में विमृतिनी को बूँड रहा था पर उसका कही पता न था । बोड़े से उतरने पर फिर एक बार पुमुन सल-व्यभि हुई धीरे उसने २ न के साथ मातृ-मन्थिर में प्रवेश किया ।

एक चौक के बाद दूसरा दूसरे के बाद तीसरे चौक में २ न नी रुक गया । उसने भैरव से कहा— 'यह मुम धकेले ही जायो पाँचवे चौक में तुम्हें माता जी के दर्शन होंग ।

भैरव ने चौके चौक में प्रवेश किया । तीनों चौकों में उसका स्वागत धीरे सम्मर्पना करन बामे बहुत भाग था । चौका चौक बिसकुम धूम्य ही था । पाँचवें चौक के प्रवेश-द्वार पर उस बड़ी विमृतिनी लड़ी दिखाई दी । उनका भैरव क गते में एक पूजमाला डाल ही ।

भैरव बोले उठा—'तुम वहाँ पड़े हो ? मैं कब से तुम्हें बूँड रहा हूँ ।'

विमृतिनी ने धपने प्रबरो पर उँगली रखकर उसे धुप रहने का संकेत दिया । धीरे धीरे ने द्वार लालकर कहा— 'वहाँ जायो तुम्हारी प्रतीक्षा की जा रही है उन मायने के बमरे में ।'

भैरव ने ज्योंही उस कमरे में प्रवेश किया ज्योंही एक स्मृतिकाय उसे बेसकर उठ गई। वह एक केसरिया रंग की रेसमी साड़ी पहने थी। हाथों में सोने की एक-एक बूड़ी थी मने में एक रत्न हार। माक घोर काल घामुपछु बिहीन थे। माथे पर मम्म चन्दन की गर्द थी।

भैरव ने माता के पैर छूने चाहे माता ने उसे उठ लिया। सारा रा माँति भाँति की सज्जा से परिपूर्ण था। बड़िया बसीबे फल पर से हुए थे। दीवारों पर नाना देवों की चित्रकारी एक बहुत बटा बर्षण के चित्रों पर विविध मूर्तियाँ। द्वारों घोर चिड़कियों पर बड़िया से लटक रहे थे। एक छोटे-से मेज पर रेडियो रखा था घोर एक कोने सहारे बहुत-से भारतीय बाद्य-यन्त्र थे। घोंगीठी के पास रखे हुए भूप में बसती हुई धूप से सारा कमरा सुवासित था।

भूमि पर तकियों के सहारे बैठन का प्रबन्ध था। एक घोर एक ट मर ऊँचा ठकठ बिछा था उसमें कुछ बड़िया मसमली चामीन से थे। भैरव ने अनुमान लगाया वह माता जी का आसन होमा। ताजी ने भैरव का हाथ पकड़कर उठी मसनद पर बिठा दिया घोर ग लड़ी रह गई।

भैरव ने लोगों की चित्रकारी पर माता का जो स्वरूप बनाया था उन्हें कोई भी सादृश्य न पाकर उसे बड़ा आदर्य हो रहा था। उसने माता जी से कहा—“माव भी बैठिए।”

‘हम तुम्हारी सत्ता में सौध-बैतम्य का प्रविर्भाव करेगे। जब तुम्हारे नामने कोई भी न बैठ सकेगा तभी यह होगा।’

भैरव माता जी की बात को समझने का प्रयास करने लगा।

माता जी बोलीं—“तुम अपने को इसी पड़ी से इस मठ का महा-सु समझे जो कोई बात तुम्हारी समझ में न आती हो उसे पूछ लो।”
“मेरी बीसा ?”

‘तुम्हें कोई बीसा नहीं है सचता तुम परमभूत हो।’

मेरी परीक्षा ?

“तुम्हारी कोई परीक्षा नहीं में सकता ।”

“बहु विमूषिनी कीन है ?”

माता जी झण मर सन्न रहकर बोली— तुमसे कोई बात नहीं छिपाई जा सकती । बहु लड़की बचपन ही से लड़कों क बैल में लड़के की तरह पानी पई है । कोई इस भर को नहीं जानता । शंका समैक रखते हाम तो रखा [करें] । अब इस मठ से नारी का बहिष्कार किया गया तो बहु लड़का समझकर ही पठा रहती जानी जा रही है । किसी से भी लड़का विरोध नहीं किया लेकिन

“हाँ माता कहिए ।

“लेकिन तुम बहु पहले ध्यमि हो जिससे उसका रहस्य जमके सामने प्रकट कर रख दिया ।

“बहु कीन है ?

“मेरी कन्या है ।

अब तो भैरव के कानो तो सुन गयी । बहु चुप रहकर बैठा सोचने लगा—“अब यहाँ यह महाप्रभुताई नहीं बस सकती । ये भोग मुझे यहाँ सुन-वैतन्य मा योग चतन्य जो कुछ भी बनाते हैं—बन जाईया मैं यहाँ भोग-वैतन्य । इसलिये बढिमानो है बाग समी टोक हो जानी चाहिए ।

माता कुछ विह्वलता से बोली—“घाय उसके सम्बन्ध में जो भी निर्णय देंगे मुझे मान्य होगा । यहाँ रहने की याजा है प्रबवा उन निर्वाहित कर दें ।

“बिचार कर ही बतलाया जायगा ।”—बड़ी बधीरता से सुन-वैतन्य जी ने कहा । वे एकाएक धरती उस काया-वस्तु पर समी जमकर नहीं बैठ सके थे ।

बस हेर बोनी चुप रहे । भैरव बोला—“अगर उन्हें हन पुरप के बैल से नारी के रूप में रख दें तो क्या हन धार्मिक सत्य की प्रकट न

करें ?”

“भापकी ब्रजा सर्वोपरि है ।”

“झूठ नहीं तक छिप सकती है ?”

“लेकिन माता इनना ही कहकर चुप हो गई ।

भैरव ने प्रकरण बदल दिया—“मेरे युग बैतम्य होने का क्या समुत्त है ?”

‘ज्योतिष मे यह बात बानी गई है । भापकी ऐसे प्रस्न कर धरनी महिमा नहीं पटानी चाहिए ।’

“मेरा क्या कार्य ब्रम होगा यहाँ ?”—भरव ने पूछा ।

“अपका यह प्रश्न भी भापके गौरव के अनुकूल नहीं ।’

भैरव अब धरने धारण में जमकर बैठ गया । उसने कहा—“अच्छी बात है भाप अब आ सकती है ।”

माता आने लयी—“भापकी सेवा क लिए यहाँ एक स्वयंसेवक नियुक्त रहेगा ।”

“कौन ?”

जिसे भाप कहें ।

“वही त्रिछसिपी ।

“सकिन ”

‘युग बैतम्य के विधान में तुम्हें क्या कुछ कहने का अधिकार रहेगा ?’

‘वही ।’—माता बली गई ।

पुस्तक का लेख

शेरव महल पर से उठा उसने एक सरसरी निगाह बायीं ओर कनारे पर डाली। फिर वह बाहर आया। द्वार के पास एक मूय्य एक तिपट्टी में बैठा बैठा रहता था। शेरव ने उससे कहा—“तुमों आई बैठा क्यों रहे हो युग-बैतम्य के द्वार पर ?”

मूय्य सचकचाकर उठ पड़ा हुआ उसने हाथ जोड़ दिए—“बैठा था हो।”

“कौन हो तुम ?”

“एक स्वयंसेवक हूँ, आपकी सेवा के लिए यहाँ पर नियुक्त हूँ।”

“तुम तो बैठा रहे हो तुम्हें देखकर मेरे भी नीब ओर मार रही। जाओ मो जाओ। बुरा बेतम्य किसी से बेमार नहीं होता। जाओ पते मुगिया की मेजी।”

“मेरा धरम समा कीजिये।”—स्वयंसेवक पिड़पिड़ावा।

“नहीं मेरी सेवा के लिये कोई ठेक मेरे साथ ही है।”

“उनके जाने तक।”

“वे आ गए हैं। घलम मही रहते ये हाथ-पैर, धाँस-कात सब मेरे जाकर ही तो हैं।”

इसी में युग-बैतम्य की बड़ी महिमा है। उसकी अव हो। उसकी अव से धरती में प्रकाश फैले।”

“तुम पडे लिये ही स्वयंसेवक जो कहा गया है उसे मानो।”

स्वयंसेवक जाता बना। शेरव को एक ही क्षण प्रतीक्षा करनी ही कि वह विमूतधारिणी आ पहुँची। शेरव मोह-स्तम्भ रहकर उसे

देखता ही रह गया।

उसने एक हाथ से बिगुल ढँका कर एक हाथ छाती पर रखा फिर धिर झुकाकर कहा—“घादेष।”

इससे कहीं को पस्ता है ?

“नहीं।”

“तब तुम कहीं से घाई हो उस द्वार को ध्वज कर दो।

बिगुलिभी ने नीची नजर कर कुछ सकोच दिखाया।

भैरव बोला—“मेरी धाबाज को माताजी ने इस मठ में सबोंपरि बनाया है। क्या तुम उनकी इच्छा धौर मरी धाबाज का विरस्कार करोगी ?”

बिगुलिभी ने द्वार बंद कर दिए।

“अब यहाँ कोई नहीं धा सकता ?

बिगुलिभी बोली—“नहीं कोई नहीं धा सकता। सेकिन एसा करने जरूरत क्या है ?”

“माताजी भी तो यहाँ किसी को नहीं धाने देती थीं।”

“नीमठी रतन को बहुत छिपाकर कई तालों में बंद कर रसना

है। बाहर जो लोगों का कीचुहल पैदा होगा उसी की बिजली से तीतर प्रकाश पैदा होगा। तभी तो यह इतनी मोटी किताब सिखी इसके इतने देज रेंवने है। —भैरव ने अपने कमरे का परदा

बिगुलिभी को मसमद पर रली हुई बहू कोरी पुस्तक दिखाई।

स एकांत में एक परप की सयति में उस पुरुषपेणिनी को धपना मुमा न रह सका। उसके कपोलों पर नातिमा शीकू जली धाँबों धौर कंड ब ब गया।

व ने पूछा—“इस चीक के इन बाकी कमरों में कौन रहता है ?”

व कोई नहीं। ये सब तुम्हारे लिये धाली कठ किए गए हैं।”

ते कौन रहना था ?”

तुम्हारे कमरे में माता जी सामने वाले में मैं धौर इस

कमरे में घटरम समा के अभिषेचन होते थे ।

“वे अब कहाँ रहती ?

“बीबे बीक में ।

घीर तुम कहाँ रहोगी ?

घपनी भापा ठीक करो तभी उत्तर दूँगी ।

“यहाँ कीन है मुननेबाधा ? किसकी बबनामी की डर है ? हम दोनों ही तो हैं भैरबी ! तुम्हें निमब होना चाहिए ।

“नहीं !”

“मैं बाखी का घण्टा प्रमाण नहीं कर्हेंगा । सत्य को स्पष्ट ही कहना चाहिए । नहीं तो यह उतनी मानी किताब केमे सिब सईना ? उसमें कहानी नहीं लिखनी है । बीबन के तत्व का बदन लिखना है । बीरबी ! तुम्हारे कपड़ों से कोई घीर धोना माए मैं नहीं खाईगा—मैं युग शैतन्य हूँ ।

‘बुप रही बुप रहो ! तुम क्या मझ मारी-सबोचन देते हो ? मैं इसका प्रम्यस्त नहीं हूँ ।

‘तया घम्याम हा बाएगा धीरे-धीरे ।

‘मैं मारी नहीं हूँ । —ठीक प्रतिबाद स यह किसलिनी बानी ।

“तुम्हारे मठा घावरणु है बग बीनघ बरती पर ब मर नासबों को तोड़ने के लिये तयाम भ्रमा की नया करने क लिये घीर प्रत्येक घंघबिराम को उल्लाह देने क सिब यहाँ घामा है ।

भिरगुलिनी बोमी— ‘धीरे-धीरे घोसा ।”

‘नहीं घीर भी ऊँची प्रामाद से मारी घरती पर इत प्रतिघ्नित करमा है । यह बेम-देग की कथा है पर पर की कहानी है । क्यों मारबी ?”

‘तुम्हारे इस संबोचन से मुझे मर्मांतक ब्यथा पहुँच रही है ।

“यह माय को डफ देने का पाण है बछ प्रामदित देना ही होगा । बलो मेरे कमरे में ।”

दोनों ने उस कमरे में प्रवेश किया। भैरवी ने उस विधूम को दो कुर्तियों पर तिरछा रख दिया।

‘क्यों भैरवी तुम तो कहती थी यह विघ्नल जाती पर नहीं रखा जाता। इन कुर्तियों पर रख देने से क्या इसे भूमि का सठमं प्राप्त नहीं हो गया?’

‘नहीं ये कुर्तियाँ विघ्नल प्रकार की नहीं बेटा रहे हो तुम?’

‘रखर से मडी हुई हैं—क्यों?’

‘रखर से होकर बिजली भरती में नहीं बनी जाती इन्हलिये।

‘दूब! तुमने पश्चिम के साइंस धीर पूर की धारणा का समन्वय किया है। धीर धीरों की राह से जो बिजली पाठाम को बनी जाती होगी?’

‘नहीं मेरे बपपल धी रखर के हैं।’

‘मैं समझ गया।’ भैरव भसतर पर बैठ गया धपना जूठा जोस कर—‘घाघो तुम भी घाघा।

‘महीं इस पर धीर कोई नहीं बैठ सकता। —बिभूतिनी भूमि के एक धलम घासम पर बैठती हुई बोसी।

यह पुराना विधान होगा। मए विधान में एक कोई धर्ष नहीं रखता। वह विडंबना है धोटा है। नया विधान मण-बैतम्य का विधान है। मय के माने धी के हैं। बिजली के लिये ऋण धीर मन धोनों चाहिये, लमी प्रकाश पैदा होया। धीर तुम्हारे विधूम में तो धीन काटे हैं।

‘गुम्मे माता जी से पूछना पड़या।’

‘धलम्य बैठो जहाँ तुम्हारी इच्छा हो।’

भैरवी बड़े संकोच धीर भय में डबकर एक तरल बैठ गई। भैरव जठकर कमरे में मूकने लया—‘इन संदूकों में क्या है?’

‘माता भी का सामान।

‘लेकिन जम्होंने क्या है धल धल धलधल धलधल धल धल।’ यह मे

एक सफ़ूक खोलकर देता— इसमें जतक नपड़े हैं। भैरव ने एक छाड़ी घीर एक बोली बाहर निकाल भी।

‘ये कपड़ नयो तिकासते हो ?’

‘इन्हें मैं पहनूँगा।’

‘छी ! छी ! तुम बयो पहनोये ?’

तुम्हारा ककाब बनने के सिय । अपर तुम्हें यह ठीक नहीं मान पड़ता तो तुम पहन लो इन्हें । घीर बोली हेर के सिय इस दर्पण में धरता प्रतिबिम्ब देख लो जो फिर उँसना करना—सत्य पबिक सुन्दर है या छण ?’

‘नहीं धाम नहीं ।’

इसी समय बाहर के द्वार को लटखटाने की धावाज पार्ई । भरब बोल— ‘आघो देखो कीन है ?’

भैरवी ने द्वार खोले । उसकी माता भी बह उसने कहा— ‘क्यों द्वारों पर साँकल बयो बना लो ?’

भैरव भी बहो पर आ गया बा । उसने उत्तर दिया— ‘यह मग शैतन्य की इच्छा है ।’ धापन कहा बा इस मउ में उसकी इच्छा सबों परि रहेगी । तभी लो उम प्रकाश प्राप्त होगा ।’

माता निरुत्तर रह गई । उसने दूधर भैरव से कहा — ‘जलो इसके जाने-बीने का मार तुम्हारे ही द्वार है घीर बीपक जताने का समय हो गया ।’

बोनों साब-भाब बसे गए, भैरव अपने कमरे में सीट गया । तलत पर बैठ कर विचार करने लगा— ‘नहीं विविज भूम-जसीयाँ में घाकर कँम गया हूँ । यह मनोले मानों में धरा मयंकरवादिषों का संघ मेरी समय ही में नहीं आ रहा है । इनरी यह मग शैतन्यता लो मेरे मन्त्रिक में कोई हाप्ट रेखा नहीं जतजाती हूँ यह त्रिगुतिनी—अपरे हमकाँ बेन बरता या सके लो ककर नाम बन मवता है ।’

बाता ने लड़की से पूछा— ‘भूम-शैतन्य ने द्वार बंदकर साँकल लगा

रेने को कहा ?”

“हाँ।”

माता सोच-विचार में पड़ गई।

“मैंने विरोध किया था पर उन्होंने कहा— ‘येरी घाजा का विरोध किया जायगा तो फिर मैं अपने पर स गिर जाऊँगा।’

माता बोली—“जान पकटा है ज्योतिष में कुछ मजबूत हो गई।

‘नहीं माँ कुछ भूल नहीं हुई।’

‘कैसे कहते हो ?’

“मुझे उस बय-वृद्ध के भीतर एक विषय लेब दिखाई देता है जो घबराव ही सभार के सारे पालक और चक्रवर्तियों की मदद दिला देता।”

‘लेकिन उनका यह द्वार सब कर मजबूत बना देगा घबरावियों का निर्माण है या निर्माण ?’

‘वे कहते हैं जब मुझे बाहरी दुनिया से छिपाकर यहाँ रखा गया है तो मैं भीतर ही दुनिया से भी छिप जाऊँगा।’

‘अकेले मैं छिप सकता हूँ। किसी के साथ नहीं।’

‘उसके द्वार पर एक स्वयंसेवक तो चाहिए ही।’

‘तो है वही रहेगा।’

‘वे उसे नहीं चाहते। मेरा कमरा तो नहीं है।’

‘लेकिन द्वार बंद नहीं होना चाहिए।’

‘मैं कहूँ बूना उनसे।’

‘कौसल से कहना पड़ेगा। जरूरी मजबूत करो। तुम कहने हो ज्योतिष की पण्डिता में भूल नहीं हुई।’

‘नहीं भूल तो बिसकुल नहीं हुई है।’

‘उन्होंने उस पुस्तक का कोई पैज भिन्ना क्या ?’

‘नहीं भिन्ना की बात कहते तो हैं।’

‘एक पैज भी भिन्ना जाए तो ज्योतिष की बात का पता क्या

बाएगा ।”

‘किस तरह ?

“ज्योतिष के द्वारा वह सिखा हुआ पैज हमारे पास रखा है। अगर वह उनके सिद्धे पैज से मिल गया तो फिर हमें कोई मय नहीं है।

‘मिल जाएगा जबकि मिल जाएगा।

अच्छा बापो तुम दीपक लेकर जाओ बाघकार बह रहा है।

भैरवी दीपक जलाकर भैरव के कमरे को ले बसी। उसकी माता ने उसे रोकर कहा— ‘ठहरो यह एक चादर छोड़ दो।

‘क्यों माँ ?

‘बाहर की घोट हुआ से दीपक की रखा करेगी। इसके सिवा तुम उसे गले में बांध लो फिर रहना।

‘क्यों ?

‘पुण्य भी बाहर छोड़ते हैं।

भैरवी दीपक को बाहर की घोट में कर जब भैरव के पास पहुँची तो वह कहने लगा— ‘मेरी इच्छा की प्राप्ति कर तो तुम से ही प्राई हो।’

‘मैं नहीं समझ।

‘यह चादर ! द्वार बन्द कर साकस बहा दो।’

‘ममी तो तुम्हारे लिए भोजन लाऊँगा। —कहकर भैरवी भोजन लेने गई।

घरना भोजन कर घोर मुग-नैत्र्य का भोजन लेकर जब वह जाने लगी तो माता ने उसे फिर बुलाया— ‘द्वार में साकस न समाना घोर ज्वाला देर उनके कमरे में न बैठना।’

‘लेकिन जलनी इच्छा का भी टुकलाना नहीं है।

‘ही कीचलपूवक।’

भैरवी जब भोजन लेकर भैरव के कमरे में पहुँची तो वह उस पुस्तक के पहले पैज में कुछ मिला रहा था। याना तिपार्ई पर रखकर

बहु बोली— तुमने तो इस पुस्तक में लिखना शुरू कर दिया ?

भरत ने पुस्तक बन्द कर ली— लेकिन धमी तुम्हारे पहले योग्य नहीं। सो अब यह साड़ी पहन लो।

“माठा की नाराज होकी।”

“द्वार पर सँकल लगा दो मेरी माथा है।”

भैरवी द्वार पर सँकल लगा घाह। भरत ने फिर उसकी घोर साडी बदलाई। बहु उसके धाग्रह का विरोध न कर सकी। उसने उसके भीतर जिस माटी को जमा किया बहु विचय होकर अपने बेस के लिए धबीर हो उठी। बहु साडी लेकर बोली— मैं अपने कमरे में जाकर बसल माठा हूँ।”

तुरन्त ही बहु साडी बदल कर धा गई जब उसने दरवाजा में अपने को देखा तो भरत ने कहा— तुम एपी बदल-माहुनी मारी हो मीने ही तुम्हें सबसे पहले यह चेचना दी। किस कारणार से निश्चालकर मीने तुम्हें मुक्ति की उमोति में रख दिया। कीड़े का बाल काट कर कँसी टपीली तितली बनी हा। अब धाय क्या हाया ?”

“फिर धाने कपड़ बसल विभूत हाव में ल लूया।”

“नहीं अब उस काउमार में नहीं जाने हूया मैं तुम्हें। —भैरव ने उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया।

सिहर उठी भैरवी—“तुम मुग-बैतग्य हो।”

“नहीं मैं उस पर जो नमस्कार करता हूँ तुम मेरी सबसे बड़ी चेचना हो। जलो हम दोनों इस रात में भाग जमें।”

“किस मार्ग से ? इतर जारो चौकों पर स्वयंसेवक हूँ।”

“छत पर चढ़कर। माठा की की हो-तीन साड़ियाँ बाँध कर छत से नीचे लटकल देवे घौर उनसे उतर कर इस चौकनी रात में रात-ही रात हम दूर निकल जायेंगे। तुम चलने की रीवार हो ?

“हाँ मैं चलूँगी।”

“अब इस बार तुमने ठीक माया बोली। कुछ-बैर ठहर जायें।

सबकी लो जानें दें। तब तक मैं छत पर से कूबड़ बाँधकर नीचे सटका देता हूँ। —कूड़कर भैरव न माता जी की बो साक्षियाँ बाहर भिवालीं धीरे ऊपर छत पर चढ़ गया।

भैरव ने दोनों साक्षियों को घापस में बोड़कर छत पर को एक मुँडेर से बाँध दिया धीरे नीचे उतर आया। भैरवी अपने माए बेघ को बर्षण में देख-देखकर मयन हो रही थी।

भैरवी ! सत्य कितना सुन्दर है। इन सोचों ने किस तरह उने धन्यकार में डक दिया है। इन धनुषों के बीच में एक छल नहीं रहना चाहिए।

भैरवी बोली— 'विशुद्ध जी मे बसू ?

'अहीं जगमे पहुँचाने जायेंगे। बोझ कूट भी साथ नहीं ले जाना है।'

'कहाँ चलेंगे ?'

'तुम्हें पाकर जगम में मंजल आग उठेया मरु-भूमि हटी ही जाएगी बसो।

'माता जी बड़ी देर में सीती है।'

'कब तक प्रतीक्षा करें उनके मो जाने की ?

'उसरी धारक्यकता क्या है ? जब हम दोनों के मन एक है तो फिर कौन पकड़ सकता है हमें ?'

'कोई नहीं पकड़ सकता।'

'जाने के लिए कोई बिगा ली साजगी नइवी।

'तुम्हें रास्ते मालूम है ?'

'मैं पहुँचाने रास्तों से जाने दें डगती हूँ।'

'पर तुम बिमरुस बरल गई हो मैं भी अपने कपड़े बदल लेगा हूँ।'—भरव ने पुनः-वैतन्य के कपड़े जोस दिए धीरे एक सफ़र बोली बादर पहन ली एक सफ़र साका भिर पर सपेट लिया।

'लेकिन मुझे पहुँचाने का कोई।'—भैरवी ने बर्षण में मस

बैठते हुए कहा ।

“कल्ल घूँसट काद बिमा जाएमा घटके की अवहोँ पर । असो इम माएठ को ही बनेँ ।”

‘तुम्हारे बर ?’

“नहीं बर पर मेरे बहुत-से दुरमन है । —भैरव ने कल्ल सोष विचार कर कहा ।

‘फिर कहाँ ?’

“तुम्हारे घोर मेरे इन दो बरों को सोचकर घोर कहीं भी । इस समय तो हम जैसे इमें इसी विचार का कर्म का म्य देता है । असो इार बन्द है न ?”

‘हाँ इार तो बन्द है ।’

‘फिर कृता क्या है ?’

‘कमरों के नीचे की सुरप ।’

‘उधे भी बन्द कर दें ।’

‘बहु बन्द नहीं हो सकती । एक इपारे पर घूमती घोर बन्द होती है ।’

“अन्वी करो फिर । छज से नीचे कर जाने की माठ है फिर कीन पकड़ सकता है हमें ?”

‘दिया कुम्ह तुं ?’

“नहीं ।” —भैरव ने घननी पुस्तक का वह पहला पेज खोलकर बीचक के निकट रख दिया ।

“तुमसे पुस्तक सिखानी मुक कर की क्या ? पढ़ू तो ।” —भैरवी जैसे पढ़ने लरी ।

‘यह वह पुस्तक नहीं है । इसमें हमारे जीवन का पहला पृष्ठ है ।’

भैरवी पढ़कर ईस पड़ी । दोनों अब पैर बड़ी सावधानी से छज पर बड़ गए ।

जीविक जगत की स्कूल संसर्ग में जमती फिछी छायाओं घोर

घाबानों से बारीक जो मन की सहृदयों के बटके हैं उनकी कोश परवा नहीं करता। माता जी को न जाने क्या सूझा। अपने कमरे में बैठी-बैठी वह उठी। ठीक उसी समय जब मीरब घीर मीरबी छत पर चढ़ रहे थे।

माता ने द्वार खटखटाकर कहा— 'मरब द्वार खोलो।'

किसी ने नहीं सुना उत्तर कौन देता? माता को कुछ खटका हुआ घीर वह सुरंग खोलकर पाँचों ओर में जा पहुँची सुरंग ही। वहाँ जाकर छत्ते देखा भृगु-वैतन्य का कमरा सुना जा पर उसमें प्रकाश बगमया रहा था।

वह सुरंग कमरे में चूष गई। वहाँ किसी का पता न था। पुस्तक का बहना पत्र हीपक क प्रकाश में सुना था। उसन उसे पढ़ा—

"बड़ा माँही यह भृगु-वैतन्य का बोध मेरे सिर पर साध दिया है। जकर तुम्हारे ज्योतिषी ने गलता में भूल की है। सैर भूमि होती रहती है। इस भूमि को मैं नहीं सुधार सकता किन्तु एक बूझी भल जो तुम्हारे मठ में बहुत दिनों से चली आ रही थी उसे मैंने ठीक कर दिया। प्रबोत् तुम्हारा भैरव जो असल में एक नाथ का प्रतिरूप रहता था मैंने उसके लक्ष्मी रूप में स्वीकार उसे मीरबी बना दिया। इसके पारिधमिक स्वरूप में उसे ही लेकर जाता हूँ। उसे मे जाने का एक कारण घीर भी है—प्रब तुम जिसे भी भृगु-वैतन्य की पदवी पर बिराधोगी—वह बेरोक-टोक बन जाएगा क्योंकि उसके मार्ग के कांटों को मैं अपने गले का द्वार बनाकर ले जाता। बन्धबाध।"

'माता जी की जय !

विनीत

मीरब।"

पुनरुच—एक-दो पंक्तिपों २ व के लिए लिखनी बकरी है क्योंकि इस मठ का संवाग भुम्हे उठी की कृपा से मिसा

‘सतरे का बग्ग है ! जान पड़ता है, हमारे मायने की बात खल गई !’

‘अब भी समय है । तुम पकड़कर उतरौ मैं क्रूर पड़ता हूँ !’—
कहकर भैरव धरती पर कब गया लेकिन भैरवी बुबिचा ने पड़ी बही
सड़ी रह गई ।

इतने ही में माता छत्र पर चढ़ गई थी । उसने भैरवी का हाथ
पकड़ लिया । भैरवी माता की घाहट पाकर जोर जोर से रोने बिस्माने
लगी थी । माता के हाथ पकड़ते ही उसकी छाती से बिपट गई—‘माँ !
माँ ! बचामो यह मुझे जबर्दस्ती भयाकर ले जा रहा था ।

जबर्दस्ती भया से जा रहा था ? तुमने ये कपड़े क्यों बदले ? —
माता ने कुछ शब्द में भरकर पूछा :

‘उसने छत्रा विघाकर मुझे मार डालने की बमकी दी ।

‘कहाँ है वह ? ज़रूर मरणा में मूल हा गई । —माता ने कहा ।
चारों घोर स्वर्भन्वक सोग पाँचों बीका की छत्रों पर अस्व-अस्व
सेकर जमा हो गए थे । वे बिन्ना बिन्नाकर पूछने लगे— माताजी
घाजा बीबिए ।

माता ने भैरवी से पूछा— ‘बताती क्यों नहीं कहाँ है वह ?

‘भूमि पर उतर गया ।

माता ने पुकार कर कहा— ‘घोर माया जा रहा है नीचे छत्र पर
से क्रूर कर उस पर बीबी बसाकर उसे मार डाली ।’

कुछ स्वर्भन्वक उस घाली की राह नीचे उतर गए । कुछ ने यी ही
छत्र पर से उम छिटकी हुई बाँदनी में गोसिया जला दी ।

माता ने तराव कहा—‘उसको मार डालो नहीं तो वह हमारा
कारा भेद बाहर दे देगा ।’

जो स्वर्भन्वक नीचे उतर गए वे वे चारों घोर को दीड़ गए, मूल
किमी को भी कछ नहीं मिला था । दीड़ने से कर्तव्य की पूति होगी
इतीतिए वे दीड़ने जने गए ।

नीचे उतरकर भैरव छिर पर पैर रसकर भावा । उसमें मन में
 बीजा—नियति सहायक नहीं हुई ! जितना ऊँचा उठा था वह तो
 उतना ही नीचे गिर गया ।

मकान की छामा में बीजता गया वह कोई न देख सका उसे । दीड़ते
 दीड़ते वह नदी के किनारे भा गया । जल में ऐसी ठण्ठ तो कुछ थी
 नहीं । बाड़ों में घबिफ बर्पा नहीं हुई थी जो कछ हुई वह वह कुली
 थी । धारा में लीजता थी पर वहगाइ नही । घबिफ से घबिफ उसके
 घटनों तक पानी होमा । उसी घोर डम सुरभित पच जान पडा ।

भैरव नदी में कूड गया । वह तेरना जानता था लेकिन तेरने की
 बरफ्त पड़ी नहीं । नदी पार कर वह कछ दूर तक रेत में बीजा । उसके
 कपड़े बरफ्ट ने किसी की दृष्टि नहीं लीच सका वह । फिर वह जपत
 ही हुरियाली में मिस गया ।

गुंगा यात्री

रात भर चाकटा ही रहा चौरस । न-जाने कितने छाई-खंडक विरि-जन मही-जाने पार कर गया बह । प्राणो के बाल के जाने न उनकी कठिनाई ही उसके बिचार में पारि न उनकी विनयी । माता भी की उमे मार बाजने की प्राज्ञा उमन मुन भी की उसी से उमे भाग जाने का बन मिसा ।

कहीं कित घोर बह का रहा था ? इसका कछ भी ज्ञान नहीं का उमे । चौबनी न गृहह तक उबका माप दिया । इसे उबने भगवान् का बददान समझ । रात-ही रात न बह कम-न-कम बीच-बच्चीस मील चला गया हागा घोर ठंडाई ?—इतना कोई प्रश्नाज ही नहीं ।

प्रयाग की ज्योति में उठने पेड़ रोषों को देखा घूमि की बनाबट को देखा । उसने मन में निदधय किया बह भारत को पार नहीं बह रहा है घबघप ही किनी नए देस घोर राम्य मे चला गया है ।

एक पखान पर बैठकर उसने मन में सोचा—“घब मेरा पीछा करने बात नहीं पकड़ सकते घुम्ने में उनकी पहुँच मे बहुत दूर था पया हूँ । कहीं आ गया हूँ ? रात भर जिन बस मे आगा हूँ बह मेरी घकिन से नहीं हुआ । उन जंपनों का माह कर मेरे प्राण कोपते हैं । यह कैसा मद्दमुत संयोग है किसी भी जंतनी जगु मे मेरा सामना हो जाता ठा गया हागा । सेकिन भगवान् को मेरी रक्षा करनी थी । घब क्या हीपा ? घब तो न राह मान्य है न राह का भोजन ही पास में ।”

बह फिर उठकर चला पखानक उमे कछ आनवरों के पैरों की प्राबाज घोर वनुष्यों की बाल बात मनाई थी । बह ठेकी से उबर चला

गया । वहाँ जाकर उसमें अपने को एक मार्ग में पाया । उसमें बहुत से व्यापारी अपना सामान जानवरों पर लादे हुए जा रहे थे ।

बड़े धीरज से वह उन सोंगों के साथ चलने लगा । एक व्यापारी ने उससे कुछ पूछा । लेकिन वह उसकी समझने योग्य भाषा न थी । उसने कोई उत्तर न देकर इधारा किया ।

वह व्यापारी सिकम की राजधानी यंगतोक धीरे-धीरे के बीच में व्यापार करता था । हिन्दी टूटी-फूटी बोल-बोलता था । उसका बेघर बेकठर उसने उसे भारतीय समझकर पूछा— 'कौन हो तुम ? कहीं से आए हो ? धीरे-धीरे बतानी जा रहे हो ?'

धीरज को एक उपाय सूझा । उसमें मन में निश्चय किया अगर हमसे कुछ कहता है तो फिर सारी पोंस लुप्त जायगी धीरे-धीरे न जाने तक हो जाने से वह क्या सोचे ? इसलिए उसकी बसा प्राकृतिक करने के लिए धीरज शूंगा बन गया । उसमें पेट बनाकर कुछ घड़ी-घड़ी तरह के इसारे किए ।

व्यापारी बोला— 'तुम्हारे पास इस मस्क के राजा का ।'

धीरज ने फिर अपना बैग बजाया धीरे-धीरे का अभिनय करने लगा ।

"यहाँ बूढ़े मुस्कवाले को बिना परवाने के चलने की इजाजत नहीं है ।"

लेकिन धीरज उस व्यापारी के साथ चलता ही रहा । व्यापारी के कंधे पर एक बैग का बोझ था जो उसने किसी बीमार बकरी को मदद देने के लिए अपने कंधे पर रख लिया था । धीरज ने उसके कंधे पर से वह बैग का बोझ अपने ऊपर ले लिया ।

व्यापारी ईंस पड़ा धीरे-धीरे अपने घन सत्तू के संघर्ष में से कुछ उसे ले लिया । धीरज न सत्तू फाँककर पानी पी लिया मीर फिर उसी व्यापारी के साथ चलता रहा ।

व्यापारी कहने लगा— 'तुम्हें इस तरह साने-सीन धीरे-धीरे साथ की मदद देने से हमारे ऊपर भी बात या बावनी इसलिए अपनी बीबी

तुम्हें हमारा साथ छोड़ देना होगा।”

भैरव फिर रोने लगा—“हूँ ! हूँ !”

ब्यापारी ने अपने साथियों से कहा— यह अच्छा रोग साथ भग्य गया क्या करूँ ? हमकी दया देखकर दया तो पाठी है। काम करने को तैयार है यह लेकिन चौकीबाला को क्या जवाब दिया जायगा ?

एक साथी ब्यापारी ने कहा—“एक तरकीब मैं बनाता हूँ। बिचारा परदेसी बजवान बोलने में लाचार। हूँ हम पर दया करनी चाहिए। मेरे पास एक पुराना टपा है मैं इसे दे देता हूँ। यह गरम मुश्क का रहनेवाला सब बहुत ऊँचे पहाड़ों पर जा गया है। बाटे में भी इनकी हिफाजत हो जायगी और एकाएक परदेसी समझकर कोई सरकारी नौकर हम तक भी न कर सकेगा।”

दूसरा कहने लगा—“जो दया हम इस पर करें वह इसी पगम में बसूल हो जायगी। सिर्फ़ जीम कटी हुई है इसको हाथ-पैर तो बुरस्त ही है। हमारे जानवरों को चारा माया करेगा। उनका बोपने-बोलने में मदद करेगा। घाम-पानी का महारा हो जायगा हमसे।”

सब ब्यापारी ने एक गध के बोझ के नीचे उस घैले और पट छुपे को रख रखा था कि जानवर के पीठ न सगे। मिट्टी के तल के दो मरे कनस्तर लहे हुए व उनके इधर-उधर। उभने दवाएँ कर भैरव को बुलाया और एक तरफ़ से महारा देकर वह कनस्तर नीचे उतारने को कहा।

कनस्तरों के नीचे उतर जाते पर ब्यापारी ने घटना छत्रा निष्काम लिया। पय पर का बोझ छिर बीने ही रख दिया गया।

भैरव को अब वह छत्रा पहनाया गया तो उसकी शक्ल बहुत कुछ बदल गई। सब एकाएक सम्मती जिगाह में बेगने पर निमी को भी उसके ऊपर तक हाने की बात नहीं थी। ब्यापारी की एक चमरी के गले में पोमलेन के मखर और नीले बड़े-बड़े शानों की एक माला बँधी थी। बीच में एक हाँव का पट्टा था।

उसने उस माला में से सिरों पर ने छः दाने निष्कामकर एक तावे

में पिरोकर भैरव के गले में पहना दिए । घूमे ने बहुत लुपी दिखाई और प्रसन्न होकर उन व्यापारियों के साथ उनका-सा होकर चलने लगा ।

साम को पड़ाव पर वह जानवरों की पीठ पर से बोझ उतारता जानवरों को से जाकर चरता उन्हें पानी पिलाता और समय पर पड़ाव पर बै धाता । वह सबका ही काम कर देता पर जिस व्यापारी ने उसे कृता दिया या उसकी बहु बिधेय प्रीति से सेवा करता ।

वह ठम्बू ठोकता सामान ठीक जगह पर मगाता पानी भरता घाम जमाता और जो कुछ ने लाभ इच्छार्से द्वारा उसके कहते सबका हुपन बना लाता ।

श्रीश्री पहुँचते-पहुँचते भैरव उन व्यापारियों के साथ बहुत धूल-मिल गया । तिब्बत की नमकीन घास में खाया पोसकर पीते हुए जब उसे साठ-साठ दिम हो गए थे ।

दिन-भर उन व्यापारियों के साथ मुँह सीकर चलता पड़ता था पक्ष । पहले बड़ा चौकन्ता होकर रहता था । कही भूस से कोई धब्बे मुँह से निकल जाने पर उसका सारा पद्मम्ब लुन पड़ता पर भगवान् ने उसकी रक्षा की । फिर उसकी भावत हो गई ।

इस बकरूय से छिर पर सा पड़े मीन-बुल हाथ भैरव की विचार पवित्र का विकास होने लगा । बोसना ममुप्य की बहुमुखता है, उसकी पाठ बन्द हो जाने पर विबस होकर उसे अन्तमुक्त होना पड़ा ।

भूत नाम बहुत स्पष्ट होकर उसके मानस में उभर आता । कभी वह बासो को सोचता और कभी भैरवी को । भैरवी को पाने पर वह बासो को विश्वासपाठिनी समझ उसे भूत बना या । जब भैरवी को भी वह उमी की कोटि में गिनता है । दोनों के बिच जब कभी उसकी स्मृति में उचित होते हैं तो वह बड़ी गुणा से उन्हें मिटाने की चेष्टा करता है । लेकिन उन बिधों पर वह अपना बंध नहीं समझता ।

श्रीश्री में कुछ दिन का पड़ाव रहा उनका । कुछ भारतीय बाजारों का मात उन्हें बड़ी उठारना था और कुछ नाम ल्हासा के लिए करना

था। इसके सिवा कुछ व्यापारियों की रिस्तेबारी भी थी वहाँ।

भैरव वृद्ध कुछ खा-पी सत्तू बीच जानबरो को पराने चला जाता। दिन भर बसलों में ही बिता देता और संध्या समय बरों का सीटता।

एक दिन वह बस में एक टीले के ऊपर आराम करता हुआ सपने को देख रहा था— 'धारी क्या होमे जाता है? कहीं को चली जा रही है यह जीवन की नाव? बाली के समान अत्यन्त उपयोगी माध्यम की बलि देकर उसने यह जा मौन छापा है कहीं जाकर इसका अन्त होगा?

'माता पिता कहीं है? घर-द्वार कहीं?—इतनी दूर या जाने पर यह उसे जगती-जगद घोर अज्ञभूमि का अनुराग बेचैन करते लगा।

'माता पिता कौसी दुर्लभ निधि का निरस्कार कर क्यों कर से भाय छाया? निस्सम्भेह यह उसी पाप का दण्ड है जो मुझे मरना पड़ रहा है। कैसे यह प्रायश्चित्त पूरा हो और कैस में भारत को बाँडेगा?'

व्यापारी लोग धारण में तिग्मभी भाषा में बातें कर जिसका वह एक शब्द भी नहीं समझ सकता था। इसलिए वह घोर भी उनके साथ की अपनी गतिविधि का कोई अन्दाज नहीं लगा सकता था।

वह उठकर अपना व्यापारी कमी-कमी उनके माथ हो चार दण्ड हिन्दुस्तानी के बातला था। उन्ही के आघार पर भैरव ने यह धनमान सपाया था कुछ दिन बाद वह लड़ासा जाकर फिर मित्रिम को सींगेगा। वहाँ से सम्भवन कलिपोंग घोर ६ त्रिनिव लक्ष भी।

यही दिवा-रुच्य देस रहा था वह उस दिन। मित्रिम की नीमा पर भयंकरबादियों से भेट की बातें लोच रहा था। कमी उनके द्वारा पकड़ा जाकर अपनी बुरंगा देखता घोर कभी उनके मठ की मुखता देकर पुलिस को वहाँ ले जाने की कल्पना करता।

इसी समय हमने बोर्ड की टापें सुनी। एक चीटें में एक सुनग्निव अष्टमर उपर ले था रहा था। उगकी वृष्टि चार घोर भटक रही थी ऐसा जान पड़ता था मानो यह कोई चीज हुई रहा था। भैरव उठ घोर संजलनर धैट गया।

दूर से उसे देखकर वह बुद्धसवार वहीं पर धा गया और उसने तिम्वती मापा में भैरव से कुछ कहा।

भैरव कुछ मही समझा और उठकर खड़ा हो गया।

बुद्धसवार में फिर कुछ कहा। भैरव ने सोचा—केवल बुध रहना मूर्खता है। उसने अपनी मूंगी मापा में कहा—“हूँ ! हूँ ! हूँ ! हूँ ! हूँ ! हूँ !”

अफसर ने क-जाने अपना क्या अपनात समझा वह पोटों से उतरा और उसने भैरव की कमपटी पर एक तमाचा बड़ दिया।

उस चाँटे की पीटा से भैरव की बधि डाँचाटोल हो गई उसके इतने दिन से पासा गया मौन-व्रत मय हो गया। अचानक ही उसके भेड़ से उस चाँटे के प्रतिहार में निकल पड़ा—“धरे वाप रे।

तिम्बती बेश के भीतर बिदेसी सज्जों को निकसते हुए देखकर वह अफसर और भी ताज्जुब में पड़ गया। उसने दार्जिलिंग के एक स्कूल में निधा पाई की। वह खूब धरसी तरह हिन्दुस्थानी जानता था। उसने भैरव से पूछा—“कौन है तू ?

भैरव ने फिर अपने मौन-व्रत तोड़ लिया और वह इधर-उधर क इधारे का ऊँ ऊँ नूँ-नूँ करने लगा।

“बहुत खालाकी मत कर, सब बता कौन है तू ?”

भैरव फिर बँसा ही करने लगा।

अफसर बोला—“काला मोड़ा देखा है एक ?”

भैरव ने इधारे से एक और बताया।

अफसर ने कहा—“ले प्राधा इधर ,”

भैरव दौड़कर काले पोटों को ले आया। अफसर ने अपना लोहा मिला जाने से कुछ डीब तो जसा गया था पर भैरव पर जो बलका ससप हो गया था उसे मिटाने की उसकी बेचीनी बड़ गई थी। उसने भैरव से कहा—“इस घोड़े को लेकर मेरे साम चल।”

भैरव ने अपने जानवरों की ओर इशारा किया। अफसर

मामा धीर बलपूर्वक मरब को घपने भाष से गया । घपने पर जाने के बाद उसने भैरव से कहा— 'बल कहाँ जाता है तू ?'

भैरव ने घपने व्यापारिया के तम्बुओं पर से गया । घफ्फर ने एक व्यापारी से पूछा— 'यह कौन है ?'

व्यापारी ने कहा— 'कोई महा है हुजूर एक गुंवा मिखारो है, हमारे जानवरों की देख रखा करता है ।'

घफ्फर ने प्रतिवाह किया— 'गुंवा नहीं है कोई आसूख है ।'

सभी व्यापारी हँस पड़े— 'मही साहब आसूख नहीं है । बड़ी बुरी बधा में मे हमने उबारा है इसे ।'

'कहाँ का है ?'

'नेपाल का है या सिक्किम का ।'

'सिक्किम सकल मही मिलती ।'

'घपना काम करें घाप बहम में न पड़ें ।'

'मैंने इसे साठ-साठ बालता मुना तुम इसे गुंवा कहते हा ।'

'यह हफ्तों से हमारे साथ है धीर हमने कभी इनका एक लपक भी नहीं मुना । पारके कारों में कोई गुंख पैदा हो गई । धाँवों को भी बोखा होता है धीर कानो को भी ।'

घफ्फर फिर भी नहीं मना उसने घपनी हाथी में उनका नाम लिख लिया धीर भैरव से बोला— 'यया है तेरा नाम ?'

भैरव ने उसे घंघुठा दिगाकर भीम बाहर निजानी । यह बिबिध मुद्रा उसने निम्बत के मिखारिया को देखकर लौथ ली थी ।

व्यापारी ने कहा— 'मिखारी का भी कहीं कछ नाम होता है ?'

घफ्फर ने उसके घंघुठ में कछ स्याही लगाई धीर उसकी छाप घपनी हाथी में से ली धीर व्यापारियों से कह गया— 'इस पर बास दिगरानी रचना । बिदेदियों के कुछ आसूख घाप है इधर ।'

घफ्फर के जाने पर सब व्यापारी हँसने लगे । एक ने कहा— 'वैसे बहुत तब मना कर घाया है ।'

भैरव महामूर्ख बनकर सामने खड़ा था। उसके मासिक ने पूछा—
'कहाँ हैं जानवर ?

भैरव ने जगस का इशारा दिया।

आधो से आधो उन्हें। अफसर को क्यों माराज कर दिया
तुमने ?

भैरव ने कई तरह से उसके सोए हुए काठे घोड़े का बोझ कराना
चाहा उन्हें पर सफल न हुआ। अंत में हार मानकर जगस को बसा
गया।

जब तक वे सोम श्राद्धी में रहे जब तक भैरव रोज उस मोट-ताज
तिम्बली अफसर को अपने सामने खड़ा ही पाठा धीर मन में यह
समझने की चेष्टा करता—'मासिक मैंने उस दिन उसका क्या क्रमूर
दिया ?'

तीसरे दिन वे सोम श्राद्धी से श्वासा को रवाना हुए। साठ घाठ दिन
की यात्रा के बाद जब एक दिन उनका पडाब करीबु धीर सांपो नदियों
के संगम में पड़ा था तब फिर एक बड़ी विचित्र घटना हो गई।

भैरव को उस दिन एक बकरी के रास्ते में मर जान के कारण
उसके बोझ का एक भाग डोना पड़ा। कभी जीमन में उसने बोझ तो
डोया था नहीं। घर पर जब रहा तो घनेक मौक्य-बाकरो की सेवा पर
ही रहा और मयंकरबादियों के मठ में तो युग-चैतन्य ही बनने को था।

दिन भर कई हफ्तों से पैरस यात्रा धीर कंभे पर बोझ। जाना
खाते ही उसे नींद घा गई। एक-दो ब्यापारी घनी जाय रहे वे कुछ
हिमाब कितान पर जतमें बहस हो रही थी। उसी ठंठ के एक धीर भैरव
भी पड़ा था। कहीं भारत का समझ उस धीर वहाँ वह अँचाई बस
हजार कूट से भी अँधी ! कुछ उस घनम्यस्त हलकी हवा का भी
घतर था।

सोते हुए वह सपना देख रहा था। सपने में जब माता फिदा वह
बासो—भैरवी—वे सब भिट चुके थे जब तो उसे बड़ी तिम्बली अफसर

दियाई देता था। वह मोटा-ठामा बिबिध बेघ-भया में। सच्ची थोटी कानों घोर गल में शीमली घामुपण पहले। वह उसका घंगूठा छापकर अपनी बायरी में ले गया था। वही फिर उसके स्वप्न-राज्य का द्वार दरखटाकर बस घाया उसके मन के भीतर।

भैरव ने सांठे-सांठे देखा घबरा के साथ बासो घोर भैरवी भी थी। घबरा न उन्हें दिखाकर उससे पूछा—“पहचानते हो इन्हें ?

भैरव ने फिर वही गुंमि का अभिनय करना शुरू किया।

घबरा ने घब बासो से पूछा—“तुम पहचानती हो इने कौन है यह ?”

“हां मैं पहचानती हूँ। यह बड़ा बदमाश है। मुझे भयाकर बच्ची से गया घोर वही इमने मुझे बेध दिया।

“यह मूँदा तो नहीं है न ?”

“नहीं मूँदा नहीं है बल रहा है। घबो इसकी पीठ में दो चार कीड़े बनाए यह सोचने लम जाएगा।

घबरा ने फिर भैरवी की घोर मुख कर पूछा—“तुम भी पहचानती हो इने ?

“हां यह घबरा घबरी नहीं है। मेरी माता ने मुझे इसकी सेवा में रखा घोर यह मुझे भयाकर से घाया। जब माता का यह बाव मामूम ही गईं तो यह मुझे छोड़ घाया बड़ा बिबिधासपाठी है यह। —भैरवी न कहा।

घबरा ने फिर उठने भी पूछा—“यह मूँदा है क्या ?

“मूँदा नहीं है। यह तो ऐसी बातें करना है कि छाप घाकाया मूँदा चलता है।

घबरा ने भैरव की घोर भुंइ किया—“बपों रे, लच-लच यह हो गयाही तो ये है घोर तीमरा ठेरा घगूठा बटा हुपा मरी मोट-बक घे है। बील गया नू लचमुच में मूँदा है ?”

भैरव ने प्रतिवाद किया—“मगवानु सारी हूँ मैं लचमुच में

सूया हैं।”

भैरव ने यह प्रतिवाद पूरी ताकत से किया। वह स्वप्न के पदों को चीरकर उस तन्त्र में नीचे बैठ गया। दोनों व्यापारियों ने उसे सुना और दोनों चीक परे।

भैरव का धाधधराता व्यापारी तुरन्त ही भैरव के निबट गया और उस उठाकर बोला— गूंग उठ। यह कमबान् की तेरे ऊपर हुआ हो गई क्या? तेरी धाधधरात कम गई! या तू ने हमें धाध तक बेवकूफ बनाया है?”

भैरव धीरे से सतता हुआ उठा।

व्यापारी ने फिर उससे कहा— “क्या बात है?”

भैरव फिर धरने पुराने श्मशान पर चलने लगा।

व्यापारी ने कहा— “तू अभी बोल रहा था।”

भैरव ने “धर उभर देकर धरना नीलावन बाहिर किया। व्यापारियों ने हमारे कर्मों की तरफ देखा।

हमारे व्यापारी ने कहा— “सूया बनने क्या गया वह इतने क्या धाधधरा हुआ ‘म’ नुठ ही धरनी एक इन्द्रिय रचना देना कौन चाहता है?”

“मैं तो समझता हूँ यह जन्म का सूया नहीं है।”

हमसे बोला— “इसमें पूछो तो सही।”

पहले ने पूछा— “क्या भी क्या तुम जन्म के सूय हो?”

भैरव ने फिर हिनाकर नहीं कहा फिर तानी बजाकर धाधमान की तरफ रीगली उठाई।

व्यापारी ने हमसे कहा— “ताम्र किसी भीपारी के सबब बाद को इसकी जवान बन हो गई।”

भैरव का धाधधराता बोला— “लेकिन इस विचारे को जरा भी धोष नहीं है कि अभी इसके सूय में साध-साध करके निकले थे।”

तुम किसी तरह इसे इनका विरवास दिया करते तो

घमी बल जाती ।”

दूधरा व्यापारी भैरव से कहन लया—“तुम घमी बहुत साफ अपनों में बोले बे नीर में । जरा कोशिस करो तो कामते में भी बोल सकते हो ।”

भैरव के मुँह पर एक पहेली-सी प्रकृति होकर रह गई ।

व्यापारी ने उसका हाथ पकड़कर कहा— ‘कोशिस क्यों नहीं करते तुम बोल सकते हो । बोलो बोलो ।

भैरव ने धमिनय करना शुरू किया । बहुत जोर लगाकर बोलने लगा वह— ‘तन् दबन् दहत् ।

व्यापारी उसकी पीठ टोटकर उसका उस्ताह बढ़ाने लगा— ‘घाबाघ ! धीर जरा कोशिस करो ।

भैरव के फिर वही समस्या आम उठी । वह सोचने लगा— अगर घपनी अबान लोमता हूँ तो कुछ घासानी ता बकर हासिल होमी । लेकिन घायद उसमे बड़ी घापक्ष में कँव जाऊँगा । घपने टोर टिकाने का क्या पना हुँगा ?” घन्तत उसने जड़-पगबर की तरह मूक रह जाना ही निश्चय किया ।

व्यापारी उसका उस्ताह बढ़ा ही रहा था घमी । भरव ॥ भी घनको सन्तोष देने के लिए फिर जोर लगाया—“बप्पु व दहत् !

व्यापारी निरास होकर बोला—“घट्टे ऽ घमी बोले बे तुम बहुत माफ ! नीर में जब बोले हो ना जागते हुए धीर भी ठीक बोल सकते हो ।”

उसका माथी बोला—“कहामा बलकर फिती बँध को बिगा देना छोड़ूँ दबा प्राकर छीक हो जायवा ।

“मैं तो लमभता हूँ यह दबा के बग का राव नहीं है । घमी बोला धीर घमी अबान बम् । ताग्जुब है ! मैं ता लमभता हूँ इसे नाई भुत मगा है ।”

“क्या ताग्जुब है !

“ताग्जुब तो कुछ नहीं पतरा बकर है । इमक ताब-साय बलने-

बाला वह मूत घमर किसी दिन हमारे पीछे लग गया तो फिर बड़ी मुश्किल हो जायगी । इसके लो घामे-पीछे कोई नहीं हम बास-बन्धे बासे क्या होगा ?

दोनों कुछ बेर तक चुप रहे । भैरव ऊँचने लगा था । उन्होंने उससे लो जाने को कहा और खूब भी दोनों लो गए ।

दूसरे दिन से भैरव धीरे धीरे परिव्रम से अपना काम करने लगा कि जिससे उसकी वह दुबसता छिप जाय । उसका ध्यायधराता उसकी विषयता देखकर इन्दीमूत लो उठा धीरे उसकी स्वाभिभवित का उस पर धीरे धीरे महारा प्रसर पड़ गया ।

पाँच-छः दिन में वे लोय स्हासा पहुँच गए । भैरव के ध्यायधराता का नहीं मकाम था धीरे वहीं उसके बास-बन्धे थे ।

स्हासा में एक महीने का पड़ाव था । नए सास का त्योहार निकट था । स्हासा का वह सबसे बड़ा उत्सव था । उसके बाव ही जाने का निश्चय था ।

ब्यापारी की पत्नी धीरे लो बन्धे थे । भैरव जानवरों का सागाव लोस-लोसकर जमा कर रहा था । ब्यापारी एक दूसरे ब्यापारी पड़ीली से बावें करने लगा था । उसकी पत्नी धीरे दोनों बन्धे बहुत दिन बाव परदेस से लोटे हुए पति धीरे पिता के सामान की धीरे सख ही घाहृष्ट लो गए थे ।

उन्होंने भैरव को उसके कपड़ों के कारण बहुत दूर का परदेसी नहीं समझा था । पत्नी ने तिब्बती में उससे पूछा— 'मेरी बीवें साए लो या नहीं ?'

भैरव ने इधारे में कहा— 'मैं नहीं जानता ।'

ब्यापारी का छोटा लड़का बोला— 'धीरे मेरे पिताने ?'

भैरव की समझ में उनकी बोली कुछ भी नहीं आई । समझ में घामे पर भी वह क्या बबाव देता ? उसने फिर पहले की ही तरह हाव हिलाया ।

घान्त में व्यापारी की लड़की बोली— 'घौर मरे कपड़े ?

बैरब ने फिर घपना हाथ दिखाया डसाया । तीनों घपनी-घपनी बियों की वृत्ति न होने न इनने बुनो न हुए, जितना उसके घनिमानी न से एक भी शब्द न निकलने से बिम्ब हुए । उन्हें क्या मानम प्रसूनी ब क्या बा ?

व्यापारी के घान्त पर उन सबने उसमे घपने-घपन प्रथम किए घौर बने सन्तीपजनक उत्तर पाया ।

उसकी पत्नी ने पूछा— "यह कौन है ?

व्यापारी बोला— "यह भी ऐसा ही है ! बड़ा परिश्रमी है ।

उसकी लड़की बोली— "बड़ा बमन्गी जान पड़ता है ।"

"नहीं बड़ा सीमा है ।

पत्नी ने फिर पूछा— "कहाँ का रहनेवाला है ?

व्यापारी ने बाग की कुछ छिराकर कहा— "नेपाल घौर भारत की पोसा बा ।

"इसे तिब्बती नहीं घाती ?

"तिब्बती क्या ? कोई जो भागा नहीं घाती ।

"बड़ा पजीब जानबर है ।

"युगा है ।"

तीनों ब कौतूहल से उसकी तरफ बेमन लग । उसके लिए जो पूछा न्होंने घपने मन में पैरा कर ली थी वह दूटकर बह गई ।

व्यापारी बोला— "लेकिन दिन भर काम में ही मजा रहता है जो एक बार समझ बोने उसे कमी नहीं भूलता ।"

पत्नी ने पूछा— "तनखा क्या होगा ?"

"तनखा कुछ नहीं ।"

"बनमानुष है क्या ? तनखा क्यों नहीं होगा ? बटरी है या भेड़ ?"

"कुछ-कुछ ऐसा ही समझो" व्यापारी ने कहा— "एक बंजन से ही पकड़ जाए है हम इसे । भूनों मर रहा बा । बही उपकार क्या

कम है। फिर वैसे से क्या करेगा यह ? जाना-अपना हम बेते ही है हमे।

वे तीनों बड़ी बच्चा से उसकी तरफ देखने लगे। एक-एक कर तमाम जानवरों का सामान औसतकर उसने मकान के छापन में जमा कर लिया था। सभी जानवर मानो उसके एक-एक इंगारे को पहचानते व पैसा बान पड़ा।

सबका सामान उठर जाने पर उसने बड़ी निराशा लेकर व्यापारी की ओर देखा। व्यापारी ने एक गोठ की तरफ इशारा किया और वह तुरन्त ही समझ गया। उसने कुछ ही बेर में सबको वहीं बाँध दिया। जो खुसे रहने के से से गुले ही छोड़ दिए।

उसके बेटे ने पूछा—“इसका नाम क्या है ?”

व्यापारी हँसा—“जो भी रख दोने इन छिपी से इन्कार न होमा।

‘तुम किस नाम से इसे पुकारते हा ?’

‘हम तो इसे बहुर के नाम से पुकारते है।’

‘किसने रखा यह नाम ?’—उसकी लड़की ने पूछा।

“कमी-कमी यह इस घर का उन्चारण करता है इसी से।” उनके दो में व्यापारी कुछ घम्मौर होकर बोला—‘लेकिन एक रात को यह बिनकम बाफ-भाफ बोला था।’

‘फिर ?’—पत्नी ने पूछा।

“फिर बीते ही हो गया। इनी से मैं सोच-ना हूँ इन कोई मृत सया है।

उनकी पत्नी तीनों बच्चों का हाथ भींचकर भवन मकान की दूसरी मंजिल पर चढ़ने लगी।

व्यापारी बोला—“पर भय की बात नहीं है। मैं आज ही आकर इनके इलाज का इन्तजाम करता हूँ। मनुष्य का बेटा है घाबिर हमारी बात का हमारे देज का नहीं भी है तो क्या हुआ ? हमारी सेवा करता है बड़ी सगल से।”

पत्नी ने कहा—‘अगर इसकी मदद करनी चाहिए। लेकिन जब तक इसका मृत नहीं निकल जाता हमे जानवरों के साथ बौद्ध में ही

भ्यापारी भैरव को बड़ी छोड़ गया। कुछ देर में बैद्य का एक बेल्ला घाया। बेल्ला भैरव को लेकर एक लुहार की दुकान में गया। वहाँ वह लौहा गरम कर रहा था।

बेल्ले ने भैरव को भूमि पर बैठ जाने की आज्ञा दी और मड़सी से एक गरम भास लोहे की सील उठाई और भैरव से मुँह खोल जीभ बाहर करने को कहा।

भैरव उठकर भागा। बेल्ला रोड़कर फिर उसे पकड़ लाया। इस बार लुहार ने उसे मजबूती से घपनी बलिष्ठ बाँहों में बस लिया। बेल्ले ने फिर बड़ी लोहे की छड़ घाग में छेद निकालकर भैरव की जीभ को बाधने के लिये बढाई।

भैरव चीख उठ्य—“ठीक हो गया! मेरी जबान खुल गई!”

बेल्ला उसकी भाषा न समझने पर भी घपने कौशल पर बहुत गुन हो गया। लुहार ने भी उसका लोहा मान लिया। लेकिन भैरव की भाषा सुनकर उसके एक पाक हो गया। उसने बैद्य के बेल्ले से पूछा—
‘जबान तो खल गई जान पड़नी है पर यह बोली कौनसी है?’

‘जबान के खुलने से मतलब है बोली कोई भी हो। बस मैं भैरव का हाथ पकड़ लिया। उसके मन में यह बात पँठ गई थी कि अगर वह बूंगा घपने पर तो खल होगा तो वह घपने गुरु के सामने घपनी घकल का लुगल और बँधे के लोहे? उसने जाते हुए लुहार से कहा— तुम्हें भी कुछ बलिष्ठा रिक्ता बूँदा क्याकि नूने बीमार को पकड़ा तो देरी लड़नी न बबा को घामे रखा।’

भैरव का हाथ पीचकर स बसा बसा और गुरु के सामने पेश कर बोला— ‘मैं ठीक कर लाया हूँ।’

गुरु ने भैरव की घोर बैद्यकर पूछा— ‘क्यों?’

भैरव को फिर एक घकल लुगल गई। वह फिर बूँदे का घनितप करने लगा— ‘दहत्तु तन् तन्!’

गुरु ने बँधे की घोर लजर की। बेल्ला बोला— ‘बाम देने के घय

से यह ऐसा कर रहा है। यह साफ-साफ बोलने लगा था।

दुब ने भैरव का मंहू बलवाकर उसकी ओर दबी धीर कहा—

“सकी जीम की जड़ काटनी पड़यी भीषे मे।

भैरव कुछ न समझकर भी बहुत समझ गया उसने राती सी मूर्त बनाकर घबीब तरह के इशारे किए धीर बाहर को जाने लगा।

बले ने उसे थोर न जकड़ रखा था। वह बोला—“पुह जो घाय भी बलिये, मैं घायके सामने फिर इसकी जवान कोस देगा हूँ।

पुह जो एकदम शैय का ऐसा उत्साह भी मही बडाना चाहते थे। कहने लगे—“जवान जल गई होती तो क्यों इने मूर्त बामन की जकरन होती? जाने की जिद कर रहा है यह जान दो कोई बकरी काम होगा। मुमकिन है जयम जाने का काम हो। गेको नहीं इन। कीमन की काई शिक्ता नहीं। मैं इसके मासिक को बरसों से जानता हूँ। नरद न भी होया तो मैं भारत की बहुत-सी दबाएँ उसके मासिकन संयबा लूया। लेकिन अब फायदा हो लभी तो न।”

“घयरा हो गया है दुन्देब। यह बोला था।”

“क्या बोला था ?

“मैं समझ तो नहीं।”

“इमसे कह दो कल घाएँ।”

बले न उससे तिष्ठती में कहा—“कल घाना घपने मासिक को भी साथ ले घाना।”

भरब छूटकर भाया। फिर आएँ? परिजमा की सड़क छोड़कर वह कभी नू मरी पर घाया। बडी प्यास लग रही थी उसे। पानी पीकर उसने दिल धीर हिमाय ठंडा किया। फिर साजने लगा—“घब यहाँ नहीं रहना चाहिए। मासिक बकर मेरे जवान खुलवाकर ही छोड़गा धीर जवान लुन जाने पर फिर मेरी खीर नहीं है।”

वह पुन बार-बार को सड़क पितो लम पर से होता हुआ चला गया—बड़ी तेजी से। राम तक बकर वह बीस मील से घनिक ही पार

दिन भर माता के साथ बातचीत करता। उसकी सेवा घीर स्नेह से माता बहुत ही उठी। भावना का एक प्रतीक स्रोत उसके हृदय से फूट निकला। भाषा उद्योगों के लिए एक प्रत्यक्ष बुद्धिमान माध्यम थी।

एक चमत्कारिक रीति से कुछ समय में घीर के भीतर माता की भावना को समझने के लिए भाषा का जन्म हो गया घीर फिर कुछ दिन बाद उसे समझा सकने योग्य बोली उसको प्राप्त हो गई।

घब माता के तमाम संशय घीर ने दूर लिए। यही नहीं वह पास पड़ोस में भी भाता-जाता घीर किसी को उसके ऊपर कोई शक न होता।

एक दिन माता के परिचित मठ का एक महान् माता की खोज करके आया। उसने घीर को देखकर कहा— "कौन हो तुम ? पहले तो मैंने तुम्हें यहाँ कभी नहीं देखा। कहाँ से आए हो तुम यहाँ ?"

"ऐसे ही घूमते-घूमते आ गया।"

"बड़िया से क्या तुम्हारा कछ रिखा है ?"

"हाँ यह मेरे पूर्वजन्म की माता है।"

"कहाँ है वे ? बुझा ही उन्हें। कहना मठ का महंत आया है।"

घीर आकर माता को बुला लाया।

बहुत बोला— "मैं बीमार हो गया था। कई महीने तक पड़ा रहा इसी से नहीं आ सका। तुम्हारे आस है या नहीं ?"

माता न उत्तर दिया— "मेरा बेटा आ गया घब मेरे कोई कमी नहीं रही। यह उबर-उबर गाँवों में शीघ्र-रूप कर सब कुछ से आना है। तुमन देगा नहीं उसे ?"

महंत बोला— "हाँ देना है।"

"घीर इसने मेरा तमाम कारोबार सम्भाल लिया है। मेरे जानवर भी सब मोटे-ठाक हो गए हैं। मेरी खेती भी हरी ही गई। इस जन्म में मेरे काँची जी हो जायेंगे। फिर मुझे किसी भीर की कमी

नहीं रहेगी।”

बहुत बहुत सन्तुष्ट होकर बोला—“उस भयवान् की बड़ी घटीम रबा है।

माता ने कहा—“यब तम्हें मेरी कछ भी बिन्ता करने की बकरत नहीं है।”

‘फिर भी कमी कोई घाबरायकता होने पर तुम घाने बेटे को हूपारे मठ में भेज सकनी हो। यब तो तुम्हारी इच्छा का यह बाहक तुम्हें मिल गया।”

मईन जला यमा और औरब से एक दिन मठ देखने को घाने के लिए कहू यमा।

यरब को बुझिया की सेवा में रहते रहते प्रायः एक शाम हो गया यब तो उसकी बोली में किसी को भी उनके प्रति परदेपी होने का धक नहीं रहा।

यबानक एक दिन बुझिया ने औरब से कहा—“बेटा बहुत यह बुनिया देख ली यब तो किसी तरह भयवान् उठा मैता तो ठीक था।”

“ययो माँ ऐसा क्यों कहती हो ? तुम्हारे कारण ही यद्य यही मन लमा है। तुम ऐसा क्यों कहती हो ?”

‘नहीं तो क्या कहूँ बटा ? ययर मेरी माँख होती तो मैं कहीं-न कहीं से तुम्हारे लिए एक बहू बुँक साठी ; यही एक इच्छा मेरी बाकी रह गई है।”

“इच्छाओं का कहीं गमठ नहीं है।”

“तुम्हारे मन में ऐसा वीरग्य क्यों उपजा है ?”

औरब को बासो और औरबी फिर माब धाई। बहू बोला—“माँ वीरग्य में सांमि है।”

‘नहीं है। मैं बहती हूँ बे मठो के बहूँ जो घा-बीवन घबिबाहित ही रहने का प्रयत्न करते हैं। क्या इम्होंने गारी से बगम नहीं पाया है ? बेरा मैं बब तक तुम्हारे लिए एक बहू न मैं माऊँ तब तक मैं बुझ से

“यही मर सहेगी।”

“तुम्हारी सेवा को मैं हूँ तो सही।”

“अपने स्वार्थ के लिए विचार है। मुझे तुम्हारे मतसब की बिना क्यों न हो?”

भैरव बस ऊँचाई पर आनखों को बराते हुए धीर धरती पर खेती करते हुए घबरात सोचना—“यै कहीं-से-कहीं या मया? मनुष्य की प्राणोत्था पर किसी अदृश्य देव का हाथ बकर है। ऐसी एक उसकी भावना बूढ़ हो गई।

उम एकान्त में बहु कर्मबारी से भाग्यबारी बन गया सब बहु अपनी इच्छा-उक्ति को भी कोई महत्त्व न देता। ‘अमवान् का एक सूक्ष्मभाग है उसी शक्त में हम बूम रहे हैं।—कभी-कभी ऐसा लोचते हुए बहु प्रकिय बन गया धीर किसी प्रकार समय बिना देन को ही जीवन का मद्य मानने लगा।

‘जीवन की ये तमाम महत्त्वकाशाएँ मिर्ल पत्नीमण्डि के स्वप्न के समान हैं। तारी कर्मस्य की प्रेरणाएँ अपने अपने दृष्टिकोणों पर कल्पनाएँ हैं।’—ऐसे विचारों में भैरव अपने व्यक्तित्व को या बँठा धीर भाग्य के किसी परिवर्तन के लिए हर वस्तु ठीकार होन लगा।

अचानक एक दिन बुढ़िया बीमार हो गई। उसने भैरव से कहा—
“बटा जान पड़ता है सब मेरा समय या गया है।”

“तही माँ लेगा न बहो।”

“बटा एक दिन तो जाना पडना ही।”

भैरव ने मन में सोचा—“बहु अवाद्म मत्य है।”

माता फिर कहने लगी—“मनी को जाना पडा है बटा।

“क्या इच्छा है तुम्हारी?”

“तुम्हारे विवाह के लिए ही इतन दिन छुट्टी रखी। अब नहीं ठहर सकती।

“विवाह कर क्या होगा? तुम मरना तो मैं विवाह कर चुका।

'नहीं बेग तुम घमर विवाह नहीं करोगे तो मेरी धारमा यही मंडमायी खेपी ।

भैरव न उसकी इच्छा की बधीरता सोचकर कहा— 'घण्टा माँ तुम घण्टी हो जाओ तो मैं नहीं से सड़की बूँडकर विवाह कर सेता हूँ ।'

माता ने कहा— 'घण्टा मैं घण्टी हो जाऊँगी तुम कम मठ के महंत से दवा माँग जाओ ।'

दूसरे दिन भैरव महंत के पास से दवा माँग लामा लेकिन उससे कोई साम नहीं हुआ । माता की हालत दिन-दिन बुराब होती गई । घमर में माता ने भैरव का हाथ पकड़ कर कहा— 'बेटा तुम प्रतिज्ञा करो मेरे मरने के बाद तुम विवाह कर लोमे ।'

भैरव ने प्रतिज्ञा की । दूसरे दिन माता का स्वर्गवास हो गया । उसके बाद भैरव का मन बड़ा नहीं लगा । दिन-भर जानबरो के साथ दूर भसा जाता । शाम को घर न जाता तो घोर कहाँ जाता ? रातें काटनी बड़ी दुसर हो गई । जरा देर के लिए घोंटें मचती फिर वहीं घंभी माता का जरा घोर रोव से विभित भयानक मुख उसे दिखाई देता— बहुत साफ और गजरीक ।

भैरव की इच्छा होती वह वहाँ छोड़कर जसा जाव । परन्तु कैसे ? कई भेड़ों बकरियों घोर जमरियों की शिम्मबारी थी उसके ऊपर । जहाँ ऐसे ही छोड़कर कहाँ जसा जाता ? हे भी देता तो किसे ?

माता की मृत्यु के पाँचवें दिन की बात है रात को जब वह सो रहा था । सोते-सोते उसने एक भयानक सपना देखा । कुछ मोड़ों की टापों की घाबाब से उसकी नींद खुल गई । माता उससे विवाह कर लेने की प्रतिज्ञा करा वह थी । पर भैरव विवाह के लिए बरा भी तैयार न था । वह समझ इसी बण्ड देने के लिए घाब मत्वा का मूल उठा है ।

भैरव चुपचाप बिस्तर में पड़ा चुबक गया । धूत के लिए बीबास, धार-तारों का बंधन कुछ भी बाधा नहीं है—इस बात को वह जानता था । बाहर कई लोगों को बाँटें करते हुए उसने सुना । अपने जगई

बोली समयसे की जोसिद्ध की एक भी शक्ति नहीं समझ सका ।

फिर उन लोगों ने जब उसके हाथ घड़घड़ाते हुए किए तो उसका बिचार भूत पर से हट कर दूमरे बात पर चला गया । वह उसका निर्गुण्य कर ही रहा था कि उन लोगों ने पत्थरों से दरवाजे तोड़ने शुरू कर दिए ।

भीरव बुधबाप उठा घीर लिङ्गों के राह भाग जाने की सोचने लगा । उसने ज्यों ही धीरे-धीरे लिङ्गों को भी तो देखा कई घड़घड़ातों के उसका धर धर लिया है । लिङ्गों में कूदकर भाग जाना उस रात में उसके लिए घबरा नहीं था ।

उसने लिङ्गों बगड़ ही रहने ली । इनने ही में पत्थरों की बाटो म उसका दरवाजा टूट गया घीर से नीचे धारमियों ने भीतर बुधबाप उसको पकड़ लिया इनमें जो प्रबल था । उसने कहा— जो कुछ मान है निकाल कर मापने रख दो ।

‘मान ? इस तरीके किमान के घर में कहां से गया है ?

“य बाते घीर बहाने रहन दो हम लोग सब समयसे है । हम लोगों की मान बुझने में जो तकलीफ होगी हम उसे पूगी-झी पूरी तुमका बसूल कर देंगे ।”

जबबान् याची है तुम देन को पत्थर नहीं बच थी मिल जाय तो मुझ याची से उठ देना ।”

“नहीं इस नहीं मान मजठे यह बात । तुमने कहीं कन में गाड़ रखा होगा ।”

यस घाया कहीं में ? एक घड़ी बहिया रहती थी कहीं हाथ-पैर म लावार—घड़ी पर गई दिव्यारी । एक में जड़-बकरी चराकर उनसे कुछ से दिन का भेजाया—कोई गेनी नहीं व्यापार नहीं कीकरी नहीं ।”

हमें सब मान्य है । मेना में नीकर से तुप लून में बहुत-सा मोना घीर बहाहरान मुम्हारे हाथ मल है ।”

वह बुझिया का बंटा का नीकर वह तो कभी का मारा गया । कहीं

को लूट उसके हाथ समझी ?

“युम कौन हो बुढ़िया के ?”

“कोई नहीं। ऐसे ही एक बिना दर-द्वार का भेंपता मैं भी हूँ। यहाँ बुढ़िया को उसकी राह दिखाने को किसी हाथ की ज़रूरत थी और मझ भी रात को कहीं सिर रखने के लिए ठौर चाहिए थी। —भैरव में बिना किसी बनावट के सब्जी-सब्जी बात उनके सामने रख दी।

मेकलन ने डाकू बड़ा पत्थर का उनका कसेबा बा। घायल म बात भीत कर कुछ कैससा करने मने बे। मस ये उनका ठिगठतियो से बहुत कम साम्य था और बोली में नी कुछ अन्तर था। बहुत बेर तक जम्हौन बाठें थी। साथ की मसालो से मकलन में इमर-उचर बहुत कुछ खोज भी की।

अन्त में फिर एक भैरव के सामने धावा और बड़ी बयापूबक उससे कहने लगा— “भाई मैंने बहुत कहा इतसे। ब माननेवासे नहीं है। य तुम्हारी बातों को बिमकुभ बेबुनियाद समझ रहे हैं।

तो क्या करना चाहते हैं य ?”

“तुम्हें मार-पीटकर छिपा हुआ धन प्रकट करना।”

कहाँ बताऊँ मैं ? उड़ी सोच सकर भैरव ने कहा।

डाकुओं के सरदार ने घपने हाथियों से भैरव को मकलन की एक बम्पी पर उबटा लटका देने को कहा।

तुरन्त ही उनको यात्रा का पासन किया गया। भैरव खुपचाप उस पीडा का सहन करने लगा।

सरदार की धाजा उस पर प्रकट की गई— “क्यों धभी और चित्तनी बेर तक नहीं बतावाते ?”

भैरव खुपचाप घामू बहाने लगा पर सरदार का दिल नहीं पसीजा। पर में कुछ बगब रग बे। सरदार ने जम्हें भैरव के सिर के नीच रखवा कर उनम धान लतवा दी।

पुर्न म भैरव का हाथ तराब हो गया। उसकी घाँटों में और

मे पानी निकलने लगा । वह जोर-जोर से चीखने बिस्बागे लगा । जब कहीं कुछ वा ही नहीं तो वह बतलाता क्या ?

यब तो भैरव की वह दमतीय बना देखकर कुछ डाकड़ों के मन में बड़ा उमड़ उठी । लेकिन किमी की हिम्मत सरकार की मूक के खिलाफ बोधन की न थी ।

एक ने सरकार से कहा— 'सरकार मुझे एक बात सूझती है । हमारे एक मापी के मर जाने से एक छोटा कासी हो गया है । उसको मे बाता हमारे लिए एक मस्किन सवाल हा गया है ।

सरकार बोला— 'तो क्या उमकी खासी पीठ पर तुम इसे बिठाना चाहते हो कि यह घामानी से भाग बाय ।

'भाय कर वहाँ जायका ? हम इसको बीच में रख देंगे । हमारी बाग जब हमके यहाँ कोई मरी है तो क्यों न यह हमारे विरोह में भरती हो जाय ? हम इसे हमारा कुछ दिन तक एक कंठी की तरह न रखेंगे । बाद को बीमा भी हा ।'

सरकार को बाग सुझी । उमन भैरव को मुसबाकर अपने सामन लड़ा करार कहा— 'तुम्हारे पास एक कासी कौहो भी नहीं है क्या ?

'नहीं ।

'तो फिर तुब हमारे साथ क्या ।'

'वहाँ क्या करेगा ?'

'जा हम करने है ।'

भैरव कुछ सोचने लगा । डाकड़ सरकार से फिर कहा— 'हम उसे डाकड़ नहीं है । घम्याय मे जमा किया पैसा जहाँ है हम उसे ही मूटन है । हमारे क्या भी है बर्न भी है । हम बहुत से मठो की सहायता करत है ।

भैरव से मन में सोचा— 'क्या जानि है उलने सक्क जाने मे इनके हा माब क्यों न बना जाडे ?'

डाकड़ों के सरकार से पूछा— 'क्या तुम्हें बोरे पर चढ़ना घाता है ?'

भैरव न उत्तर दिया— 'हाँ कुछ-कुछ घाता है ।'

“बसो फिर ।

भैरव बोला—“मेरे धायम में कुछ जानवर हैं ।”

उन्हे खोल दो किसी बाँव की धोर हुई तो ।

ऐसा ही किया गया । सुबह होते-होते भैरव उस खासी चोड़े पर सवार होकर उनके साथ चलन मया । उसके हाथ-पैरों में उन भोगों न खड़ीरों बाँव की थी । इस प्रकार कि वह पाड़े की सवारी घासानी से कर सके पर माय न बाय ।

कम भिस्ताकर बस चोड़े धीर बस घादमी से उस गिरौह में भैरव सहित । उनके साथ वह कहीं धीर किबर का रहा है । कुछ पता नहीं था बने । सूर्योदय हो रहा था । पूर्व की अवस्थिति में कुछ अन्धकार समाया उसने वे सब बराबर उत्तर की धोर ही बढ़े जा रहे थे । मार्ग बिभक्तुन मैदान से होकर था इसलिये गति में तेजी थी । सूर्य छिर पर बहने को भाए धीर वे भोग एक ठामाव के निकट पहुँच गए ।

सरदार की आज्ञा से चोड़े रोक दिए गए, सब उतर पड़े । वहीं बड़ाव बामा जाना विविधत हुआ । चोड़ों पर से सामान धीर खीने उतार ली गई धीर उन्हीं बरने के लिए छोड़ दिया गया ।

ठामाव के एक धोर बानू हटाकर पडा हुआ सामान निकाल लिया गया । सरदार के लिए एक ठानू ठान दिया गया उनके विभाम के लिए । वे विभाम करने लगे ।

भैरव के हाथ-पैरों की खड़ीरों कुछ कसकर बाँव की गई धीर घेय लाग लाने-पीने की व्यवस्था में लगे ।

भोजन के उपरान्त सभी भोग विभाम करने लगे । सब भैरव को एक धीर खीर में एक ग्यारी में बाँव दिया गया । उस समय उसने कुछ नहीं कहा ।

सब लान लो गए, केवल एक भैरव ही जाग रहा था । वह अपने मन में सोचने लगा— इस तरह बर्बन में इन भोगों के लान कब तक दिन कटेंगे ? मैं धपर इनका लान छोड़कर कहीं भानना चाहूँ तो कहीं

को जाऊँया ? बिनाकम धपरिविस्त यह देस अब कही नही भाव सकता
तो क्यों न मैं इनका भजन होकर धयने को मुक्त कर लू ?”

संध्या समय जब सरदार जाग उठा तो चैरब उसके समीप गया
धीर बोला— मेरी एक प्रार्थना है ।

सरदार बोला— क्या है ?

मेरे लिए यह देस बिलकूल गया है । मैं कही नही भाव सकता
इसलिए मेरे बन्धन लोम दिए जादें ।

तुम हमारे साथ कोई डोह नही रखोगे ?

नही बिलकुल नही ।

सरदार ने हँसकर कहा— ‘सच्ची बात है हम विश्वास कर लेते हैं
तुम्हारा ।’ तुरन्त ही उसने भरव की जंजीरें सोल देने की आज्ञा दी
धीर वह मुक्त कर दिया गया ।

भरव ने सरदार के प्रति बड़ी कृतज्ञता से कहा ।

सरदार हँसा धीर कहने लगा— क्या नाम है तुम्हारा ?”

धीरब बड़ी बिस्ता में पड़ा सोचने लगा ।

‘नाम क्या इनती देर तक सोचा जाता है ?’

भरव को पीछ धकल था गई वह बोला— ‘मेरा नाम दहद है ।

‘दहद ! अगर हम तुम्हें बहा ग छोड़ दें तुम धयन घर पहुँच
थायोग ?’

‘कही है मरा घर ?’

‘बही बही मैं हम तुम्हें जाण है ।’

नही बही मेरा घर नहीं है ।’

किर कही है ?

कही नही है । कही न जाने मे ही मैं तुम्हारे विरोह में सपार्क के
नाथ गामिज हो गया ।’

सरदार ने धीरब का विश्वास करना प्रारम्भ किया वह प्राकृतिक ही
था कि धीरब भी बड़ी निरालम व्यक्ति म उगकी सेवा करने लगा ।

‘कोसिप ता यही है हमारी।’

‘एक तुम्हारी कोसिपा से क्या हो सकता है ? जान पड़ता है महति
स प्रेय के ही पक्ष में है।’

‘महति ता इस ऊँचाई पर व्याप्त शीत के भी पक्ष में है। तो क्या
हम जीवित रहने के लिये घाम नहीं लगाते। खनी से निहीन इत बेध
में मांस नहीं खाते ? प्रकृति किसी पक्ष में नहीं होती। उसने मनुष्य को
सृष्टि के रसी है कि वह उमका उपयोग करे।’

धैर्य हुआ और उसने पूछा— ‘हम यह किस ओर जा रहे हैं ?’

‘बा— वह के मदान में।’

‘वही है कोई विशेषता ?’

‘कोई नहीं। वह अनमन्य स्वभाव है।’

‘फिर वहाँ जाने के मतलब ?’

‘जो कुछ मान मुल्कर से जाते हैं वही जमा करते हैं।’

‘वहाँ शीत है ?’

‘येरे घरवाला।’

‘यम निबंन और शीत में क्या रहने हैं ?’

‘हमारा एक मठ भी है वहाँ उम मठ की रक्षा के लिये।’

‘मठ में कौन है ?’

‘हमारे कुम्बेब के बड़ी तपस्या करते हैं अपने कुछ स्वाध के लिये
नहीं समस्त संसार के कल्याण के लिये।’

‘उम कल्याण की साधना कैसे होती है ?’

बताईना। महति में जो कानून की पद्धत में सबसे एवता बना
देने की बात है उसमें वह परिभम की जकरत है। हम वही साधना के
बल में इसी समय पर पहुँचना चाहते हैं।’

धैर्य को वह भयकरवादिमी का मठ याद आने लगा। उसने पूछा—

‘तुम और बिम्बार से बताइए। मुझे इन प्रश्न से बड़ी प्रीति है।’

‘तुमने कर्म शैलेय का नाम मना है ?’

‘सुना होगा घायब कमी ।

“मैत्रेय प्रागामी बुद्ध का नाम है । उनके जन्म पर भरती का साग राव-दुप कस्तह बैर ऊँच-नीच की भावना घमीरी-मरीची—सब नष्ट हो जायगी । सारी भाववता एक परिवार-मी हो जायगी । चारों ओर सुख-शान्ति का राज्य हो जायगा ।

भैरव को मग वैतम्य की याद घाने लयी ।

सरदार कहता जा रहा था— “इस चरती पर बहुत पाप बड मए है । हमारे पुण्येव वहाँ मैत्रेय के जन्म के लिये कठोर साधना कर रहे हैं ।

“मैत्रेय मयवान् की इच्छा से जन्म लेव या पुण्येव की ?”—भरव ने प्रश्न किया ।

“कोपिल तो यही है हमारी ।

“एक तुम्हारी कोशिस से क्या हो सकता है ? जान पड़ता है प्रकृति इस जेब के ही पल में है ।”

“प्रकृति का हम ऊँचाई पर ध्याप्य शीत के भी पल में है । तो क्या हम पीबित रहने के विषय ध्यान नहीं लगते ? खनी से बिहीन इस देश में भास नहीं खात ? प्रकृति किसी पल में नहीं होती । उसमें मनुष्य को बुद्धि दे रखी है कि वह उसका उपयोग करे ।

भैरव हुंसा घोर उसने पूछा— “हम यह किये घोर जा रहे हैं ?”

“बाद बह के ईशान में ।

“वही है कोई बँसेवाले ?

“कोई नहीं । वह बमगाय स्वान है ।”

“फिर वहाँ जाने से मतलब ?

“जो कुछ भास सुटकर से जाते हैं वही जमा करत है ।”

“बढ़ी कीत है ?”

“मेरे घरबाल ।

“एन निर्जन घोर शीत में क्यों रहते हैं ?”

“हमारा एक मठ भी है वहाँ उस मठ की रक्षा के लिये ।

“मठ में कीत है ?

“हमारे दुष्प्रेष के वहाँ उपस्था करत है अपने कुछ स्वार्थ के लिये नहीं समस्त संसार के कल्याण के लिये ।”

“उन कल्याण की मापना कैसे होती है ?

“बताऊँगा । प्रकृति में जो काशुन की मध्य से मन्की एवता बना देने की बात है उसमें बड़े परिश्रम की जरूरत है । हम वहाँ प्रायता के बल में इन्ही लक्ष्य पर पहुँचना चाहते हैं ।”

भरत की बहू भयकरवादिनी का मठ पार घाने गया । उसने पूछा—

“कुछ घोर विचार से बताएँ । मुझे इस प्रश्न से बड़ी प्रीति है ।”

“तुम्हें कभी नैरव का नाम मना है ?”

डायरी का देज

श्रंठ में वे सोए जिस दीब में बहूँसे बहूँ कलजन घीर रिवुषी भी
 घाए थे । यसी चोडे रोक लिए गए । थोडा-थोडा सामान प्रत्येक
 थोड़े में वा लव उतार लिया गया ।

थोड़ों के समय में पहुँचते ही डोम्पा घीर उधका बेटा घर से
 बाहर निकल घाए घीर सामान यथास्थान रखकर प्रतिबियों की घाव
 यमत में लम गए ।

लव प्रतिबियों का व्यक्तिगत सामान ठाकुर-गृह में ही रख दिया
 गया । संघ्वा लमीप थी । चाम पीकर वे सब सोए प्रार्थना के लिए
 तैयार हो गए । धंधी माना से भैरव को भी प्रार्थना का कुछ पाठ गाव ही
 गया था । वह भी सबक गाव पुनहुमाने गया ।

प्रार्थना के समय की रसा लव कस छोड़कर करते थे वे लीन ।
 प्रमत्त घीर मध्या की प्रकाश-सधियों में वे लाप घरने समवेत रवर्षी से
 एक धत्रीव रव तर बैठे थे । मार्ग में बहूँ भी बहूँ बेला हो जाती बहूँ
 कुछ भी हुला के घपनी घावा को बिछाम देने को इक जाते । यिमटी में
 तंबू मड़ जाने घीर बिस्तर बिछ जाते । सबसे बहूँसे प्रार्थना होनी लव
 कोई नुमरा गाव ।

विद्युत् कई दिनों के भैरव घीर तरवार के बीच मित्र संनर्म में घा
 जाने म दिवय प्रीति ललम्न हो गई थी । बाव की घीर भैरव की
 घनुरकिन देलकर तरदार घीर भी घधिक लम तर घाकृष्ट हो गया ।

भैरव लल ठाकुर गह को देलकर बहुत प्रसन्न हो गया । लामने
 बिगाम लनि काँ देलकर भैरव से पूछा— यह किसकी प्रतिभा है ?”

“यही मन्त्र है।

“इसे किसने बनाया है ?

“मन्त्र-मठ के ब्रह्म महाराज ने।”

“मन्त्र-मठ कहाँ है ?

“यहाँ से दो दिन की यात्रा में। वहाँ भी अधिक एकांत है।”

“वहाँ कौन-कौन रहते हैं ?

ब्रह्म महाराज और उनके शिष्य। सेविन शिष्यों की वे बड़ी कड़ी परीक्षा लेते हैं। क्या-क्या शिष्य प्रबन्ध कर ही वहाँ से भाग पाते हैं।

शैरव मन्त्र की मूर्ति को देखते हुए बोला—“ब्रह्म महाराज योग साधते हैं या यह मूर्ति बनाते हैं ?

“मूर्ति निर्माण को क्या तुम कोई छोटा योग समझते हो ?

“मैं तो इसे एक साधारण पैदा गिनता हूँ।”

सचि से डामना कहा जा सकता है। लेकिन मन की कल्पना को मूर्ति का रूप देना यह तो बड़ी कला है।

“कला भी योग का क्या संबंध ?”

“इंद्रियों पर अधिकार करने के अनंतर जब मनुष्य अपने मन का भासिक हो जाता है तब उसके कारण जागती है।”

शैरव अपने मन में सोचने लगा—“जिसे जब तक एक डाकूओं का सरकार समझता जमा भा रहा है वह तो बड़ी गहराई का जीव जान पड़ता है। शैरव ने पूछा—“कारण क्या हुई ?

“कारण याने ठहराव। हमारे मन के सागर की भाँति हर समय विचारों की लहरें बनती धीरे बिलकूती रहती हैं। वही मन की चंचलता है। जब मन की राम बुद्धि के द्वारों में घा जाती है तो फिर वे महुरें म बनती हैं न बिलकूती हैं।”

“क्या होता है फिर ?

“विचल स्थिर हो जाता है।”

“इस बड़ता को घाय क्यों महत्त्व देते हैं ?”

“यह बड़ता नहीं है यह ध्यान-योग की सिद्धि है । जैसे गीली मिट्टी में कोई भी छाप स्थिर हो जाती है । ऐसे ही मन हो जाता है जो भी ध्यान किया जाता है वह मुनि-सा स्थिर हो जाता है भीतर, और योगी मुक्तिकार सहज ही उसे बाहर छाकार कर देता है ।”

“जब योगी क मन में यह ध्यान कहीं से घाटा है ?”

समष्टि की चेतना में से । भूत वर्तमान और भविष्य यह हमारी गणना से है । बोधिसत्व—यथार्थ में न हुआ है न है और न होगा । वह तीनों नाम और मोका में व्याप्त एक चिरंतन सरय है । वास्तु में उस सत्य के एक पड़ जाने से कभी-कभी हम बोधिसत्व का पा सकते हैं । उसी का फल-स्वरूप वह मूर्ति है । सरदार ने कहा ।

भरत सोच-विचार में पड़ गया ।

सरदार बोला—“बुद्धदेव की धारणा एसी ही है इच्छा करने पर के मन की किसी भावना किसी चिन्त को इच्छानुसार स्थिर रख सकते हैं इसी ताकत न के होनेवासी घटनाओं को पहले ही जान लेते हैं । किसी मनुष्य के मन की बातों को बता देना तो उनके सिये पल है ।

भरत के मुँह से प्रश्न निकल पड़ा—“माता भी के बारे में भी यही कहा जाता था ।

सरदार ने पूछा—“कौन माता थी ?”

“एक मठ में थी । लेकिन मैंने अपनी मूलतः से कुछ नहीं पाया उनमें ।”

“तुम हमारे बुद्धदेव की परीक्षा में सकते हो । वहाँ के नियम सामान लेकर शीघ्र ही हम लोग जायेंगे तुम्हें भी ले चलेंगे ।”

धैरव सोच रहा था—“जीवन बड़ी विचित्रता है । हम समझते हैं हम कुछ छोड़ कर जाने बड़ रहे हैं । लेकिन जब तक हमारे भीतर के विचार की प्रणामी नहीं बदलती वे छाड़ी हुई चीजें फिर साफर हमें पर मिली है ।”

डोल्मा घीर उसका लड़का प्रतिपियो के सिबे भोजन बना कर ले पाए ।

भैरव ने उनका परिचय पूछा । सरबार हँसकर बोला— 'यह मेरी पत्नी है घीर यह लड़का ।

“इस समय एकांत में इन्हें कोई भय नहीं लगता ?”

‘भय आत्मा का रोक है, भगवान् के भजन से वह पास नहीं पटकता ।

‘मेरे भी मन में आत्मा की खोज के लिये बर्षों की यात्रा उठी है ।’— भैरव ने कहा ।

सरबार बड़ी खोर से हँसा— आत्मा की खोज के लिए ? लेकिन बर्द ! जब तक तुम्हारे इस मिट्टी की व्यास नहीं बुझती तुम आत्मा को नहीं ढूँढ सकते ।

भैरव ने बड़े निश्चय से कहा— ‘मैंने उस पानी में बोझा ही बोझा पाया इसलिए मैं उस व्यास को भी एक बोझा ही समझता हूँ ।’

सरबार चौककर बैठ गया घब्रही तरह— ‘बर्द ! तुम्हारे मुँह से यह बड़ा विचित्र सत्य निकल गया । क्या तुम इस पर ठहर सकते हो ?’

‘हाँ सरदार !’

‘तब तुम पर मैं अपना कोई भय न रखूँगा—तुम्हें बुद्धि की सेवा में समर्पित कर दिया जायगा । तुम वहाँ जाने की तैयार हो ?’

‘हाँ वहाँ क्या करूँगा ?’

‘वहाँ तुम्हें योग सिखाया जायगा ।’

‘योग क्या है ?’

‘योग का अर्थ है जोड़ ।’

‘कैसे जोड़ ?’

‘जोड़—भीतर घीर बाहर का जोड़ । भीतर आत्मा है घीर बाहर है माया । उन दोनों का मेल मिलाना ही योग है ।’

‘अभी आपन इस मिट्टी की व्यास को बुझता ही है घीर फिर

घाप उसे योग में घामिल करना चाहते हैं ।

बद्द ! मैं अधिक कुछ जानता नहीं हूँ धरम जामता होता तो ऐसे जंमलों परबतों और मफ्तौनों में मटकता न फिरता । फिर भी कुछ कहता हूँ—सुनो तुम एक सरोवर के तट पर जाइ हो ।

‘धरम मैंने उस मिट्टी की प्यास को तुच्छता से ही है तो मुझे यह मरीचिका ठम नहीं सकती । यह मरीचिका नारी है सरदार ! मैं दो बार उससे ठमा गया हूँ धरम तीसरी बार नहीं ठमा जा सकता ।’

‘यह मरीचिका नारी है—बहुत सुन्दर ! बद्द मैं उस नारी को ही सरोवर की उपमा रूँदा । तुम उसके तट पर जाइ हो ।

‘नहीं सरदार मैं उसे बहुत दूर छोड़कर इस एकाम्त में आ गया ।’

‘एकाम्त कहीं नहीं है धीर न कहीं भीक ही है । वे तो सिफ मम की कल्पनाएँ हैं ।’

‘क्या कल्पना सत्य है ?’

‘हाँ जिसे तुम सत्य कहते हो वह एक कल्पना है धीर जिसे तुम कल्पना कहते हो ।’

‘क्या कल्पना—क्या वह कल्पना ही सत्य है ? —उत्तमित होकर भैरव बाता ।

कहता ता हूँ—लेकिन सत्य गुहरेक क पाम ही मिलेगा । तुम उस सरोवर के तट पर जाइ हो । क्या देखत हो ?

‘यह सरोवर नारी है ? इस उपमा को न समझकर भी मुझे यह बड़ी प्यारी लगती है ।’ भैरव ने अपने छाथियों की तरफ देखा—‘वे सब सो गए हैं ।’

‘हाँ ! क्योंकि वे हमारी इस बात में रन नहीं से मके धरिफार न होने से ही रन नहीं मिसा तो सो गए बद्द ! वे सब सो गए सो जाने दो । वे सोकर भी मन रह है ।’

‘कैसे सरदार ?’

‘नोकर जीव धीर की शिष्य होकर जागता है ।’

“विचित्र सत्य !

लौटकर फिर सरोवर पर भागो । क्या वेस रहे हो तुम सरोवर में ?”

“उस नारी में ?

“हाँ ।”

“वेस रहा है धरती ही परछाई ।

लेकिन उसकी परछाई ।

“हाँ सरदार ! इसी से मझे उससे पूजा हो चली ।”

“लेकिन पूजा से कुछ न मिलेगा ।

“प्रेम से भी कुछ न मिला ।”

“इसी से पूछता हूँ । तुम कहाँ पर हो ? नारी की प्रतिछाया में सरोवर पर ?”

“सरदार ! मैं तो सरोवर पर ही हूँ । इतना सरल सत्य किसके समझ में न आवेगा ?

लेकिन नारी की महलों में फँसा वह कौन है ? वह तुम ही हो वह सुखमता तुम्हारी आत्मा क्यों नहीं है ? यह वो स्वमता सरोवर पर बड़ी है, वह क्यों नहीं उसका प्रतिबिम्ब है ?”

“हो सकता है ।

“सरदार ने भी अपने घोर साधियों की ओर देखा—“वै सच तो यही है । बह ! कौन बाग रहा है ?”

“सरदार के साथ मैं बाग रहा हूँ ।”

“नहीं बह ! यह झूठा अभिमान है । हम भी तो बागें, केवल बोधिसत्व बाग रहा है !

“सरदार, यह प्रकृत बागृति कहाँ मिलेगी ?”

“बाहर कुछ नहीं सब अपने ही भीतर मिलेगा जन्म की बागृति पर । जन्म में फँसा हुआ प्रतिबिम्ब जब तुम्हारे ही भीतर समा जायगा तब बाहर वो यह प्रकृत है यह सब हमारे भीतर भी है । लेकिन हम बाग

सत्य समझते हैं भीतर कल्पना । जब भीतर सत्य समझकर बाहर
कल्पना समाप्त होने तक धारणतु दूर हो जायगा । तभी हम बोधिसत्व
के निकट जाने लबेंगे । जाते जाते —सरदार रुक गया ।

“इस क्यों गए ? फिर क्या हो जायगा ? पाठे जाते हम बोधिसत्व
के निकट पहुँच जायेंगे ?”

“हां ।

“इस तरह में मिल न सकेंगे ?”

“मिल जायेंगे रहूँ ।

“मैं इस भूमि पर जहा ही गया था सरदार ! लेकिन गिर पड़ा !”

गिरने के क्षणभंग को लेकर फिर खड़े हो सकते हैं धरत गुद मिल
जाय ।”

“कहाँ है दुर्देव ?

“मैं ले जाऊँगा तुम्हें जगह पास ।”

“कब ?

सरदार न कुछ सोचकर कहा— ‘दुर्देव के लिए कुछ सामान
जुटाना है । एक-दो रोज में वह सब हो जाने पर हम चलेंगे ।

भरत ने पूछा— ‘क्या सामान है दुर्देव का ?

दुर्देव का अपना निजी सामान तो कुछ भी नहीं है क्योंकि वह
नीची इन्द्रियों के भोग पर आशरित नहीं है ।”

“नीची इन्द्रियाँ कौन-सी हैं ?

“मूँह से नीचे सब नीची इन्द्रियाँ ही हैं ।

“तो क्या वे नष्ट जाने-गिरे नहीं हैं ?”

“बहुत कम ।”

“फिर बोधित कैसे रहेंगे ?”

“ऊँची इन्द्रियों के मोक्ष से ।”

“व क्या-क्या है ?

“ताक द्वारा पम्प करने द्वारा प्रकाश धीरे-धीरे जाने द्वारा धरत के

घबरा कर बह भीते हैं। ये मानव की सुखता के भोग हैं। घबल लाकर बीना भी कोई भीता है ? सखम भोगी होकर बीब बहुत दिन तक भीविठ रहता है।

मैरब सरदार की बातों को मोचता ही रह गया।

“बह ! मैं कछ नहीं आमता। मुझे एक कोरा सिपाही ही समझे। मुझे शरीर से काम सेना पडता है और बिना मन के मेरी बुजर नहीं। दुश्मन का अधिकारस केवल मनोमन है—बह दुलो की मन्ब मेंनों के रम और पक्षियों के कलरब से भीविठ रह सकते हैं।

“कैसे ? मुझे बड़ा आश्चर्य है।”

आश्चर्य कैसा ? मन की कोई वास्तविकता तो है नहीं बह एक कल्पना है।

“उमका क्या शरीर नहीं है ?

“शरीर है तो सही पर कभी-कभी वे उस शरीर का अतिक्रमण कर जाते हैं।”

“मैं अजीब बोरखाम्बे में पड़ गया हूँ।”

“बह ! जाकर देख सोने तो सब समझ में आ जायगा। बह ! जो खो तुम भी तो हारे पके हो।”

“मग पकता है या नहीं ?”

“मैं नहीं जानता ककिन जो बीज स्पुलता पर ठहरी हुई नहीं है उसे बकने की क्या आवश्यकता है ? सरदार ने फिर कुछ सोचकर कहा—‘नहीं मन नहीं पकता।’

‘सोचता कौन है ?

“मन सोचता है।” अचानक कुछ गड़बड़ाकर सरदार बोला—
“नहीं दिमाग सोचता है।”

मैरब ने पूछा—“मन और दिमाग में क्या अन्तर है ?”

सरदार बोला—“सो जाओ बह ! मैं नहीं है सकता तुम्हारे लजाल का जबाब। मैं पक गया हूँ सोच नहीं सकता। मुझे बड़ी बोर की नींद

लय गई । मैं सब सो गया ।

‘सरदार ! सचमच मैं क्या तुम सो गए ?’

सरदार की माफ़ बचने लगी थी । कुछ देर तक मन परार्थ है या नहीं हम शर्क-बितर्क में पड़ा हुआ शैव जायता रहा फिर वह भी धीं गया ।

शैव के मन में शैवेय-मठ को जाने के लिए बड़ी बेचैनी जाप उठी । दूसरे दिन डोस्पा से हुक्केश के बारे में उसकी जो बातें हुईं उनसे ही उसका मन उड़कर वहीं गया गया । वही केवल उसका स्मृत पिबर रह गया ।

दिन भर बिना बिराम के वह मठ के लिए बैतों में छीकर सामान भरने लगा । किनी से बी-नमक टिप्पणी में जान-मबकान घोर भी घनेक तरह की घाबस्पक थीं ।

मध्या को उठन सरदार क सामने छोड़े हाकर कहा—“सरदार, जितना सामान वा सब मैंने ठीक कर लिया ।”

“यकरियाँ धीर जानवर ?

उनकी कोई बची नहीं है ।”

सरदार हमरे ही दिन सारा सामान बकरियाँ धीर भ्रमुषों में साद कर मठ के लिए रवाना हो गए । दो दिन यात्रा में लगे । तीसरे दिन बीपहर में वे सोग मठ में पहुँच गए ।

सरदार और शैव ने मठ के बाहर एक निजिम साजार बैठकर घास में बातचीत करनी प्रारम्भ की ।

सरदार ने कहा—“बह मारी घारार की बिडिया-नी दिक्कई दे रही है इतनी बड़ी बिडिया तो कोई होनी नहीं ।”

“सरदार, सुष्टि में पहले होनी थी ।”

‘बौन कहता है ?’

शैव सोचन लगा कुछ सोचकर उठन निर्भय होकर कह दिया—
“मैंने पहा है ।”

कानूर धीर तंयूर में जो मैंन कही नहीं पहा है ।

भैरव को कहना पड़ा— मैंने इतिहास में पढ़ा है।

“कीन से इतिहास में ?”

“अंग्रेजी के इतिहास में।

“तुम्हें अपनी सामरिक किताबें छोड़कर साइंसबुक्सों की किताबें पढ़ने की क्या जरूरत है ? इन्होंने हर्बार्ड का बड़ा भयानक रूप बनाया है। तुमने यह अंग्रेजी क्यों पढ़ी ? कहाँ पढ़ी ?

“क्या बता दूँ ? वाजिमिंग में पढ़नी पड़ी मुझे।”

दोनों मुका के नजदीक घाटे जा रहे थे। सरदार ने कहा—“नहीं बिड़िया तो नहीं जान पड़ती यह।

‘मुझे तो हर्बार्ड बहाज-सा जान पड़ता है।

‘तुमने हर्बार्ड बहाज कहाँ देखा है ?

“वही वाजिमिंग में मैंने इसकी तसवीर भी देखी है और आसमान में इस सबटा हुआ भी देखा है।

दोनों और नजदीक घा गए थे। भैरव बोल उठा—“यह तो हर्बार्ड बहाज ही है।

‘हर्बार्ड बहाज ? नहीं जी ! गुब्बरेव की कोई मानसिक कल्पना होना।”

“मानसिक कल्पना कैसी ?”

“माई यह सब जो कुछ बिस्तार है, सब मानसिक कल्पना ही तो है। मनवान् की कल्पना है लेकिन बोपी सोप भी कल्पना कर सेते हैं। बुस्देव भी कमी-कमी कुछ ऐसी बातें उपजा देते हैं। यह जो शरीर मठ है कहते हैं यह भी तो एक बँसी ही कल्पना है। नहीं तो ऐसे विकट पहाड़ के ऊपर राज धीर मजदूरों की ठाकण नहीं है एसा मठ बना कर रें।”—सरदार ने कहा।

भैरव कुछ चौंकर बोला— ‘मठ कहाँ पर है ?’

‘इधर से मजूर नहीं घाता। ऊपर इतिहास की तरफ से बड़ी कठिनाई से दिखाई देता है। बिलकूल धामू जट्टाओं पर बना है।

दुर्लभ्य डेबाई पर है। कोई उबर से जा नहीं सकता किसी तरह।”

रास्ता कियर से है ?”

‘इसर ही से एक मुफ्त से होकर।

ज्यों ही वे लोग गुफा के द्वार पर पहुँचे चारों काने कत बाहर धाकर मीकने लगे। सरदार न पुनकारकर उनमें अपनी पहचान जमा सी। गुफा के द्वार पर सारा सामान जातवरों की पीठ पर से उतार लिया गया और जातवर करने के लिए छोड़ दिए गए।

शैरख ने बितभ्रता से पूछा— ‘घरर घाप घाजा है तो मैं जरा इस हवाई जहाज को बेच लूँ।’

सरदार बोला— ‘जसो मैं भी जसता हूँ। मन्हे तो ऐसा भासता है यह गुरदेब के ही मन की कारीगरी है।

दोनों हवाई जहाज के निकट घाण। शैरख उत्साह के साथ उनके ऊपर चढ़ने लगा था। सरदार न रोक रिखा— ‘ठहर जाओ मिन उसके भीतर न जाओ। मानूम नहीं गुरदेब ने यह किन मतलब में बना रखा है।

‘गुरदेब की रचना नहीं है वह सरदार। बेगने नहीं हो इसमें वे कैसे धारर लिये हैं—ये घंघेरी के हैं। गुरदेब घंघेरी नहीं जानते।’

‘गुरदेब घंघेरी नहीं जानते ? यह मिर्फ तुम्हारा अभिमान है। वह क्या नहीं जानते ? परती पर बितनी भी बिघारें हैं—गुरदेब को सब मानूम है। जो बिघारें घभी तक जूसी नहीं है वे भी जस पर प्रकट हैं।’— सरदार ने शैरख का हाथ पकड़ लिया।

शैरख सरदार के सामने कोई हठ न कर गया। बूत के लूधनों से हवाई जहाज के मम तलों पर मिट्टी जम गई थी। वह बहुत दिनों में वहाँ पर पड़ा नजर आ रहा था। जस बायु घौरुप के प्रभावों से उसका रंग लीका पड़ गया था।

शैरख लीटने में पड़ने जरा बारीकी न हवाई जहाज को देखने लगा था। कुछ बात समझ में आन पर उसने सरदार से कहा— ‘जहाज का

यह हिस्सा टूट गया है। जान पड़ता है किसी सारथी के कारण यह भूमि पर गिर पड़ा है। इसका नामक घोर इसके यात्री भयवान् जाने उनका क्या हुआ है। उनकी सड़ी या सूखी लार्सें शायद धर भी हर्म देखने को मिल जाएं।

हंसकर सरदार बोला— 'युद्ध ने उनका सन्ध कर ही दिया होगा। बसो हम अपना काम देखें।'

बोनों लौटने लगे। इतने में भैरव को भूमि पर पड़ी एक किताब दिखाई दी। उसकी बाहर की बिल्व नामक थी। भीतर के पेज भी कुछ कटे-छटे थे।

सरदार ने भैरव को उसे उठाते देखकर पूछा— 'क्या है यह ?

'कोई किताब जान पड़ती है। भैरव ने उसे सज्जी तरह देखकर कहा— 'इसमें हाथ से कुछ मिला गया है। बाहर की बिल्व किसी जानवर ने बहुत मुमकिन है। हमड़े की पन्थ पाकर बसा डाली है।

'तुम पढ़ सकते हो इसे ?

'हां।'

सरदार ने बड़े ताज्जुब से उसे ऊपर से नीचे तक देखकर कहा— 'तुम्हें श्हाला में सज्जी मौकरी मिल सकती थी तुम कहां उस जंगल में भेड़े बराने लगे ?'

भैरव सरदार की बातों पर कोई ध्यान न देता हुआ उस छिन्न मित्त सेब को पढ़ने में बलविलत था।

'क्या है वह ? तुम ठी इस सेब की बड़ी गहराई में डूब गए।

'हां सरदार यह किसी महिला की शायरी लिखी जान पड़ती है जो इस बहान में घकेली हुई उड़ी थी।'

'कहाँ से ?'

'जगह का नाम पट गया है शारीक घोर महीना भी मनु सिर्फ क्या है—१६३२।'

'यह कौन घन है ?'

"मैं नहीं जानता। —कहकर भैरव फिर उस लेख को ही पढ़ने में लग गया।

बहू ! तुम्हारी सपना में क्या रहा है क्या ? मुझ भी बताओ वह कैसी ही उड़नेवाली यक्षिणी कौन थी ? उसे भय भी नहीं लगा ? कैसी ही उड़ने का उसका मतलब क्या था ?

भैरव पढ़ना समाप्त कर बोला— मिस हवा हमका नाम है यह मारी है।

"कमारी ? क्या यह सपना बर डूबने जसी सकेली ही ?

"मही दुनिया में सबसे पहले सम्झी उड़ान की एक मिसाल कायम रने के लिए।

"व्यापार के लिए भी नहीं घोर सैर को भी नहीं ?"

"नहीं ऐसे ही जैसे थोरीसकर की चोटी पर बढ़ने की बात है।"

"मिथ विमान की सखी बहू ! घोर कछ नहीं। चम्पा पड़ो मया क्या है ?

भैरव ने पढ़ना शुरू किया— "जई बपों स हवाई जहाज म सकेली तो मत्तार की पूरी परिष्कार करने की मेरी इच्छा प्राप्त पूरी हुई। सेंटोटर के विरज के मैदान में मझे बिदाई देने के लिए साग हजारों की शिवा में लड़े थे। मेरा दिल चढ़क उठा था मैं यह सोच रही थी क्या अब मुझ में किसी दिन एसी ही भीड़ द्वारा स्वागत भी पा सकूंगी या नहीं ? मारी भीड़ जब मेरे हम सत्तावाग्य साहस के लिए नामा प्रकार के जय-शोषों स मुझे उरसाह दे रही थी मोटरों के मीनू बजाकर मेरी बेदाई को मुस्रित किया जा रहा था। तब मैं सोच रही थी—यह मेरी सारम-हरया को बल देने का प्रवास तो नहीं है ? मेरा जहाज पाकाय में उड़ जाता शोषों का घोर जरम सीमा पर पहुँच गया। बसत का यह सजात मुझे बड़ा ही मनोरम जान पड़ा। बाइसों से बिहीन स्वच्छ सफाया में उड़ी जा रही थी। तेम मुम्बर मौसम में मोत की याथा भी

क्यों कम खुशबू होगी ? मैंने भी निरपेक्ष होकर शायरी के तमाम पृष्ठ उखट डाले ।

“बस ? धीर कछ नहीं है ?

“नहीं ! या तो लिखा नहीं गया या पन्ना फटकर मायब हो गया ।”

शुद्धेब से पठा लप जाएगा ।

मुर्गा, साँप और सूअर

रिबूची सुरा के कनघ में डूब जाना चाहता था इसी से उस घबकार मयी पुच्छ का होकर रह गया। सुरा समाप्त ही नहीं होती यह उसके घाश्चर का विषय था उसका जीवन समाप्त हो जाएगा—यह उसका धुब सत्य था।

दूसरे दिन कस्तजन उसके लिए चाय और कुछ भोजन लेकर आया और उसने उससे कहा—“इस घँबेरी पुच्छ का मोह छोड़ दो शीस्त। यह पेट-मठाम जानवरों की मोह है।

‘तुम कहीं रहते हो?’

“मैं तो ऊपर हिल-मुनिया में रहता हूँ। मुख्यतः मैं मुझे बहुत काम साँप लिए हूँ।”

“हूँ!” बड़ी तुच्छता-सा कस्तजन को देखकर रिबूची ने कहा—“देखो भी तुम कहीं काम क्यों न करो और मैं कहीं क्यों न सो रहूँ? घन्ट में हम दोनों को दिख और गीदड़ों का ही भोजन बनना है।

“यह कार्यों का बर्षन है। तुम साधु और चोर क जीवन में कोई घन्टर ही नहीं देना रह हो। तुम्हारी बिकेक-हीनता है यह। इन घँबेरे पेट-मठाम में रहने से तुम ज्योति के जगत का कोई प्रतिस्त्व ही नहीं मान रहे हो।” कस्तजन ने बड़े दुब के साथ कहा—“रिबूची हम घात्मा की मोह के लिए सब कुछ छोड़कर इतनी दूर आए थे। घफ़मोस है तुम अपना सदय भसकर घत्सन्त तुच्छ पाबिबता में रम गए। यदि तुम्हें घबकार ही पसन्द है तो घान् बन्द कर क्यों नहीं उस घँबेरे में रहने?”

“क्या विसेया उस घँबेरे में?”

“सब कुछ ! जो बाहर है वही सब कुछ । बाहर छाया है, भीतर प्रसन्नियत । बाहर का सब मष्ट हो जाने वाला है । भीतर जो प्राप्त कर लोगे वह तुम्हारी प्रसन्न तृप्ति करेगा ।

“अच्छी बात है । मैं तुम्हारे साथ बसने का ठय र हूँ । बीच का द्वार खुला रहने दो ?

“किसलिए ?”

“उह के गधे के लिए । कलजन क्या हम साथ नहीं पीठे निरन्तर ?”

“तुम्हारे उस मन के प्रवहार में भी तो उह का कमण मीनुर है । बड़ी पासानी से तुम उसे पी सकते हो ।

“अच्छा भी उठता है उससे ?”

“अपों नहीं !”

“एस ही सपने में जिस सपने में वह पी जाती है ।

“सपना जामृति से अधिक रमीर है रिबुची ।”

“ता तुम भाग जाओ वहाँ से । मैं सपने में हूँ । गुफा के प्रवहार के ऊपर मैंने अपनी प्राँवें मीच रखी हैं और नींद के ऊपर मैंने गणे की चारण छोड़ रखी है ।”

कलजन उने गधे में समझ छोड़कर असा गया । लेकिन वह अपने मित्र के लिये अधिक बेचैन हो उठा । वह मन ही-मन उसके प्रसन्न के लिये कामना करने लगा । उसने गुफा के द्वार को बंद कर दिया पर उस पर संतन नहीं अड़ाई । इस प्राण पर कि उसकी प्रापना सफल होमी और उसका मित्र उस प्रवहार को छोड़कर प्रकास की ओर बढ़ जायगा ।

द्वार बंद कर उसने विस-मुनियामें प्रवेश दिया और वह मीचप के ध्यान में बैठ गया । लेकिन उसका मन असा नहीं उस प्रसन्न पर । वह सोचन लगा—“मेण इनता निष्टस्य मित्र इम प्रकार प्रवहार में रैन यमा है और मैं सारे विस के प्राण की उपासना करूँ ? यह एक प्रसन्न चर्क है । मेण पहला कर्त्तव्य उसका प्राण करना है । उठे प्रकास में

साकर ही मेरा उद्देश्य पूरा होगा ।”

वह इस प्रकार बैठ ही था कि क्षपोत्तमा ने साकर पूछा—“क्या कर रहे हो ?

‘ध्यान कर रहा हूँ ।

‘किसका ?

‘अपने मित्र का ।

‘लेकिन हमें तो मैत्रय को बगती पर उतारना है, सारे विद्वानों के सम्माण के लिये ।

‘गुरुदेव वह मेरा मित्र है, मैं उसे अपने साथ जाना हूँ । उसका उस संवेरी कुप्य में बंदी रह जाना मेरे लिये अच्छा है ।

‘सबकी मूर्खता के लिये बलजग फिर तुम क्यों एक पर ही अटक गए हो ?’—क्षपोत्तमा ने कहा । उनके पास एक हाथ का बना मित्र का उस पर उन्होंने बट्टि की ।

‘गुरुदेव ध्यान किसे कहते हैं ?

‘क्या तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते हो ?

‘नहीं गुरुदेव मैं आपसे सत्य प्राप्त करना चाहता हूँ ।’

‘पाँचों इंद्रियों का जो वह बाहरी भ्रम है इसे मन में पैदा कर लेना ही ध्यान है ।’

‘जिसे धनुमन्व नहीं है मंत्रेय का वह कैसे उनका ध्यान करेगा ?’

‘सबकुं हृदयों में उस मंत्रेय का प्रकाश है । उसके लिये सत्कृत इच्छा होने पर ही वह ध्यान में गुप्त जाता है ।

‘किस तरह ?’

‘ऐसे ही जैसे तुम मुझे देख रहे हो ।’

‘पाँचों बंद होने पर ?’

‘वह ध्यान सिर्फ बाहर के भ्रम की छाया है । बलजग हमारे भीतर पाँचों हैं ।’

‘भीतर कीज-सी ध्यान है ?’

“जिससे तम स्वप्न देखते हो।”

कमबल कछ चकराया।

अंसोसामा ने कहा— ‘स्वप्न में पाते हो न ? पुरे रंगों में स्वर्णों में लीपों में ल्वाहों में और ल्पछों में ?’

“हाँ मुझे ब पाता हूँ।

‘अनुभव ? एक तुच्छता को यह नाम दिया गया है। स्मृति के अन्तर लक्षियों की धूस पड़ गई है। कमबल हम कठोड़ों अम्नों में प्रावृत्तित है। हमने बार-बार उसे देखा है।’

उसे बार-बार देखकर भी हम इस अन्तर के बाहर नहीं निकल सके क्यों ?

“उसको देख लेने से कुछ नहीं होता। जब तक तुम्हारा हमारे भीतर मौजूद है तब तक निर्वाण नहीं। जब तक रिए में स्नेह है वह अस्तव ही रहेगा। हवा से बुझ जाना मीत है निर्वाण नहीं। निर्वाण तो ऐन के समाप्त होने पर ही होया। देखा हयें तुम्हारा के शय का सहज मार्ग बटा देता है वह हमारी तुम्हारा हर नहीं सकता। कर्म का बड़ा निर्दय विचार है। वहाँ कोई अपवाद नहीं चलता। कर्म का बीज विचार में है और विचार उपबता है हमारे ध्यान से।

‘बुद्धेव धमी धापने मन में से तुम्हारा को निकाल देने को निर्वाण का सहायक बटाया है—किर धमी धाप विचार करन को कहते हैं।’

“विचार और तुम्हारा में अंतर है। तुम्हारा धपनी पुत्ति के लिये बाहरी अगत में अमती है और विचारणा मन में ही रमकर पूर्ण हो जानी है। तुम्हारा में तुम्हारा मन इंद्रियों के पीछे सामता रहता है धपने स्वरूप को भूमकर। विचारणा में मन बुद्धि में प्रतिष्ठित रहता है।”

‘बुद्धेव धी धपनी मन को धपनी बुद्धि में प्रतिष्ठित हूँगा। धी बाहरी अगत में अमित न होड़ेगा ये धपने भीतर ही ध्यान करेगा।’

“दबना की प्रतिष्ठित से पूर्व उसके लिये धासन तैयार करना होना। ध्यान के लिय पहले भूमिका बनाई आयनी लभी तो ध्यान अयेगा।”

“कैसे वह मूमिका बनेगी ?

“भारणा स । भारणा ही वह बेविका है जिस पर तुम्हारे हृदय का शेषता आकर स्थिर होया ।

“भारणा कैसे चिठ होयी ?

“प्रत्याहार से ।

“प्रत्याहार क्या हुआ ?

“इन्द्रियों के पीछे भागते हुए मन को पकड़कर बुद्धि में स्थिर करना ही प्रत्याहार है ।

“बुद्धि क्या है ?

“तू उस प्रत्यक्ष ब्रह्म का ही प्रकाश है यही बुद्धि है । जंपोत्तमा ने हृदय का चित्र कसबन को दिखाते हुए कहा— तो जब तक तुम उस निराकार ब्रह्म को नहीं पकड़ सकते तब तक इस चित्र को सामने रखो ।”

कसबन ने पूछा— किसका चित्र है यह ? यह हृदय का बना हुआ है मुझे क्या यह घापने ही बनाया है ?

“हो ।”—जंपोत्तमा ने उत्तर दिया ।

“इसके करके कुछ झुंठी ही तरह के हैं । ऐसे क्यों बना दिए ?”

“ऐसे ही हैं ।”

“कहाँ ?”

“छिद्र-मरम में ।”

“वह कहाँ है मुझे ?”

“दिल-दुनियाँ के ऊपर ।

कौन है यह ?”

“शेबी महाशया । वीज्येय की जगनी !”

“रंग-रूप विदेयी है इसका ?”

“वीज्येय समस्त विरल की संपत्ति है फिर तुम्हें क्यों घापने ही रंग रूप का घनिष्ठान हो ?”

‘ये कहां से आई ?

धाकाए से भ्रमवान् ने लेव ली ।”

‘चित्र के नीचे क्या लिखा है ?

‘ये महाभाषा के ही प्रथम हैं ।

‘क्या धर्म है इस चित्र का ?

‘उमका ब्रह्म और वाणी दोनों हमारी बुद्धि के परे की चीजें हैं ।

संपोसामा ने कहा— “भ्रम ये न पड़ो, कर्मजन मीनेव का प्रथमरत्न धर्म स्पष्ट संभव हो क्या माता भा आई ! यही है वह माता ।” संपोसामा ने उसके सामने वह चित्र रख दिया ।

कर्मजन धर्मने धर्म में सोचने क्या—“माता भा आई पिता भी तो चाहिए ।”

संपोसामा कहने लगा—“हां कर्मजन, माता भा आई । पिता धर्मतः पिता है वह । उसके विरुद्ध कोई मलिन भावना न करनी होगी ।

कर्मजन ने बचपन मग के उस विचार को छोड़ दिया । उसने विनम्रता के साथ कहा—“हां बुरेव ।

“इस चित्र को दीवार पर लटका दो और निरन्तर इसका ध्यान करो । इसकी मोड़-में धियु मीनेव के दर्शन करो । जिस दिन तुम उसे स्पष्ट रीति सोये वह प्रकटित हो जायगा । मैं भी इसी ध्यान को साथ रहा हूँ कर्मजन । बाहर जो धारा सृष्टि का मुख है इसकी बड़ हमारे मग की बहराई में ही है ।”

कर्मजन ने वह चित्र धर्मने प्राप्त के सामने की दीवार पर लटका दिया और बड़े कोयलुहस से उसे बमकने की कोशिश करने लगा—“इस चित्र में जो मैं तीन जानवर धर्मने बनाए हैं उनका क्या महत्त्व है ?”

“हां ये तीन जानवर हैं, जिन्होंने बरती पर के मानव को भी जानवर में बदल दिया है । ये तीन जानवर हैं सुर्मा सौम और सुधर ! ये तीनों धरती पर के तीन पारों के प्रतीक हैं । सुर्मा काम की व्यस्त कर्मता है, सौम मूला की और सुधर प्रज्ञान की । जब मीनेव बरती पर

सैना है जब य तीनों पाप एमे मर हो जाते है जैम मूर्खोदय पर रात का संघकार ।

दीनेप की उय हो ब दीघ पकारे पानी पर । —कलजन मे हाथ जोड़कर प्रार्थना की ।

हो इम नामना का भी कुछ कम है एकिन कामना से ध्यान का माशारम्य कई मुना है । इम बात का तुम्हे अधिक समझन की जरूरत नहीं है ।” —उठकर लंरासामा खला गया ।

कलजन उग बिना का दगना ही रह गया । घननिगनी भावनाएँ उमके मन में उगने लगी — कौन है यह महामाया ? नि गयेह यह किसी दूर दूर का है । लपोसामा न उमके बारे में धाब तक कमी कुछ नहीं करा । यह सारी बिपयम लकीम बय की जान पड़ती है । इस एकात्म में कही मे का गई ? गुरनेक घाकाश-धाम में भ्रमण करते रहते है । जरूर कमी मे से धाग होम ।

कलजन जिमी रिबाज म गिपर नहीं रह गया । इसी समय घनिबि पाता की गरुड द्वार पर उन गटागले की घाकाज मुनाई की ।

गिबकी बिस्वा रहा पा — द्वार गाल दो कलजन द्वार लोम दो । मे तुम्हारी घाहा पालने का तैदार हूँ ।

कलजन की गपम घे कोर बाल नहीं घाई । उमने पूछ — “घातिर क्या हो गया तुम्हे ? इनकी जन्मी तुम्हारी पनि कौने फिर गई ?”

‘जा बहोग बही कसेगा भाई द्वार लो गीला ।

कलजन न द्वार गया । झोपला हवा गिबकी दिल-बुनिया के पीठर घुन घाया पीर दोरा — यह लकाजा बर कर दो ।”

“क्या पाप है ?

मझे क्या भय लग रहा है । मुझ कहीं डिग दो ।

गिबकी मुग्घ घिदिन नाग बर मया जान पटना है ।”

नहीं मे तुमम मन बह रहा हूँ । उम घबरी वेर रनाम की कुधर । बड़े मयातर भूज रहन है । धात्र कौने उगई देना पीर मुना ।”

“मैं कह से तुमसे कह रहा था। भगवान् का बग्यबाद है धाम तुम्हें भक्तम धाई। प्रतिज्ञा करो कि तुम धाम से नग का सबन नदी करोगे। नस से बहकर बरी बीज धीर क्या है ? यह तमाम पापों का पिता है।”—कमजान ने कहा।

“बड़े भयानक भूत ! —रिबूची ने द्वार बंद कर जममें सोकस बड़ा बी।

नया मनुष्य को ही भूत म बरल देता है। तुम स्वयं ही भूत बन गए हो। तुम्हें देखकर मझे डर लगता है।

“छिटा बो कही। भयानक रिबूची की लजर उम बिज पर गई जसने पूछा— ‘यह किसका बिज है ?

‘महापाया का।

‘कहाँ है वह ?’

‘यहीं हमी मठ के ऊपर ही भाय में।

‘मुझे दिना बो।’

‘नहीं धमी हमें इसी बिज को देखने की धाजा है।’

‘वहाँ तो बहुत प्रकाश है। मे सफ़ाई के टप्पे कैसे हैं ?

‘इनमे पुस्तकें छपी जाती हैं।’

‘य बिज धीर मे मूर्तियाँ ! इनका यहाँ क्या काम है ?’

‘दुरेश ने इन सबकी ध्यान-धावना का बहुत धाबसक धंग बताया है।’

‘इनके लिए तो एकाग्रता चाहिए।

‘भवस्य।’

‘मेकिन एकाग्रता तो वहाँ धयेरी दुष्ठा में है।’

‘वह तुम्हारा धंभबिबवास है।’

रिबूची फिर लौका उछलकर बोला—‘भूत ! भूत ! बहु धीवता-विष्माता कमरे में इकर-उबर डौइन मगा।

कमजान ने उसे दकड़कर कहा—‘रिबूची भूवता न करो ! भूत

कोई चीज नहीं है।

हूँ सुन कोई चीज नहीं है। इतने दिन तक मूर्तों को माना तुमने सतमे मय खाया उनकी पूजा की—यब तुम भठ न माननेवाले बन गए। —रिबूची ने कहा।

'मन की कल्पना है सब जैसा सोचो वही रूप रचकर सामने आ जाता है। —कलत्रन बोला।

'बस वही पर तुम्हारी जवान बन जाती है। मैंने मूर्तों को सोचा है इसी से मूर्ता का देखा है। कोई पाप नहीं है यहाँ याकर तुम्हारे देखने में भी आ जाँगे।

कमी नहीं तुम्हारे बिचारों की जब मैं सड़ हुए भी था उफान है मैंने उसे नहीं दिया है। मेरी कल्पना में मूर्त नहीं है बस मेरे सामने भी नहीं आ सकता।

दलन में किसी ने द्वार घटगटाकर कहा— 'गुरेब ! गुरेब !

रिबूची बोला— 'बह बेगी आ गए मूर्त ! यब देखता हूँ उसे तुम्हारी ज्ञान पक्षी है ? रिबूची याकर दिल-दुनिया में मन्वान् संश्लेष की विशाल मूर्ति के पीछे छिप गया।

बात एनी हुई उस दिन हवाई जहाज में का पटा हुआ डावरी का पन्ना पड़ते हुए जब भैरव लौटा तो सरदार घोर बह दोनों मिलकर जमानतों की पीठ पर से उठारा हुआ सामान पुष्पा के भीतर रखने लगे। उसकी पुष्पा में गुंजती हुई पाबाज घोर छाया से बबरानर रिबूची वहाँ ग भागा घोर कलत्रन के पास चला गया।

बाहर का तमाम सामान बुध में रखकर सरदार भैरव को लेकर भीतर चला। दिल-दुनिया का द्वार गटगटाकर उसने पुकारा— "गुरेब ! गुरेब !

कलत्रन उस पाबाज का मूर्तकर प्रभावित हुआ। उसने अपने मन 'निर्गुण क्रिया— 'यह पुकार जिगी अधिकारी की ही है। लेकिन बिना देव की आज्ञा पाए द्वार मान देना उचित नहीं।' उसने जबाब में

कहा—“कौन है ?

घपना परिचय दो तुम कौन हो ?”—घाबाज धाई उसमें यह स्पष्ट ही रज रखे या पूछनेवाले के मन में इस उत्तर देनेवाले के लिये बरा भी प्रतिष्ठा नहीं है ।

अब कसबज का माथा ठनकने लगा वह बोला—‘गु-अस्देव धिर धरण में बिराजते हैं ।

पूछनेवाला बोर से हँसा—‘तुम कोई नए ही धारपी जान पड़ते हो सोमो डार ।

रिबची र्थम की मूर्ति की घोट से बोला—‘कसबज यहीं तो है वह मूठ ! धीर भी पटी पसटन है इसके साथ ममा बाहूते हो तो मत सोमो दरबाजा ।”

कसबज डार सोमने ही बासा बा रिबूची के इस धासह पर एक गया । सोचन लबा—‘यदि य सषमूष में मूठ हैं तो इन्हें डार तुसबाग नौ गया धावइयकता है ? वह डार लासन लमा ।

रिबूची ने घाबाज में कसबज का मतलब समझकर एक बार फिर कहा—‘कसबज खबरदार ।

कसबज न डार सोल दिए । धरदार धीर उसके पीछे-पीछ भैरव ने प्रवेश किया । धरदार के रीबीने मुख लो देखकर कसबज ने झक-कर उसक प्रति धावर प्रकट किया ।

धरदार ने भैरव से कहा—‘तुम यहाँ बैठो मैं गुदरेव से मिसकर धभी धाटा हूँ ।” सग्यार ने कसबज से कोई बात नहीं की वह सीपा धावे की बहकर न जाने यहाँ चला गया ।

कसबज देखता ही रह गया । उमने धंढाज लमाया वह धामेवाला बकर किली मूठ धार्य से मुन्देव के पास चला गया । कसबज के ऊपर इस बात का बड़ा प्रभाव पड़ा वह मुन्देव का बकर कोई विशेष मल है । उमने भैरव के बैठन को धासन देते हुए कहा—‘बैठो धी ।”

भैरव इधर-उधर देखते हुए बोला—‘बैठ जाइया । तुम

तकमीफ मत करो ।”

मूर्तियों की मध्य कक्षा को देखकर भैरव प्रसन्न हो गया । कसबन उसके साथ-साथ उस कमरे में घूम रहा था । भैरव ने पूछा—“यह किसकी कक्षा है ?”

गुहरेव की ।”

‘अच्छा गुहरेव मूर्तिकार भी हैं क्या ?’

‘हाँ वह पारमा की छोब के लिये कक्षा का प्रकार आवश्यक मानते हैं ।

“हागा । —भैरव न बड़ी उपामीनता के साथ कहा ।

‘होया नहीं है । कक्षा भी भावना का ही परिचित रूप है । पारमा की प्रेम जमी के सहारे होती है ।

‘यह मूर्ति मैत्रेय की है ?’ —भैरव ने उस बड़ी मूर्ति की ओर रंगी दिखाकर पूछा । दरबार के पर उसने मैत्रेय की मूर्ति को देखा था ।

मूर्ति के पीछे छिपे हुए रिबूषी की शक्ति बड़ी जोर-जोर से बस रही थी । भैरव ध्यानपूर्वक उसे सुनने लगा ।

कसबन ने जवाब दिया—“हाँ मैत्रेय की ही मूर्ति है । वह प्राने मित्र की कमबोटी को छिटा हैन के मतलब से भैरव का हाथ पकड़कर घाने को ले जान लगा ।

लेकिन भैरव धीरे भी कोतुहल के साथ उस मूर्ति के पास ठहर गया । रिबूषी न धपती स्थिति बहती जगक एक हाथ की कोहनी दिखाई पड़ गई । भैरव ने उसे हाथ सगाकर टटोला ।

रिबूषी भैरव पुत जाने पर निककर बाहर निकल घाना धीरे भैरव का हाथ पकड़कर बोला—“जीन होगा है तू ?”

भैरव ने झटका देकर घाना हाथ छोड़ा लिया । कसबन ने जोर बचाव कर दिया । भैरव बोला—“बड़ा बरतमीज जीन है यह ?”

‘मेरा मित्र है । जाने दो हम जगकी तबीयत कुछ गलत है ।’

मुर्दा तब घोर सुगर

रिबूची कलत्रम पर बिगड़कर बासा— कछ तबीयत खराब नहीं है।
कमजब ने इमारा कर भैरव का समझा लिया। भैरव चुन हा
मया। बोनों घाये को बहने लये।

रिबूची अपने को स्थिर न रख सका। उसने फिर झटकर भैरव
का हाथ पकड़ लिया घोर बोसा— 'तुम किम मतभब म यहाँ घाय हो ?
कमजब ने उसका हाथ छुटाकर कहा— 'तुम्हें नहीं मायूम है य
मुरदेन क घाम घाबमियों में म है।'

"हागे हाप-वैर ली ठास जान पड़न हे। मुझे घोसा हा मया पा।
भैरव महामाया के उम बिब के पाम घाया। उम दम्बर उनने
पूछा— यह किमकी तसबीर है ?

कमजब म बबाब दिया— 'महामाया मत्रय ना माछा ली।
भैरव न कछ घोर निकट जाकर दया। 'म बिब क छेदन पर यह
बोया— 'यह ठा काई युरोपियन महिला जान पड़ना है।

"हाँ यही है। —कमजब न कहा।

कहाँ स घामा यह बिब ?"

"मुरदेन ने बताया।"

"योग-यस्त्रि मे ? इसी समय भरत का दृष्टि बिब क एक कोन
में स्थित हुए घतरों पर पड़ी। उन समय को पड़कर वह मम्म रह मया।

भैरव की माकमा छिनी न रह सकी। कमजब बाबा— 'म बिब
है इसमें ? तुम इस भाषा को जानत हो ?

"घबछी तरह नहीं जानता।" भैरव ने जह टिगा दिया।

बिब के एन कोने में घपत्री में जो लिखा था उसका नर्म इस
प्रकार था—

इस मठ में बहिनी हूँ मैं
कोन मचन करेगा मुझ ?

—कुमारी इवा यस्त्रि

शैरव ने पूछा—“मंत्रय की मूर्ति अधिक कास्मिक है और यह महामाया अधिक सजीव ?”

कलत्रन ने कहा—“लेकिन कल्पना और सत्य में कोई फर्क नहीं है।”

शैरव के मन में मठ के बाहर के टूटे हुए हवाई जहाज टायरी के फटे हुए पत्र और महामाया के चित्र पर लिखे हुए शब्दों से एक नई ही कहानी जुड़ रही थी। समने कलत्रन ने पूछा—“मठ के बाहर यह हवाई जहाज किसका है ?”

“हम नहीं जानते किसका है ? यह हमारे वहाँ घाने न पहले ही से वहाँ पर पड़ा है। कलत्रन ने कहा।

रिबूषी बोला—“यह मूर्तियों का डेरा है।

“इनकी बाँधों पर ध्यान न बा यह नये महे। —कलत्रन ने कहा।

तुम शान्तो क्या करते हो यहाँ ?”

“हम तपस्या करते हैं।”—रिबूषी बोला।

कलत्रन ने विनम्रता के साथ कहा—“नहीं एमी तक्रौर वहाँ है हमारी ? हम दोनों इन्द्रेय के बाहर हैं।”

शैरव ने कहा—“कोई किमी का बाहर नहीं है जो। यह स्वतन्त्रता का युग है, यह गुलामी का अन्तकार क्या क्या हम सब बाहर हैं।”

कलत्रन डरते-डरते कहने लगा—“यह किमी बात है ? घान किमी है ? घान यह किमी मुता रहे है ? यहाँ ठो वीसे-टक का कोई सीया नहीं है। यहाँ धर्म का मामला है। गुरु गुरु की जगह में है और बेला बेले की। बीड़ धर्म के भीतर भीन मर्षोपरि है।”

तुम्हें धर्म का नाम पर यह बहुधा दिया गया है। महात्मा बुद्ध ने ही संसार में सबसे पहले समता का इन्द्रेय दिया है। सब बाहर है भाई।”

“तुमने धरना परिचय नहीं दिया।”

“ये भी ऐसे ही एक जीव है।”

“और यह या इन्द्रेय के मितन गए है ?”

शुर्पा चाँप घोर सुघर

३२६

“बह सरदार हे ।”

“तुम्हारे सरदार ?”

“हाँ ।”

“घोर यमी तुम कहते थे हम सब बराबर हैं । यमी तुम्हारे सरदार
निकल आए ।”

महामत्या

सरदार ने दुन्देब के पास जाकर भरब के बारे में पूछा था क्या कह दिया उन्होंने तरफ ही उसे अपने पास बुला लिया । कमजोर और गिबूची बगले ही रहे गए एक लबागठक एकदम गमाम सीटिया मजिसे को एक ही दिन में पार कर भीनगी घेरे में पहुँच गया ।

सपोलामा के सामने सरदार ने कुछ दार से स जाकर भरब को पैग कर रहा — 'दुन्देब यही है वह मुबक ।

भरब ने दुन्देब के सामने तीन बार प्रणाम किया । सपोलामा ने उसके छिर पर तीन बार हाथ रतकर भासीबाह दिष्ट ।

भरब सपोलामा को देखकर प्रभावित हो गया । बीमा उनके बारे में उसने सना था उसमें कोई अधिक घन्टर नहीं जान पड़ा उस । दुन्देब ने उसे प्रणती तरह देगा और फिर कहा— 'बहुत प्रणता मुबक तम्हारे मुग में तम्हाटी भावता संक्रिण है और जान पड़ता है तुम कोई बहुत बड़ा काम करने के लिए संसार में घाए हो ।

भरब चुपचाप सुनने लगा ।

सपोलामा ने फिर कहा— 'तबिल एक मय है बहुत बड़ा दुन्देब रत मए ।

भरब चुप ही रहा उसके मन में उस मय के निराकरण के लिए कोई विज्ञाना पैदा नहीं हुई ।

सपोलामा ने प्रणरण बदलकर पूछा— 'मुबक तुम जानते हो तब यहाँ क्यों घाए हो ?'

भरब ने कुछ मोचकर कहा— 'घबलमेब ।'

सपोत्तमा ने पूछा— 'बताओ ।

भैरव ने जवाब दिया— 'रगीन एशिया में सफेद जमबालो की कामना कई है मैं उसे मुक्त करने आया हूँ ।

सपोत्तमा हठात् उस श्वेतायना को सोचने लगा जिसका नाम उसने महामाया रख दिया था । उसने पूछा— 'कौन है वह ? तुम्हें कैसे ज्ञात हो गया ?

'सत्य स्वयं प्रकट हो जाता है तुम्हें ।'

तुम्हें ने भैरव के कंधे पर लड़ी प्रीति से हाथ रखकर पूछा— 'साफ-साफ बताओ तो सही ।'

सपोत्तमा ने पैर छूकर भैरव न कहा— 'तमा कीजिए तुम्हें ऐसे ही मुक्त से निकल पडा ।'

'तुम धरत भी पीते हो ? —सपोत्तमा ने पूछा ।

'पहले पीठा था महाराज जब ध्यानरु उसे भाव छोड़ देनी पड़ी ।

'जब क्या ? —सपो ने पूछा ।

यह छोड़ दी महाराज कई घण्टा हो गए ।

'उसकी कितने नाम भिया तुमने वह मही कैर है ?'

'कौन तुम्हें ?'

'वही वह श्वेतायना ?'

'कौन श्वेतायना देख ?' भैरव ने हँसकर पूछा ।

'जिसके बारे में सभी तुमने कहा ।'

'जैसा मतलब श्वेत जातियों की उस विषय की कामना है जो एशिया के उत्तर भाग को निरन्तर अपनी गुलामी में ले लेने के लिए सोचती रहती है । वह सेमी मही चाहिए उन्हें । उसकी याचारी बड़ पई है तो वे सम्बाई-बोडार्ड में दर्शन के बजाय पाकाउ में क्यों मही बड़ जाते ? गेटों के धर्म के बरत क्यों नहीं रसायनिक सदसजनों द्वारा अपनी पुराण बना लेते ? —भैरव ने कहा ।

‘वया नाम है तुम्हारा ?’—लंपोसामा ने पूछा ।

सरदार ने बताया—“बहु ।”

तुम बहुत हाथियार जान पड़ते हो । तिम्यती ने सिखाय कुछ पीर भागाएँ बाण्डे हो ? गुरबेण ने भीरव से पूछा ।

‘तिम्यती लैक-यद नहीं जानता । नेपामी जानता है कुछ घंघेरी भी ।’

“ओ कुछ भी है तुम्हें भयवान् ने मेरे पास एक बहुत बड़े मठलब से भेजा है ।”

“लेकिन मेरा तो सिर्फ एक ही धास्य है मैं उनी के लिए इस संसार में धाया हूँ । यह है दुनिया म जो जर्बैस्त और दुर्बल का भेद है, उसे मिटा दूँ । यह जो एक देशवासि हमारे देशवासियों की गदन में फंदा लगाए हुए है वह फंदा काट दिया जाय । सबके अधिकार समान हैं । — भयव बोला ।

लंपोसामा ने कहा—“माई तुम तो यह दुनियाधारी की बात कर रहे हो—यह सब मानुषी सम्पत्ति है । हमें ईश्वरी सम्पत्ति का बराबर बटवारा करना है । जड़ में तो बही है । जहाँ यह हुआ नहीं कि तुम्हारा जेह्द अपने-आप मिट हो जायगा ।

‘उसके लिए क्या करना हीमा ? —भीरव ने पूछा ।

उसके लिए मंत्रेय का सबतरण करना हीमा भरती पर । लंपोसामा को कुछ डार धाया । उन्होंने सरदार से कहा—‘दिल-दुनिया में महामाया का बिज बिबा है मैंने उसे सा दी ।

सरदार बिज लाने जमा गया भीरव ने अपने मन में सोचा—“हो-म-हो बही बिज है ।”

गुरम्ट ही बिज के घा जाने पर उतवा संघय मिट गया । लंपोसामा ने पूछा—“तुमने दन बिज को देया है ? यह महामाया है मंत्रेय की माता ।”

‘मंत्रेय की माता । —बौक बड़ा भीरव ।

‘क्यों ? क्यों ?’

“यह महा भयानक पाप की बात आपके समान महारमा के मुँह से कैसे निकल गई ? — भैरव बोला ।

सरदार ने भैरव का हाथ पकड़कर कहा— बह्व ! तुम यह क्या करते हो वे गुरदेव हैं ।

खंपोखामा ने सरदार के हाथ से भैरव का हाथ स्वयं पकड़कर कहा— ‘नहीं सरदार ! इस बुनक की मन घोर बाली की एकता को देखकर मैं बहुत दुःख हूँ । इसकी पीठ ठाकता है । मुझ विरभाव है धम हमारी सिद्धि में कोई संभव नहीं है ।’

भैरव ने संकोच से माथा मीचा कर लिया ।

खंपोखामा ने उसका माथा ऊँचा कर कहा— ‘बनक ! प्रकृति की भागी में बंटी है— धर और अरार । तुमने क्षरता को सामने रखकर पाप को देखा । अक्षरता पाप धीरे पुष्प होने की सीमा का सतिष्मला कर जाती है । महामाया के जो बर्म स्थापित हागा वह अक्षरता में होगा । इसलिये पाप की कोई कल्पना न करो ।’

भैरव ने फिर तिर मीचा कर गुरदेव की बात का कोई विरोध नहीं किया ।

गुरदेव ने कहा— ‘महामाया क्या मीचव को मोद नहीं ले सकती ?

सरदार ने जवाब दिया— ‘बनकर ले सकती है ।’

‘किर कैसे पाप की बल्पना तुम्हें हो ? मुझ पाप धीरे पुष्प की परिभाषा में बाँध सेना सहज बात नहीं है ।’— गुरदेव ने कहा ।

सरदार बोले— ‘मुझ के भाष्य को बिना किसी संभव न ग्रहण कर लेना ही बस्माएकाली होगा है ।’

भैरव बोला— ‘गुरदेव इसी मय से धर्मों के भीतर क्या पाखण्ड की बुनियाद नहीं पड़ गई ? इन बाली की गुलाबी ने हमें भीतर कछ धीरे बाहर कछ बना दिया ।’

गुरदेव हँसे— ‘धीरे-धीरे तुम्हारी ममझ में धा जायदा । अक्सा एक बात तो बसायो । इन बिच में यह क्या लिखा हुआ है ? माया

है यह ? तुम पढ़ सचत हो इसे ?

भैरव अधिकृत में पढ़ा । उसमें मन म मोचा— "स सेत को सही सही पढ़ या किमी और तरह ? उमने तुरन्त ही निगुंम कर कहा— "गुरदेव यह धंदेजी में लिखा गया है ।

"क्या मतसब है इसका ?

कुमारी इबा मामिन मामक किमी महिला ने इसे लिखा है । — भगव प्रागे को चुप हो गया ।

क्या लिखा है ? — गुरदेव का माग्रह था ।

'गुरदेव ! — भरव न छिड़ बड़ी कठिनाता मे उम लख को पढ़ने का नाटक किया ।

'तुमन पढ़ लिया है इसे । सत्य नहीं छिपाया जायदा मुबक ! कहो जो भी लिखा है । तमहें किसका भय है ?

'गुरदेव यह मारी लिखती है— मैं इन मठ में बरिनी हूँ कीन मझे मुबत करेमा ? — भैरव ने लेख का अनुवाद किया ।

"बरिनी ? कीन बरता है यह बरिनी है ? — गुरदेव ने कहा ।

कृष्ण देर लख कोई कछ न बोसा । एक गम्भीर शमाटा छा गया । गुरदेव ने ही उमे ताड़ा— 'मुबक तुम उगको देगकर कहता यह बरिनी है या उमनी सबा में हम बरी हैं ।

उंपोलाया मिर मरक की धार को बड़ठे हुए छिर लोट गया— 'तुम उसके साथ बात कर मनाये ?

"हो गुरदेव यह उन्ही का लिखा है ।

हो उन्ही का लिखा है । घण्टा जगो चुनचाप बरुठ धीरे धीरे छिरबर देखो उंम । देखो क्या मैन उम कर कर रता है ?"

तीनों ऊपर की धार जसे । धार कपरे से उममें । धारों परमुत्तम मात्र-मग्ना मे गनिगुं बड़िया गम्भीर धीरे धामीन बिछ हुए से । छोटी बित्र बिबिच घजबनों क बित्रा म घनिठ निम्बन मजे लगी थीं । चुप धीरे हवा के निग मचास बन से । बीबारों पर भादि-भादि की

पाहतिमां बनी थीं । बड़िया रेशमी झालरदार परदे टंग थे । अलग प्रकार की मूर्तियाँ रखी हुई थीं । दीवारों में दर्पण बद्ध थे ।

कमरे के बाहर ही कुम्हरे न उन दोनों को टहारा दिया और एक छत्र से कमरे के भीतर देखकर भीरे-भीरे बोले— 'बेसो मैंने उसे घरी नहीं किया है । बड़ मुक्त से रखा है वही ।

भैरव न छेब से देखा । एक परम सुन्दरी नारी स्वेतागता एक तर्किए के छहारे सेटी हुई बड़ी बहारी चिन्ता में डूबी हुई थी । उसके मुक्त पर कण्ठा मूर्तिमयी होकर बसी हुई थी ।

छुरदैव बोले— 'माया का बन्धन कहा जा सकता है । उसकी मानना मुक्त पर प्रकट नहीं और मेरी उस पर नहीं । लेकिन युवक तुम्हारे पास जाने से वह ताला टूट जाएगा ।'

छत्रदार उसे छत्र से देखने लगा ।

'मक्तिम मैं कही से चुराकर-छीनकर नहीं साया । परमेस्वर मैं इसे मेरे पास भेजा है बकर अपना ही मठलक पूरा करन को । ठहरो युवक जल्दी मठ करना । ब्याबा बाते भी इससे करनी नहीं है ।

भैरव ने फिर उस छत्र में देखना शुरू किया । वह मुन्धरी उठी । उसने भीरे भीरे तिरङ्गी बोलकर पर्दा हटाया और बाहर की घोर दृष्टि की । पर्दा चिरा दिया उसने शीघ्र ही । एक क्माण में उसने अपनी भाँखों के कोमो को पोंछ डाला । दीवार में एक विद्यान दर्पण अड़ा हुआ था उसमें उसने अपना प्रतिबिम्ब निहाल । अपनी छाठी पर हाथ रखकर उसने एक ठण्डी सीघ्र ही घीर फिर एक निराधार सता की भाँति नीचे बिछौन पर गिर पड़ी ।

भैरव दूर देण के एक ध्यान निर्जन में एक बौद्ध भिक्षु की सवति में उस सुन्दरी की कहना कर श्रुतिन हो उठा । एक नल ही बायुमण्डल सर्वबा बिदेसी रहक-महून धीर एक धनवान भाया मानना के बीच में उन नामा की विषम परिस्थिति की कहना कर न सका भैरव । उसकी दृष्टा होने लगी वह बीड़कर उसके पास जाकर अपनी न-जाने विषय

हो। तुमने कहीं सीधी यह भाषा ? —इबा ने पूछा।

शुश्रूष ने कहा— बहू। इतना ज्यादा मुझ कोसने की आवश्यकता नहीं है। एक-एक घन्टे मरु पर जुम जाना चाहिए।

शैरब ने कहा— 'ये पूछनी हैं हमारा क्या रिस्ता स्थिर होना ?

खपोसामा बोल— 'तुम्हीं बधापो।

'मैं इनमें ही पुछता हूँ।' शैरब ने इबा ने पूछा— 'हमारा रिस्ता तुम्हारी ही रबि पर भिन्नर है।

इबा हँस पड़ी— 'मैं न तुम्हें कभी देखा नहीं तुम्हारे बारे में कुछ सुना नहीं। मैं कैसे तुमसे कोई रिस्ता कर लूँ ? इगीलिए तो कहती हूँ सामन घापो।

शैरब न यही खपोसामा के कान में बुहराया। खपोसामा ने प्रत्युत्तर में कहा— इसमें बहो मयबान् ने ही इसे यही भेजा है संमार की एक विधेय मबा के लिए।

इबा ने यह सुनकर कहा— 'मयबान् न नहीं भेजा है मेरा हवाई जहाज टूट गया और मैं यहीं निर पड़ी। मैं हवाई उडान का एक रिफार्ड स्थापित करने जा रही थी।

शैरब ने कहा— 'यह कहनी है मयबान् न नहीं भेजा है हवाई जहाज में वेदोस लरन हो जाग से ये यहीं निर पड़ी।

खपोसामा ने हँसकर कहा— यही तो मयबान् का भेजना है।

इबा बोली— 'तुम खाना परिचय देने में क्यों संकोच कर रहे हो ?'

खपोसामा न पूछा— 'मने क्या कहा ?

शैरब न जबाब दिया— 'यह मेरा परिचय पूछनी है।'

'कह दो मैं मनेय हूँ।'

शैरब ने चौंकर पूछा— 'मनेय कौन है ?'

तम मनेय का नहीं जानने जर्कर जानने हो। मनेय बही है मरियों से भरत परनी जिनके खाने की प्रतीक्षा कर रही है।'

न मनेय हूँ ?'

“हाँ तुम शैत्रेय हो दह्यु ! भ्रम और अविश्वास की कोई पुंजाइया नहीं है । वह दो—तम शैत्रेय हो और वह शैत्रेय की जन्मी ।

“बहु शैत्रेय की जन्मी ! बड़ा असम्भव सत्य है यह । हम दोनों की धामु में बहुत बड़ा अन्तर है ।”

“सबसे क्या होता है ? गोर मी हुई सन्तान प्रसी ही होती है । तुम की आज्ञा मान लो हम तुम्हारे भी शैत्रेय की धात्मा की प्रतिष्ठा कर देंगे । अभी तुम्हें जो कल्पना आम पन्ती है कुछ ही बिना में वही सत्य हो जाएगा ।”

इशा बोली— कौन हो तुम ? इस गुम्फा में मैं कई बार धात्मा पात की शैष्ठा करने लगी थी । तुमने मुझे क्या लिमा । क्या कभी किसी से बोलकर धनने हृदय का कुछ बाँट सकूँगी ?—मैं यही सोचती रह गई थी । तुम्हारी इस आज्ञा में मेरी धात्माएँ स्वीकृत हुई है । मुझे विश्वास हुआ है जपधामु प्रभाव है । धात्मा मेरे सामने धात्मा मेरी मक्ति के उपायों पर हम बहस कर सकें ।”

संघातामा ने कहा— ‘यह न-जाने क्या-क्या बक रही है । तुम्हें धीम्र ही इस पर मेरा सचेष्ट बोल देना चाहिए ।

“हाँ प्रुद्धेय !”—शैत्रेय ने कहा ।

“नहीं ! यह संशोधन नहीं देमा होगा धन तुम्हें मुझे, तुम जगद्गुरु शैत्रेय हो । मुझे कुछ कहने से तुम्हारे भीतर शैत्रेय की धात्मा प्रकाशित न हो सकेगी ।”

“धन्यही आज्ञा है ।”

“सबको एक साधारण मनुष्य समझकर बात करो ।

‘ऐसा ही होना । धन मैं इस पर धनमा सम्बंध बोलता हूँ ।’ शैत्रेय ने इशा से कहा—“तुननी हो ? मेरा-तुम्हारा सम्बंध क्या है ? तुम मेरी माता हो मैं तुम्हारा बेटा हूँ ।”

‘हाँ ! यह क्या परिहास करते हो ? मुझ कल्पिनी बनाते हो तुम ?”

'नहीं तुम संसार में पुत्रित हो प्रोवी । मैं मीचेम हूँ ।

"मीचेम कौन है ?

'आगामी बुद्ध संसार का भाणुकर्ता ।

नहीं मैं बिना पत्नी बने माँ बनने को राजी नहीं हूँ ।

अंशोत्तमा ने पूछा— क्या कहती है यह ?

भैरव ने जवाब दिया— "मेरी माता बनना स्वीकार नहीं करती ।

कहती है मैं बिना पत्नी बने माता नहीं बन सकती ।

अंशोत्तमा बोला— "कहो दीक्षम के लिये सब कष्ट क्रिया का सफलता है भरती बड़ी धाकसता से उसकी प्रतीक्षा कर रही है ।

भैरव ने इशा से कहा— 'बिना पत्नी के माता हो सकती है तुम । ईसा की माता मरियम ने जिस प्रकार कौमार्य में ही मसीह को जन्म दिया इसी तरह ।

"नहीं नहीं मैं मरियम नहीं बनना चाहती ।

भैरव ने अंशोत्तमा से ईसा ही कह दिया ।

अंशोत्तमा प्रत्युत्तर में बोला— 'तुझे इन्ने सावधान कर दो यह अपनी धाकनाथों की समाधि बनकर इसी कमरे में समाप्त हो जायगी । तुम इनके साथ कभी कोई बात न करन पाओगे ।

भैरव ने कहा— 'इशा ।

इशा चौंक पड़ी— 'तुम मेरा नाम कम जान गए ?

'कौन भी हा ।

इशा बड़े आश्चर्य में पड़ गई— 'इस ऊँचाई पर इस कंटीली हवाओं और प्रबुद्ध भावा के बीच में इस ममकीन वायु और ऊन के प्राण में— तुम मेरे इनने परिचित कहां से आ गए— कौन हो तुम ?

'मैं मीचेम हूँ मैं धानेवाला बुद्ध हूँ मैं आ गया हूँ । तुम्हें मेरी माँ बन जाने की ममता क्यों नहीं होनी ?"

"बिना प्रमाण के ही निगा कहां हो जाती है ?

"हिम के लुप्तान में कभी क्या प्रमात और रात का रन एन ही सा

नहीं हुआ जाता ? बरती माता के इस संकटकाल में जब कि प्रत्येक मनुष्य धीरे-धीरे अपने तुच्छ स्वार्थ में धंसी हो गई है, तुम क्यों अपने तुच्छ मोह में पड़ी हो ?

“तुम धानेवाले बूढ़ हो ! मैं ईसा को मानती हूँ ।

“नामों के अंतर में क्या रखा है ? सभी बातियाँ धानेवाले प्रभु को माननी हैं । जिसे बीड़ लोब बूढ़ कहते हैं—क्यों उसी को मुहम्मद ईसा महावीर धीरे-धीरे नहीं कहा जा सकता ?

“तुम इनमें से ही कोई या सब हो इमका क्या सबूत है ?”

‘सबूत ? सबूत कुछ नहीं सिवा तुम्हारा विश्वास । प्रास्तिक को किसी अन्न की आवश्यकता नहीं है और प्रास्तिक किसी तरह नहीं मरता । अधिक से अधिक लोगों की मानना से भी मेरे भीतर ईश्वर की प्रतिष्ठा हो जायगी ।

‘लेकिन तुमने मेरा नाम कैसे जान लिया ?”

“किसी ईश्वर शक्ति से नहीं साधारण तर्क का अनुसरण कर ।”

‘क्याओ भी तो ।

‘तुम्हारे दृष्टे हुए इकाई अहाक में मुझे तुम्हारी कामठी का कटा हुआ पन्ना मिल गया था ।”

‘मैत्रय ! मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास करती हूँ तुम विश्व की सृष्टि के लिये हो । मुझे भी यहाँ न भूल कर दो ।

इतने ही में संपोत्तमा बहने लगी—“मैत्रय ! बहुत अधिक इसके साथ बल-विलकर बातें करने की जरूरत नहीं है । तुमन कह दिया इससे कि यदि यह मैत्रय की माता बनने को राजी नहीं है तो बिना किसी से कुछ कह-सुन ऐसे ही समाप्त हो जायगी ?”

“हाँ कह दिया ।

“उसका कोई अंतर नहीं हुआ ?”

“नहीं ।

“अच्छा तुम यहाँ आओ ।”

एक बार ऐसा कहूँ इससे ?

'नहीं कोई जरूरत नहीं है।

शेरव खंपोसाया का जहाँ बाहर बहती जला गया । दोनों फिर सरव के द्वार बंद कर दिल-मुनिया में चले गए । मुठरेष बोसे— मैं चाहूँ तो जाना-गीना बंद कर एक ही दिन में इसे काबू में कर लूँ लेकिन इस तरह नहीं । इसे बिना इसके हृदय को जीते सफलता नहीं मिलेगी ।

'हाँ जसा ही उचित है ।

दोनों छेद से बेचने लगे दबा गया करती है ।

भैरव का वहाँ से चला आना घर्मी हुआ पर झुला नहीं था । सकिन
 सुरदेव को वहाँ से कुछ दूरी हा भावना भटकर जाने हुए बेसकल
 रहा कुछ सहम यई भी कर । उमने भैरव के लिये कहा— मरे मामने
 प्रकट हो जाओ न ! जिनका तुम्हें डर था वह तो चले गए ।

सैकिन जब उसे इसका कोई उत्तर न मिला ता उसने अपने मन में
 समझा सुरदेव धकेले ही नहीं गए । वह उठी उमन कमरे में चारा घोर
 देखा । वही किसी को न पाया । द्वार भी घोर बंदी । द्वार बंद कर
 दिया गया था । उमने द्वार पर हाथ स बाके देकर पुकारा— 'क्यों द्वार
 क्यों बंद कर दिए तुमने ? सब तक बोम रहे स । मैं अपनी भावों का
 मानव छोड़ दूँगी । बामो न ।'

बाहर छेद से लपामामा घौर भैरव शनों देव रहू ये । लंगामामा
 में भैरव से चुन रहने का इधारा दिया ।

"मन्त्रेय । मन्त्रेय ! कहीं हो तुम ? मामने आया न ।

सुरदेव भैरव का हाथ पकड़ दूर ल जाकर बान—'क्या कह रही
 है यह ?'

कच नहीं—मन्त्रेय । मन्त्रेय !—बहुकर मरु पुकार रही है ।'

'जानो घण्टा हुआ इसरी आवाज में तो तुम्हारा जगम हो गया ।'

"मन्त्रेय । मन्त्रेय !" इका द्वार अटमगाका बोली—'मैं तुम्हारे नाम
 की रटना लया दूँगी जिन-राज । तुम नहीं लगी ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~
 बाह्र जानती हैं तुम कब तक न ।

"मै" लंगामामा हूर

बहराई से संकित हो जाती है ।

मुझ कोई जबाब तो देना ही चाहिए । मीनेय करणा की मूर्ति है ।”

“जकर दो जबाब— वह एक ही है । यह जब मीनेय कहकर पुकारती है, तुम माठा ! माठा ! कहो ।”

इवा ने फिर पुकारा— मीनेय ! मीनेय !

भैरव ने प्रत्युत्तर में कहा—“माँ ! माँ !

‘नहीं नहीं’ कुछ धीर बोलो ।

मीरव ने खंपोलाभा की घोर देखा । पयो बोला— ‘धीर क्या बोला या सकता है, मीनेय अपनी माता से धीर जो कुछ कह सकता है तुम भी कहो ।

“मीनेय ! मीनेय ! —इवा फिर बिस्मार्ड उपर से ।

‘माँ ! माँ !’—इपर से भैरव ने उत्तर दिया ।

“मही मैं किसी की माँ नहीं हूँ ।

भैरव ने खंपोलाभा से कहा—“यह कहती है मैं किसी की माँ नहीं हूँ ।

‘तब उसे ही बंद रखने दो इसे । जब तक यह तम में चुप रह बैने को तैयार न डामी द्वार नहीं छोले जाएँगे । —खंपोलाभा ने कहा ।

“मीनेय ! मीनेय ! तब जाहे किसी के भी चुप हो सकती हो । मैं तुम्हें मीनेय मानने को तैयार हूँ । तब ताम बो ।

खंपो ने पूछा—‘यह तुमसे क्या कह रही है ?’

“नहीं ।”

‘जबो फिर बस लोलो द्वार । इयमे वह बो द्वार ही नहीं इतना भीरव भी बंद कर दिया जायगा ।”

भैरव ने देना ही कह दिया । इवा बोली—‘मुझे जरा भी भय नहीं है । अगर तुम मुझे इस तरह मार देना चाहते हो तो मैं समझती हूँ मेरे कमरे की मैं सिद्धकियाँ बाहर काफ़ी ऊँची हूँ धीर उनके नीचे के बट्टान

बड़े पीले घोर सज्ज हैं । मैं वही से करकर प्रात्महत्या कर सकती हूँ ।”
 भैरव न प्रबिसम्भ यह मुखेव से कह दिया । गल्लब इसे— मर जाना
 इतना घामान नहीं है । बसो ।

सेकिम भैरव वही पर रुक गया— नहीं हमें एक घबला पर कठोर
 नहीं होना चाहिए ।

“अच्छा तुम यहाँ से उभर छिय जाओ । मैं तम्हारे मन का बहुत
 विदाल देता हूँ । मैं इसे बीच क कमरे में बर बर देता हूँ । वहाँ इसके
 कूर जाने के लिये कोई लिडकी नहीं है । —कहकर खंपोलाया ने
 द्वार खोले ।

द्वार खुलता देखकर बड़ी प्रस नता न इया प्राण को बड़ी पर जब
 बने खपो दिखाई बिना तो वह बड़ी निराशा के साथ पीछे को हट गई ।

बसो ने इसारा कर उस कमरे को दिखाया । जहाँ वह उसे पम्भ
 करना चाहता था । सेकिम इका ने उस पर कोई ध्यान नहीं किया ।

बसो ने फिर जब बार-बार उस कमरे की घोर इसारा किया तो
 दबा उभर बसी गई । खपो ने द्वार बन्द कर दिए ।

इका ने चिन्ताकर कहा— प्रेम !

“हूँ माँ !”—भैरव ने जबाब दिया ।

“इस कमरे में कोई लिडकी नहीं है । इसीलिए तुममें मुझे अब यहाँ
 बन्द किया है । लेकिन तुम क्यों ऐसा समझते हो मैं परते की रेशम की
 रस्सी लोमकर उसके फाँसी का सकती हूँ ।

भैरव ने लंका को यह बात समझाई तो खपो बोला— “यह एधिया
 की रीति है ।

इका ने फिर पुकारा—“प्रेम !”

“कही भी तो क्या कहती हो माँ ?

“पहले हम एक-दूसरे को देख तो लें तब तुम मुझमें माँ बहना ।”

खंपोलाया ने यह मुनकर भैरव से कहा— “इससे पूछो देख सिने
 पर यह तुम्हें पुन कहने को तयार है क्या ?”

इषा ने इसका उत्तर दिया— 'यह मेरी शक्ति की बात है ।'

संप्रोक्षामा इस पर राजी नहीं हुआ । उसने भैरव से कहा— 'मैं ही इसे मानना पड़ेगा । यह भक्तान् द्वारा यहाँ इसी के लिए मन्त्री गई है । इसके भीतर कोई शैतान गुना है । पीरे-पीरे मुख धीरे व्यास की साधना से इसकी घातम-घुटि हो जायगी धीरे यह पापात्मा इसके घरीर से निकल जायगी । तब यह शत्रुघ्न के मातृपद के समान वीरवमय पद को बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार कर लेगी ।

इषा बोली— 'मैत्रय तुम्हारा अग्र्य हो गया । तब चतन-फिरने हँसने-बोसने लगे— तुम्हें अब किसी सच्चे की अकल्प नहीं रही फिर क्यों माता को बूढ़ रहे हो अब ? तुम्हारी माता कहीं गई ?

'मेरी माता एक साधारण माता है मैं उसका साधारण पुत्र था । मैं अब मैत्रय हुआ हूँ । साधारण से असाधारण— ईने ही असाधारण माता इसलिए चाहिए कि वह मेरा हाथ संभाले रहे मैं विषय में न पड़ूँ । हम मोक्षिक मार्ग से भावना के मार्ग में सिद्ध भी भटक जाते हैं ।'

'कोई दूसरी माता क्यों नहीं बूढ़ लते ?'

'तुम्हारे सिवा इस मठ में धीरे दूसरी कोई स्त्री नहीं है ।

'माता के लिए क्यों बर्षों हो उठे हो ? माता के अभाव में पिता नहीं ।'

लकिन अरोक्षामा ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया । उन्होंने भैरव के द्वारा उसे अन्तिम चेतावनी दी — 'अब अब तब तुम मैत्रय को पुत्र का सम्बोधन न दोगी तब तब न तुम्हारे लिए मे द्वारा लाभ पायेंगे न तुम्हारे किसी अग्र्य का उत्तर ही दिया जायगा ।'

अरोक्षामा भैरव का ध्यान इषा की ओर से इष्ट दन के लिए उसे मूर्तियों की तरफ से गया । इषा का कमरा वहाँ से दूर पड़ता था । द्वार बन्द होने के सबब उसकी आवाज उबर हाट नहीं सुनाई पड़ने की बहुत सम्भावना थी ।

संप्रोक्षामा बोले— 'मैत्रय अभी कुछ दिन तुम्हें प्रकृति के रहस्य

मुझे बताने पड़ेये । जब तुम्हारे भीतर सत्य जाग उठगा तो फिर मैं तुम्हारे घरलों में बैठकर सीखूंगा ।”

“बहुत प्रशंसा तक तक मैं मुकदेब कह सकता हूँ आपसे ?

खंडोनामा हँस पड़ा ।

“घोर सत्य के जाग जाने पर तो मुझ भाठा-गिता के सम्बन्ध खोजने की कोई प्रावश्यकता न रहेगी न ?

खंडोनामा के मुख पर पन्मीर छाया फैल गई । वह बोला— इसके बारे में धनी कुछ नहीं कहा जा सकता ।

इसा घपन कमरे के द्वार पर घपनी हथेलियाँ बजाती हुई कह रही थी— मैत्रेय ! मैत्रेय ! मर स्वरो मे सुनाई देनवाली उसकी पुकार को खंडोनामा घपनी आवाज में इबा देने लगा ।

खंडोनामा ने कहा— मैत्रेय कल्पना एक वास्तविकता है । प्रत्यक्ष जोम उसे कुछ भी मान नहीं देत ।

वास्तविकता कैसी ?”

“मनेब—यह एक कल्पना है विस्वास्त के बस पर हम इसे वास्तविकता में बदल सकते हैं । संसार में जो कुछ भी प्रत्यक्ष दिखाई देता है सब एक कल्पना के निष्पन्नकर फिर उसी कल्पना में विनीत होता जा रहा है । इसी मठ का उदाहरण लो—यह एक दिन एक कल्पना का प्राय इतना लो रूप है वह स्वामी नहीं है, किसी दिन यह फिर कल्पना में ही मिल जायगा ।”

मैत्रेय का ध्यान इबा के ही कमरे की घोर वा । वह कभी प्रत्यक्ष में उसकी पुकार को सुन रहा था कभी उसकी प्रतिध्वनि में ।

खंडोनामा ने कहा— मैत्रेय तुम बसम्ब रहे हो मरौ बात ?”

मैत्रेय ने यों ही कह दिया— ‘हाँ मुररब ।”

“ध्यान क्या है—कल्पना का ही एक छुट रूप । बिना कारण का शेष तैयार किए ध्यान की शर्षकता नहीं है । मैत्रेय को घपने भीतर जागृत करने के लिए तुम्हें कुछ दिन एकाग्र होकर ध्यान करने की

घाबरवकृता है।”

“कितने दिन ? — भैरव ने पूछा।

समय कोई बड़ी थीव नहीं है। धारणा प्राप्त कर लेना ही ध्यान की परिपूर्णता है।”

“धारणा कैसे मिलेगी ?

“जमा की सहायता से। ध्यान धीरे धारणा एक बूझरे पर टिके हुए है जैसे स्वर में ताल धीरे ताल में स्वर या रेखा में रंग धीरे रंग में रेखा। ध्यान के जमते-जमते धारणा गुन पड़ेगी धारणा के कुतल-कुतले ध्यान बिम पड़ेगा।

“हां पुत्रदेव” भैरव के कान हुआ की धीरे ही बे। उसका ध्यान बही था। उसने कहा— कुत्रदेव वह फिर पुकार रही है—मंत्रेय। मंत्रेय।

तुम उसकी मन्त्र की पुकार में जब तक पुन-पुन की ध्वनि न तुम लौने डार नहीं सोने जावेंगे।

“कुत्रदेव। क्या मेरी कल्याण से भी वह अपनी पुकार का बदल सकती है ? या उसके अपने निश्चय न ही वह बदल सकेगी ?

“कल्पना केवल दर्शन की ही नहीं है मंत्रेय। वह धारण की भी है। तुम उसकी धारण में पुन-पुन की पुकार जगा जो तो उसे कहना ही पड़ेगा ऐसा।”

“एते ही हमें पाँचों इन्द्रियों के इष्ट प्राप्त हो सकेंगे ?

“नि-मन्त्रेय !”

“तब हम अपने ही में परिपूर्ण हैं। हमें अपनी कामनाओं के लिए किसी के धारण की धारण्यता नहीं है।”

“धर्म्य।

“किर मनुष्य की बहिर्गता ही जलवा बन्धन है। मैं धर्म्यन हीरर धानी समस्त कामनाओं को जीत लूँगा।”

“हां ! हा ! तुम्हारे भीतर यही मंत्रेय बोलने लगा है।”

“संभव की माता भी उसके भीतर ही है । भैरव जोर-जोर से पुकारने लगा—“माता ! माता !

‘पुकारना बहिष्कृतता है संभव ! जब सब कुछ तम्हारे भीतर ही है तो तुम बाहर किसे पुकार रहे हो ?

“जब सब कुछ सबके भीतर ही है तो फिर संभव की क्या जरूरत है ?”

‘इसी सत्य का बोध कराने के लिए कि सब कुछ सबके भीतर ही है । संभव इसी प्रकार तत्त्व को तुम पर प्रकाश हीकर सबको मिलाना है । जितना बाहर है उतना ही तुम्हारे भीतर है । काल का जो महामिथु बाहर लहरा रहा है वही तुम्हारे मन में भी रह है । धाँक बन्द करा संभव !”

संभव न घाँसे बन्द कर ली ।

क्या दिखाई दे रहा है ?”—जोखाना न पूछा ।

“कछ नहीं सुन्देव !”

“देना मत कही संभव ! तुम स्वयं की विभूति हो पृथ्वी पर के सम्भवतम प्रकाश ! वही सब कुछ दिखाई दे रहा है ।

“सब कुछ कैसे सुन्देव ! मही ठो केवल धन्यकार ही धन्यकार है । —भैरव ने कहा ।

“सब कुछ भीतर है संभव । बाणी ही चिरवाम की पूर्व रेखा है । बाणी को गूँठ करा । वही सब कुछ भीतर है । जो धन्यकार दिखाई दे रहा है वह उन सबकी ही छाया है । केवल एक ही चिरवाणी बरकार है छाया धीरे प्रकाश के बीच में भट पड़ जायगा धीरे रूप बिल उठेगा ।”

‘हो सुन्देव !”

“बिना लोके-सम्भव न वही । धाँक गोल दो ।

भैरव न घाँसे खोल बी ।

‘यह क्या है ?” सुन्देव ने पूछा ।

“संभव की मूर्ति है ।”

“यह भी तो कमड़ से बिकी नीली मिट्टी रखी है, इससे इस मूर्ति को बना सकते हो ?

मैंने कभी यह कला सीखी ही नहीं इसका सम्वास ही नहीं है।

‘कमा के लिए सम्वास नहीं चाहिए उसके लिए चाहिए विरवात। विरवाम जिसके पास नहीं है जिसक बवास है।”

“गुम्देव ! — प्राणों में बड़ी कठिनाई दिखाकर भरव बोला।

“भीतर घीर बाहर की सगिब ही कला है—चाहे वह मूर्ति में किस जठ, चाहे गीठ में चाहे घघर में। दस्ता में बनाता हूँ बिलभी बस्ती। — कहने-कहने बंगोशामा ने उस मिट्टी को माकार मीनेव में बदल दिया पोड़ी ही दर में।

भैरव बमरडूठ हो उठा— “मन्य गुम्देव !

‘जिसक भीतर विचार है उसके भीतर कला भी है। विचार घीर धारणा जब दोना एक बुतरे में भिम आते हैं तो मन में बित्र किस सज्जा है। ”म मीजम का मन में दस्तो वहाँ से फिर हम इस मिट्टी म बना देमा घामात हो जायगा।

‘धीरे-धीरे सम्वास मे।

मही विरवाम से ”

गुम्देव घामकी धारणा बाबूत है ती फिर घाप स्वयं ही भजम क्यों नहीं बन जाते ?

“मैजघ धारणाघों से बहुत ऊपर है।”

“घाप भरमता मे उस स्तर तक पहुँच सकेंगे।”

‘मही मैं नहाग देकर गुम्हें वहाँ तक पहुँचा सकता हूँ स्वयं नहीं या लजता

भैरव बुजबाप गुम्देव का मुन् ताकटा रह गया।

गुम्देव बोले— “मूर्ति बनाघो न। बाहर की इस मूर्ति के पनरव मे तुम्हारी बस्तमा में घपन-घाप गहराई देता हा पाएगी।”

‘मैज मूर्ति बनाते-बनात बोला— “गुम्देव माता बूठ घीर बात

बढ़ रही है । चायद वह आपकी बात मान लेने को तैयार है ।

बोनों इला के कमरे के बाहर जाकर खड़े हो गए । इला बोली—
“मधेय ! मधेय !”

“हाँ माँ ! कहो म ।

“मुझे भूख लगी है ।”

भरव ने लजामामा से कहा—‘बहली है मूख लगी है ।’

खंरोमामा बोला—‘बप रहो । कोई बबाब न बो ।’

एला ही किया गया । कुछ देर बाद इला बोली—‘तुम बीमे कठर बीरेब हू । मम्हारे बबतार से क्या एमे लोभा का भूखा मरना परगा ?’

जब भैरव ने लपो मे यह कहा ता उनमे फिर उसमे मौन रहने का ही संकेत किया ।

फिर कुछ देर बाद इला बोली—‘तुम बीम पुब हू तम्हें मागा पर कोई दया नहीं ।

भैरव ने बिम्भाकर लंगी से कहा—‘मुम्देब हमारत मतसब हल हो गया ?’

‘क्या इमन तम्हें पुब कहकर पुकारा है ?’

‘धीमे पुब कहकर तो गही पुबाय पर पगोथ में उरैस्य यही है ।’—भैरव ने मुम्देब को लजामाया ।

मुम्देब मान गए धीर बोले—‘बाबला मैं कुछ बाब सतू धीर सुने मेवे साता हूँ ।’

इला बोली—‘माठा को भुवन न करोमे ?’

‘कस्येया ।’

‘बतिसा करते हो ?’

‘हाँ ।’

‘पुब ! पुब !

भैरव ने मुम्देब के धामे पर उनसे यह किया ।

विज्ञान-वाला

वही देर तक मुख्यतः इस बुकिशा में पड़े रह गए क्या सचमुच में इया
 मीनेस को पत्र का संवाचन दे रही है। भयंकर द्वार का सौमल तोसने
 को घामे बड़ रहा था तपानामा ने उसका हाथ पकड़ लिया।
 'पुरदेव घब घाप क्यों रोपते हैं ? माँ बट को पुकार रही है।
 "भीरव रको एक बार मैं सुन भी तो नूँ।
 वह कई बार पुकार चुकी घाप उनकी माया समझ भी तो नहीं
 सकते।"
 "माया नहीं समझता यह ठीक है पर ध्वनि को तो समझता हूँ।
 तुम फिर बाने करो उममे।
 भीरव ने इया से कहा— 'माँ।
 फिर क्यों तुम्हें मेरी ममता नहीं होती ?
 भीरव ने तपानामा न पूछ — 'जहीं मूना घापने ?
 'हाँ मूना पूत्र वह रही है न यह तुममे ?
 'हाँ पुरदेव ! द्वार तोल हूँ ?'
 तपानामा ने कुछ देर विचार करने पर कहा— 'लोच हो।'
 भीरव द्वार खोलने लगा। पुरदेव बोले— 'मुझमें पूछकर ही कुछ
 कहना होता तम्हें।
 "हाँ पुरदेव।"—भीरव न द्वार तोस दिए।
 इया न भीरव को देता। बड़ा दर तक वह उन देखती ही रही।
 फिर कहने लगी— 'मुझमें मेरी माया में बालनवाले क्या तुम्ही हो ?'

मैरव ने सुखदेव की धनुमति सेकर उत्तर दिया—“हाँ ।”

इसके बाद इषा को भोजन कराया गया । भोजन के बाद वह बोली—“मैत्रेय वारी की प्रतिष्ठा रखने के लिए मैं आकाश में उड़ी थी ।”

मैरव ने सुखदेव को समझाकर उत्तर दिया—“तुम्हारे द्वारा मैत्रेय की माला बन जाने से वारी घोर भी मौरव को प्राप्त हो चायगी ।”

“लेकिन मुझे इस प्रकार धर्मतारवाद में विश्वास नहीं ।”

मैरव ने इषा का वह आक्षेप जब सुखदेव पर प्रकट किया तो वह बहुत नाराज हो गए । बोर-बोर से कहने लगे—“नहीं यह असम्भव बात है । यह नास्तिक होती तो यहाँ था ही नहीं चकती थी । इसने बड़ी देर में भोजन किया है इसी से इसकी भावना में उत्तेजना फैल गई है । फिर पूछो इससे ।”

मैरव ने इषा से कहा—“निश्चय पर से फिर जाता भले आरामी की पहचान नहीं है ।”

इषा ने कुछ माह कर उत्तर दिया—“यों अपने निश्चय पर जमी हूँ मैत्रेय लेकिन तुम्हारा क्या मेरे प्रति कोई कर्तव्य नहीं है ?”

“कैसे ?”

“यों सम्भता घोर विज्ञान-भूमि की बासा हूँ । कैसी भ्रमानक परिस्थितियों के बीच मैं फिर नहीं हूँ यहाँ ? बल की मछली बालू में टकपती कैम बेल सकते हो तुम ? तुम ऐसी माया समझते हो इन बर्बरों की बात नहीं कहती मैं ।

“इषा तुम क्या कह रही हो वह ? वह तो कुसल हुई से तुम्हारी माया नहीं समझते है । बड़ा कठिन धर्म तुमने इनके लिए प्रयोज कर दिया । तुम्हें अपने विज्ञान का गर्व हो सकता है, लेकिन तुम क्यों इनके दर्शन की हँसी उड़ाती हो ?

“कई नहींनों से इनका दर्शन देस तो रही हूँ ।”

“ने कहता हूँ इषा तुमने अभी तक कुछ नहीं देखा है ।”

"तुम दिखा सकते हो कछ ? तुमने देखा है कुछ ?"

देखा तो कछ नहीं है सिक्किम मझे एसा मासता है कुछ है

प्रयत्न ।

"मैंने कई महीनों के घपने इस प्रबाम मे कुछ नहीं देखा । जो देखा वह एव बनाबट नाटक और पायड से अधिक कछ नहीं ।"

जपोलामा बीच में बोस उठा— श्रेय यह ठिकान पर घाई मा नहीं ?

"भीर-भीरे घा जाएभी कुम्बेब । ये प्रयत्न कर रहा है ।

"क्या प्रयत्न कर रहे हैं ?

बर्मन तक के परे की बीज है ।

"हाँ तुमने यह ठीक ही किया है ।

इसा बुपबाप एक विचित्र मापा में उन दोनों क बचोपकबन मून रही थी । और न कहा— "यह मटी माठा विज्ञान के बाबुमण्डम में पमी है । घामानी से यह बर्मन के चेने के भीतर नहीं बुल सकती । गुग्गुब घाप इसका यह मिप्या पमण्ड तोड़ नहीं सकते ?

"कैसा पमण्ड ?"

"इसके विज्ञान और इसकी गम्पता का ।"

"मैं कैसे तोड़ सकता हूँ अगर मैं इसकी जाया जानता तब तो बी बाठ भी थी ।"

इस कोई घोप का बमरकार दिनाकर घाप मद्र ही यह नकले हैं । मापा बाई महत्त्व नहीं रखती ।"

"लेकिन घाब जानना कौन है ?

"घाब सब कहते हैं ।"

"मैंड बोलते हैं गिर्क मेरी महिमा बड़ा देने की बात । तुम

ये तुम प्रयत्न कर रहे हैं ।

"मागा और तर्क न कुछ न हावा । कया बर्मन तक पहुँच

एव सीटी जल्द है कुम्बेब । उसका उपाय करे ।"

“धन्य ।” — बहूँ बंधोलाया वहाँ से चला गया ।

भैरव ने इबा से कहा — “इबा, माधो मेरे साथ चलो ।”

“कहाँ ?” — इबा न पुछा ।

“चलो तुम्हें गुरुदेव की कमा दिखाता हूँ । तुमल उमें देखा है या नहीं ?

“ध्यानपूर्वक तो नहीं देखा ।”

भैरव इबा को मूर्तिकला घोर चिर्भो की घोर से गया । इबा उभर कमी नहीं गई थी । वह घानी ही चिन्ता में डबी थी ।

इबा उन मूर्तियों की घोर धारणा हो गई । उनमें पुछा — “क्या वह गुरुदेव की कमा है ?”

“हाँ ।

“कोन गुरुदेव ?”

“जिन्हें अभी तुमने बर्बर कहा था ।”

“कोई वास्तविकता नहीं है यद्यपि इस कला में लेखन अनुपानो का साम्य रेखाओं की कल्पनायता और संबन्धन का संतुलन विचार की प्रौढ छापी दे रहा है ।

“जिसे विचार की प्रौढता की तुम ऐसी अर्जना कर रही हो फिर उनके मीमेयवाद को तुम क्यों बोर पागल ममझती हो ?”

“शैशव मजबूत को मनुष्य नहीं बना सकता ।”

“इबा तुम अपने इस वाक्य से तमाम बसों की रीतिर कुराही बना रही हो । बर्म के निदान्त की जड़ गार रही हो ?”

“क्या है वह कर्म का निदान्त ?”

“यही कि धरुटे विचार धरुटे बर्म को जन्म देने हैं और धरुटे बर्म म मनुष्य के जीवन का संस्कार होना जाता है । मनुष्य के संस्कार की उत्तरोत्तर वृद्धि पर क्यों देवत्व की प्रसिद्धा न हागी ?”

इबा ने भैरव के तर्क पर कोई ध्यान न देकर कहा — “एक मूर्ति विनाग दिना में बना “ने है गुरुदेव ?”

“मुझे डीक मामुम नहीं है।

“क्यों ?”

“मैं यहाँ गया ही घाया हूँ। लेकिन मैंने उनको मूर्ति बनाते हुए षोड़ी देर के लिए देखा है। जो कुछ देखा उससे क्या चलता है, उनकी कल्पना में बड़ी स्पष्टता थीर उनका हाथ में बिजली का बेग है।

“मैंने सुना तो है सक्का कमाकार देह थीर कला का प्रतिबन्धन कर जाता है।”

“धर्म ?”

“जो विस्तार हमारी पहुँच के बाहर है वहाँ उसकी सतृप्त मति है थीर जो ज्ञान हमारे लिए भूत थीर चकित है, वह उसके लिए न बीत चुका है, न मानेवाला है।”

“क्या तुम इस रहस्य में विश्वास भी करती हो ?”

“कमाकार की प्रतिमानवता धर्म ही मुझे सुभाती है। मैं उसकी प्रसाधारण शक्तियों पर विश्वास करती हूँ।

“किर तुम क्यों विद्यालय को कला से बड़ा समझती हो ?”

“उनका उपयोग जो है (उप-विन एक एक कदम पर) कला केवल मनबानों के विद्यालय के थीर किस काम की है ?”

“विद्यालय स्वतंत्रता है उसका उपयोग भी कोई उपयोग है ? जगने निरवय ही बगली का संकुचित कर एक ही विद्यालय नगर में बसा दिया है। लेकिन क्या हो क्या ? यहाँ के थीर हमारे बीच में दूरी थीर रहस्य ज्यों-का-त्यों जैसे ही कायम है।”

“मैत्रेय जर्म थीर विद्यालय के भ्रमों को लेकर हमें क्या करना है ? तुम्हारे कुरंगों कोई कमत्कार दिना दें तो हमारा विचार सद्म ही पिट जाय।”

“उसकी यह अपनी कला जो तुम बेग रही हो वह किन कमत्कार के काम है ?”

“हामी मैत्रेय !” एक हीरे प्रबान लेकर हुआ बोली— मुझे सुस्त

प्राज्ञा का पापम कर्सेया ।

बुधरा उन्तरा रिबुधी को दिया गया । बागों ने नए धिप्यों के लिए भुंजने तक किए ।

भैरव ने बड़ी प्रसन्न मन्ना से इना को बाबी बेश रूप कहा— पेद्रोस या गया है बार टीक ।

बड़ ठीक ही समय में आया है । इतन दिना में हमने इस जहाज में बापो हुई तमाम बून साफ कर दी जो कुछ बन्स-पुर्जों में धराबी या यह भी उमे ठीक कर दिया धीर जो दूट-फूट हो गई थी उसको भी मन्मथ हो गई । बापो से धामा पेनेस ।

धमी ? —बड़ी धाकुसता के साथ भैरव न पूछा ।

कबल धमराज करने का समय यहाँ में जहाज नहीं उड़ सकता— उमे कुछ मीदान चाहिए ।

धीरे ही मीदान केनिन वहाँ तक हम इमे से नहीं जा सकते ।

उत्तने धारमी धाए तो हे उगहे बुना साधो ।”

धमी जतन ही कद को धीर धामबाले ह उतनी भी पयो न धा जान से । धीरे रगो इवा ।

धुम्हे क्या यहाँ में उड़ जान के लिए बलही नहीं हो रही है । मैं धरनी नहीं जाऊँगी मीथय ।”

इसी समय लोनाभा उनका मूँडन हुए वहाँ धा पहुँचे बासे—
“क्या कर रहे यहाँ ?

‘ठीक कर रहे हैं इमे ।

‘ठीक हो गया उउ मन्ना अब यह ?

‘हाँ महाराज उउ लड़ेगा ।”

लालामा धरनाकर बोना— नहीं इमका नहीं उड़ाया जायगा ।”

“क्या महाराज ?

‘राम नहीं वे मचना कुछ ।”

लकी मन्ना से धारना मीथय बहा धालानी से देना-वेनापणों में

प्रसिद्ध ही सकेगा।

अनोत्तमा ने कुछ देर तक सोचने के पश्चात् कहा—“ठीक है।”

“महाराज प्रायः भी जलने प्रापको भी तो हमें संसार में प्रसिद्ध करना है ऐसा बड़ा महात्मा प्राधानी से देखने को कहाँ मिलता है ?

“लेकिन यह कहीं फिर भटक बचा तो ?”

“बहु तो एक संयोग का हमेशा ऐसा नहीं होता। पेट्रोल की टंकी में छेद का हमने उसे ठीक कर लिया है।

“अच्छा तुम दोनों बसो प्रायः तुम्हारा प्रादि सिष्यों की मण्डली में प्रावर्तण होगा।”

अनोत्तमा इन दोनों को मठ के भीतर से बजा। इन्ना ने मार्ग में कहा—“मैत्रय पेट्रोल के लिए पुछ लो।

अरब ने कहा—“बुरखेब कल को हमें पेट्रोल दिया बीजिय।

“बहु प्रा मया क्या ?”

“हाँ।”

मरदार ने तो मुझने कुछ कहा नहीं। मैने भी देखा नहीं।

“बुरखी में तुम गए होये। मकनन की बिलियों में बड़ी हिफाजत के साथ साए हैं। —उसी समय के प्रातिपि-गृह से झांकर प्रा रहे थे। मरब ने कहा—“मै दिया है प्रापको।”

“इस समय नहीं हम प्रावर्तक प्राय हैं।”—अनोत्तमा दोनों को घिर-मरय की घोर से बने।

मि-मुनिषी में अहोनि देखा, कलजन घोर रिषुषी में बार बेला के घिर मूँक दिए थे घोर ही पर के अस्तरे बसा रहे थे। अनोत्तमा ने उन दोनों को वहीं पर दफन का जय भी प्रावर्त नहीं दिया। मुरल्ल पति से अहो घिर-मरय में ले गए।

वहीं से आकर अहोनि उन दोनों को बहुमूय रेशम के घोर ऊर बिलाव के फर ने करहों के पुनभिगत रिबा प्रादि-प्रादि के प्रावर्तनों से अहो प्रा दिया। इन्ना को बहु रिषुषी परिष्कर बड़ा प्रिय प्राय पड़ा

बहु बार-बार अपने को दर्पण में देख-देखकर खूबी नहीं समझती थी। वह इस प्रकार कल्पना कर रही थी— मेरा प्रतिभापित और प्रतिभिक बहाज जब किसी बगल में पहुँचेगा तो लोग मेरा बैस देखकर भक्ति भक्ति की कल्पना करेंगे। मैं बहुत देर तक मूक रहकर अपने भेद को सुरक्षित ही रहने दूँगी।

भैरव तो उस परिच्छेद का घासी था। जबकि उनकी कीमत बदली थी कीई नहीं बिचार-बारा नहीं कूटी उरक। वह बोला— इबा तुम इबाई बहाज में छड़ रही हो। पकर बहु नहीं उका तो ?

केवल पेट्रील का अभाव ही उसकी अक्षतता है।

अंगोभामा ने उन दोनों को सिर-मरम की एक सुसज्जित बेदी पर बिठवा। वहाँ से स्वयं बैठकर ध्यान करते थे। उनके पीछे रेशम में अंकित अजरहे का बिज बा ऊपर में पँडोका टंगा था नीच बड़िया कालीन। दाएँ हाएँ को सुबखे के दीरापायों पर भी क दीपक उग्यबल थे।

उन दोनों को वहाँ बिठाकर अंगोभामा उन गए बेतों को भी मए बसन पहनाकर वहाँ ले गए। त्रिभूषी और कलत्रम को भी उगई में शामिल किया स्वयं भी उनके साथ हो लिए। इस प्रकार वे तीनों प्राणी एक-एक मानी ह्राप में से भैरव और इबा को घर कर बैठ गए और मानी पुमाते हुए अपने लये— श्रीशम् मणि पछे हूँ—श्रीशम् मणि पछे हूँ !”

बीच-बीच में गुरुदेव उगई घटे हो जाने की आशा करते। सब उठकर उसी प्रकार मानी पुमाते मंत्र आते इबा और भैरव के चारो घोर दीड़ समात। जमी इत घोर कनी बिलंबिन बाल में। एक जान पर बैठ जाते और फिर बँका ही कम चलता।

बड़ी देर तक रात में ऐसा होना रहा। दूसरे दिन भी आ-नीकर हमी की आशुति हुई। दिन में बिधाम दिया गया। रात को फिर वही वाजकम रगा गया।

गुरुदेव बोले— वीजय दाब तुम्हें ह्ये कछ उपरग देना होला।

भैरव ने कहा— महाराज मैं घाबकी क्या उपरम दे सकता हूँ ?”

“ऐसा मत कहो। तुम ऐसा कहकर अपने पर से नीचे गिरते हो। हम निरन्तर तुम्हें ऊपर उठा रहे हैं। मेरी इतने बर्षों की साधना केवल इसी दिन के लिए थी, तुम हमें निराश न करो।

भैरव कुछ सोचने लगा।

“सोचने की कोई बात नहीं है। प्रसन्न होकर बैठो मीनेय का ध्यान करते बिना एक बस की चारा के समान बिना प्रयास ही तुम्हें प्राप्त हो जाएगा। बस उसे तुम ध्वनि का रूप होते जाना।”

“लेकिन आज नहीं महाराज आज कुछ वहाँ चुम्क रहा है।

“किस को?”—बुद्धदेव ने पूछा।

“धीर लोचों के घाने पर।”

“वह भी ठीक है।” संपोत्तमा ने फिर बेला की मञ्जरी से मानी पुमाकर मंत्र बजाने को कहा।

दूसरे दिन भी यही क्रम जारी रहा। तीसरे दिन सगदार महंत की धीर उनके घाठे कैलों को लेकर घा पहुँचे। बुद्धदेव ने उनकी परीक्षा के लिए पहले उन्हें प्रतिविद्याना में ठहराया। बिना जनम प्रकृति तरह बातें किए उन्होंने यह उचित नहीं समझा कि वे मंत्र में साक्षि हों।

महंत धीर संपोत्तमा की भेंट घावाजन किया गया। बड़ी देर एक दूसरे को बुझाव देवते रहे। पहले महंत की ने बजान घोसी—“महाराज इतनी गुण्यता में घाव किस हुईं रहे हैं?

“इस सभार में कैली हुई बीमारी की पीपचि।”

“बीमारी क्या है?

“इसरी सुधपरजी।”

“बधा मिसी?”

“बधा तो मिसी है कबम उसे गुड करना है।

“बधा क्या है?”

“मीनेय—उनका उग्रुव भी हो गया है, केवल उनकी राक्षि को जयाना है।”

“बहु कैसे जायेगी ?”

मंत्र डाक उनके अर्गों की स्मृति जगाकर ।”

“घापको धर्म है महाराज । — मंत्र ने मतलब की बात कही—
महाराज मैंने सुना है अपने योग शक्ति से एक हवाई जहाज
जाया है ।”

“तहीं मैं योग-शक्ति को पाबिसता पर अर्थ नहीं करता ।

ता क्या वह प्रचलाह है । यहीं कोई हवाई जहाज नहीं है ?”

हवाई जहाज तो है पर वह स्वयं ही यहीं था गया ।

“कीत कि भाया ?”

“मैत्रेय की जननी ।”

“कीत है वह ?”

“मैत्रेय की जननी से घोर बड़ा परिचय क्या है ?”

“सुना है वे स्वैर्यापदेश की रहनेवासी है ।”

“इससे उनके मैत्रेय की जननी होने में कोई फर्क नहीं पाता काती
सीसी स्वैर सभी जातिवाँ मयमान की हैं ।

मंत्र के तमाम समय दूर हो गए जब उसे उन बातों को देख लेना
पानी था । अपने पूछा— ‘महाराज घापको धर्म है घापने बिदक के
कम्पारु के लिए इतना बड़ी कठिन तपस्या सिद्ध की । हमारा क्या ऐसा
तीर्णाम्य होया कि हम मैत्रेय घोर जननी जाना क बयान कर सकें ।

मंत्रोत्तमा को भी मंत्र पर कोई गंधय नहीं रहा अपने उत्तर
दिया— आज रात को उनकी पूजा में तुम उनके दशन करौं ।

उन समय भीरव घोर इवा एक गुप्त डाक में बाहर निकल गए थे
घोर सुरक्ष की आभातुमार सरकार की सहायता में हवाई जहाज के
क म पेट्रोल भर रहे थे ।

मंत्र न कहा— ‘महाराज वह हवाई जहाज कहां है क्या हम उसे
देख सकते हैं ?”

“हां हम मन्ते हो बाहर पुछ के डार क पाम ही ता है, हमने

घाते समय नहीं देखा उसे ?

“नहीं कुछ ध्यान नहीं रहा।”

महंत हवाई जहाज देखने के मतलब से घकेसा ही बाहर निकला। वहाँ सरदार और उसके बसों प्रमुखर हवाई जहाज को मैदान की घोर बकेस रहे थे। वे प्रायः उसे दृष्ट हवान पर ले आए थे। एकाएक सरदार ने महंत को जबर घाटा हुआ देखकर भैरव और हवा को वहाँ से सुरब की राह मठ में बने जान का कह दिया। दोनों चल दिए।

महंत ने वहाँ घाकर उस हवाई जहाज को देखकर कहा— “मेने तो सुना था किसीने का बहाज है यह तो बिलकुल सच्चा है।

सरदार बोला— “हाँ महाराज। ऐसा ही है।”

महंत ने पूछा— “कहाँ-कहाँ की सीर होती है इसमें ?”

भाकाए में सक्के वही है चारों घोर इसकी स्वच्छर गति है।

श्रीन-श्रीन घाटा-जाटा है इसमें ?

“बिभने लिए मुखरेष की घाजा हो बाय।

महंत क तमाम सक्क तस्य में बदल गए घब ता उसे वह भी घरु होने लगा कि जकर साम्यबादियों के जयत से उनका सीमा सम्बन्ध है। वह मन ही मन सोचन लमा— “धर्म का सिर्फ इन लोगों ने एक विज्ञाबा बना रदा भीतर रहस्य कोई डुमरा ही है।” वह स्थासा की मदद क घीघ वही पहुँच जान के लिए बितित हो उठा।

रात की मीनेय की पूजा हुई। सब लाम मीनेय के चारों घोर जमा हाकर मग्ग बगाने लम। महंत ने भैरव और हवा को देखा। उसने हवा को देखकर निश्चय किया वह बबघायता है। भैरव को देखकर उनको घाघ घाने मया जमने जने बही देला है। बही देर में उसे स्मरण हुआ वह बही वृंघा ब्यक्ति है जो उस पम्प चरते हुए विमा था। उससे किसी बिदेपी राग्ग वा जातुन होने का उसे पहले ही सक्क का घान वह निश्चय में बदल मया।

मीनेय के प्रबचन का समय घारम्भ हुआ। घंतेसामा ने कहा—

“मम घाप लोभों को सापक होकर मंत्रय की समुत बाखी मुमनी
 चाहिए । घाप लोभों का यही बाणा सारे जगत में फैलानी है । यह घुम
 का लक्ष्य है । हम लोग बन्धु हैं जिनके माम्य म यह सुप्रबसर बढा बा ।
 मंत्रय की जय हो ।”

जपानामा ने मंत्रय की तरफ इजारा किया । मंत्रय ने इबा की
 घोर देखा घौर मुमकराकर उससे कहा— ‘तुम कैसे समझामी ?
 जपानामा कामत्र घौर लेखनी देखकर बैठ गया मंत्रेय के एक-एक
 मसर को घरीस्येक समझकर । उम गिमा-मोन बारन की हुई समा के
 बीच में मंत्रेय ने यह लोभा— ‘घात्र दुनिया बड़ा की घौर छोटा की हा
 गर्द है—यही इगकी बीमारी है । हम सब बराबर हैं । बडा को छोटा
 घौर छोटा को इतना बडा कर दिया जाय कि सब बराबर हो जायें—
 यही एक मात्र इलाज है । मंत्रेय वा यही सम्झ है ।

समा— ‘जकर यह माम्यबाधियों का एक्ट है । हम जहर को बड़ में डी
 मार देना चाहिए, नहीं ता यह मारे देम में कैम कर जाय घार उपरब
 पैदा कर देगा ।

मंत्रय फिर बहने लया— ‘यह मैं नहीं बाज रहा हूँ । घाप सागो ने
 मेरे भीतर वो मंत्रय की घारमा वा घाहून किया है बही बाज रहा है ।
 इतलिए कुछ बरा मला मानने की बाज नहीं है । मैं तमाम घण्यकिबासों
 का तारने क लिए घाबा हूँ वा घम ने नाय पर घात्र बन रहे हैं ।

जपानामा घारचर्यबधित होकर मंत्रय की तरफ देखने लया घौर
 मन में माबने लया— ‘यह क्या माया है ? मेरा ही बनाया हुआ यह
 क्या सबने गहने मरी ही मर्दन पर लजवार बनायगा ?’
 मंत्रय बोला— ‘घण्यबिदबाज क्या है ? बिज्ञान के नाब जिम बर्म
 की कोई संगति मरी है बहू लब घण्यबिदबाज है । घाप लोभों वा यही
 पर बैठे-बैठे यह मानी घुमाना यह घण्यबिदबाज वा एक्ट लया है । घमर
 घान मुझे मंत्रय मानते हैं तो इम छोड बा ।

दुखरेव ने घालें तरेकर मीत्रेय की घोर रेखा । मीत्रेय की भावना में कोई परिवर्तन नहीं हुआ ।

मीत्रेय कुछ देर के लिए दबा से बात करने लगा । मन्त्र न सुन्दर की घोर रेखा । उनकी आँखों में कुछ विचित्रता पाकर वह उनकी गहरे उनके हृदय में कुछ गया । वह बोला—

“मीत्रेय की आत्मा नहीं है यह वह न की आत्मा था न”

“फिर क्या हो हमका प्रतिकार ?

‘घोर घोर से पड़ो—घोरेम मणि पत्र’ है घा २ म मणि पत्र

सब मन्त्र पढ़ने लगे ।

मीरब बोला—“यह पाण्डव मन्त्र कर ।”

सपोलामा ने कहा— सभी मन्त्रों में यका घा मा नशा घा है यह तुम्हारे भीतर पाप बोना रहा है ।

‘नहीं तुमने हमें भी पालण्ड में मन्त्र दिया है क्या ? मन्त्र बरन ?’—मीत्रेय दबा की लहर बहती म चव दिया घपम घान कव बरसन ।

महूठ बोला—“सुखरेव सुभ्र दे साम्यबाहिमा क मन्त्र जान पड़ते हैं ।”

‘नहीं जो मन्त्र पड़त रहा सभी लीक आत्मा घा जायगा ।

फिर सब मन्त्र पढ़ने लगे—घो म् मणि पत्र’ है घा म् मणि पत्रुन हैं !”

देरब घोर दबा घपने-घपने देरा में घा याग । दबा का दूगपीय दबा देनकर महूठ बोला— यह मेम कौन है ?”

मीत्रेय की माता ।” सपोलामा ने जबाब दिया ।

“घसम्भर ठक ! बेटे घोर माँ की घायु में क्या इतना छाटा घम्बर होगा है ? ये मीत्रेय हो सकता हूँ लेकिन ये मीत्रेय की माता नहीं है ।

‘मन्त्र जपो मन्त्र जपो ! सभी इच्छा आत्मा पुढ नहीं हुई पनी बोला ।

“घब घाप लोगों को साबक होकर वीज्य की प्रभृत बाखी सुननी चाहिए । घाप लोगों को यही बाणी सारे जगत में फैलानी है । यह युग का सन्देश है । इस लोग बन्ध है त्रिनके साम्य में यह सुपबसर बसा बा । वीज्य की पय हो ।

सरोलामा ने मत्रय की तरफ इषारा किया । मत्रय ने इषा की घोर देखा घोर मुनकरकर उससे कहा—“तुम कैसे समझोगी ?”

सरोलामा कायज घीर सेपनी लेकर बैठ गया वीज्य के एक-एक पक्षर की प्रतीक्षय समझकर । उस गिला-भीन बारज की हुई उमा के बीच में वीज्य ने मुंह खाला—“घाज बुनिया बड़ो की घोर छोटों की हो गई है—यही इसकी बीमारी है । हम सब बराबर है । बड़ों को छोटा घीर छाटां को इतना बड़ा कर दिया जाय कि सब बराबर हो जायें—यही एक मात्र इलाज है । वीज्य का यही सन्देश है ।”

सहृत घावें थड़-थड़कर उसकी तरफ बेपकर अपने मन में कहने लगा—“जकर यह साम्यवादियों का एजट है । इस जहर को बड़ में ही घार दना चाहिए नहीं ता यह सारे बेग में फैल कर जातें घोर उपद्रव पैदा कर देगा ।”

मत्रय फिर कहने लगा—“यह मैं नहीं बोल रहा हूँ । घाप लोगों ने मेरे जीवन जो वीज्य की प्रारमा का प्रारुन किया है वही बात उल्ट है । इगमिण कुछ बुरा भला मानने की बात नहीं है । मैं तमाम धर्मबिद्वाधों को तोरने के लिए घाबा हूँ जो घमें के नाय पर घाज बल रहे हूँ ।”

सरोलामा घारचर्वकविन होकर वीज्य की तरफ देखने लगा घीर मन में नाबने लगा—“यह क्या मया है ? मिरा ही बनाया हुआ यह बना मरने पहले मिरा ही पर्यन पर लकबार बनावना ?

वीज्य बोला—“धर्मबिद्वाध मया है ? विज्ञान के नाय त्रिस कर्म की कोई सगति नहीं है वह सब धर्मबिद्वाध है । घाप लोगों का यही पर बैठ-बैते यह मानी घुमाना यह धर्मबिद्वाध का एक नमूना है । धगर घाप मुझे वीज्य मानने है तो इस छोड़ दो ।”

भैरव बोला— मेरी आत्मा सज है क्योंकि मैं मामल की मुक्ति का संश्लेष साया हूँ वह है—सबकी समानता सम्पत्ति की समानता, और पापघ्न का संभोग !

महंत बोला— यह निश्चय ही साम्यवादी है गुरुदेव—इसे पकड़ कर बाँधने की आज्ञा दो ।”

“कोई नहीं बाँध सकता मुझे ? मुझ मृत्यु का कोई मय नहीं है इस लिए मैं विमुक्त हूँ ।—वह इका के माथ वहाँ से चला गया ।

गुरुदेव मरे से घाटों के ल कठ ही देर में घाट मैनिफो में बदल सकते हैं । इनकी घाटों मानियाँ सभी घाट तकवारी में । महंत ने कहा ।

“नहीं नहीं ! इसके मम के संतान को हम सभी बरम सकते हैं । मानी बूमाते रहो मग्न जपते रहा ।

मग्न फिर मग्न जपने लय । इनी समय बाहर गुफा के द्वार पर बड़ा घोर मुनाई देन लगा । तपोनामा एकाएक होकर उस सुनत लगा ।

समाम बैसा ने मग्न का रूप स्पगित कर दिया ।

महंत माचने लगा—घायद “शासा से उनकी कमक प्रा पहुँची । जमने गयोलाया त कहा—“गुरुदेव घापन मेरी बात नहीं मानी । यह जरूर नहीं साम्यवादिनों की सेना है । उग्रान मठ में बढाई कर बी ।

थक मानी मे इमरा मामला नहीं किया जायवा ।

“फिर क्या होया ?”

इन दोनों का कौद कर से ।”

“संश्लेष को ?”

“ब दोनों परवाचारी क एक्ट है ।”

“ऐसा है ?”—घोगलाया ने पूछा ।

“हाँ उन्होंने इस एकान्त में अपना पोजी घापार बनाने के लिए घापक सबने सीया मन्घ्य पाया है ।

फिर बाहर घोर मुनाई दिया । गगो नपूछा—“ये बाहर कौन है ?”

“घापद उनकी सेना है । बाहर चमकर देन से । लेकिन घबघाने की

बात नहीं है हमारे पास भी छस्त्र है ।

सब बाहर को चले ! महंत ने अपने शिष्यों को छस्त्र दे दिए । उन्होंने बाहर जाकर कहा—महंत के ही साथी प्रा पहुँचे थे । महंत बोला—
“सब मेरी सेना है ।

“तुम कौन हो ? —सपो ने पूछा ।

मैं रहाना की सरकार का एक अफसर हूँ । इन बिनेसी साम्यवादियों का मुकाबला करने के लिए यहाँ आया हूँ । घायल कोई शिष्टा न कर मयदान का बन्धन है हम ठीक समय पर प्रा पहुँचे ।

संरोलामा अब भी मानी बुझा रहा था । “तब ही मैं हवाई जहाज में से उनके बसने की आवाज सुनाई दी । जहाज उड़ने लगा था । सब उधर दौड़े ।

संरोलामा बोला—“मैत्रेय ! मैत्रेय !

हवाई जहाज में मैं भरव बोला— मानव मात्र बगबर है—हम सब बराबर हैं हम सब मैत्रेय हैं ।”

महंत बोला—“भरव सो यह साम्यवादी है ।

सातिवादी हूँ । बड़े-छोटे के विचार स ही बगती पर अछान्ति है ।” —भैरव बोला ।

“स स्वैतापना पर योसी छोड़ो यह स्वैतापो की एजिमा का विमित कर लेने की कामना है । —महंत न कहा ।

“मैं इसे इसके घर पहुँचाने जा रहा हूँ ।” —भैरव न कहा ।

संरोलामा ने कहा—“मैत्रेय ! तुम फिर कब आओगे ?”

भैरव बोला—“अब समय लायमा । मैं मैत्रेय पर विरवास रखता हूँ पर मुझ में उसका भार उठा सजने की सामर्थ्य नहीं । मैंने जो विचित्र स्वप्न देखा है उसकी साखी के लिए जर जाता हूँ ।

संरोलामा ने विचारा—“अभी उपमा पूरी नहीं हुई । अण्ड अण्ड हो गया !”

परिशिष्ट

[पुस्तक में पाए हुए कुछ तिब्बती शब्द]

सबलतीत = किसलती हुई हिम	तगर = बौद्ध बर्मघासों की
गिलाए	टीका
कंपूर = बौद्ध बर्म-मान्य	तुग = बबाम की तुरही
काबो = तिब्बतिया के कमर का	कुम्मा = ऊनी कपडन
पन्का	बुकपा = पतला भात
लड्डे = टाबीज	बन = ऊनी पसीबा
गारपन = तिब्बती घबिकाटी	वंदेप = कागा का घामुपग
गुंया = मठ	पोनसूहा = नसाई सामा का प्र
ग्याबे = तिब्बत का एक नगर	पुइ = भाय पीमे का का
बकपद = सुपनी रखने का सीप	प्यावा
बाबा = मुना मूड़े-जी का भाग	मानो = प्रायता बक
बाइ पद = तिब्बत का एक हिम	इयामा = गाय
नद	गिय = मरडा
बोपा = मुगा गोबर	गिगबो = तिब्बत का दूसरा पु
पद = जी की गगब	नगर
पुपा = लडा बोट	गौवा = पुटन तक का ऊन धीर
इपो कृत्थो = एक मठ	पमइ का जूता
हीबू = पूवा की पंटी	इयो = एक मल
डोस्मा = माल की ताग	इया बाबो = भइ का मुला मांस

